Bulletin of the Tamil Department No. 2

GENERAL EDITOR

S. VAIYAPURI PILLAI, B.A., B.L.,
*Reader in Tamil.*

# PURATTIRAṬṬU

Free Copy.
Sri Sarfoji Saraswati Mahal
Palace Library

# புறத்திரட்டு

சென்னைச் சர்வகலாசாலை
தமிழாராய்ச்சித் துறைத் தலைவர்
S, வையாபுரிப்பிள்ளை, B.A., B.L.,
பதிப்பித்தது

சென்னைச் சர்வகலாசாலை
சென்னை
1938

விலை ரூபா 2-8-0

# உள்ளுறை

| | |
|---|---|
| ஆங்கில முன்னுரை | xii-xiv |
| பிரதிகளின் விவரப் பட்டிகை | xv |
| நூன்முகம் | xvii |
| நூல் | 1-232 |
| அனுபந்தங்கள் : | |
| I செய்யுள் முதற்குறிப் பகராதியும் மூல விளக்கமும் | 233 |
| II மூல நூல்களும் அவற்றினின்றுந் தொகுத்த புறத்திரட்டுச் செய்யுட்களின் எண்களும் | 251 |
| III இப்பதிப்பிற் குதவிய மூலநூல்களைப் பற்றிய குறிப்புக்கள் | 256 |
| IV புறத்திரட்டுச் சுருக்கத்திலுள்ள செய்யுட்கள் | 257 |
| V பாட பேதங்கள் | 274 |
| VI பெயரகராதி முதலியன | 280 |

# நூலின் பகுதிகள்

## I அறத்துப்பால்


| அதிகாரம் | | பக்கம் | செய்யுள் |
|---|---|---|---|
| 1 | கடவுள் வாழ்த்து | 1 | 1-9 |
| 2 | அவையடக்கம் | 3 | 10-14 |
| 3 | நீத்தார் பெருமை | 3 | 15-19 |
| 4 | பெறுதற்கருமை | 4 | 20-27 |
| 5 | அறன் வலியுறுத்தல் | 5 | 28-49 |
| 6 | இல்வாழ்க்கை | 8 | 50-67 |
| 7 | கற்புடைமகளிர் | 11 | 68-79 |
| 8 | கற்பில் மகளிர் | 12 | 80-91 |
| 9 | புதல்வரைப் பெறுதல் | 14 | 92-99 |
| 10 | விருந்தோம்பல் | 15 | 100-104 |
| 11 | இனியவை கூறல் | 16 | 105-108 |
| 12 | செய்ந்நன்றியறிதல் | 16 | 109-115 |
| 13 | நடுவு நிலைமை | 18 | 116-119 |
| 14 | அடக்க முடைமை | 18 | 120-130 |
| 15 | ஒழுக்க முடைமை | 20 | 131-147 |
| 16 | பிறர்மனை நயவாமை | 22 | 148-156 |
| 17 | பொறையுடைமை | 23 | 157-169 |
| 18 | வெஃகாமை | 24 | 170-173 |
| 19 | அவா | 25 | 174-181 |
| 20 | புறங்கூறாமை | 26 | 182-184 |
| 21 | இகழாமை | 27 | 185-190 |
| 22 | தீவினையச்சம் | 27 | 191-205 |
| 23 | தானம் | 29 | 206-216 |
| 24 | ஈகை | 31 | 217-230 |
| 25 | ஈயாமை | 33 | 231-241 |
| 26 | புகழ் | 34 | 242-245 |
| 27 | அருளுடைமை | 35 | 246-257 |
| 28 | புலால் மறுத்தல் | 36 | 258-268 |
| 29 | தவம் | 37 | 269-283 |
| 30 | கூடாவொழுக்கம் | 40 | 284-288 |
| 31 | புணர்ச்சி விழையாமை | 40 | 289-304 |
| 32 | கள்ளாமை | 42 | 305-309 |
| 33 | பொய்யாமை | 43 | 310-315 |
| 34 | வெகுளாமை | 44 | 316-322 |
| 35 | இன்னா செய்யாமை | 45 | 323-326 |
| 36 | கொல்லாமை | 45 | 327-339 |
| 37 | செல்வ நிலையாமை | 47 | 340-357 |

| அதிகாரம் | | பக்கம் | செய்யுள் |
|---|---|---|---|
| 38 | இளமை நிலையாமை | 50 | 358-369 |
| 39 | யாக்கை நிலையாமை | 52 | 370-392 |
| 40 | பல்வகை நிலையாமை | 55 | 393-402 |
| 41 | தூய்தன்மை | 57 | 403-414 |
| 42 | துறவு | 58 | 415-427 |
| 43 | மெய்யுணர்தல் | 60 | 428-444 |
| 44 | அவாவறுத்தல் | 62 | 445-448 |
| 45 | பழவினை | 63 | 449-473 |

II பொருட்பால்

| | | | |
|---|---|---|---|
| 46 | இறைமாட்சி | 67 | 474-499 |
| 47 | கல்வி | 70 | 500-514 |
| 48 | கல்லாமை | 72 | 515-520 |
| 49 | கேள்வி | 73 | 521-527 |
| 50 | அறிவுடைமை | 74 | 528-542 |
| 51 | குற்றங்கடிதல் | 76 | 543-551 |
| 52 | பெரியாரைத் துணைக்கோடல் | 77 | 552-560 |
| 53 | நன்கறிவுறுத்தல் | 79 | 561-572 |
| 54 | சிற்றினஞ் சேராமை | 81 | 573-582 |
| 55 | தெரிந்து செயல்வகை | 82 | 583-597 |
| 56 | வலியறிதல் | 84 | 598-603 |
| 57 | காலமறிதல் | 85 | 604-610 |
| 58 | இடனறிதல் | 86 | 611-615 |
| 59 | தெரிந்து தெளிதல் | 87 | 616-623 |
| 60 | தெரிந்து வினையாடல் | 88 | 624-642 |
| 61 | சுற்றந்தழால் | 91 | 643-653 |
| 62 | பொச்சாவாமை | 92 | 654-660 |
| 63 | செங்கோன்மை | 93 | 661-672 |
| 64 | கொடுங்கோன்மை | 95 | 673-679 |
| 65 | வெருவந்தசெய்யாமை | 96 | 680-684 |
| 66 | கண்ணோட்டம் | 97 | 685-690 |
| 67 | ஒற்றாடல் | 98 | 691-694 |
| 68 | ஊக்கமுடைமை | 98 | 695-700 |
| 69 | தாளாண்மை | 99 | 701-710 |
| 70 | இடுக்கணழியாமை | 101 | 711-725 |
| 71 | அமைச்சு | 103 | 726-745 |
| 72 | சொல்வன்மை | 105 | 746-756 |
| 73 | வினைசெயல்வகை | 107 | 757-766 |
| 74 | தூது | 108 | 767-786 |
| 75 | மன்னரைச் சேர்ந்தொழுகல் | 112 | 787-808 |
| 76 | குறிப்பறிதல் | 115 | 809-816 |
| 77 | அவையறிதல் | 116 | 817-827 |
| 78 | நாடு | 118 | 828-846 |
| 79 | அரண் | 121 | 847-861 |

| அதிகாரம் | | பக்கம் | செய்யுள் |
|---|---|---|---|
| 80 | நகர் | 123 | 862-878 |
| 81 | பொருள் செயல்வகை | 126 | 879-897 |
| 82 | படைமாட்சி | 128 | 898-912 |
| 83 | நட்பு | 130 | 913-926 |
| 84 | நட்பாராய்தல் | 132 | 927-935 |
| 85 | நட்பிற் பிழைபொறுத்தல் | 133 | 936-947 |
| 86 | தீநட்பு | 135 | 948-957 |
| 87 | கூடாநட்பு | 136 | 958-961 |
| 88 | பேதைமை | 137 | 962-981 |
| 89 | புல்லறிவாண்மை | 139 | 982-996 |
| 90 | பகைத்திறந் தெரிதல் | 141 | 997-1009 |
| 91 | உட்பகை | 143 | 1010-1016 |
| 92 | பெரியாரைப் பிழையாமை | 144 | 1017-1039 |
| 93 | பொதுமகளிர் | 147 | 1040-1060 |
| 94 | கள்ளுண்ணுமை | 149 | 1061-1068 |
| 95 | சூது | 150 | 1069-1077 |
| 96 | குடிப்பிறப்பு | 152 | 1078-1089 |
| 97 | மானம் | 153 | 1090-1100 |
| 98 | பெருமை | 155 | 1101-1115 |
| 99 | சான்ருண்மை | 156 | 1116-1127 |
| 100 | பண்புடைமை | 158 | 1128-1135 |
| 101 | நன்றியில் செல்வம் | 159 | 1136-1148 |
| 102 | நாணுடைமை | 161 | 1149-1150 |
| 103 | குடிமரபு | 161 | 1151-1161 |
| 104 | நல்குரவு | 163 | 1162-1173 |
| 105 | இரவு | 164 | 1174-1180 |
| 106 | இரவச்சம் | 166 | 1181-1189 |
| 107 | கயமை | 167 | 1190-1208 |
| 108 | பல்பொருள் | 169 | 1209-1231 |
| 109 | நிரைகோடல் | 172 | 1232-1242 |
| 110 | நிரைமீட்சி | 174 | 1243-1251 |
| 111 | பகைவயிற் சேறல் | 175 | 1252-1260 |
| 112 | எதிரூன்றல் | 177 | 1261-1267 |
| 113 | பாசறை | 178 | 1268-1275 |
| 114 | பகைப்புலம் பழித்தல் | 179 | 1276-1284 |
| 115 | திறை | 181 | 1285-1294 |
| 116 | மகள் மறுத்தல் | 183 | 1295-1299 |
| 117 | வஞ்சினம் | 184 | 1300-1306 |
| 118 | படைச் செருக்கு | 186 | 1307-1321 |
| 119 | எயில்கோடல் | 188 | 1322-1333 |
| 120 | எயில்காத்தல் | 190 | 1334-1343 |
| 121 | அமர் | 191 | 1344-1358 |
| 122 | தானை மறம் | 194 | 1359-1377 |
| 123 | குதிரை மறம் | 198 | 1378-1386 |

| அதிகாரம் | | பக்கம் | செய்யுள் |
|---|---|---|---|
| 124 | யானை மறம் | 200 | 1387-1402 |
| 125 | மூதில் மறம் | 202 | 1403-1417 |
| 126 | களம் | 205 | 1418-1434 |
| 127 | இரங்கல் | 207 | 1435-1454 |
| 128 | வென்றி | 211 | 1455-1463 |
| 129 | புகழ் | 214 | 1464-1492 |
| 130 | பரிசில் | 219 | 1493-1498 |
| 131 | வாழ்த்து | 221 | 1499-1505 |

III காமத்துப்பால்

| | | | |
|---|---|---|---|
| 132 | கைக்கிளை | 224 | 1506-1570 |

# FOREWORD

The Puṟattiraṭṭu is an anthology of 1,570 stanzas. It may be assigned to the latter half of the 15th century, and it must have been put together at a period when many Buddhist and Jaina works, now lost, were available. Kamban's Rāmāvatāram is the latest work represented in the collection, if we leave aside the one stanza ascribed to Naḷaveṇbā in some of the Mss. and to Bhāratam in others.

The anthology is of considerable importance to students of Tamil literature. It brings to light many works which are otherwise unknown, *e.g.*, Āśiriyamālai, Irumpal-kāñci, Nārada-caritai, Śānti-purāṇam and Perumporuḷ-viḷakkam. It gives many excerpts from works known only by name or by a few extracts preserved by later scholiasts; among such works are Kuṇḍalakēśi, Takaḍūr-yāttirai, Muttoḷḷāyiram and Vaḷaiyāpati. It includes extracts from the missing portions of works now accessible in more or less extensive fragments, *e.g.*, Patiṟṟupattu, Paripāḍal, Bhāratam and Ciru-pañcamūlam. It cites from certain works, a few stanzas which, however, are not found in their published editions. Lastly, it offers better texts of many poems already printed from inferior manuscripts.

From another standpoint also, the collection is important. It follows, in its subject analysis, the scheme of the Tirukkuṟaḷ and forms an excellent supplement to that great work. The poems excerpted are of a high order, and constitute fine examples of a simple, terse and forceful idiom from which we have much to learn.

This anthology seems to have been once very popular, for we find that there are also two shorter recensions of it. The stanzas included in these recensions are given in Appendix IV.

Mr. S. Somasundara Desikar, now of the Tamil Lexicon office, printed in 1918 the first 247 stanzas. Extracts from Puṟattiraṭṭu pertaining to Vaḷaiyāpati, Kuṇḍalakēśi, Muttoḷḷāyiram, Āśiriya-mālai, Perumporuḷ-viḷakkam, Nārada-caritai, etc., have appeared in the pages of *Sen Tamil* (Vol. I, III, V, VIII and XIV). With these exceptions, the work has remained unpublished till now.

A list of the manuscripts used in preparing the present edition is given separately together with some particulars about them.

After the text had been printed, I gained access, through the kindness of Mahamahopadhyaya Dr. V. Swaminatha Aiyar, to a valuable paper manuscript in his possession. The variant readings given by this manuscript are noted in Appendix V. Again, one of the cadjan manuscripts belongs to the Tanjore Palace Library. The rules of that library are strict and do not permit the loan of any manuscript, and at my request Mr. S. Subrahmanya Sastrigal, Retired Sanskrit Pandit of the Kalyanasundaram High School, Tanjore, kindly noted down the readings on the proofs which I sent to him. Another cadjan manuscript belonging to the Tamil Sangam Library was compared by me at Madura with the assistance of Mr. T. K. Ramanuja Aiyangar, Assistant Editor, *Sen Tamil.*

In noting readings, I have adopted the practice which I have been following for some years now. In this system, the text is not encumbered with any superior numbers. In the footnote, the readings of each stanza are noted against the number of the *cīr* where the variation occurs. I owe this neat system to the suggestion of my friend Mr. P. N. Appuswami Aiyar, B.A., B.L., Advocate, Madras. By its simplicity, it enables one to present the manuscript material in its entirety, including scribal errors. It must be noted that even these errors might ultimately prove a valuable guide in arriving at a correct reading.

Beyond stanza 1305, the paper manuscript of the Government Oriental Manuscripts Library was the only source and the text was obviously corrupt at many points. I owe a few suggestions of possible readings to the kindness of Dr. V. Swaminatha Aiyar and Mahavidvan R. Raghava Aiyangar of the Annamalai University. Their suggestions are included in Appendix V.

In comparing manuscripts and in proof-reading, I was assisted by Mr. M. Arunachalam Pillai, B.A., of the Government Translator's Office, Madras. Vidvan V. Venkatarajulu Reddiyar, Junior Lecturer in Tamil, O. R. Institute and Vidvan A. Narayanaswami, Research Student in Tamil, O. R. Institute, were also of occasional help. Mr. T. K. Rajamarthandam Pillai, B.A., Tamil Lexicon Office, made for me a copy of the manuscript belonging to the Government Oriental Manuscripts Library.

I am happy to acknowledge my indebtedness to the above scholars and authorities who lent me manuscripts of this work and helped me in other ways.

The matter contained in the Tamil Introduction appeared in a series of articles on "Tokai-nūl" in *Kalaimakaḷ*. By the courtesy of its editor, Mr. R. Narayanaswami Aiyar, B.A., B.L., I have incorporated the articles here with such changes as were suggested by further study.

The Proprietor of the G. S. Press has devoted considerable care to the neat and accurate printing of the book and my thanks are due to him.

UNIVERSITY OF MADRAS,
10th March, 1938.

S. VAIYAPURI PILLAI,
*Reader in Tamil*

## LIST OF MANUSCRIPTS USED FOR THIS EDITION

| Owner | Cadjan or Paper | Content Stanzas | Remarks |
|---|---|---|---|
| | (1) Puṟattiraṭṭu | | |
| 1. T. T. Kanakasundaram Pillai Avl. | Cadjan | 1-1232 | Incomplete |
| 2. The Madura Tamil Sangam. | „ | 1-1293 | „ |
| 3. The Madura Tamil Sangam. | „ | 1-1305 | „ |
| 4. The Saraswati Mahal Library, Tanjore. | „ | 1-1232 | „ |
| 5. S. Somasundara Desikar Avl. | „ | 1-1232 | „ |
| 6. The Govt. Or. Mss. Library, Madras. | Paper | 1-1405 | Complete |
| 7. S. Somasundara Desikar Avl. | „ | 1-1232 | Incomplete |
| 8. Mahamahopadhyaya Dr. V. Swaminatha Aiyar Avl. | „ | 1-1232 | Incomplete. Contains stanzas from Puṟattiraṭṭu-c-curukkam also. |
| | (2) Puṟattiraṭṭu-c-curukkam | | |
| 1. Mahamahopadhyaya Dr. V. Swaminatha Aiyar Avl. | Cadjan | | Complete. |
| 2. M. P. S. Duraiswami Mudaliar Avl. | „ | | „ |
| 3. The Govt. Or. Mss. Library, Madras. | „ | | Tirumalai-k-koḷundu Veṇbā and Kāmattup-pāl not found. |
| 4. S. Somasundara Desikar Avl. | Paper | | Complete |
| 5. T. V. Sadasiva Pandarattar Avl. | „ | | „ |

# நூன்முகம்

## I

ஆங்கிலங் கற்ற மாணவர்களுள்ளே, பால்க்ரேவ் (*Palgrave*) என்பவர் தொகுத்த '*The Golden Treasury*' என்ற அருமையான தொகைநூலை யறியாதார் யாரு மிராரென்று உறுதி யாகக் கூறலாம். பால்க்ரேவ் ஆசிரியர் ஆக்ஸ்போர்டு சர்வகலாசாலையில் புலமைத்துறைத் தலைவராய் (*Professor of Poetry*) விளங்கியவர். புலவர் பெருந்தகையான தென்னிஸன் பிரபு முதலி யோருக்கு உற்ற நண்பர். இவர் கி. பி. 1550 முதல் 1850 முடியவுள்ள 300 ஆண்டுகளில் வெளிவந்த செய்யுட்களுள்ளே கவிதைச்சுவையில் தலைசிறந்துவிளங்குஞ் செய்யுட்களைத் தொகுத்து கி. பி. 1861-ல் வெளி யிட்டனர். இங்ஙனம் வெளியிட்டதனோடு அமைந்துவிடவில்லை. இவர் இறந்த வருஷமாகிய 1897 வரையில் இவரும் இவரது நண்பர்களும் இத் தொகுதியிலுள்ள கவிதைகளின் நயங்களைச் சுவைத்துச் சுவைத்துச் சீர் தூக்கி வந்தனர். ஒரு சில செய்யுட்கள் கழிந்தன; ஒரு சில சேர்க்கப் பெற்றன. முடிவில் ஆங்கில மக்களுக்கு உண்ணவுண்ணத் தெவிட்டாத ஆரமுதமாய், அம்மொழியிலுள்ள இனிமை நிரம்பிய செவிநுகர் கனிகளின் அரிய தொகுதியாய் இது விளங்கிவருவதாயிற்று. ஆங்கில மொழியில் இதனோடு ஒப்பிடத்தக்க தகுதிவாய்ந்த வேறொரு தொகைநூல் இல்லை யென்றே சொல்லலாம்.

**தோற்றுவாய்**

நமது நாட்டில் இது போன்றதொரு நூல் இதுகாறும் தொகுக்கப் பெறவில்லை. தொகுக்கப் பெறாமையின் காரணம் யாது என்ற கேள்வி யானது நம் மனத்திலெழுவது இயல்பே. கவிச்சுவையின் மர்மத்தை ஆழ்ந்துணர்ந்து நுகருந் தன்மையும் கவிதைகளின் தாரதரத்தை அறியும் தன்மையும் மிக அருகியே காணப்படுகின்றன. இவ்வியல்புகள் இலக்கிய வளர்ச்சிக்கு இன்றியமையாதன என்ற உணர்ச்சியும் நம்மிற் பெரும் பாலார்க்கு இல்லை. இங்குக் கூறியதன் உண்மை நம்மவருட் பலர் நாடோறும் வெளிப்படச் சொல்லிவருவனவற்றால் வெளியாம். சுவை கனிந்தொழுகும் இனிய கவிகள் தொட்டதொட்ட இடமெல்லாம் உள்ளன வென்று பலருங் கூறக் கேட்கின்றோம். இன்னோர்க்குச் சங்கச் செய்யுட் களும் இனியகவிகளே; சிலப்பதிகாரம், மணிமேகலை, சூளாமணி, சிந்தா மணி, பெருங்கதை, பெரியபுராணம், கம்பராமாயணம், கந்தபுராணம், பிரபுலிங்க லீலை, காஞ்சிப்புராணம், திருச்செந்தி லந்தாதி, மருதூரந்தாதி முதலியவற்றிலுள்ளன வெல்லாம் இனிய அழகிய கவிகளே. இங்ஙனங் கூறுவோரது புலமை

**கவிதையின் நிலைமை**

யைப் போலிப்புலமை (*Charlatanism*) என்பர் ஆசிரியர் மத்தேயு ஆர்னால்டு. கருத்துலகுக்கும் கலையுலகுக்கும் தனிப்பட்ட புகழும் பெருமையும் அமைவதன் காரணம் என்னெனின், இவ்விருலகத்தும் போலிப்புலமை சிறிதும் இடம் பெறுதென்பதேயாம் என்று சிறந்த பிரெஞ்சு ஆசிரியரொருவர் (*Sainte Beuve*) கூறுகின்றார். கவிதைத் துறை யென்பது கருத்தும் கலையும் ஒருங்குவிளங்கும் இடமாகும். கவிதையோ மக்களது துன்பந் துடைத்தூன்றுந் தூணுக நின்று, அவர்களது வாழ்க்கைக்கு இனிமையளித்து, அவர்கட்கு உறுதி பயப்பதா யுள்ளது. இவ்வகை யியல்புள்ள விடத்தில் போலிப்புலமையால் எத்தனைகேடு விளைவதாகும் என்பதனை நம்மவர் உணரவில்லை.

**போலிப்புலமை யால் விளையுங் கேடுகள்**

இப்போலிப்புலமை யென்னுங் களை மிக்கிருத்தலினாலே கவிதைப்பயிர் செழித்துவளர வழியின்றிப் போயிற்று. இக்காலத்திற் கவிஞர்களும் மிக அரிய ரென்றே சொல்லவேண்டும். கவித்வசக்தி யென்பது காணுதற் கரிதாயுள்ளது. பாடுவோருள் ஒரு சிலர் யாப்பிலக்கணந் தவறுதபடி ஒழுங்காக யாப்புக்கள் புணர்க்கிறார்கள். இவ்வகை யாப்புக்கள் எலும்புச் சட்டகம் இயங்கிச்செல்வது போன்றிருக்கும். ஒரு சிலர் சிறப்புப்பாயிரக் கவிகள் எழுதுவதையே தம் தொழிலாகக் கொண்டிருக் கிறார்கள். இவையே இக்காலத்துப் பல்லோராலும் வேண்டப்படுகின்றன. இக்கவிகளில் நூலாசிரியனது அநங்கதுல்யமான பேரழகு முதலியன கூறப்படுகின்றனவே யன்றி, நூலின் இயல்பினைக் குறித்து யாதும் இருப்ப தில்லை. சார்த்துக்கவி பாடுதற்குச் சற்று மேலாக ஒரு சிலர் கவனசக்தி பெறுவாராயின், உடனே அவர் நமது பெரியோர்களது அருளிச் செயல் களிலே ஈடுபடுவதனோடு அமையாது, அவர்களைப் போலத் தம்மையுங் கருதித் தாமும் 'தேவாரம்' 'திருவாசகம்' 'திருப்புகழ்' முதலியன இயற்றி ஆத்ம திருப்தி அடைகின்றனர். இவர்களுக்கு இக்காலத்துள்ள அக நிகழ்ச்சி, புறநிகழ்ச்சிகளைக் குறித்து யாரேனும் பாடுவாராயின், அவர்கள் மீது மிக்க அருவருப்பு உண்டாகின்றது. அவர்களைப் பாராட்டிக் கூறுவோர்மீதும் மிக்க அருவருப்புக் கொள்கின்றனர். இப்போலிப் புலவர்களைக் கண்ட ஒரு சிலர் உள்ளத்திலே தமிழ்மொழிக்கே கவித்வ சக்தி இருத்தல் இயலாது என்ற உறுதிப்பாடான கருத்து வேரூன்றி யிருக்கின்றது. இஃது ஒரு சிறிதும் உண்மையன்று என்பதை யாவரும் அறிவர்; உண்மையென்ற கோட்பாட்டினுல் வரும் இழிவு இவர்களையும் சார்ந்ததே யன்றோ? உண்மைக் கவித்வம் இன்னதென்பதை யுணர்ந்த இவர்களனைவரும் தமிழைப் புறக்கணித்ததன் பயனுலன்றோ இக்காலத்து இவ்வகைத் தப்புணர்ச்சி உண்டாவதற்கு இடமேற்பட்டது? 'பாஷையின் சிறப்பெலாம் பயில்வோர் சிறப்பே' என்ற வுண்மையை

இவர்கள் கற்று மறந்துவிட்டார்களா? நமது அதிருஷ்ட வசத்தால் இன்னோரின் தொகை நாளுக்குநாள் சுருங்கிவருகிறது. நமது நாடு முழுவதும் அலைமேல் அலையாய் மோதிப் பாய்ந்து வருகின்ற புதுக் கிளர்ச்சிகளால் தாய்மொழிப் பற்றும் மிகுதியாகிக்கொண்டு வருகின்றது. இப்பொழுது தமிழ் மிகுதியாகக் கற்கப்படுகின்றது. தமிழர் பலரும் நூல்கள் எழுதுகின்றார்கள். நூதன வழிகளில் மனவெழுச்சியுள்ள வர்களாயிருக்கின்றார்கள். தமிழிற் கவிதையும் ஒரு சிலர் எழுது கின்றார்கள். ஆனால் இவர்கள் புனையுங் கவிதையில் தமிழ்ச்செய்யுளுக்கு இன்றியமையாத இலக்கண வமைதிகள் காணமுடியவில்லை. சிலபோது இவர்கள் எழுதுவது என்ன பாஷையோ என்று நாம் ஐயுறத்தக்க நிலைமையில் இருக்கும். எலும்புச் சட்டகமின்றித் தசைப்பிண்ட மாத்திரம் நேர்நின்று இயங்க முயல்வது போன்று இவர்கள் முயற்சி முடிகின்றது.

ஆகவே, கவிதை யென்னும் கவின்கெழு செல்வி,

'கன்ம ருங்கெழுந் தென்றுமோர் துளிவரக் காணா
நன்ம ருந்துபோ னலனற வுணங்கிய நங்கை' யாய்த்

தமிழ்நாட்டில் இக்காலத் துள்ளாள்.

**புறத்திரட்டு என்னும் தொகை நூற் பதிப்பின் இன்றியமையாமை**

இந்நிலையில், கவிச்சுவை நிரம்பிய பல செய்யுட்களைத் தன் அகத்தே கொண்ட 'புறத்திரட்டு' என்னும் பழைய தொகை நூலொன்றினை ஆராய்ந்து வெளியிட்டு அதன்கணுள்ள நலன்களைப் புலப்படுத்துவது இலக்கிய ஆராய்ச்சி வகையிற் சிறந்த தொன்றாமெனக் கருதுகின்றேன்.

**தொகை நூல் இருவகை**

தொகைநூ லென்று கூறியவளவில், சங்ககாலத்துத் தொகை நூல்கள் நமது ஞாபகத்திற்கு வரலாம். இத்தொகை நூல்களுக்கும் இப்பொழுது நாம் ஆராய்கின்ற தொகைநூலுக்கும் பெரியதொரு வேறுபாடுண்டு. இரண்டும் பிறப்பினால் வேறுபட்டுத் தனித்தனி இனத்தைச் சார்ந்தவையாகின்றன. ஈண்டுக் குறித்த பிறப்பு வேறுபாட்டினைச் சிறிது ஊன்றி நோக்குதல் வேண்டும்.

ஒவ்வொரு மொழிக்கு முரிய இலக்கியத்தின் அமைப்பினை நாம் ஆராய்ந்து பார்ப்போமானால், ஒருண்மை நமக்குப் புலப்படாமற் போகாது. காவியங்களும் பிறவகையான பெருநூல்களும் தவிர, தனித் தனிச் செய்யுட்களும் பற்பலராற் பல காலங்களிற் பல சந்தர்ப்பங்களிற் பாடப்பெற்று வழங்கி வருதல் பெருவழக்கே. தனிச் செய்யுட்களிற்

பல, மக்களாற் பெரிதும் பாராட்டப்பட்டு வந்த சரித்திர நிகழ்ச்சிகளைக் குறித்தும் கதைகளைக் குறித்தும் கதையைச் சார்ந்த தனி நிகழ்ச்சிகளைக் குறித்தும் தோன்றியனவாகலாம். வேறுபல செய்யுட்கள், அரசர் முதலிய பெரியோரைக் குறித்து எழுந்தனவாகலாம். இவ்விருவகைத் தனிச் செய்யுட்களும் வெகுகாலமாகத் தலைமுறை தலைமுறையாய் ஞாபகத்தில் வைத்துப் போற்றப்பட்டும் அங்கங்கே ஏடுகளில் எழுதிப் போற்றப்பட்டும் வழங்கி வந்தனவாதலும் கூடும். இரண்டு நிலைகளினும் எத்தனையோ செய்யுட்கள் மறைந்தனவாதல் வேண்டும்; புதியனவாகச் சேர்க்கப் பெற்றனவும் உளவாதல் வேண்டும். இத்தோற்றமும் மறைவும் இலக்கிய சரிதங்களில் சாதாரணமாக நிகழ்வனவேயாம். இக்காலத்துங் கூட, பல மொழிகளில் மேற்கூறிய நெறியிலே செய்யுட்கள் தோன்றுதல் காணலாம். ஆகவே, சமயோசிதமாகத் தனிப்பாடல்கள் இயற்றுதல் சிறந்த வோர் இலக்கிய முயற்சியாகப் பல மொழிகளின் சரித்திரத்திலும் உள்ளது. நெடுங்காலத்துக்குப் பின்னர் ஒருவராலேனும் பலராலேனும் இவை தனித்தனி நூல்களாகத் தொகுக்கப்பெறும்.

**சங்ககாலத்துத் தொகை நூல்கள்**

சங்ககாலத்துத் தொகை நூல்கள் யாவும் மேலே குறித்த இருவகை நெறியிலே, தமிழ் மக்களின் இலக்கிய சரிதத்தின் ஆரம்ப காலத்திலும், அதன் பின்பும் தோன்றிப் பின்னர்த் தொகுக்கப் பெற்றன. இங்ஙனம் தொகுக்கப் பெற்றமை காரணமாக இவை '**தொகை நூல்கள்**' எனப் பெயரெய்தின. மிக நீண்டகாலத்திற்குப் பின்னர்த் தொகுக்கப் பெற்றமையின் செய்யுட்கள் பலவற்றின் ஆசிரியர் இன்னாரென்பது மறைந்துவிடுதல் நேரிடக் கூடியதே. ஆசிரியர் பெயரறியப்படாத இடங்களுள் நமது மூதாதையர்கள் புதுவதாகப் பெயர்களைக் கற்பித்துக்கொண்டார்கள். பெரும்பாலும் செய்யுளிலே வரும் அழகிய தொடரினையே அதனைப் பாடிய புலவர்க்கு இட்டு வழங்கினர். உதாரணமாக:

இனிநினைந் திரக்க மாகின்று திணிமணற்
செய்வுறு பாவைக்குக் கொய்பூத் தைஇத்
தண்கய மாடு மகளிரொடு கைபிணைத் துத்
தழுவுவழித் தழீஇத் தூங்குவழித் தூங்கி
மறையென லறியா மாயமி லாயமொ
டுயர்சினை மருதத் துறையுறத் தாழ்ந்து
நீர்நணிப் படிகோ டேறிச் சீர்மிகக்
கரையவர் மருளத் திரையகம் பிதிர
நெடுநீர்க் குட்டத்துத் துடுமெனப் பாய்ந்து
குளித்துமணற் கொண்ட கல்லா விளமை
அளிதோ தானே யாண்டுண்டு கொல்லோ
**தொடித்தலை விழுத்தண் டூன்றி நடுக்குற்**

திருமிடை மிடைந்த சில்சொற்
பெருமூ தாளரே மாகிய வெமக்கே. (புறம், 243)

என்ற செய்யுளைக் காண்க. இது புறநானூற்றுச் செய்யுள். இதன் கவிச்சுவை நோக்கிப் புறத்திரட்டின்கண்ணும் இளமை நிலையாமை யென்னும் அதிகாரத்தில் (368) இது சேர்க்கப்பெற்றுளது. செய்யுளிலே பயின்றுவரும் **தொடித்தலை விழுத்தண்டு** என்னுந் தொடரால் இதனை யியற்றிய ஆசிரியரைத் தொடித்தலை விழுத்தண்டினார் என்று முன்னோர் வழங்கினர்.

**கிரேக்க அந்தாலஜியின் ஒப்புமை**

தமிழிலே தொகைநூல்கள் மிகப் புராதன காலத்துத்தானே தொகுக்கப்பட்டமை போல, கிரேக்க மொழியிலும் மிகப் பழைய காலத்தில் 'அந்தாலஜி' (*Anthology*) என்று கூறப்படும் தொகைநூல் தொகுக்கப்பட்டுள்ளதென அறிகின்றோம். கிரேக்கத் தொகைநூலின் வரலாற்றைக் குறித்து ரிச்சர்ட் கார்னெட் (*Richard Garnett*) என்ற ஆசிரியர் விளக்கமாக எழுதியிருக்கின்றனர். அந்தாலஜி என்ற சொல்லுக்குப் பூந்துணர் என்று பொருள். சுமார் கி. மு. 90-ல் மிலீகர் என்பவரால் இத்தொகைநூல் தொகுக்கப் பெற்றதாம். இதன்கண் அடங்கிய செய்யுட்களின் ஆசிரியர்களில் ஒவ்வொருவரையும் ஒவ்வொரு வகைப் பூவோடு உவமித்து ஒப்புமைப்பொருளை வலிந்துகொண்டு தொகைகாரர் தாமே சில செய்யுட்கள் செய்திருக்கின்றனர். இத் தொகைநூற் செய்யுட்கள் தெய்வங்களையும் புகழ்பெற்று விளங்கிய அரசர் முதலிய பெரியோர்களையும் பெருநிகழ்ச்சிகளையும் பொருளாகக் கொண்டு அமைந்துள்ளன. சுருங்கச்சொல்லல் (*Conciseness of expression*), பொருளாழ முடைமை (*Pregnancy of ideas*), நவின்றோர்க்கினிய நன்மொழி புணர்த்தல் (*Felicity of diction*), பொருளின் ஒருமை (*Singleness of thought*) என்ற குணங்கள் இவற்றிலே அமைந்திருந்தனவெனச் சொல்லப்படுகின்றது. இவ் வியல்புகளோடு பொருந்திய கிரேக்கத்தொகைநூல் புறநானூறு என்னுந் தொகை நூலோடு பெரிதும் ஒப்பிடற்பாலதா யுள்ளது. மிலீகரது தொகைநூலுக்குப்பின் நான்கு தொகைநூல்கள் ஒன்றன்பின் ஒன்றாகத் தோன்றின. இவைகளெல்லாம் அந்தாலஜி என்ற பெயராலேயே வழங்கின. இச்சொல் இன்றும் ஆங்கில முதலிய மொழிகளில் பயின்று வருகின்றமை நன்கறியப்பட்டதேயாம். இறுதியில் தொகுக்கப்பட்டது ஜஸ்டினியன் என்னும் அரசன் (கி.பி. 483-565) காலத்திலாகும். இந்தத் தொகைநூலிலே காதற் செய்யுட்கள் பலதுறைகளாகப் பகுக்கப்பட்டுச் சேர்க்கப்பெற்றுள்ளன வென்று அறிகின்றோம். இதனோடு தமிழ்த் தொகை நூல்களுள் அகப்பொருள் கூறுவனவாய் அமைந்துள்ள

நற்றிணை, குறுந்தொகை, ஐங்குறுநூறு, கலித்தொகை, அகநானூறு என்ற ஐந்து தொகைகளும் ஒப்பிடத்தக்கன.

பழமையிலும் பொருளமைதியிலும் செய்யுள் நயத்திலும் மாத்திரமேயன்றி வேறுசில விஷயங்களிலும் இவ் விருமொழிகளிலுள்ள தொகை நூல்களும் ஒப்பிடற் குரியன. கிரேக்க நாகரிகம் நீடித்திருந்த காலத்தில் அதன் நிலைமை பல படியாக மாறிவந்திருக்கின்றது. இம்மாறு பாட்டுக்களுக்கிடையேயும் கிரேக்கத் தொகைநூல் கிரேக்கர்களுக்குப் புத்துயிர் கொடுத்துதவிய அமிர்த சஞ்சீவினியாய் நீடித்து நிலைத்து வந்திருக்கின்றது. இதுவே போன்றுள்ளன தமிழ்த் தொகைநூல்களும். இரண்டிலும் பழைய நாகரிகங்களும் வழக்கவொழுக்கங்களும் பிரதி பலித்துக் காண்கின்றன. பிற்காலத் தெழுந்த இலக்கியங்களின் நெறியை வரம்பு கட்டுதற்கும் இத் தொகைநூல்கள் உதவின. இவ்வாறாகப் பல படியாலும் இருதேசத்துத் தொகைநூல்களும் ஒன்றோடொன்று உவமிக்கக் கூடியனவா யுள்ளன.

சங்ககாலத்துத் தொகை நூல்கள் பிறந்த சந்தர்ப்பமும் அவற்றின் இயல்புகளும் இதுவரை கூறப்பட்டன. புறத்திரட்டுப் போன்ற தொகை நூல் பிறந்த சந்தர்ப்பம் மேற்கூறியது போன்ற தன்று. இதனை நோக்குவதற்குமுன், இரண்டிற்கும் இடைப்பட்ட காலத்தில் தோன்றிய வேறு சில தொகை நூல்களைப்பற்றிச் சிறிது ஆராய்வோம்.

**சங்ககாலத்திற் குப்பின் 14-ம் நூற்றண்டு வரையில் தோன்றிய தொகை நூல்கள்**

முதற்கண், சங்க காலத்தை அடுத்துத் தோன்றிய கீழ்க்கணக்கு நூல்களில் ஒன்றினைக் குறித்துச் சில சொல்லவேண்டுவது அவசியமாகின்றது. இங்கே கருதும் நூல் நாலடியா ராகும். மதுரையைச் சூழ்ந்துள்ள எண் பெருங்குன்றங்களில் வாழ்ந்த ஜைனமுனிவர்களால் எண்ணாயிரம் வெண்பாக்கள் இயற்றப் பெற்றன வென்றும், அவற்றை யெழுதிய ஓலை நறுக்குக்கள் அனைத்தையும் வைகை யிற் செல்லவிட நானூறு நறுக்குக்கள் மாத்திரம் நதியின் எதிர்சென்று தம் தகுதியைப் புலப்படுத்தின வென்றும், இவற்றிலுள்ள வெண்பாக் களைத் தொகுத்து 40 அதிகாரங்களாகப் பதுமனார் என்பவர் வகுத்தார் என்றும் நாலடியார் ஏட்டுப்பிரதிகளிற் காணப்படுகின்ற ஆசிரியப் பாவொன்று கூறுகின்றது. இக்கூற்றினின்றும் ஒருண்மை வெளியா கின்றது. புலவர்கள் பலர் பாடிய செய்யுட்களைத் தொகுத்த வொரு நூலே நாலடியாரென்று வழங்குவது. ஆதலால் இதுவும் ஒரு தொகை நூலேயாகும். சங்கத்தொகை நூல்களிற் பெயரறியப்பட்ட புலவர்கள் பலரது செய்யுட்கள் உள்ளன; செய்யுட் பொருளும் அகம், புறம் என்னும் இரு பகுதியில் அடங்குவதாயுள்ளது; கொல்லாமை, பொய் யாமை முதலிய நீதிகள் நேராக இவற்றால் உணர்த்தப்படுவன வல்ல.

**நீதி பற்றியன**

நாலடியாரிற் பெயரறியப்படாத புலவர்களுடைய செய்யுட்கள் உள்ளன; கொல்லாமை, பொய்யாமை முதலிய நீதிகள் இதில் நேராகக் கூறப்படுகின்றன. அகம், புறம் என்ற பாகுபாடு இதன்கண் இல்லை. இங்ஙனம் ஒருபாலொற்றுமையும் ஒருபால் வேற்றுமையும் உடையது இந் நாலடியார். இதனைக் கீழ்க்கணக்கு நூல்களுள் முதலாவதாக வைத்து எண்ணும் செய்யுள் ஞாபகத்துக்கு வரலாம்.

நாலடி நான்மணி நானாற்ப தைந்திணைமுப்
பால்கடுகங் கோவை பழமொழி மாமூலம்
இந்நிலைய காஞ்சியொ டேலாதி யென்பதூஉங்
கைந்நிலையு மாங்கீழ்க் கணக்கு.

இங்ஙனம் முதலாவதாக வைத்துள்ளது மேற்கணக்கு நூல்களாகிய தொகை நூல்களுக்கும் ஏனைய கீழ்க்கணக்கு நூல்களுக்கும் இடைநிகர்த்த தன்மையுடையதாய் இந்நூல் அமைந்த காரணத்தாற் போலும்.

நாம் இங்கே முக்கியமாகக் கவனிக்கவுள்ளது எளிதில் வரையறை செய்யமுடியாத புறமும் அகமுமாகிய பொருட் கூறுபாட்டினை மேற்கொள்ளாது நீதியைப் பொருளாகக்கொண்டு அறம் பொருள் இன்பம் என்ற பாகுபாட்டினைப் பின்பற்றி நாலடியார் அமைந்தது என்பதாகும். எனவே இத்தொகை நூல் நீதியாகிய பிறிதொரு நெறிபற்றித் தொகுக்கப்பட்டது.

**சமயம் பற்றியன**

இதனை யடுத்து நமது மனக்கண்முன் வரும் தொகைநூல் சமயச் சார்பாகவுள்ளது. சைவத் திருமுறைகளும் வைஷ்ணவரது நாலாயிர திவ்யப் பிரபந்தமும் உண்மையில் தொகைநூல்களே யென்று கருதத் தக்கன. சேக்கிழார் அருளிச் செய்த திருத்தொண்டர் புராணத்தைத் தவிர்த்து ஏனைய 11 திருமுறைகளும் தொகுத்தவர் நம்பியாண்டார் நம்பிகள். இங்ஙனமே நாலாயிர திவ்யப் பிரபந்தத்தைத் தொகுத்தவர் ஸ்ரீமந் நாதமுனிகள். இவற்றைத் தொகை நூல்களாகக் கொள்ளுதலிற் கருத்தொற்றுமை யில்லாது போயினும், ஒன்பதாம் திருமுறையையும், பதினோராம் திருமுறையையும் இயற்பாவையும் தொகைநூல் எனக் கொள்ளுதலில் கருத்து வேறுபாடு நிகழ்தற்கு இடமின்று. ஒன்பதாம் திருமுறை திருமாளிகைத் தேவர் முதல் சேதிராயர் ஈறாகக் கூறப்படும் ஒன்பதின்மர் இயற்றியருளியதாகும். பதினோராம் திருமுறையும் திருவாலவாயுடையார் முதல் நம்பியாண்டார் நம்பிகள் ஈறாகக் கூறப்படும் பன்னிருவர் அருளிச் செய்ததாகும். இங்ஙனமே இயற்பாவும் முதலாழ்வார்கள் முதலியோரது அருளிச்செயல்களாகும். வேறொரு தொகை நூலையும் இங்கே குறிப்பிடுதல் தகும். இது ‘சங்கரநாராயணத் திரட்டு’ எனப் பெயர் பெறும்; தத்துவ

தேசிகர் சந்தானத்தில் 35-ஆம் சந்தானமாகிய சுயம்பிரகாச யோகியார் தேவாரம் திருவாய்மொழிகளில் 1,100 செய்யுட்களை யெடுத்து 52 அதிகாரமாகப் பகுத்து ஆயிரத்திரட்டாகத் தொகுத்தது. மேற்கூறிய தொகை நூல்கள் பிறிதொரு நெறியைக் கைப்பற்றின. கடவுள் வணக்கமாக இருத்தல் வேண்டுமென்ற ஒன்றே இந் நூல்களின் கடைப்பிடி.

**தத்துவம் பற்றியன**

சமயச் சார்பான இத்தொகை நூல்களை யடுத்து நாம் கவனித்தற்குரியன 'சிவப்பிரகாசப் பெருந்திரட்டு', 'குறுந்திரட்டு' என்பன. இவைபற்றி இற்றைக்கு 35 ஆண்டுகட்கு முன்னர் செந்தமிழில் (I, பக். 285) ஓர் குறிப்பு வெளிவந்துள்ளது. இவை திரட்டப்பெற்ற காலம் 14-ஆம் நூற்றாண்டின் இறுதிப் பகுதியாக இருத்தல் கூடும். பெருந்திரட்டு 137 நூல்களினின்றுந் திரட்டப்பட்ட 2813 செய்யுட்களை யுடையது; கலைக்கட்டளை, அநுபவக்கட்டளை என்னும் இரு பெரும் பிரிவுகளும், 28 இயல்களும், 218 அதிகாரங்களுமாக வகுக்கப்பட்டுள்ளது. இதுகாறும் அறியப்படாதனவும் வெளிவாராதனவுமான பல நூல்கள் இப் பெருந்திரட்டிலே எடுத்தாளப்பட்டுள்ளன. இந்நூலை நோக்குமிடத்துத் தொகுக்கும் நெறி முற்கூறிய வகைத்தினும் வேறாய் மாறிவிட்டமை புலனும். தத்துவக் கோள்கைகளை மேற்கொண்டு தொகை செய்தலே இந்நெறியாம்.

இதுகாறும் கூறப்படாத வேறிரண்டு தொகைநூல்க ளுள்ளமை தமிழறிஞர்களுக்குப் புலனும். அவை பன்னிரு படலமும், பன்னிரு பாட்டியலுமாம். பன்னிருபடலம் தொகை நூலென்பது

'தென்மலை யிருந்த சீர்சால் முனிவரன்
தன்பாற் றண்டமிழ் தாவின் றுணர்ந்த
துன்னருஞ் சீர்த்தித் தொல்காப் பியன்முதற்
பன்னிரு புலவரும் பாங்குறப் பகர்ந்த
பன்னிரு படலமும் பழிப்பின் றுணர்ந்தோன்'

என்று வரும் புறப்பொருள் வெண்பாமாலைச் சிறப்புப்பாயிரத்தால் விளங்கும். அகத்தியாது மாணக்கர்கள் பன்னிருவரும் இந்நூலைச் செய்தன ரென்பர். பன்னிரு பாட்டியல் என்ற நூலும் புலவர்கள் பலர் இயற்றியவற்றைத் தொகுத்த ஒரு பாட்டியல் நூலாம். இவ்விரு நூல்களையும் தொகைநூல் என்ற வகையிற் சேர்த்து நான் கூறாததற்கு ஒரு முக்கிய காரணமுண்டு. இவையிரண்டும் நூற்பாவினலியன்ற இலக்கணங்களாம்; இலக்கியங்களல்ல.

மேற்கூறிவந்த இலக்கியத் தொகைநூல்கள், கிறிஸ்துவப்தம் ஆரம்ப காலந் தொடங்கி 14-ஆம் நூற்றாண்டு முடியவுள்ள நீண்ட காலப் பகுதி

யில் பற்பல காலத்தில் தோன்றியன. புறநானூறு முதலிய தொகை நூல்கள் கிறிஸ்துவப்தத்தின் தொடக்கத்தில் தொகுக்கப்பட்டனவாதல் வேண்டும். இவற்றிற் பெரும்பாலனவற்றிலுள்ள கடவுள் வாழ்த்துக் களைப் பாரதம் பாடிய பெருந்தேவனர் இயற்றியிருக்கின்றனர். ஆனல் இப்பெருந்தேவனர் இப்போது காணப்படும் பாரத வெண்பாவை யியற்றியவரும் தெள்ளாறெறிந்த நந்திபோத்தரையன் காலத்தவருமான பெருந்தேவனரல்லர். சின்னமனூர்ச் சாஸனத்திலே 'மகாபாரதந் தமிழ்ப்படுத்தும் மதுராபுரிச் சங்கம்வைத்தும்' என்ற தொடர் காணப் படுகின்றது. சங்ககாலத்திலேயே ஒரு பாரதம் இயற்றப்பெற்றிருத்தல் வேண்டும் என்று கொள்ளுதற்குப் போதிய ஆதாரமுளது. இதனை இயற்றியவரே தொகைநூல்களிற் காணப்படும் பெருந்தேவனராதல் வேண்டும். நாலடியார் ஏழாம் நூற்றுண்டில் தொகுக்கப்பெற்றதெனக் கூறுதல் ஏற்புடையதே யாகும். ஒன்பதாம் திருமுறையும் இயற்பாவும் 10-ஆம் நூற்றுண்டில் தொகுக்கப்பெற்றனவாம். சிவப்பிரகாசப் பெருந் திரட்டு 14-ஆம் நூற்றுண்டில் தொகுக்கப்பெற்றதாகும்.

சங்க காலத்திற்குப் பின் 14-ஆம் நூற்றண்டு வரை யுள்ள தமிழிலக் கிய வளர்ச்சி

இந்நீண்ட காலப் பகுதியிலே தமிழிலக்கியம் பல துறைகளில் வளர்ச்சியுற்றது. கவியரசர்களுள் அதிமுக்கியமானவர்க ளெல்லாம் இக்காலப் பகுதியிற் சிறந்து விளங்கினர்கள். தெய்வப் புலமைத் திருவள்ளுவர் இக்காலத்தே திகழ்ந்தனர். இவரது வாய்மொழியின் மாண்பு 'ஓதற்கெளிதா யுணர்தற் கரிதாகி-வேதப்பொருளாய் மிக விளங்கித்-தீதற்றேர்-உள்ளுதோ றுள்ளுதோ றுள்ள முருக்கி' நின்றது. சேரமன்னர் குலதீபமான இளங்கோவடிகள் தமது கம்பீரமான காவியத்தைத் தமிழ்த் தெய்வத்தின் திருவடிகட்குச் சிலம்பாக அணிவித்தார். கொங்குவேளிர் தமது உதயணன் கதையை உண்ண வுண்ணத் தெவிட்டாத செந்தமிழால் இயற்றித் தமிழ்த் தெய்வத்தின் திருச் செவியிற் சார்த்தினர். தோலாத மொழியுடையா ராகிய பெரும்புலவர் சூளாமணி யென்னும் இனிய மதுரச்செஞ்சொற் காவியத்தை இயற்றித் தமிழ்த்தெய்வத்தின் திருமுடியில் அணிவித்தனர். திருத்தக்க தேவராகிய புலவர் கோமான் சிந்தாமணியென்னும் அரதன மாலையைத் தமிழ்த் தெய்வத்தின் திருமேனியில் அணிவித்தனர். உலக மகா கவிகளுள் ஒருவரெனக் கருதத் தகும் கம்பர் என்னும் கவிச் சக்கர வர்த்தியார் தமது இராமாவதாரம் என்னும் அரும்பெற லமிழ்தினைத் தமிழ்த் தெய்வத்திற்கு நிவேதிக்கப்படும் திருவமிர்தாகப் பாகஞ் செய் தருளினர்.

இங்ஙனமாகப் பெருங் கவிகள் தோன்றித் தமிழகத்துக்குப் பெருமை யளித்த பின்னர், தமிழ் மக்களுக்கு, அக்கவிஞர்களது செய்யுட்களிலே

இடையறுது பயிலவேண்டுமென்னும் அவாவுண்டாதல் இயல்பே. இவர்கள் இயற்றிய பெருநூல்களனைத்தினையும் கற்றலென்பது ஒருசிலர்க் கல்லது ஏனையோர்க்குக் கூடாதாம். ஆதலால் அப்பெருநூல்களிற் பலவற்றினின்றும் திரட்டப்பெற்ற ஒரு நூல் அத்தியாவசியமாக வேண்டப்படுவதாயிற்று. இதனை நோக்கியே புறத்திரட்டு என்னுந் தொகை நூல் தொகுக்கப்பெற்றதென்னலாம்.

புறத்திரட்டு என்ற தொகை நூலின் தோற்றம்

மேற்கூறியவற்றால் புறநானூறு முதலியன தோன்றிய சந்தர்ப்பமும் புறத்திரட்டுத் தோன்றிய சந்தர்ப்பமும் முற்றிலும் வேறனவையென்பது தெளிவாம். ஒன்று தனிப் பாடல்கள் பலவற்றுள் ஒரு சிலவற்றைப் பொறுக்கித் தொகுத்திருப்பதாம்; பிறிதொன்று பெருநூல்கள் பலவற்றினின்றும் ஒரு நெறிபற்றிச் செய்யுட்களைத் தொகுத்ததாம். தனிப் பாடல்கள் எல்லாக் காலத்தும் உண்டாவனவே. எனினும், இலக்கிய சரித்திரத்தின் ஆரம்பத்தில் தோன்றுவன ஆராய்ச்சியாளர்க்கு மிக்க பயன் தருவனவாயிருக்கும். பெருநூல்கள் இலக்கிய சரித்திரத்தின் ஆரம்பத்தில் அருகியே தோன்றுவன. காலஞ் செல்லச் செல்ல, அவை பெருகும். அவை பெருகி நின்ற நிலையிலேதான் புறத்திரட்டுப் போன்ற தொகைநூல்கள் உண்டாதல் கூடும்.

புறத்திரட்டு என்னும் அரியநூல் தொகுக்கப் பெற்ற காலத்திற்குச் சற்று முன் பின்னாக வடமொழியிலும் இவ்வகைத் தொகைநூல்கள் தோன்றின. அவற்றில் ஒருசிலவற்றைக் குறிப்பிட விரும்புகிறேன். கவீந்த்ர வசன ஸமுச்சயம் என்ற தொகை நூலின் பிரதியொன்று நேபால தேசத்து அகப்பட்டது. இது 12-ஆம் நூற்றாண்டிலெழுதப் பெற்றது. இதிற் கூறப்பட்டுள்ள கவிஞரனைவரும் கி. பி. 11-ஆம் நூற்றாண்டுக்கு முற்பட்டவர்கள். இதன்கண் இன்பம், ஒழுக்கம், அரசியல் நீதிகள் முதலியனபற்றிய செய்யுட்கள் தொகுக்கப் பெற்றுள்ளன. இதுவே இப்பொழுது அகப்படும் வடமொழித் தொகைநூல்களெல்லாவற்றுள்ளும் காலத்தால் முந்தியது என்று கொள்ளற்குரியது.

வடமொழித் தொகை நூல்களின் தோற்றம்

குலசேகர ஸூக்தி ரத்நஹாரம் என்பது காலிங்கராயனென்பவனால் தொகுக்கப்பெற்றது. இக்காலிங்கராயன் கலிங்கத்துப் பரணியில் குறிப்பிடப்பட்ட கருணாகரத் தொண்டைமான் என்றும், முதற் குலோத்துங்கனே குலசேகரனென்று குறிக்கப்பட்டுள்ளானென்றும், இது 'வாழி சோழ குலசேகரன்' என்ற பரணித் தொடரால் ஆதரிக்கப்படுகிறதென்றும், காலிங்கராயனது சாஸனத்தில் அவன் அருளாகரன் என வழங்கப் படுகிறானென்றும் திருவிதாங்கூர்ச் சாஸனவிலாகாத்

தலைவராகச் சிலகாலம் இருந்த ஸ்ரீ A. S. இராமநாதையரவர்கள் எழுதியுள்ளார்கள். இதனை ஸ்ரீ மு. இராகவையங்காரவர்கள் செந்தமிழில் (23-ஆம் தொகுதி, பக். 299) மறுத்தெழுதியிருக்கின்றார்கள்.

பரணி கொண்டாடும் பேறுவாய்ந்த தமிழ்ப் பெருவீரனொருவன் இவ்வடமொழித் தொகுதிநூலைத் தொகுத்தானென்பது உண்மையாதல் சாலுமோ என்ற ஐயப்பாடு நிகழ்தல் இயல்பே. இதன் உண்மையெவ்வாறாயினும், இத்தொகைநூல் அறம், பொருள், இன்பம், வீடு என்னும் உறுதிப்பொருள்கள் பற்றி வகுக்கப்பட்டுள்ளது என்பது இங்கே கருதத் தக்கது.

**ஸுபாஷித முக்தாவலி** என்பது கி. பி. 1275-ல் தொகுக்கப் பெற்றது. இதன் ஸங்கிரஹம் ஒன்றும் விரிந்தநூல் ஒன்றும் உள்ளன. செல்வம், ஊழ், இன்பம் முதலியன பற்றிய செய்யுட்கள் இதன்கண் அடங்கியுள்ளன.

**சார்ங்கதர பத்ததி** என்பது கி. பி. 1363-ல் தொகுக்கப் பெற்றது. இதன்கண் 163 அத்தியாயங்களும் 4689 சுலோகங்களும் உள்ளன.

ஸுபாஷித ஸுதாநிதி என்பது வேதபாஷ்யம் இயற்றிய ஸாயனரால் கி. பி. 14-ஆம் நூற்றாண்டில் இயற்றப் பெற்றது.

இவ்வடமொழித் தொகைநூல்கள்* கால வொற்றுமை கருதி இங்கே தரப்பட்டன. இவையும் வடமொழி இலக்கியங்கள் செழிப்புற்றுப் பெருகியபின்னரே தோன்றியனவாதல் தெளிவாம். பொருட்பாகுபாட்டினும், அதிகார அமைப்பினும், பொருள் விளக்கத்தினும், இவற்றிற்கும் புறத்திரட்டிற்கும் நெருங்கிய வொற்றுமை காணப்படுகின்றது. இது பின் வருவனவற்றால் தெளிவாகும்.

---

*ஆசிரியர் பலரால் இயற்றப்பெற்ற செய்யுட்களை ஒருசேரத் தொகுத்த தொகையைக் 'கோசம்' என்றும், ஆசிரியரொருவரே இயற்றிய பல செய்யுட்களைத் தொகுத்த தொகையை 'ஸங்காதம்' என்றும் தண்டியாசிரியர் தமது காவ்யாதர்சத்திற் கூறினர். தமிழ்த் தண்டியலங்காரமும் 'தொகைநிலைச் செய்யுள் தோன்றக் கூறின் - ஒருவ னுரைத்தவும் பல்லோர் பகர்ந்தவும் - பொருளிடங் காலந் தொழிலென நான்கினும் - பாட்டினு மளவினுங் கூட்டிய வாகும்' எனக் கூறுகின்றது.

# II

தமிழிலக்கண நூலோர் 'அறம் பொருளின்பம் வீடடைதல் நூற்பயனே' என்று விதி அமைத்திருக்கின்றனர். நூற்பயன் இந்நான்காயினும், நூலுட் கூறப்படுவன வீடொழிந்த ஏனை மூன்றுமேயாம் என்பது பெரியோர் கொள்கை. இக்கொள்கைக்கு 'வீடென்பது சிந்தையு மொழியுஞ் செல்லா நிலைமைத் தாகலின், துறவறமாகிய காரண வகையாற் கூறப்படுவதல்லது இலக்கண வகையாற் கூறப்படாமையின்' எனக் காரணங் காட்டுவர் பரிமேலழகர். வீடொழிந்த ஏனை மூன்றனையும் 'த்ரிவர்க்கம்' என வழங்குவர் வடமொழியாளர்.

புறத்திரட்டு வள்ளுவரது முப்பாலைப் பின் பற்றியது

இம்மூன்று உறுதிப் பொருள்களையும் அடிப்படையாகக் கொண்ட பாகுபாடு சங்ககாலந் தொட்டே ஆன்றோ ராட்சியிலுள்ள தென்பதற்குத் தக்க சான்றுகள் உள்ளன. 'அறனும் பொருளும் இன்பமு மூன்றும் ஆற்றும் பெரும' என்பது புறம் (28). இப் பாகுபாட்டினையே 'புறத்திரட்டு' என்ற தொகைநூலும்[1] மேற்கொண்டுள்ளது. இவ்வாறு கொள்ளுதற்கு இம்மூன்று பொருள்களையும் கூறுவதாய், காலத்தால் மிக முற்பட்டதாய், பெருமையால் தலைசிறந்ததாய் விளங்கிய ஒரு தமிழ்ப்பெருநூலே காரணமாயிருந்தது.

முப்பாலின் பெருமை

இங்கே குறிப்பிடும் நூல் இன்னதென்பது எளிதில் ஊகிக்கக் கூடியதே. அதுதான் நமது ஒப்புயர்வற்ற முப்பாலாகும். பண்டைக் காலத்துப் பெருநூல்களுள்ளே இம்முப்பாலைப் போலத் தமிழ் மக்களது உள்ளத்தைக் கொள்ளைகொண்டது பிறிதொன்றும் இல்லை யென்பதை யாவரும் அறிவர். இந்நூல் எவ்வகையினருக்கும் எவ்வகை நிலையினும் துணைநின்றுதவும் அறிவுரைக் களஞ்சியம்; ஒவ்வொரு குறளும் தனித்தனியே செப்பஞ் செய்யப் பெற்றதோர் அரும்பெறல் மணியாகும். ஓத இனிதாயும், கேட்க இனிதாயும், உணர இனிதாயும் உள்ளது இத்தெய்விகப் பெருநூல். 'தோன்றிற் புகழொடு தோன்றுக' என்னும் அருமைத் திருக்குறள் முப்பாலுக்குப் பெரிதும் பொருந்துவதொன்றாம். பெரும் புலவர்கள் எனக் கருதத்தகும் ஆசிரியர்கள் பலரும் இந்நூலை யெடுத்

---

1. 'புறநானூற்றுப் பிரதியொன்றன் தொடக்கத்தில் 'அறநிலை' என்று வரையப் பெற்றிருந்தது. அப்படியே பொருள்நிலை, இன்பநிலை யென்ற பகுதிகள் எந்த எந்தப் பாடலிலிருந்து தொடங்குமோவென்று தேடிப்பார்த்ததில் ஒரு பிரதியிலும் கிடைக்கவில்லை. ஆனாலும், இந்நூல் அறநிலை, பொருள்நிலை, இன்பநிலை என்னும் மூன்று பகுதிகளாகப் பகுக்கப் பெற்றிருக்க வேண்டுமென்பது இதனால் ஊகித்தறியப் படுகின்றது.'

—புறநானூறு, இரண்டாம் பதிப்பின் முகவுரை.

தாண்டுள்ளமை நோக்கினால், இது தோன்றிய காலந்தொட்டுப் பெரும் புகழ்பெற்று நிலவிவருகின்றமை தெளிவாம்.

நிறைமொழி மாந்த ராணையிற் கிளந்த
மறைமொழி தானே மந்திர மென்ப (பொருள், 490)

என்ற தொல்காப்பியச் சூத்திரமும்,

நிறைமொழி மாந்தர் பெருமை நிலத்து
மறைமொழி காட்டி விடும் (குறள், 28)

என்ற திருக்குறளும் எதனை யெது பின்பற்றியதென வரையறுத்துணர முடியாதபடி நம்மை மயக்குகின்றன.

நாடி நட்பி னல்லது
நட்டு நாடார்தம் மொட்டியோர் திறத்தே

என்ற நற்றிணைச் செய்யுளின் (32) அடிகளும்

நாடாது நட்டலிற் கேடில்லை நட்டபின்
வீடில்லை நட்பாள் பவர்க்கு (குறள், 791)

என்ற திருக்குறளும் தம்முட் பெரிதும் ஒத்தியல்கின்றன.

தெய்வந் தொழாஅள் கொழுநற் றொழுவாளை
(XXIII, இறுதி வெண்பா)

என்ற சிலப்பதிகார அடியும்,

தெய்வந் தொழாஅள் கொழுநற் றொழுதெழுவாள்
பெய்யெனப் பெய்யும் பெருமழை யென்றவப்
பொய்யில் புலவன் பொருளுரை தேறாய் (XXII, 59-61)

என்ற மணிமேகலை யடிகளும் குறளினையும் அதனாசிரியரையும் தக்கவாறு போற்றிப் பாராட்டுகின்றன.

சூளாமணியை எடுத்துக்கொள்க. அதன்கண்,

இகழ்ச்சி யிற்கெடு வார்களை யெண்ணுக
மகிழ்ச்சி யுண்மன மைந்துறும் போதெனப்
புகழ்ச்சி நூலுட் புகன்றனர் பூவினுட்
டிகழ்ச்சி சென்றசெம் பொன்முடி மைந்தனே (சீய. 56)

என வந்துள்ள செய்யுள்,

இகழ்ச்சியிற் கெட்டாரை யுள்ளுக தாந்தம்
மகிழ்ச்சியின் மைந்துறும் போது (குறள், 539)

என்னுந் திருக்குறளைக் கருதியதாகும்.

பஞ்சகாவியங்களுள் ஒன்றாகக் கருதப்படுவதும் இப்பொழுது இறந்துவிட்டதுமான வளையாபதியில்,

மற்றுந் தொடர்ப்பா டெவன்கொல் பிறப்பறுக்க
லுற்றார்க் குடம்பு மிகையவை யுள்வழிப்
பற்று வினையாய்ப் பலபல யோனிக
ளற்று யுழலு மறுத்தற் கரிதே

எனவொரு செய்யுள் உளதாகப் புறத்திரட்டினால் அறிகின்றோம். இதன் கண் திருக்குறளொன்று வடிவு சிதையாது அப்படியே வந்துள்ளமை காணலாம்.

ஊரவர் கவ்வை யெருவிட் டன்னைசொல் நீர்படுத்து (5, 3, 4)

என்ற திருவாய்மொழி

ஊரவர் கவ்வை யெருவாக அன்னைசொல்
நீராக நீளுமிந் நோய்

என்ற திருக்குறளை உட்கொண்டுள்ளமை தெளிவு.

கண்டுகேட் டுண்டுயிர்த் துற்றறியு மைம்புலனும்
ஒண்டொடி கண்ணே யுளவென்று—பண்டையோர்
கட்டுரையை மேம்படுத்தாள்

என்று வரும் ஆதியுலாவடிகளிற் சேரமான் பெருமாள் நாயனார் ஓர் திருக்குறளை அமைத்திருக்கின்றனர்.

தொழுததங் கையி னுள்ளுந் துறுமுடி யகத்துஞ் சோர
அழுதகண் ணீரி னுள்ளு மணிகலத் தகத்து மாய்ந்து
பழுதுகண் ணரிந்து கொல்லும் படையுட ௌடுங்கும் பற்று
தொழிகயார் கண்ணுந் தேற்றந் தெளிகுற்றார் விளிகுற்றாரே
(சிந்தா. 1891)

என்ற சிந்தாமணிச் செய்யுளில்

தொழுதகை யுள்ளும் படையொடுங்கும் ஒன்னார்
அழுதகண் ணீரு மனைத்து

என்ற திருக்குறள்மணி அழுத்தப்பெற்று விளங்குகின்றமை காணலாம்.

கொடுப்பது விலக்குகொடி யோர்தமது சுற்றம்
உடுப்பதுவு முண்பதுவு மின்றியொழி யுங்காண் (பால. வேள்வி. 18)

என்று கம்பர் தமது இராமாவதாரத்திற் கூறியது

கொடுப்ப தழுக்கறுப்பான் சுற்ற முடுப்பதூஉம்
உண்பதூஉ மின்றிக் கெடும்

என்ற வள்ளுவரது பொய்யாமொழியை மேற்கொண்ட தென்பது தெள்ளிதிற் புலனும்.

பெரும்புலவர்கள் திருக்குறளை யெடுத்தாண்டதனோடு அதன் பெருமை அமைந்துவிடவில்லை. குறட்கருத்துக்களைச் சரிதங்களால் உதாகரித்தும், மிகச் சிறந்தனவாகக் கருதியனவற்றைப் பாட்டுடைத்

தலைவனொருவனை விளித்து அவன் மனங்கொள்ளும்வண்ணம் உணர்த்தியும், வெண்பா, கலித்துறை, விருத்தமுதலிய பாவகையில் நூல்களியற்றித் தமிழறிஞர் இப்பெருநூலை அநுபவித்து வந்தனர். இத்தகைய சிறு நூல்களாகிய தினகர வெண்பா, சோமேசர் முதுமொழி வெண்பா, சிவசிவ வெண்பா, திருப்புல்லாணி மாலை முதலியன தமிழ் மக்களாற் பாராட்டப்பட்டனவேயாகும்.

இங்ஙனமாக, தோன்றிய காலந்தொட்டு இன்றுவரை கற்றோர் பலராலும் ஒருங்கு போற்றப்பட்டு, பல தேயத்து அறிஞர்களாலும் மொழிபெயர்க்கப்பட்டு நிலவி வருகின்ற திருக்குறள் நூலைப் பின்பற்றிப் புறத்திரட்டு அமைக்கப்பட்டதென்பதில் வியப்பு யாதுமில்லை.

நூலின் பெரும் பகுப்புக்களில் மாத்திரமன்றிச் சிறு பகுப்புக்களினும், அஃதாவது அதிகாரவடைவினும், குறளாசிரியர் வகுத்த நெறியினையே புறத்திரட்டும் பின்பற்றிச் செல்கின்றது. திருக்குறளில் அறத்துப்பால் பொருட்பால்களை யெடுத்துக்கொள்வோமாயின், அவற்றின்கண்ணே 108 அதிகாரங்கள் உள்ளன. புறத்திரட்டில் புறத்திணைபற்றி வகுத்த பகுதியை நீக்கி ஏனையவற்றைக் கணக்கிடின், 108 அதிகாரங்கள் உள்ளன. இருநூல்களினும் அதிகாரங்களை அமைத்துள்ள வைப்பு முறையிலும் சிறிதும் வேறுபாடில்லை. ஆனால் குறளிற் காணும் அதிகாரங்களுள் 14 அதிகாரங்கள் புறத்திரட்டிற் காணப்பெறவில்லை. இங்ஙனமே புறத்திரட்டிற் காணும் அதிகாரங்களுள் 15 அதிகாரங்கள் திருக்குறளிற் காணப்பெறவில்லை. ஒரு நூலில் இல்லாத அதிகாரங்களை மற்றை நூலின் மற்றை அதிகாரங்களுள் அடக்கிக் காட்ட இயலும். உதாரணமாக, செல்வநிலையாமை, இளமை நிலையாமை, யாக்கைநிலையாமை, பல்வகை நிலையாமை என நான்கு அதிகாரங்கள் புறத்திரட்டில் உள்ளன. இவை திருக்குறளிலுள்ள 'நிலையாமை' என்னும் ஓரதிகாரத்தில் அமைவனவே. வினைத்தூய்மை, வினைத்திட்பம் என்று இரண்டு அதிகாரங்கள் திருக்குறளில் உள்ளன. இவை புறத்திரட்டின் 'வினைசெயல்வகை' என்னும் ஓரதிகாரத்தில் அமையத்தக்கனவே. இங்ஙனமே பெரும்பாலும் உள்ளன. அமைப்பு முறையில் மாத்திரமன்றிப் பொருள் விளக்கு நெறியினும் இந்நூல் திருக்குறளைப் பின்பற்றி அதனைப் பூர்த்தி செய்கின்றது. திருக்குறள் மேற்கொண்ட பால், அதிகார அடைவுகளைத் தானும் பெற்று, சங்கத்தொகைநூல், குறளொழிந்த ஏனைய கீழ்க்கணக்கு நீதிநூல்கள், இதிகாசங்கள், காவியங்கள், சமயத்திருமுறைக்கும் நூல்கள் முதலியவற்றினின்றும் ஆராய்ந்தெடுத்த செய்யுட்களை ஏற்ற பெற்றி ஏன்றுகொண்டு அமைந்துள்ளது புறத்திரட்டு என்னும் இப்பெருநூல். திருக்குறளிலுள்ள அறிவுச் செல்வத்தை மேலும் பெருக்குவதற்கெனத்

**புறத்திரட்டில் முதலிரு பால்களின் பொருளமைதி**

தொகுக்கப்பெற்ற தமிழ்ச் செல்வமென்று இந்நூலைக் கூறின், அது சாலவும் பொருந்துவதேயாம்.

இங்ஙனமமைந்த நூலுக்கு 'நீதித் திரட்டு' எனப் பெயரிடுதல் பொருந்துமெனச் சிலர் கருதலாம். இப்பெயர் சென்னை அரசாங்க நூல் நிலயத்திலுள்ள கடிதப்பிரதியிற் காணப்படுவதும் நாம் கவனித்தற் குரியது. காலஞ் சென்ற திரு. த. கனகசுந்தரம் பிள்ளையவர்கட் குரியதும் அவர்களுடைய குமாரரால் எனக்கு உதவப்பட்டதும் ஆகிய ஏட்டுப்பிரதியின் மேலேயுள்ள வெள்ளேட்டில் 'நீதித்திரட்டு' என இக்காலத்தொருவரால் எழுதப்பட்டுள்ளமையும் உண்மையே. ஆனால் நீதித்திரட்டு என்பது நூலிற்கு உரிய பெயரன்று; புறத்திரட்டு என்பதே பெயர். இப்பெயர் மதுரைத் தமிழ்ச்சங்கத்துப் பிரதியிலும், இலக்கண விளக்கம் வைத்தியநாத தேசிகர் பரம்பரையார் வீட்டுப் பிரதியிலும், தஞ்சை சரபோஜி மகாராஜா நூல்நிலயத்துப் பிரதியிலும் காணப்படுவதேயாகும். மகாமகோபாத்தியாய டாக்டர் உ. வே. சாமிநாதையரவர்களும் 'புறத்திரட்டு' என்பதனையே நூற்பெயராகப் பலவிடங்களிலும் குறித்துள்ளார்கள் (பதிற்றுப்பத்து: முகவுரை பார்க்க). அன்றியும் 'நீதி' என்பது 'புறம்' என்ற பெரியதொரு பாகுபாட்டில் அடங்கும்; 'புறம்' என்றதன்கண் அடங்குவனவெல்லாம் 'நீதி' என்பதன்கண் அடங்கமாட்டா. கைக்கிளை, பெருந்திணை யென்னும் பகுதிகளும், வெட்சி முதலிய புறத்திணைக்குரிய துறைகளும் நீதியின்கண் எவ்வகையானும் அடங்கா. இக்காரணத்தால், புறத்திரட்டென்பதே நூற்பெயரென்பது தெளிவாம்.

**பொருளமைதியால் நேர்ந்த பெயர் மருட்சி**

இருவகைத் திணைகளுள் புறத்திணைத் துறைகளை இத்திரட்டின்கண் தொகுத்திருக்கும் முறையும் சங்க காலத்துச் சான்றோர்கள் மேற்கொண்டுள்ள கருத்தைத் தழுவியதேயாம்:

**புறப் பொருளமைதி**

வெட்சி நிரைகவர்தல் மீட்டல் கரந்தையாம்
வட்கார்மேற் செல்வது வஞ்சியாம்—உட்கா
தெதிரூன்றல் காஞ்சி யெயில்காத்தல் நொச்சி
அதுவளைத்த லாகு முழிஞை—அதிரப்
பொருவது தும்பையாம் போர்க்களத்து மிக்கோர்
செருவென் றதுவாகை யாம்.

இம்முறையினையே தழுவி 'நிரைகோடல்' முதல் 'வாழ்த்து' முடிய 23 துறைகள் அதிகாரங்களாக வகுக்கப்பட்டிருக்கின்றன.

இனிக் காமத்துப்பாலினைக் குறித்துச் சில கூறவேண்டுவனவுள. எனக்குக் கிடைத்த புறத்திரட்டுப் பிரதிகளுள் ஒன்றிலேனும் இப்பகுதி

காணப்பெறவில்லை. ஆனால் என்னிடமிருக்கும் புறத்திரட்டுச் சுருக்கம் என்ற நூற்பிரதிகளுள் ஒன்றொழிய ஏனைப் பிரதிகளனைத்திலும் இப்பகுதியுள்ளது. சுருக்கத்தின்கண் உள்ள இப் பகுதி விரிந்த நூலாகிய புறத்திரட்டின் கண்ணும் உளதாயிருத்தல் வேண்டும். இப்பொழுது காணப்படாததன் காரணம் ஒருவாற்றானும் புலப்படவில்லை. புறப்பொருட்பகுதி வாழ்த்து என்னும் அதிகாரத்தோடு முடிதல்கண்டு அதனையே நூலிறுதியெனமயங்கிப் பின்னுள்ள பகுதி வேறொரு நூலென வெண்ணி நாளடைவில் இப்பகுதியை நம் முன்னோர் இழந்துவிட்டதாகக் கருதுதலும் கூடும்.

**காமத்துப் பால் பிரதிகளிற் காணப்பெறமை**

புறத்திரட்டுச் சுருக்கத்திலுள்ள காமத்துப்பாற் செய்யுட்களைக் குறித்துப் பிறிதொன்று கவனிக்கத்தக்கது. இச்செய்யுட்களனைத்தும் முத்தொள்ளாயிர மென்னும் அரிய பேரிலக்கியத்தைச் சார்ந்தனவாகும். ‘ அங்கதப் பாட்டவற் றளவோ டொக்கும்’ (தொல். செய்யுள். 160) என்பதனுரையில் ‘கைக்கிளைச் செய்யுள் முத்தொள்ளாயிரத்துட் பலவாயினும்’ எனப் பேராசிரியர் கூறுதலால், சுட்டியொருவர் பெயர்கொண்ட பாடாண்டிணைப் புறப்புறக் கைக்கிளைச்செய்யுட்கள் இந்நூலின்கண் மிகுதியாயிருத்தல்வேண்டும். இவ்வகைக்கைக்கிளைச் செய்யுட்களில் 65 செய்யுட்கள் புறத்திரட்டுச் சுருக்கத்திலுள்ளன. காமத்துப்பாற் குரியவாயும் புறத்தோடு இயைபுடையவாயு முள்ள ஏனைய பகுதிச் செய்யுட்களும் புறத்திரட்டில் தொகுக்கப் பெற்றிருத்தல் கூடும்.

**புறத்திரட்டுச் சுருக்கத்திற் காமத்துப் பால் முழுதும் முத் தொள்ளாயிரச் செய்யுட்களே**

புறத்திரட்டிலுள்ள முத்தொள்ளாயிரத்துச் செய்யுட்களனைத்தையும் ஒருசேரத் தொகுத்து 1905-ம் ஆண்டில் ஸ்ரீ ரா. இராகவையங்காரவர்கள் செந்தமிழ்ப் பிரசுரமாக வெளியிட்டுள்ளார்கள். அவர்கள் ‘இன்பப்பகுதிபற்றிய இன்பொருட்பாடல்கள் சென்னையிலிருக்கும் தமிழ்ப்பண்டிதர் ப்ரஹ்மஸ்ரீ வேங்கடராமய்யங்காரவர்களுடைய புறத்திரட்டுக் காமத்துப்பால் ஏட்டிலும் மதுரைத் தமிழ்ச்சங்கத்துச் சைவநூற் பரிசோதகர் ஸ்ரீமத் ரா. சுப்பிரமணியக் கவிராய ரவர்களுடைய புறத்திரட்டேட்டிலும் இருந்தன’ என்று முகவுரையில் எழுதியிருக்கின்றார்கள். இவ்வேடுகள் புறத்திரட்டுச் சுருக்கப் பிரதிகளேயென ஸ்ரீ ஐயங்காரவர்கள் எனக்குத் தெரிவித்தார்கள்.

இப்பொழுது அறத்துப்பாலில் 45 அதிகாரங்களும் 473 செய்யுட்களும், பொருட்பாலில் 86 அதிகாரங்களும் 1032 செய்யுட்களும் உள்ளன. புறத்திரட்டுச் சுருக்கத்திலுள்ள காமத்துப்பாலிற் கைக்கிளை

பற்றி 65 செய்யுட்கள் காணப்படுகின்றனவென முன்னே கூறப்பட்டது. இவற்றையுங் கூட்டின் 1570 செய்யுட்கள் புறத்திரட்டி னுள்ளன.

**புறத்திரட்டில் மூலநூல்கள் குறிக்கப்பட்டுள்ளமை**

புறத்திரட்டின் அமைப்பிற் காணப்படும் ஓர் அரிய செய்தி இங்கே கூறுதற்குரியது. இதன்கணுள்ள செய்யுட்கள் இன்னநூலைச் சார்ந்தன வென வுணர்த்தப்படுகின்றன. இதனால் இக்காலத்து இறந்துபட்ட பல நூல்களினின்றும் பலசெய்யுட்கள் கிடைக்கின்றன. இச்செய்தி தமிழிலக்கிய ஆராய்ச்சியாளர்க்கு எத்துணை யளவாகப் பயன்படு மென்பது கூறவேண்டா. பண்டையுரையாசிரியர்கள் தமதுஉரைகளில் எடுத்தாண்டுள்ள மேற்கோள்கள் இன்னநூலைச் சார்ந்தனவென்று பெரும்பாலும் உணர்த்தாமலே எழுதிச்செல்வர். இவ்வழக்கத்திற்கு மாறாக, புறத்திரட்டைத் தொகுத்தவர் மூலநூல்களைக் குறித்திருப்பது மிகவும் பாராட்டத்தக்கது. குறித்துச் சொல்லுமுறையும் கவனிக்கற்பாலது. ஓர் அதிகாரத்தில் ஒரு நூலிலிருந்து ஒரு செய்யுள் தரப்பட்டிருக்குமாயின், அச்செய்யுளுக்குப்பின் அந்நூற்பெயர் காணப்படும்; பல செய்யுட்கள் தரப்பட்டிருக்குமாயின், இறுதிச்செய்யுளுக்குப்பின் நூற்பெயர் குறிக்கப்படும். நூற்பெயருக்குப் பின்வருவது வேறுநூலைச் சார்ந்த செய்யுளாகவிருக்கும். இம்முறையைப்பின்பற்றியே புறத்திரட்டு முழுவதிலும் மூலநூல்கள் காட்டப்பட்டுள்ளன. ஒரு சிலவிடங்களில் நூற்பெயர்கள் தவறாகவுள்ளன வென்பது உண்மை. ஒருசில்லிடங்களில் நூற்பெயர்கள் வெவ்வேறாக மாறுபட்டும் பிரதிகளில் உள்ளன. இக் குழறுபடைகள் பிரதிசெய்தோர்களால் நேர்ந்திருக்க வேண்டுமென்று கொள்ளுதலே தகுதியாவது. 1570 செய்யுட்களுள்ள இப்பெருநூலில் 13 செய்யுட்களே இப்பொழுது மூலம் விளங்காதிருப்பன.

**செய்யுட்களின் வைப்புமுறை**

இந்நூலகத்துக் கோக்கப்பட்டுள்ள செய்யுட்களின் வைப்புமுறையும் இங்கே குறிக்கத்தக்கது. வெண்பா, விருத்தம், அகவல் என்ற முறையிலே இத்தொகை செய்தார் செய்யுட்களை அமைத்திருக்கின்றனர். இந்நெறிக்கு விலக்காகவும் ஒரு சில்லிடங்கள் உள்ளன. இவ்விடங்கள் இப்பதிப்பில் அங்கங்கே காட்டப்பட்டிருக்கின்றன. முறைபிறழ்தற்குக் காரணம் யாதென்பது உய்த்துணர வேண்டுவதாயுள்ளது. நூலைப் பிரதிசெய்தோர்கள் முதலில் எழுதுதற்குத் தவறிய செய்யுளைப் பிற்படச் சேர்த்திருக்கலாம்; அல்லது பொருத்தமுடையதாகத் தமக்குத் தோற்றிய செய்யுளை வைப்புமுறை நோக்காது அவர்கள் இடைப்பெய்திருக்கலாம். இஃது எவ்வாறாயினும், செய்யுட்களை அமைத்துள்ள முறை மேற்குறித்ததே யென்பது 'அறத்துப்பால், பொருட்பால், காமத்துப்பால் வகை ௩-க்கு வெண்பா விருத்தம் பஃறொடையாசிரியம் அகவற்பா ௭௫௰௩' எனப்

புறத்திரட்டுச் சுருக்கத்தின் இறுதியிற் காணும் குறிப்பால் நன்கறியலாகும்.

புறத்திரட்டுச் சுருக்கத்தைப்பற்றி மேலே கூறினேன். இச்சுருக்கம் இரண்டு விஷயங்களை நமக்குப் புலப்படுத்துகின்றது. முதலாவது, புறத்திரட்டு என்ற தொகைநூல் தமிழ் அறிஞர்களது வேண்டற்பா டொன்றிற்குப் பயன்படுவதாய் அவர்களுக்குத் திருப்தியளித்தது என்பதாம். திருக்குறள் என்ற பெருநூல் தமிழ்மாணவ ரனைவராலும் ஓதியுணரப்பட்டு மிகவும் போற்றப்பட்டதாம். இதனளவு பிறநூல்கள் ஓதப்பட்டனவென்று எண்ணுதல் ஏலாது. இப் பிறநூல்களினின்றும் சொல்நயத்தாலும் கருத்து நயத்தாலும் இன்பந்தரவல்ல செய்யுட்கள் தொகுக்கப்பெற்ற நூலொன்றைப் பெறவேண்டுமென்று பலரும் அவாக்கொள்ளுதல் இயல்பே. இவ் அவாவினைப் பூர்த்தி செய்தற்கே 'புறத்திரட்டு' என்ற தொகைநூல் எழுந்ததென்னலாம்.

**புறத்திரட்டுச் சுருக்கம்**

இத்தொகைநூல் பலவிடங்களிலும் பிரசார மெய்தலாயிற்று. பலரும் இதனை விரும்பிக் கற்கத் தொடங்கினர். இங்ஙனம் இது தமிழ் நாடெங்கும் பரவியுள்ள செய்தியே புறத்திரட்டுச் சுருக்கத்தால் நாம் இரண்டாவதாக உணர்வது. பலரும் விரும்பிக் கற்றுவந்த நிலையில் சில குறைகள் புலப்பட்டன. புறத்திரட்டு அடிநிமிர்ந்து சென்ற செய்யுட்கள் பலவற்றையுடைய பெருநூலாய் முடிந்தது. திருக்குறளிலிருந்து ஒரு செய்யுளேனும் இத்திரட்டின்கண் காணப்பெறவில்லை. பல நூல்களைக் கற்க விரும்பாதவர்க்கு இவைகள் பெருங்குறைகளாகவே தோன்றின. எனவே, இதற்கொரு சுருக்கம் வேண்டுவது இன்றியமையா தாயிற்று. இங்ஙன மெழுந்த புறத்திரட்டுச் சுருக்கமொன்று சென்னை அரசாங்க நூல்நிலயத்தின்கண் உள்ளது. இதன்கண் அறத்துப்பாலில் 195 செய்யுட்களும் பொருட்பாலில் 418 செய்யுட்களும் உள்ளன; மொத்தச் செய்யுள் 613. இப்பிரதியிலே காமத்துப்பால் என்ற பகுதி இல்லை.

இப்பிரதியைத் தவிர வேறொருவகையான புறத்திரட்டுச் சுருக்கப் பிரதியும் உள்ளது. இதன்கண் மேலைச் சுருக்கத்திலுள்ள செய்யுட்களோடு திருக்குறட் செய்யுட்களும் திருமலை வெண்பாச் செய்யுட்களும் காணப்படுகின்றன. ஓர் ஏட்டுப்பிரதியின் இறுதியில் 'அறத்துப்பால், பொருட்பால், காமத்துப்பால் வகை ௩௬க்கு வெண்பா விருத்தம் பஃறொடை ஆசிரியம் அகவற்பா எ௰௩ புறத்திரட்டுச் சுருக்கம் முற்றும். உ. சிவகடாட்சம் உண்டாகுக. உ ௲௩௱௰அ௵ ஸ்ரீமுக௵ சித்திரைமீ˚ உகஉ திருநெல்வேலியில் எழுதிமுடிந்தது உ' என்று காணப்படுகின்றது. இப்பிரதி திருநெல்வேலியில் எழுதப்பட்டுள்ள

மையால் ' திருமலை வெண்பா ' என்றநூல் அந்தப்பிரதேசத்தில் எழுதப் பெற்றதா யிருத்தல் வேண்டும். காவை வடமலையப்ப பிள்ளைய னவர்களைப் பாட்டுடைத் தலைவராகக் கொண்டு பாடப்பெற்ற வடமலை வெண்பா, நெல்லைப் பிரதேசத்தில் மிகவும் பிரசித்தமானதே. அப் பிள்ளையனவர்களின் புதல்வரும் திருநெல்வேலிச் சீமையை கி. பி. 1663 முதல் 1682 வரையில் நிர்வகித்து வந்தவருமாகிய திருமலைக்கொழுந்துப் பிள்ளையனவர்கள் மீது இத்திருமலைவெண்பா இயற்றப்பெற்றிருத்தல் வேண்டும். பாட்டுடைத் தலைவர் எத்துணைச் சிறந்தவரா யிருப்பினும் அவர்மீது இயற்றப்பட்ட திருமலைவெண்பாவை அத்துணைச் சிறந்த நூலாகக் கொள்ளுதற்கு இடமின்று. அதினின்றும் எடுத்த ஒரு செய்யுளை நோக்கி இவ் வுண்மையைத் தெரிந்துகொள்ளலாம் :

தூசு துரோபதைபாற் சோர்வுகண்டும் பாண்டவர்கோன்
மாசினம்விட் டான்திரும லைக்கொழுந்தே—தேசுபெற
உள்ளிய வெல்லா முடனெய்து முள்ளத்தா
னுள்ளான் வெகுளி யெனின்.

இவ்விருவகைச் சுருக்கநூற் பிரதிகட்கும் மேற்புறமாகத் தற்காலத் துள்ளார்கள் எழுதிவைத்துள்ள பெயரானது இந்நூற் பிரதி எவ்வாறு தமிழ்மக்களுக்குப் பயன்பட்டு வந்ததென்பதை நன்றாக உணர்த்துகின் றது. இப்பெயர் 'பிரசங்காபரணம்' என்பது. பிரசங்கம் புரிவதற்கு உதவும்படியாகத் தொகுத்த செய்யுட்களைக் கொண்டது இத்திரட்டு என்பது இப்பெயரை வழங்கத் தொடங்கியவர் கருத்தாகல் வேண்டும். சாமானிய மக்களுக்குப் புறத்திரட்டுச் சுருக்கம் என்ற பெயராற் பொருள் விளங்காமையினாலே மேற்சுட்டிய பெயரையே நூலுக்கு இட்டு வழங்கலாயினர். இன்றும் பிரசங்காபர ணம் என்பதுதான் உண்மைப் பெயரென்று மயங்குவாரும் உளர். இப்பெயரின் பொருளையும் அறிந்துகொள்ள மாட்டாது பிரசங்கபுரா ணம் என்று எழுதி வைத்தோரும் உளர்.

**புறத்திரட்டுச் சுருக்கம் பிரசங்காபரணம் என வழங்கியது**

இந்நூலின் காலத்தைக் குறித்துத் திட்டமாக யாதுங் கூறமுடிய வில்லை. என்னிடமுள்ள ஏட்டுப்பிரதிகள் இரண்டும் மிகப்பழையபிரதி களே. கால முதலியவற்றைத் தெரிவிக்குங் குறிப்பு அவற்றில் யாதுங் காணப்படவில்லை யெனினும், அவை உத்தேசமாக 200 ஆண்டுகட்கு முன்பு எழுதப் பட்டனவாகலாமென அவற்றின் நிலைமைநோக்கிக் கூறுதல் ஒருவாறு இய லும். மேற்கூறிய இருவகைப் புறத்திரட்டுச்சுருக்கங்களுள் ஒன்று 17-ம் நூற்றாண்டின் இடைப்பகுதியில் தோன்றியிருக்க வேண்டுமென்பது திருமலைக்கொழுந்துப் பிள்ளையனவர்களைப் பற்றியுள்ள செய்யுட்கள்

**புறத்திரட்டின் காலம்**

அதன்கண் கோக்கப்பெற்றிருத்தலால் அறியலாம். பிறிதொருவகைச் சுருக்கம் மேற்குறித்த சுருக்கத்திற்குச் சிலகாலமேனும் முந்தியதாதல் வேண்டும். எனவே, அது 17-ம் நூற்றுண்டின் தொடக்கத்தில் தோன்றியதாகக் கொள்ளலாம். ஆதலால் உத்தேசம் கி. பி. 1600-ல் புறத்திரட்டு நன்கு அறியப்பட்ட வோர் நூலாக விளங்கியிருத்தல் வேண்டும். ஒருநூல் நீண்டகாலமாகப் பிரசாரத்திலிருந்து அதன் பயன் பலராலும் நன்குணரப்பட்ட பின்னரே, அதற்கொரு சுருக்கந் தோன்றுதல் இயல்பாகும். இத்துணிபு பொருந்துவதேயென்பதற்குப் பிறிதொரு செய்தியும் உள்ளது. மதுரைத் தமிழ்ச் சங்கத்திலுள்ள புறத்திரட்டுப் பிரதியொன்றிற் கடவுள் வாழ்த்தில் குருகைமான்மியச் செய்யுட்கள் இரண்டு காணப்படுகின்றன. இவைகள் புறத்திரட்டிற் பிற்படச் சேர்க்கப் பட்டுள்ளனவென்று கொள்ளுதற்குத் தக்க நியாயம் உளது. குருகை மான்மியம் கொல்லம் 723-ல் (கி. பி. 1548) இயற்றப்பெற்றதென அதன் பதிகச் செய்யுளால் அறிகின்றோம். எனவே 16-ம் நூற்றுண்டின் முற்பகுதிக்குமுன்னரே புறத்திரட்டு என்றதொகைநூல் பிரசாரத்திலிருந்ததெனல் விளங்குகின்றது. புறத்திரட்டிலே வந்துள்ள நூல்களிற் காலத்தாற் பிற்பட்டது கம்பராமாயணமாகும். நளவெண்பாவிலிருந்து ஒரேயொருசெய்யுள் (550) காணப்படுகின்றது ; ஆனால் இதனைப் பாரதச் செய்யுளெனப் புறத்திரட்டுப் பிரதிகள் சில குறிக்கின்றன; பாரதச் செய்யுளைப் புகழேந்தியார் தமதுநூலகத்து எடுத்தாண்டு போற்றி யிருத்தலும் கூடும் ; இரும்பல் காஞ்சிச் செய்யுளொன்று (5) நளவெண்பாவிற் காணப்படுவதும் ஈண்டு நோக்கத் தக்கது ; ஆகவே நளவெண்பாவிலிருந்து இச்செய்யுள் எடுக்கப்பட்டதென ஒருதலையாகத் துணிதல் பொருந்தாது. கம்பர் தமது அரும்பெரும் காப்பியத்தை 12-ம் நூற்றுண்டின் பிற்பகுதியில் இயற்றினரென அறுதியிடப்படுகின்றது. எனவே நாம் ஆராய்ந்துவரும் இத்தொகைநூல் 13-ம் நூற்றுண்டிற்கும் 16-ம் நூற்றுண்டிற்கும் இடைப்பட்ட காலத்தில் அதாவது சுமார் 500 ஆண்டுகளுக்கு முன்பு தொகுக்கப்பெற்றிருக்கலாமெனக் கொள்ளுதல் தகும்.

இங்கே குறிப்பிட்ட காலம் வேறு சில காரணங்களாலும் வலியுறுகின்றது. இப்போது இறந்துபட்டனவாகக் கருதப்படும் குண்டலகேசி, வளையாபதி, முத்தொள்ளாயிரம், தகடூர் யாத்திரை முதலிய நூல்களினின்றும் பல செய்யுட்கள் இந்நூலின்கண் காணப்படுகின்றன. ஆதலால் அவை வழக்கிலிருந்த காலத்தில் இது தொகுக்கப்பெற்றதாகல் வேண்டும். மேலும் சூளாமணி, சிந்தாமணி, குண்டலகேசி, வளையாபதி, சாந்திபுராணம், மேருமந்தர புராணம் முதலியனவும் பல செய்யுட்களை இந்நூலிற்கு உதவியிருக்கின்றன. ஆதலால் பௌத்த நூல்களும் ஜைன நூல்களும் பயின்றுவந்த காலத்தில் இந்நூல் தொகுக்கப்பெற்றதெனக்

கொள்ளுதல் வேண்டும். இவ்விரண்டு செய்திகளையும் நோக்குமிடத்தும் மேலைமுடிவு பொருத்தமுடையதாகவே தோன்றுகிறது.

**புறத்திரட்டின் பின்னர் எழுந்த தொகை நூல்கள்**

கி. பி. 15-ம் நூற்றாண்டின் முற்பகுதியில் புறத்திரட்டு இயற்றப் பெற்றிருக்கலாமென்று மேலே கூறினேன். இக் காலத்திற்குப் பின்னர்த் தோன்றிய தொகை நூல்களைக் குறித்து ஒரு சிறிது நோக்குவோம். தொகை நூல்கள் இருவகையுள் தனிப்பாடல்களின் தொகுதியா யுள்ளனவற்றில் தமிழ் நாவலர் சரிதையை யாவரும் அறிவர். இதன்கண் புலவர்களொரு சிலர் சமயோசிதமாகப் பாடிய செய்யுட்கள் சந்தர்ப்ப விளக்கத்துடன் தரப்பட்டுள்ளன. இந்நூல் தோன்றியது ஏறக்குறைய 300 வருடங்கட்கு முன்பாகலாம். தமிழ் நாவலர் சரிதையைப்போன்ற பிறிதொரு நூல் அருந்தமிழ்த் திரட்டு என்பது. இது தஞ்சை சரஸ்வதி மஹால் நூல் நிலயத்துப் புத்தகப்பட்டிகை முதற்றொகுதியில் 272-ம் பக்கத்தில் விவரிக்கப்பட்டுள்ளது. இதில் காளமேகம், ஒட்டக்கூத்தர் முதலிய பல புலவர்கள் பல சமயங்களில் பாடிய தனிப்பாடல்கள் இருக்கின்றன. தஞ்சை நூல் நிலயத்தில் 'தனிப்பாடற்றிரட்டு' என்ற பெயருடன் எட்டு வெவ்வேறு நூல்களும் குறிக்கப்பட்டுள்ளன. இவையாவும் அருந் தமிழ்த்திரட்டுப் போன்றனவே. இவை தோன்றிய காலமுதலிய விவரங்கள் இப்போது அறிதற்கில்லை. தமிழ்ப்புலவர்களது சரித்திர ஆராய்ச்சிக்கு இந்நூல்கள் மிக இன்றியமையாதனவாகும். இவ்வகை நூலின் அருமையை யுணர்ந்து ஸ்ரீமான் பொன்னுசாமித் தேவரவர்கள் 'தனிப்பாடற்றிரட்டு' என்று வழங்கும் அழகிய தொகை நூலினைத் தொகுப்பித்தார்கள்.

பல நூல்களினின்றும் தொகுத்த திரட்டுக்களும் பல தோன்றலாயின. பன்னூற்றிரட்டு என்னும் பெயர் கொண்ட நூலொன்று தஞ்சை சரஸ் வதி மஹால் நூல் நிலயத்தில் உள்ளது. 'இதில் கம்பராமாயணம், பாரதம், புறநானூறு, சிலப்பதிகாரம், சிந்தாமணி, குறள், பழமொழி, நாலடியார், பட்டினத்தார் பாடல், நைடதம் முதலிய பல நூல்களினின்றும் தேர்ந் தெடுத்துத் திரட்டப்பட்ட செய்யுட்கள் இருக்கின்றன ; சிதிலமா யிருக்கிறது' என்று இந்நூல் நிலயத்துத் தமிழ்ப்பட்டிகை முதற் றொகுதியில் 278-ம் பக்கத்தில் விவரிக்கப்பட்டுளது. இப்பிரதியை யானே நேரிற்சென்று நோக்கியபொழுது பல நூல்கட்குரிய ஒற்றை யேடுகளை யொன்றாகச் சேர்த்துப் 'பன்னூற்றிரட்டு' எனப் பெயரிட்டு வைக்கப்பட்டுள்ளதெனத் தெரிந்தேன். பன்னூற்பா, சின்னூற்றிரட்டு என்ற இரண்டுநூல்கள் சென்னை அரசாங்க நூல்நிலயத்தின்கண்ணே உள்ளன. நம்முன்னோரது அறிவுரைக்களஞ்சியமாக விளங்கும் இவ்

வகை நூல்களின் அருமையை யுணர்ந்து ஸ்ரீமான் பாண்டித்துரைத் தேவரவர்கள் 'பன்னூற்றிரட்டு' என்ற பெயரால் நூலொன்று வெளியிட்டிருக்கிறார்கள்.

மேற்குறித்தனவேயன்றி வேறுவகையான தொகைநூல்களும் பிற்காலத்துத் தோன்றின. பலர்பேரிற் பல புலவர்கள் பாடிய வண்ணங்களைத் தொகுத்து 'வண்ணத்திரட்டு' எனப் பெயரிட்ட நூல்கள் சில வுள்ளன. பல கோவைப் பிரபந்தங்களினின்றும் செய்யுட்களைத் தொகுத்து, 'கோவைக்கொத்து' முதலியனவாகப் பெயரிட்ட நூல்கள் ஒருசில வுள்ளன. பலநூல்களிலுமுள்ள தோத்திரங்களைத் தொகுத்து, 'சிவபுராணுதி தோத்திர மஞ்சரி' முதலியவாகப் பெயரிட்ட ஒருசில நூல்கள் உள்ளன. சில சிற்றரசர்களையும் ஸம்ஸ்தானங்களையும் பற்றியனவாய் 'ஊற்றுமலைத் தனிப்பாடற்றிரட்டு' முதலியவாகப் பெயர் கொண்டெழுந்த ஒருசில நூல்களும் உள்ளன. கடவுள் வாழ்த்தியல், அறவியல், பொருளியல் எனப் பகுத்து, தமிழ்நாவலர் சரிதை முறையையும் தனிப்பாடற்றிரட்டு முறையையும் பின்பற்றி, இலக்கியசரித முதலியவற்றிற்குப் பயன்படவேண்டுமென்ற நோக்கத்துடன் அமைத்த 'பெருந்தொகை' என்னும் அரியதொகை நூலொன்றும் சென்னை லெக்ஸிகன் ஆபீஸ் தலைமைத் தமிழ்ப்பண்டிதர் ஸ்ரீ மு. இராகவையங்காரவர்களால் 1936-ல் வெளியிடப்பட்டுள்ளது.

நமது மொழியிலுள்ள தொகைநூல்கள் அனைத்தையும் இவ்வளவென இங்கே கணக்கிட்டு முடித்துக்கூறியதாக எண்ணுதல் தவறு. தஞ்சை சரஸ்வதி மஹால் நூல்நிலயத்தும், சென்னை அரசாங்க நூல்நிலயத்தும் உள்ள நூற்பட்டிகைகளையும் அச்சில் வெளிவந்துள்ள நூல்களையும் முக்கியமான ஆதாரமாகக்கொண்டே மேலை வரலாறு எழுதப்பெற்றுளது. மதுரைத் தமிழ்ச் சங்க நூல்நிலயத்துள்ள நூற்பட்டிகை அச்சில் உள்ளதேனும், அது தமிழாராய்ச்சியாளர்க்குப் பயன்படும்படி பிரசுரமாகவில்லை. பிற இடங்களிலுள்ள நூல்கள் இன்னவென அறிதற்கு எவ்வகையான வழியும் இருப்பதாகத் தோன்றவில்லை. தமிழ்நூற் பிரதிகளை நிலயங்களில் தொகுத்து வைப்பதற்கும் அவற்றின் உள்ளுறை முதலியன அடங்கிய நூற்பட்டிகைகள் வெளியிடுவதற்கும் அரசாங்கத்தார் முயற்சி செய்தல் அவசியமாகும். தமிழ்நூல்களைத் தொகுத்து வைத்திருப்போரும், அவற்றைத் தமிழறிஞர்கள் பிரதிசெய்து கொள்ளுதற்கு வசதியளிப்பாராயின் பல நூல்களும் அச்சில் வெளிவருதல் கூடும். தமிழ்ப்பணி ஆற்றுதலில் இதுவும் ஓர் சிறந்த முறையாகும்.

## III

தொகைநூல்களின் வகைகளைக் குறித்தும், புறத்திரட்டிற்கு முற்படத் தோன்றிய தொகைநூல்களைக் குறித்தும், புறத்திரட்டின் அமைப்பினைக் குறித்தும், அதற்குப் பிற்பட வெழுந்த தொகை நூல்களைக் குறித்தும் இதுகாறும் ஆராய்ந்தோம் இனி, புறத்திரட்டினுல் தமிழிலக்கியம் எவ்வாறு வளமடைந்துள்ளது என்பதனை ஆராய்தல்வேண்டும்.

புறத்திரட்டினுல் விளைந்த தமிழ் வளம்

முதலாவது பெயர்போலும் வேறுவழியாகக் கேள்வியுற்றிராத ஒரு சில நூல்களைப்பற்றிப் புறத்திரட்டினுல் அறிகின்றோம். ஆசிரியமாலை என்பது இவற்றுளொன்று. இந்நூலின்கணுள்ள 'குடிப்பிறப் புடுத்துப் பனுவல் சூடி' (புறத்திரட்டு, 827) என்ற செய்யுள் தொல்காப்பியத்துப் புறத்திணையியலுரையிலே (சூ. 17) 'எட்டுவகை நுதலிய அவையகத்தானும்' என்றதனை விளக்குமிடத்து இளம்பூரணரால் எடுத்தாளப்பட்டுள்ளது. இம்மேற்கோளினை மனத்துட்கொண்டே தொல்காப்பியனுர் சூத்திரம் இயற்றியிருத்தலுங் கூடும். ஆகவே இச்செய்யுள் மிகப் பழமையானது என்பதில் ஐயமில்லை. கீழ்வருஞ் செய்யுளை நோக்குக :

ஆசிரியமாலை

அரையது துகிலே மார்பின தாரம்
முடியது முருகுநாறுந் தொடையல் புடையன
பால்வெண் கவரியின்கற்றை மேலது
மாலை தாழ்ந்த மணிக்காற் றனிக்குடை
முன்னது முரசுமுழங்கு தானை யிந்நிலை
இனைய செல்வத் தீங்கிவர் யாரே
தேவ ரல்ல ரிமைப்பதுஞ் செய்தனர்
மாந்த ரேயென மயக்கம் நீங்கக்
களிற்றுமிசை வந்தனர் நெருந லின்றிவர்
பசிப்பிணி காய்தலி னுணங்கித் துணியுடுத்து
மாசுமீப் போர்த்த யாக்கையொடு
தாமே யொருசிறை யிருந்தனர் மன்னே. (புறத். 357)

இது 'யானை யெருத்தம் பொலியக் குடைநிழற்கீழ்ச்-சேனைத்தலைவராய்ச் சென்றோரும் - ஏனை - வினையுலப்ப வேறாகி வீழ்வர்' என்ற நாலடிச் செய்யுட் கருத்தைப் பின்பற்றியதாதல் காணலாம். ஆகவே, இதனை 'குடிப் பிறப் புடுத்துப் பனுவல் சூடி' என்றதன் பிற்காலத்தெழுந்த செய்யுளாகக் கொள்ளுதற் கிடமுண்டு. ஆசிரியமாலையில் வருஞ் செய்யுளொன்று

மாவண் சோணுட் டூர்தொறும்
ஏரோர் களவழி வாழிய நெடிதே (புறத். 846)

எனச் சோணுட்டினைச் சிறப்பித்துக் கூறுகின்றது. பிறிதொரு செய்யுள்

> ... ... ... பாண்டியர்
> பாடுதமிழ் வளர்த்த கூடலின் வடாஅது
> பல்குடி துவன்றிய கள்ளியம் பெரும்பதிச்
> சால்புமேந் தோன்றிய தாழி (புறத். 1492)

எனப் பாண்டிநாட்டுப் பதியொன்றையும் அங்கே வாழ்ந்துவந்த தாழி யென்னும் வள்ளலையும் புகழ்கின்றது. இராமசரிதம் பற்றி நான்கு செய்யுட்களும் (1332, 1333, 1343, 1368), நிரைகோடல்பற்றி ஒரு செய்யுளும் (1242), கொடுங்கோன்மைபற்றி ஒரு செய்யுளும் (679), நிலையாமைபற்றி நான்கு செய்யுட்களும் (357, 369, 392, 402), தவம் பற்றி ஒரு செய்யுளும் (283), அறன் வலியுறுத்தல் பற்றி ஒரு செய்யுளும் (49) ஆசிரிய மாலையினின்றும் புறத்திரட்டில் தரப்படுகின்றன. இங்ஙனமாக, காலத்தாலும் இடத்தாலும் நூற் பொருளாலும் ஒன்ருேடொன்று ஒவ்வாது பல திறப்பட்டனவாக மேற் குறித்த செய்யுட்கள் இருத்தலின், ஆசிரியமாலை என்பது புறத் திரட்டிற்குமுன் வழங்கிய ஒரு தொகைநூலாதல் வேண்டுமெனக் கருதல் தகும். 'குடிப்பிறப்புடுத்து' என்றதனை மேற்கோள் காட்டிய வுரை காரருள் ஒருவரேனும் அதனை இன்னநூற்குரிய செய்யுளெனக் கூறு மையும் இக்கருத்தினையே ஒருவாறு ஆதரிக்கின்றது. ஆசிரியமாலை என்னும் பெயரினின்றும் இத்தொகைநூல் அகவற்பாக்களால் தொகுக்கப் பெற்றதென்பது புலனும்.

வேருெரு வகையான அனுமானத்திற்கும் இடமுண்டு. இப்பெயர் 'வெண்பாமாலை' என்னும் பெயர் போலவே அமைந்துள்ளது காணலாம். 'வெண்பா மாலை' யென்பது ஐயனரிதனரது புறப்பொருள் வெண்பா மாலையினையே யாண்டுஞ் சுட்டுவதாகும். சூத்திரமும் கொளுவுமாக இயற்றப்பட்ட இந்நூலினது உதாரணங்களனைத்தும் வெண்பாக்களாக இருத்தலின், வெண்பாமாலையென இது வழங்கப்பெறலாயிற்று; புறத் திரட்டும் இதனை இப்பெயரானேயே யாண்டுங் குறிக்கின்றது. இந் நூலினைப்போலவே, ஆசிரியமாலையும் அகவற்பாக்களானியன்ற உதாரணச் செய்யுட்களையுடையதோர் புறப்பொருள் நூலாக இருத்தலுங் கூடும். இங்ஙனமாயின், இவ்வுதாரணங்கள் பல நூல்களினின்றுந் திரட்டப்பட்டன வாதல் வேண்டும்.

ஆசிரியமாலையின் இயல்பு எவ்வாருயினும் அஃது ஓர் சிறந்த நூலாதல் வேண்டுமென்பது அதினின்று தொகுக்கப்பட்டுள்ள செய்யுட் களால் இனிது விளங்கும். அதுபோன்று சிறந்த பிறிதொரு நூல்

**இரும்பல் காஞ்சி**

இரும்பல்காஞ்சி யென்பது. 'நீல நெடுங்கொண்மூ' என்று தொடங்கும் செய்யுளொன்று நளவெண்பாப் பிரதிகளிற் காணப் படுகின்றது. இஃது இரும்பல்காஞ்சியைச் சார்ந்த தெனப் புறத்திரட்டினால் (5) தெரிகின்றோம். இது தவிர வேறு இரண்டு செய்யுட்களும் இந்நூலைச் சார்ந்தனவாகப் புறத் திரட்டில் தரப்பட்டுள்ளன. இரண்டும் புறம்பற்றியனவே. ஒன்று (601) வலியறிதல் கூறுவது; மற்றொன்று (1475) தொண்டையர்கோனைப் புகழ்வது.

இந்நூலினின்று இரண்டு செய்யுட்பகுதிகள் தக்கயாகப்பரணி யுரையாற் பெறுகின்றோம். அவை வருமாறு :

எய்கணை விழுந்தனை யன்றே செவித்தனை
மையறு கேள்வி கேளா தோர்க்கே. (தாழிசை 189, உரை)

பருதிக் கருவின் முட்டைக் கதிர்விடும்
பெருங்குறை வாங்கி வலங்கையிற்
பூமுத லிருந்த நான்முகத் தனிச்சுடர்
வேதம் பாடிய மேதகப் படைத்தன
எண்பெரு வேழம். (தாழிசை 276, உரை)

'காஞ்சி' என்பதற்கு 'உட்கா தெதிரூன்றல்' என இலக்கணம் கூறப்பட்டுளது. இவ்வகையான புறப்பொருள் பற்றியதே இரும்பல் காஞ்சியென்று எண்ணுதல் தகும். முத்தொள்ளாயிரம் போன்று தமிழ் நில மன்னர் அனைவரது வீரச் செயல்களையும் இந்நூல் புகழ்ந்து கூறுவது போலும். இரும் பல் என்ற அடைகளால் இது மிக விரிந்ததோர் நூலாதலும் ஊகித்தல் கூடும். வேறு யாதொன்றும் இந்நூலைக் குறித்து அறிதற்குக் கூடவில்லை.

**சாந்தி புராணம்**

புறத்திரட்டினால் அறியப்படும் பிறிதொரு நூல் 'சாந்தி புராணம்' என்பது. இப்புராணத்தினின்றும் 9 செய்யுட்கள் தொகுக்கப்பட் டுள்ளன. அவற்றுள் இரண்டு செய்யுட்கள் (173, 448) மேருமந்தர புராணத்திலும் காணப்படுகின்றன. ஏனைய 7 செய்யுட்கள், புணர்ச்சிவிழையாமை (292), கள்ளாமை (306, 307), மெய்யுணர்தல் (442), அமைச்சு (742), பொது மகளிர் (1057, 1058) என்ற பொருள்கள் பற்றியன.

ஜைன நூலாகிய மேருமந்தர புராணத்தோடு இயைபுடைமையால் சாந்திபுராணமும் ஜைனநூ லென்பது போதரும். பெயர் நோக்கிய அளவிலே, 16-வது தீர்த்தங்கரராகிய சாந்திதேவரது சரித்திரத்தை இந்நூல் விருத்தயாப்பால் விரித்துணர்த்துவதென்று துணியலாம்.

கன்னட மொழியிலே இத்தீர்த்தங்கரரது வரலாறு கூறும் *சாந்திபுராண மொன்று உண்மையும் மேலே முடிபினையே வற்புறுத்துகின்றது.

நாரத சரிதை என்ற பெயருடைய ஓர் நூலினின்றும் 8 செய்யுட்கள் புறத்திரட்டில் வந்துள்ளன. இந்நூலும் சாந்தி புராணம் போன்று ஓர் சரித்திரம் பற்றியதே யாகல் வேண்டும். இதன்கட் கூறப்பட்டுள்ள சரித்திரம் யாது? எச்சமயத்தை இது சார்ந்தது? இக்கேள்விகள் போன்றன தீரா வினுக்களாகவே என்றும் இருந்து விடுமோ வென்ற ஐயம் தமிழன்பர்களுக்கு எழுதல் இயல்பே. புறத்திரட்டிற் காணுஞ் செய்யுட்களால் ஒரு சில உய்த்துணரத் தக்கன.

**நாரத சரிதை**

வல்லென்ற சொல்லும் புகழ்வாய்மை வழீஇய சொல்லும்
இல்லென்ற சொல்லு மிலனுகலின் யாவர் மாட்டும்
சொல்லுங் குறையின் மையிற்சோரரு மின்மை யாலே
கொல்லென்ற சொல்லு முரைகற்றிலன் கொற்ற வேலான்.

(புறத். 496)

இச்செய்யுளால் நாரதசரிதை அரசனெருவனது சரித்திரம் கூறுவதற் கமைந்ததென்பது தெளிவாம். இஃதுஉண்மையாயின், அரசனது நாடு, நகர், அரண்மனை முதலியவற்றைப் புகழ்ந்துரைக்கும் செய்யுட்கள் இந் நூலின்கண் உளவாதல் வேண்டும். இவ்வனுமானத்திற் கேற்பவே,

மன்னன்மேவு கோயில்மேரு மானமற்றிம் மண்ணெலா
மென்னலாய வூரிடத் திலங்குமாளி கைக்குலம்
பொன்னின்மேரு வின்புறப் பொருப்புநேர வப்புறந்
துன்னுநேமி வெற்பையென்பர் சூழ்மதிற் பரப்பையே

(புறத். 861)

என்ற செய்யுள் காணப்படுகின்றது. தொடர்ச்சியாகச் சில செய்யுட்களேனும் கிடையாத நிலைமையில் அரசனது சரித்திரம் இன்னநெறியிற் செல்வது என அறிவதற்கு இயலவில்லை. எனினும் புறத்திரட்டிலுள்ளனவற்றில் இரண்டு செய்யுட்கள் (425, 426) துறவினை வற்புறுத்துகின்றன ; மற்றைச் செய்யுட்கள் (304, 1060, 356, 414) உலகவின்பம் இழிவாதலையும் நிலையற்றனவாதலையும் உணர்த்துகின்றன. இவற்றை நோக்கும்போது கதாநாயகனுகிய அரசன் உலகவின்பத்தை இறுதியில்

---

* இந்நூல் ‘பொன்ன’ என்ற பெயருடைய பெரும்புலவரால் பத்தாம் நூற்ருண்டின் இடைப்பகுதியில் இயற்றப்பெற்றது. சென்னை சர்வகலாசாலையில் கன்னடத்துறைத் தலைவர் ஸ்ரீ A. வெங்கட்ட ராவ் அவர்களாலும் ஜூனியர் லெக்சரராக விருக்கும் ஸ்ரீ H. சேஷையங்காரவர்களாலும் இந்நூல் வெளியிடப் பெற்றுள்ளது.

நீத்துத் துறவு பூண்டனன் என்பது பெறப்படலாம். இத்துணையே இந்நூற் சரிதத்தில் நம்மால் அறியக் கிடப்பது.

ஆனால் இச்சிறு முடிபினின்றும் ஒரு முக்கியமான செய்தி விளங்குகின்றது. ஜைன சரிதங்கள் பலவும் இறுதியிற் கதாநாயகன் துறவுபூண்டு முத்தியெய்துகின்றதனோடு முடிகின்றன. உதாரணமாக சீவகசிந்தாமணி, சூளாமணி முதலியவற்றைக் காண்க. நாரதசரிதையும் இவ்வாறு முடிவதெனக் கொள்ளத்தக்கதா யிருத்தலாலே, இதுவும் ஒரு ஜைன சரிதமாகவே இருக்கலாமெனத் தோற்றுகின்றது. ஸ்ரீபுராணத்தில் நாரதன், பர்வதன் என்னும் இருவர்களது சரித்திரம் கூறப்பட்டுளது.[1] இச்சரித்திரம் பற்றிய நூலாகவே நாரத சரிதை அமைந்ததாதலும் கூடும். இதன்கணுள்ள 'ஆசை யல்குற் பெரியாரை' (1060) என்னுஞ் செய்யுள் யாப்பருங் கலவிருத்தியுரையில் (பக். 365) மிகையெண்ணிரனிறைக்கு உதாரணமாகத் தரப்பட்டுள்ளது. ஆகவே விருத்தியுரையின் காலமாகிய 11-ம் நூற்றாண்டிற்கு முற்பட்டது இந் நாரதசரிதையென்பது விளங்கும்.

புறத்திரட்டினுலன்றிப் பிறவாறு அறியலாகாத நூல்களுள் கடைசியாகக் கூறநிற்பது பெரும்பொருள்விளக்கமாம். இந்நூலினின்றும் 41 செய்யுட்கள் தொகுக்கப்பட்டுள்ளன. ஈகை (228), அறிவுடைமை (542), குடிமரபு (1159-1161), நிரைகோடல் (1236-1240), நிரைமீட்சி (1245-1250), பகைவயிற் சேறல் (1255-1256), பாசறை (1271-1273), எயில்கோடல் (1325-1330), எயில் காத்தல் (1336-1340), அமர் (1347-1349), தானைமறம் (1362), யானைமறம் (1398-1400), களம் (1429), வாழ்த்து (1500) என்பன இச்செய்யுட்களால் உணர்த்தப்படும் பொருள்கள்.

**பெரும்பொருள் விளக்கம்**

இவையனைத்தும் புறப்பொருள் பற்றியன வாதலின் இந்நூல் புறப்பொருளை உதாரணங்களால் விளக்கும் ஓர் நூலாதல் வேண்டும். நச்சினார்க்கினியர் சிந்தாமணியுரையில் (187) 'பின்னர் நான்கும் பெருந்திணை பெறுமேயென்பதனான், ஒப்பும் பெருந்திணைப்பாற்படுங் கந்தருவமாமாறு *பெரும்பொருளா னுணர்க' என்று கூறியுள்ளார். இவ்வாக்கியத்தை நோக்கிய அளவில், பெரும்பொருள் என்பது ஓர் பொருளிலக்கண நூலாக இருத்தல் கூடுமென ஊகிக்கலாம். இவ்வூகம் பொருத்தமுடைத்தாயின், இவ்விலக்கண நூலினை மேற்கோளுடன் விளக்கிய வொரு நூலாகப் பெரும்பொருள் விளக்கம் இயற்றப் பெற்றதாகலாம். பெரும்

---

[1] இதனைத் தெரிவித்தவர் தமிழராய்ச்சித் துறையில் ஜூனியர் லெக்சரராகவிருக்கும் ஸ்ரீ வேங்கடராயலு ரெட்டியாரவர்கள்.

*'பெரும்பொருள், பெரும்பொருள் விளக்க மென்னும் நூலாக இருத்தல் கூடுமோ வென்பது ஊகிக்கப்படுகின்றது.' (சிந்தாமணி, 187 விசேடக்குறிப்பு.)

பொருள் விளக்கச் செய்யுட்கள் ஒருசில நச்சினார்க்கினியரால் புறத்திணை யுரையில் எடுத்துக் காட்டப்பட்டுள்ளன. இது தோன்றிய கால முதலியன வொன்றும் இப்போது அறிதற்கில்லை.

இனி, பழையவுரைகளிலே பெயரான் எடுத்துக் கூறப்படும் நூல்கள் ஒரு சிலவற்றினின்றும் பல செய்யுட்கள் புறத்திரட்டினுல் தெரியவருகின்றன. தகடூர் யாத்திரை என்னும் நூல் தொல்காப்பியப் பொருளதிகார வுரையிலே ஒருசில விடங்களில் (சூ. 63, 67, 68, 72, 79, உரை) குறிக்கப்பட்டுளது. இந்நூல் அதியமானுக்குரிய தகடூர்மீது சேரமான் படையெடுத்துச்சென்ற வரலாற்றினைக் கூறுவது. யாத்திரை என்னும் வடசொல் படையெடுத்துச்செலவு என்னும் பொருட்டாகும். அரசருக்குரிய ஸந்தி, விக்ரஹம், யாநம், ஆஸநம், த்வைதீபாவம், ஸம்ச்ரயம் என்னும் [1] அறுவகைக் குணங்களுள் யாநம் என்று கூறப்படுவதேயாத்திரையாகும். இஃது ஓர் சரித்திர நிகழ்ச்சி பற்றிய நூலாயினும் அந்நிகழ்ச்சி நடைபெற்ற காலத்துத் தானே இயற்றப் பெற்றதன்று; மிகப் பிற்பட்ட காலத்திலே இது தோன்றியதெனக் கொள்ளுதல் வேண்டும். ஏனெனின், இதனைப் பழையவாகிய கதை பொருளாகச் செய்யப்படுகின்றதொன்மை யென்பதற்கு இலக்கியமாகப் [2]பேராசிரியர் காட்டுகின்றனர். அன்றியும் இஃது உரைவிரவி யியற்றப்பட்ட தென்பதும் தொன்மைக்குரிய இலக்கணத்தாற் பெறுகின்றேம். புறத்திரட்டுப் பிரதிகளில் ஒருசில விடங்களில் ‘தகடூர் மாலை’ எனவும் இந்நூல் குறிக்கப்பட்டுளது.

**தகடூர் யாத்திரை**

‘பாட்டிடை வைத்த குறிப்பினானும்’ என்ற சூத்திரத்தின் (தொல். பொருள். 485) உரையில் ‘பாட்டு வருவது சிறுபான்மை யாகலின்: அவை தகடூர்யாத்திரை போல்வன’ என்று பேராசிரியர் எழுதியுள்ளார். எனவே இந்நூல் பெரும்பான்மை உரைநடையாலும் சிறுபான்மை செய்யுளாலும் இயன்றுள்ளமை தெளிவாகின்றது. செய்யுள் வெண்பாவும் ஆசிரியமு மாம். இச்சூத்திரத்திற்கு நச்சினார்க்கினியர் எழுதிய வுரையால், தகடூர்யாத்திரையிற் ‘பிறபாடை தழுவிவந்த’ பகுதிகளுமுள்ளனவென்று தெரிகின்றது.

புறத்திரட்டில் வருஞ்செய்யு ளொன்றால் சேரமானுக்கு அதியமான் தம்பி முறையினனென்பது பெறப்படுகின்றது:

> கால வெகுளிப் பொறையகேள் நும்பியைச்
> சாலுந் துணையுங் கழறிச் சிறியதோர்
> கோல்கொண்டு மேற்சேறல் வேண்டா வதுகண்டாய்
> நூல்கண்டார் கண்ட நெறி. (புறத். 776)

---

1. குறள் 485, உரை: நட்பாக்கல், பகையாக்கல், மேற்சேறல், இருத்தல் பிரித்தல், கூட்டல். 2. தொல். பொருள். 485, 549, உரை.

எனவே, தகடூர் யாத்திரைச் சரித்திரம் பாரதம் போன்று தாயத்தாரிடை நிகழ்ந்த போரின் வரலாற்றினை விளங்கக் கூறுவதாம். உற்று நோக்குவோர்க்குப் பாரத சரித்திரத்திற்கும் இந்நூற் சரித்திரக்குறிப்புக்களுக்கும் ஒற்றுமை பல காணப்படும்.

இந்நூலினின்றும் 44 செய்யுட்கள் புறத்திரட்டிலே தொகுக்கப்பட்டுள்ளன. அவை அவையடக்கம் (புறத். 10), நீத்தார் பெருமை (19), ஈகை (227), செங்கோன்மை (666, 667), சொல்வன்மை (756), தூது (776, 785, 786), நாடு (844), புல்லறிவாண்மை (995), நிரை கோடல் (1241), நிரைமீட்சி (1251), பகைவயிற்சேறல் (1257, 1258), பாசறை (1274), வஞ்சினம் (1301, 1304), படைச்செருக்கு (1314-1321), எயில்காத்தல் (1341, 1342), தானைமறம் (1369-1377), குதிரைமறம் (1381), மூதில்மறம் (1403-1406), இரங்கல் (1437, 1453) என்னும் பொருள்கள் பற்றியன.

மேற்குறித்த செய்யுட்களேயன்றிப் பிறிதொரு செய்யுள் தகடூர் யாத்திரைக் குரியதாகத் தக்கயாகப்பரணி யுரையால் அறிகின்றோம். அச்செய்யுள் வருமாறு :

கனவே போலவு நனவே போலவு
முன்னிய தன்றியென் னுள்ளக நடுக்குறக்
கருநிறக் காக்கையும் வெண்ணிறக் கூகையும்
இருவகை யுயர்திணைக் கேந்திய கொடியொடும்
வெருவந்த தோற்றத்தா லுருவின பலகூளிக்
கணங்கள் குருதி மண்டைசுமந் தாடவும்
பறையன்ன விழித்தகண்ணாள் பிறையன்ன பேரெயிற்றாள்
குவடன்ன பெருமுலையா ளிடைகரந்த பெருமோட்டாள்
இடியன்ன பெருங்குரலாள் தடிவாயாற் றசைப்புறத்தாள்
கடலன்ன பெருமேனியாள் காண்பின்னாக் கமழ்கோதையாள்
சிலையன்ன புருவத்தாள் சென்றேந்திய வகலல்குலாள்
மழையு மஞ்சும் வளியும் போலுஞ்
செலவினா ளொருபெண்டாட்டி
தலைவிரித்துத் தடக்கைநாற்றி
மறனெறிந்து மாறுகொண்டறியா
வறிவுக்கிம் முறைநா ளிவ்வள வன்றே
பூவிரல் காட்டி நீறுபொங் கத்தன்
கைகளா னிலனடித் தூரை யிடஞ்செய்து
காடு புகுதக் கண்டே னென்னுங்
கவலை நேசமோ டவல நீந்தினாள்
அன்றது மன்றவ் வதிகமான் றாய்க்கு. (தாழிசை 641, உரை)

இதுவேயன்றி, தொல்காப்பியப் புறத்திணையியல் நச்சினார்க்கினியருரையிலே புறத்திரட்டிற்காணப்பெறாத மூன்று தகடூர் யாத்திரைச் செய்யுட்

கள் உள்ளன. அவை 'மெய்ம்மலி மனத்தி,' 'மறனுடைமறவர்க்', 'கலையெனப் பாய்ந்த' என்று தொடங்குஞ் செய்யுட்களாம்.

முத்தொள்ளாயிரம் என்னும் சிறந்த நூலைக் குறித்தும் உரைகள் மூலமாக நாம் அறிந்திருக்கின்றோம். இந்நூற் செய்யுட்களின் இனிமையை நன்குணர்ந்து, கிடைக்கக்கூடியவரை அவற்றைத் தொகுத்து முதன்முதல் வெளியிட்டவர்கள் ஸ்ரீ ரா. இராகவையங்காரவர்கள். தொல்காப்பியச் செய்யுளியலுரையில் (சூ. 239) 'புதிதாகத் தாம்வேண்டியவாற்றாற் பல செய்யுளுந் தொடர்ந்து வரச் செய்வ' தாகிய விருந்து என்பதற்கு முத்தொள்ளாயிரத்தைப் பேராசிரியர் உதாரணங் காட்டினர். ஆதலால் இவ் வருஞ்சுவைப் பெருநூலினை ஆசிரியர் தமது புலமை நுண்ணுணர்வினாலே அழகுபெறப் புதுவதாகப் புனைந்து இயற்றினாரென்று அறியப்படும்.

**முத்தொள்ளாயிரம்**

நெடுவெண் பாட்டே முந்நான் கடித்தே
குறுவெண் பாட்டி னளவெழு சீரே

என்ற செய்யுளியற் சூத்திரத்தின் (118) உரையில் நச்சினார்க்கினியர் 'இக் கருத்தானே கீழ்க்கணக்கினுள் நான்கடியும் ஈரடியுமே மிக வந்தவாறும் முத்தொள்ளாயிரத்து நான்கடியே மிக வந்தவாறுங் காண்க' என்று எழுதிச் செல்கின்றார். எனவே முத்தொள்ளாயிரத்துள் பெரும்பான்மையால் நான்கடி வெண்பாக்களே இருந்தன வென்பது அறியப்படும். சிறுபான்மை ஐந்தடிச் செய்யுட்களும் ஆறடிச் செய்யுட்களும் காணப்பட்டனவென்பது மேலைச் சூத்திரவுரையிற் பேராசிரியர் 'பதினெண் கீழ்க் கணக்கினுள்ளும் முத்தொள்ளாயிரத்தும் ஆறடியி னேறாமற் செய்யுள் செய்தார் பிறசான்றோரும்' எனக் கூறுதலால் உணரப்படும்.

இனி, இந்நூல் குறிக்கும் பொருள்களை நோக்குவோம். கடவுள் வாழ்த்துப் பற்றி ஒரு செய்யுளும் (புறத். 1), நாடுபற்றி 3 செய்யுட்களும் (829, 830, 831), நகர்பற்றி 3 செய்யுட்களும் (862, 863, 864), பகைப் புலம் பழித்தல் பற்றி 5 செய்யுட்களும் (1278-1282), திறைபற்றி 4 செய்யுட்களும் (1285-1288), எயில்கோடல்பற்றி ஒரு செய்யுளும் (1331), குதிரைமறம் பற்றி ஒரு செய்யுளும் (1380), யானைமறம்பற்றி 10 செய்யுட்களும் (1388-1397), களம்பற்றி 4 செய்யுட்களும் (1430-1433), வென்றிபற்றி 2 செய்யுட்களும் (1456, 1457), புகழ்பற்றி 10 செய்யுட்களும் (1464-1473), கைக்கிளைபற்றி 65 செய்யுட்களும் (1506-1570) ஆக மொத்தம் 109 செய்யுட்கள் புறத்திரட்டில் வந்துள்ளன. இவற்றில் கைக்கிளைச் செய்யுட்கள் மிகுதியாயுள்ளமை காணலாம். மூல நூலிலும் இங்ஙனமே கைக்கிளைச் செய்யுட்கள் மிக்கிருந்தனவென்பது

அங்கத்ப் பாட்டவற் றளவோ டொக்கும்

என்னும் தொல்காப்பியச் சூத்திரத்தி னுரையிற் பேராசிரியர் 'கைக்கிளைச் செய்யுள் முத்தொள்ளாயிரத்துட் பலவாயினும்' என்று எழுதியிருத்த லால் அறியலாகும்.

இச்செய்யுட்களில் சேர சோழ பாண்டியர் மூவரும் பாட்டுடைத் தலைவராய் விளங்குகின்றார்கள். முத்தொள்ளாயிரம் என்னும் நூற் பெயரை நோக்கும்போது முடியுடை மூவேந்தருள் ஒவ்வொருவரைக் குறித்தும் 900 செய்யுட்கள் பாடி, 2700 செய்யுட்களில் ஆசிரியர் நூலையியற்றி முடித்துள்ளாரென்று கருதுதல் உண்மையாகலாமெனத் தோன்றுகிறது. இந்நூலின் ஆசிரியரைக் குறித்து இரண்டொரு குறிப்புக்களே கிடைக்கின்றன. 'மன்னிய நாண்மீன்' என்னும் கடவுள் வாழ்த்தினாலும் 'புகழ்' என்றஅதிகாரத்துள் வரும் 'மடங்கா மயிலூர்தி' 'செங்கணெடியான்மேல்' என்று தொடங்கும் செய்யுட்களாலும் இவர் சைவசமயத்தினராதல்வேண்டும். பேராசிரியர் இவரைப் பிற சான்றோருள் வைத்து எண்ணுகின்றமையால் சங்கத்துச் சான்றோர்கட்குப் பிற்பட்ட காலத்தில் வாழ்ந்தவரென்பதும் புலனும்.

புறத்திரட்டிற் சேர்க்கப் பெறாத முத்தொள்ளாயிரச் செய்யுளொன்று இளம்பூரணரது உரையால் தெரியவருகின்றது. அது வருமாறு:—

ஏற்றூர்தி யானு மிகல்வெம்போர் வானவனும்
ஆற்றலு மாள்வினையு மொத்தொன்றி னொவ்வாரே
கூற்றக் கணிச்சியான் கண்மூன் றிரண்டேயாம்
ஆற்றல்சால் வானவன் கண்.

இச்செய்யுள் 'புகழ்' என்ற பகுப்பிலே சேர்தற்பாலது. புறத்திரட்டில் 'யானைமறம்' என்ற பகுப்பில் வரும் செய்யுளொன்று (1397) பொருள் காண வியலாதபடி பிழைபட்டுள்ளது. அது வருமாறு:

இருங்களி ... ன்ற மடப்பிடி சார
விருங்கருவி நீராற் றெளி...—நலங்கிளர்வேற்
றன்னரும்போர்க் கோதை துடா செருக்கின
மன்னர் மதிலாய வென்று.

குண்டலகேசி என்ற நூல் பஞ்சகாவியங்களி லொன்றென்று கருதப்பட்டு வருகின்றது. இதற்கேற்ப வீரசோழிய வுரைகாரர் இக் காவியத்தினை 'அகலக்கவி' எனக் குறிப்பிக்கின்றனர்.

**குண்டலகேசி**

'குண்டலகேசியும் உதயணன்கதையு முதலாக வுடையவற்றிற் றெரியாத சொல்லும் பொருளும் வந்தனவா லெனின், அகலக்கவி செய்வானுக்கு அப்படி யல்லது ஆகாது' (வீரசோ. அலங். 4,

உரை) என்பதனையும், 'இனிப் பாவிகமாவது அகலக்கவிப் புலவன் கருத்து. அஃது குண்டலகேசி, உதயணன் கதை முதலாயினவற்றுட் கண்டுகொள்க' (வீரசோ. அலங். 13, உரை) என்பதனையும் காண்க. இப்பெருநூலுக்குக் 'குண்டலகேசி விருத்தம்' என்ற பெயருண்மையும் இதன்கண்ணே கலித்துறைகள் வந்துள்ளமையும் வீரசோழிய வுரையினாலேயே (யாப்பு, 21, உரை) விளங்குகின்றன. யாப்பருங்கல வுரையினும் இந்நூல் கேட்கப்படுகின்றது. அங்கே 'சிந்தாமணி, சூளாமணி, குண்டலகேசி, நீலகேசி, அமிர்தபதி என்றிவற்றின் முதற்பாட்டு வண்ணத்தான் வருவன' என்று கூறப்பட்டிருத்தலோடு 'முன்றான் பெருமைக்க ணின்றான்' என்று வருங் கடவுள் வாழ்த்துச் செய்யுளும் உதாரணமாக எடுத்துக்காட்டப்பட்டுளது. ஆகவே இந்நூல் 'முன்றான் பெருமைக்க ணின்றான்' என்ற செய்யுளோடு தொடங்குகின்றது. நூற் செய்யுளொவ்வொன்றும் 'காதை' என்னும் பெயரால் வழங்கப்பட்ட தென்பது 'இதனால் முன்றான் பெருமைக்க ணின்றான் என்னும் காதையை அநுவதித்தவாறு' என்பது முதலாகவரும் நீலகேசியுரையால் (176, உரை) அறியலாகும்.

இது பௌத்தசமயச் சார்பான நூல். இதன்கட் கூறப்பட்டுள்ள சரித்திரம்* வருமாறு:

'குண்டலகேசி யென்பாள் ஒரு வைசிய கன்னிகை. இவள் ஒருநாள் பிராஸாத ஸ்தலத்து விளையாடுகின்றாளாக, ஒரு கிதவ வைசியபுத்ரன் காளனென்பான் இவன் பௌத்ததர்சனங்கொண்டு பலவழியுஞ் சோர விருத்தி பண்ணிச் செல்வானை அரசன் வதிக்க வென்றேவச் சிறைப்பட்டுப் போகின்றானை, முன் சொன்ன குண்டலகேசி கண்டு காமபரவசையாக, அதனையறிந்து அவளுடைய பிதா, ராஜாவைக் கண்டு யாதானுமோருபாயத்தால் மீட்டு, இவனுக்குக் குண்டலகேசி யென்னும் கன்னிகையினை விவாஹ விதியாற் கொடுத்து இனிது செல்கின்ற காலத்து,ஒருநாள் ப்ரணய கலஹத்து.நர்மோக்தி முகத்தால் நீ கள்வனன்றோ வென்று குண்டலகேசி சொல்ல, காளனுந் தன்னுள்ளத்தே சினங்கொண்டு பின்பொருநாள் வித்யாஸாதனவ்யாஜத்தால் இவளைத் தனிக்கொண்டு ஒரு பர்வதத்தேறி, நீ என்னை இவ்வாறு சொல்லுதலில் யான் உன்னைக் கொல்லத் துணிந்தேனென்ன, குண்டலகேசியும் 'தற்கொல்லியை முற் கொல்லிய' வென்பதன்றே, இவனை யான் கொல்வேனென நினைந்து யான் சாகிறேனாகில் உம்மை வலங்கொண்டு சாவலெனெ, அதற்கியைந்த காளனை வலங்கொள்கின்றாள் வரையினின்றும் வீழ நூக்கினள். நூக்கக் காளனும் புத்த ஸ்மரணத்தினால் மோக்ஷித்தனன். குண்டலகேசியும் பர்த்ரு விரஹ துக்கிதையாகித் துறப்பனென நினைந்து பரசமயங்களெல்லாம் நாவல்நட்டு ஜயித்து பௌத்ததர்சனங்கொண்டு முத்தி பெற்றனள்.' (நீலகேசி, 286, உரை.)

---

* இச்சரித்திர முதலியன முதன் முதலில் செந்தமிழில் (தொகுதி 1, 3) வெளியிடப்பட்டன.

இச்சரித்திரம் பௌத்த நூலாகிய தேரிகாதையிலும் கூறப்பட்டிருக்கிறது. குண்டலகேசி யென்பது புனைபெய ரென்பதும் பத்திரை யென்பதுதான் உண்மைப் பெயரென்பதும், இவள் முதலாவதாக நிகண்டவாதியா யிருந்தாளென்பதும், அங்கே இவள் தலைமயிர் பறிக்கப் பட்டுச் சேர்க்கப் பெற்றாளென்பதும், பின்னர் தலைமயிர் வளர்ந்தபொழுது அடர்ந்து சுருண்டிருந்தமையால் ' குண்டலகேசி ' எனப் பெயர் வழங்கப் பட்டாளென்பதும், இவளாற் கொல்லப்பட்ட இவளது நாயகனாகிய காளன் ' ஸத்துகன் ' என்று வழங்கப்பட்டானென்பதும் பிறவும் இத் தேரிகாதை (46-ஆம் காதை)யால் விளங்குகின்றன.

இந்நூலிலே நிறுவப்பட்டுள்ள பௌத்தக் கொள்கைகளைத் தருக்கித்து மறுத்தற் பொருட்டே நீலகேசி என்ற ஜைனசமய நூல் தோன்றியதாகும். குண்டலகேசியிற் பௌத்தக் கொள்கைகள் பற்றிய செய்யுளொவ்வொன்றையும் எடுத்து நீலகேசி வியவகரிக்கின்றமை சமயதிவாகரரியற்றிய நீலகேசியுரையால் விளங்கும். ஆகவே தங்கள் சமயக் கோட்பாடு நிலையுறுதற்பொருட்டுக் குண்டலகேசியை ஜைனசமயத்தவர்கள் கற்றுவந்தனரென்பது புலனாம். இதனை ' அகலக்கவி ' யென வீரசோழியம் கூறுதலானே பிற சமயங்களைச் சார்ந்த தமிழ்மக்களும் இந் நூலைப் பெருங்காப்பியங்களுளொன்று என்ற நிலையிற் கற்றுப் போற்றி வந்தனராவர். எனினும் இந்நூலிலிருந்து கடவுள் வாழ்த்துச் செய்யுளொன்றே நமக்குக் கிடைப்பதாயிருந்தது. நீலகேசியுரையாற் குண்டலகேசிச் செய்யுட்கள் பலவற்றின் முதற்குறிப்புக்கள் மட்டுமே தெரிய வந்தன. புறத்திரட்டினுல் இப்போது 19 செய்யுட்கள் அகப்படுகின்றன. இவை கடவுள் வாழ்த்து (புறத். 7), அவையடக்கம் (13), தீவினையச்சம் (205), கூடாவொழுக்கம் (288), புணர்ச்சி விழையாமை (302, 303), யாக்கை நிலையாமை (388-391), தூய்தன்மை (410-413), இறைமாட்சி (494, 495), குற்றங்கடிதல் (551), இடுக்கணழியாமை (723, 724) என்னும் பொருள்கள்பற்றி வந்துள்ளன.

ஐம்பெருங் காப்பியங்களுள், உட்பொதிந்த சரித்திரம்போலும் அறிதற்கியலாதபடி மறைந்துவிட்ட வொருநூல் வளையாபதி*யாகும்.

**வளையாபதி**

' இது தமிழிலுள்ள பழைய காப்பியமைந்தனுளொன்று ; இதன் பாடல்களுட் சில முன்னோருரைகளில் ஆங்காங்கு எடுத்துக் காட்டப்பட்டுள்ளனவேயன்றி நூலின் முதனடுவிறுதி காணப்படாமையின் இந்நூல் இன்ன சரித்திரத்தை யுடையதென்றும், நூலாசிரியர் இன்னாரென்றும் புலப்படவில்லை ' என்று

---

* இந்நூற் செய்யுட்கள் பெரும்பாலன (செந்தமிழில் தொகுதி 1, 4) வெளியிடப்பட்டுள்ளன.

டாக்டர் சாமிநாதையரவர்கள் சிலப்பதிகாரப் பதிப்பிலுள்ள அரும்பத முதலியவற்றின் அகராதியில் எழுதியிருக்கிறார்கள்.

சிலப்பதிகார வுரையிலே

துக்கந் துடைக்குந் துகளறு காட்சிய
நிக்கந்த வேடத் திருடி கணங்களை
யொக்க வடிவீழ்ந் துலகியல் செய்தபின்
அக்கதை யாழ்கொண் டமைவரப் பண்ணி (9 கனாத்திற. 13, உரை)

என்ற செய்யுளொன்று வளையாபதியினின்றுந் தரப்பட்டுளது. இச் செய்யுளினின்றும் இஃது ஓர் ஜைனசமய நூலென்று துணிதற்கிடமுண்டு. யாப்பருங்கலவுரையினும் (சூ. 37), தொல்காப்பியச் செய்யுளியல் இளம் பூரணருரையிலும் (சூ. 98) இரண்டடி யெதுகைக்கு உதாரணமாகத் தரப்பட்டுள்ள

உலக மூன்று மொருங்குட னேத்துமாண்
டிலக மாய திறலறி வன்னடி
வழுவி னெஞ்சொடு வாலிதி னூற்றவுந்
தொழுவ றெல்வினை நீங்குகவென்றியான்.

என்னுஞ் செய்யுள் 'தாவின்றாகித் தாழிசை பெற்றும்' என்ற சூத்திரத் திற்கு (தொல். செய்யுளியல், 148) நச்சினார்க்கினிய ரெழுதிய வுரையால் வளையாபதிச் செய்யுளென விளங்குகின்றது. இதுவும் இந்நூல் ஜைன காப்பியமென்னும் முடிபினையே வற்புறுத்துகின்றது. இளம்பூரண ருரை முதலியவற்றில் எடுத்தாளப்படுகின்றமையால், இந்நூல் 11-ம் நூற்றாண்டிற்கு முற்பட்டதாதல் வேண்டும்.

தக்கயாகப்பரணி யுரையிலே (425) 'இவர் (நூலாசிரியர்) வளையா பதியை நினைத்தார் கவியழகுவேண்டி' என வந்துள்ளது. இதனால் வளையாபதி கவியழகு நிரம்பிய காவியமென்பது புலனாம். சிறப்பு மிக்க இந்நூலினின்று ஒரு சில செய்யுட்களே நமக்கு இப்போது அகப்படுவன. சிலப்பதிகார வுரையினின்றும் ஒரு செய்யுள் மேலே காட்டப்பட்டது. அவ்வுரையே வேறிரண்டு செய்யுட்களையும் தருகின்றது :

பண்ணாற் றிறத்திற் பழுதின்றி மேம்பட்ட
தொண்ணூற் றறுவகைக் கோவையும் வல்லவன்
விண்ணா றியங்கும் விறலவ ராயினும்
கண்ணாறி நோக்கிக் கடுநகை செய்வான். (9 கனாத்திற. 15, உரை)

அன்றைப் பகற்கழிந் தாளின் றிராப்பகற்
கன்றின் குரலுங் கறவை மணிகறங்கக்
கொன்றைப் பழக்குழற் கோவல ராம்பலு
மொன்றல் சுரும்பு நரம்பென வார்ப்பவும். (17 ஆய்ச்சியர். உரை)

இவையே யன்றிப் புறத்திரட்டினின்றும் 66 செய்யுட்கள் கிடைக்கின்றன. அவை பெறுதற்கருமை (புறத். 25, 26), கற்புடை மகளிர் (78), கற்பின் மகளிர் (88-91), புதல்வரைப் பெறுதல் (98), அடக்கமுடைமை (130), பிறர்மனை நயவாமை (155, 156), தீவினையச்சம் (198, 199), தானம் (215), அருளுடைமை (256, 257), புலான் மறுத்தல் (264-266), தவம் (277, 278), புணர்ச்சி விழையாமை (293-297), கள்ளாமை (309), பொய்யாமை (312, 313), யாக்கை நிலையாமை (337), செல்வ நிலையாமை (351-355), இளமை நிலையாமை (367), பல்வகை நிலையாமை (396), துறவு (422-424), மெய்யுணர்தல் (438), பழவினை (473), நாடு (837), பொருள் செயல்வகை (897), நட்பு (925), பேதைமை (980, 981), புல்லறிவாண்மை (996), பொதுமகளிர் (1044-1056), பண்புடைமை (1134), நல்குரவு (1170-1173) என்ற பொருள்கள்பற்றி வந்துள்ளன. யாப்பருங்கல விருத்தியில் (சூ. 93 உரை) மேற்கோளாகக் கீழ்வருஞ் செய்யுட்கள் காட்டப்பட்டுள்ளன:

நீல நிறத்தனவாய் நெய்கனிந்து போதவிழ்ந்து
கோலங் குயின்ற குழல்வாழி நெஞ்சே
கோலங் குயின்ற குழலுங் கொழுஞ்சிகையும்
காலக் கனலெரியின் வேம்வாழி நெஞ்சே
காலக் கனலெரியின் வேவன கண்டாலும்
சால மயங்குவ தென்வாழி நெஞ்சே.

வித்தகர் செய்த விளங்கு முடிகவித்தார்
மத்தக மாண்பழிதல் காண்வாழி நெஞ்சே
மத்தக மாண்பழிதல் கண்டால் மயங்காதே
யுத்தம நன்னெறிக்க ணில்வாழி நெஞ்சே
யுத்தம நன்னெறிக்க ணின்றாக்கஞ் செய்தியேற்
சித்தி படர்தல் தெளிவாழி நெஞ்சே.

இவை வளையாபதிச் செய்யுட்களின் அழகை யொருவாறு புலப்படுத்துகின்றன.

## IV

இதுகாறும், இக்காலத்தில் நமக்கு அகப்படாது மறைந்துபோன சில நூல்களைக் குறித்தும், அந்நூல்களுக்குரியவாகப் புறத்திரட்டினால் தெரியவந்த சில செய்யுட்களைக் குறித்தும் ஆராய்ந்தோம். இனி, ஒருசில செய்யுட்களைத் தவிர்த்து முழுதும் அகப்பட்டு, வெளியிடப்பெற்ற நூலொன்றினைக் குறித்தும், ஒருசில பகுதியே இப்போது அகப்படுவனவாய் வெளியிடப்பெற்ற சில நூல்களைக் குறித்தும் ஆராய்வோம்.

**அறைகுறையாய் அகப்பட்டுள்ள நூல்கள்**

ஒருசில செய்யுட்களைத் தவிர்த்து முழுவதும் அகப்பட்டுள்ள நூலென்று இங்கே கூறியது பதினெண்கீழ்க்கணக்கினைச் சார்ந்த சிறு பஞ்சமூலம்[1] என்னும் நூலினையேயாகும். அச்சான பதிப்புக்களிலும் ஏட்டுப்பிரதிகளிலும் 86 முதல் 91 முடியவுள்ள 6 செய்யுட்கள் காணப்பெறவில்லை. இவற்றுள் மூன்று செய்யுட்கள் இப்பொழுது புறத்திரட்டினால் வெளியாகின்றன. அவை வருமாறு :

**சிறுபஞ்சமூலம்**

அச்சமே யாயுங்கால் நன்மை யறத்தொடு
கச்சமில் கைம்மா றருளைந்தால்—மெச்சிய
தோகை மயிலன்ன சாயலாய் தூற்றுங்கால்
ஈகை வகையி னியல்பு. (புறத். 206)

கைம்மாறு மச்சமுங் காணிற் பயமின்மை
பொய்மாறு நன்மை சிறுபய—மெய்ம்மா
றருள்கூடி யாரறத்தோ டைந்தியைந் தீயிற்
பொருள்கோடி யெய்தல் புகன்று. ( ,, 207)

இம்மை நலனழிக்கு மெச்சங் குறைபடுக்கும்
அம்மை யருநரகத் தாழ்விக்கும்—மெய்ம்மை
அறந்தேயும் பின்னு மலர்மகளை நீக்கும்
மறந்தேயும் பொய்யுரைக்கும் வாய். ( ,, 311)

ஒருசில பகுதியே அகப்படுகின்ற நூல்களுள் முதலாவதாகக் கூறத் தக்கது பதிற்றுப்பத்து. இவ்வரிய நூலின் முதற்பத்தும் இறுதிப் பத்தும் இதுவரை கிடைத்தில. இனிக் கிடைக்கலாமென்ற நம்பிக் கையும் பெரும்பாலும் இல்லையென்றே சொல்லலாம். அகப்படாத பத்துக்களினின்றும் இரண்டு செய்யுட்கள் (புறத். 1260, 1275) புறத்திரட்டினால் தெரிய வந்தன. இவ்விரு செய்யுட்களையும் டாக்டர் உ. வே. சாமிநாதைய ரவர்கள் அரிதிற் பதிப்பித்துள்ள பதிற்றுப்பத்தின் முன்னுரையிற் காணலாம். இவற்றுள் ஒரு செய்யுள் முழுமையும் (1260) தொல்காப் பியப் புறத்திணையியலுரையில் இளம்பூரணர் உதாரணமாகக் காட்டி யிருக்கின்றனர்; ஆனாற் பதிற்றுப்பத்தைச் சார்ந்ததெனக் குறிப்பித்திலர். நச்சினார்க்கினியர் தமதுரையில் (தொல். புறத். 8) இச்செய்யுளின் முதல் மூன்றடிகளை மாத்திரமே எடுத்துக்காட்டினர் ; ஆனால் பதிற்றுப்பத் தெனக் குறிப்பித்தனர். புறத்திரட்டோவெனின், செய்யுள் முழு மையுந் தந்து பதிற்றுப்பத்தென இடத்தையும் தெளிவாக விளக்குகிறது. பிறிதொரு செய்யுள் (1275) புறத்திரட்டினால் மாத்திரம் தெரியவந்த தாகும்.

**பதிற்றுப்பத்து**

---

1. செந்தமிழ், 14, பக். 31 பார்க்க.

பரிபாடலென்னும் தொகை யினின்றும் ஒரு சிறு பகுதியே நமக்குக் கிடைத்துள்ளது. இந்நூலில் உள்ள 70 செய்யுட்களுள் 24 முழுப் பாடல்களே இப்பொழுது அகப்படுவன. அகப்படாத பாடல்களைச் சார்ந்த ஆறு உறுப்புக்கள் (புறத். 866, 874, 875, 876, 877, 878) புறத்திரட்டினால் தெரியவந்தனவாம். இவையாறும் மதுரைக்குரியன. இவற்றையெல்லாம் பரிபாடற்பதிப்பில் விவரமாகக் காணலாம். தொல்காப்பிய மெய்ப் பாட்டியலுக்கு இளம்பூரணவடிகள் வகுத்தவுரையில்

பரிபாடல்

வையை வருபுன லாட லினிதுகொல்
செவ்வேற்கோ குன்ற நுகர்த லினிதுகொல்
வைவே லுதியன்ன கண்ணார் துணையாக
எவ்வாறு செய்வாங்கொல் யாமென நாளும்
வழிமயக் குற்று மருடல் நெடியான்
நெடுமாடக் கூடற் கியல்பு. (சூ. 11, உரை)

என்ற செய்யுள் காணப்படுகின்றது. இதன் செய்யுளமைப்பினையும் இதன் கண் வந்துள்ள பொருளமைப்பினையும் நோக்கினால், இது பரிபாடலுறுப் பாகலாமெனத் தோன்றுகிறது. இவ்வூகம் உண்மையொடு பட்டதாயின், இவ்வுறுப்பும் மதுரைக்குரியனவற்றுள் ஒன்றாதல்வேண்டும்.

பரிபாடலைப் போன்றே பெருந்தேவனார் பாரதத்தினின்றும் ஒரு சிறு பகுதியே இப்போது நமக்கு அகப்படுகின்றது. உத்தியோகபர்வமும், யுத்தபர்வத்திற் பதின்மூன்றுநாட் போர்களுக்குரிய பகுதியுமே ஸ்ரீ அ. கோபாலையரவர்கள் பதிப்பிட்டநூலில் உள்ளன. இப்பதிப்பிற் காணப் படுவன 830 செய்யுட்கள் மாத்திரமே. நூல் முழு மையும் எத்தனை செய்யுட்களால் இயன்றது என் பது இப்போது நாம் அறிதற்கில்லை. ஆனால் இது மிக விரிந்ததோர் நூலாதல் வேண்டுமென்று ஊகித்தல் தகும்.

பெருந்தேவனார் பாரதம்

இப்பாரதத்திற் குரியனவாகப் புறத்திரட்டிற் பல செய்யுட்கள் உள்ளன. இவற்றைத் திரட்டிப் பதிப்பாளர் தமது பதிப்பில் தந்திருக் கின்றனர். அவர் தந்துள்ள 32 செய்யுட்களுள், 4 செய்யுட்கள் புறப் பொருள் வெண்பாமாலைக் குரியன. பதிப்பாளரும் இங்ஙனமே குறித் துள்ளார். அச்செய்யுட்கள் வருமாறு:

உறுசுடர் வாளோ டொருங்கா விலங்கிற்
சிறுசுடர்முற் பேரிருளாங் கண்டா—யெரிசுடர்வேற்
றேங்குலாம் பூந்தெரியற் றேர்வேந்தே நின்னோடு
பாங்கலா மன்னர் படை. (வெண்பா. 134)

துன்னருந் துப்பிற் றொடுகழலார் சூழ்ந்திருப்பத்
தன்னருளான் வாளென்கைத் தந்தானம்—மன்னற்கு
மண்ணகமோ வைகின்று மாலை நெடுங்குடைக்கீழ்
விண்ணகமும் வேண்டுங்கொல் வேந்து. (வெண்பா. 65)

இன்ன ரெனவேண்டா வென்னோ டெதிர்சீறி
முன்னர் வருக முரணகல—முன்னர்ப்
பருந்தார் படையமருட் பல்லார் புகழ
விருந்தா யடைகுறுவார் விண். ( ,, 47)

கான்படு தீயிற் கலவார்தன் மேல்வரினுந்
தான்படை தீண்டாத் தறுகண்ணன்—வான்படர்தல்
கண்ணிய பின்னர்க் கறுத்தார் மறந்தொலைதல்
எண்ணியபி னேக்குமோ வெஃகு. ( ,, 55)

ஒருசெய்யுள் எனக்குக்கிடைத்த புறத்திரட்டுப் பிரதிகள் பலவற்றி லுங் காணப்பெறவில்லை. அது வருமாறு:

கொன்றான் கொலச்சொன்னான் கூசவறுத் தானட்டான்
தின்றான் விலக்கிடான் சென்றொன்று—கொன்றவனைக்
குட்டவன்க ணிட்டெரிக்க வெந்துகொடு வெந்நரகிற்
பட்டழன்று வீழ்வார் பதைத்து.

இதனைப் பதிப்பாளர்க்குக் கிடைத்த புறத்திரட்டுப் பிரதியில் அதிகப் படியாகவுள்ள செய்யுளெனக் கொள்ளினும், எனக்குக் கிடைத்துள்ள புறத்திரட்டுப் பிரதிகளில் அவர்கள் கொடுத்துள்ள 28 செய்யுட்களினு மேலாக ஐந்து செய்யுட்கள் காணப்படுகின்றன. அவற்றுள், 'உருவழிக்கு முண்மைத் திருவழிக்கும்' (புறத். 1072) என்பது நளவெண்பாவினுள் ளும் வந்துள்ளது. ஏனைய 4 செய்யுட்களும் வருமாறு:

உற்ற நலத்தா னெழுகாது நாளும்
பெற்றவ னேவியசொற் பேணாது—மற்றவன்முன்
திண்ணுருவங் கொண்டு சிலைக்கு மவளன்றே
பெண்ணுருவங் கொண்டதோர் பேய். (புறத். 84)

வான்சேரிற் புள்ளஞ்சா வல்லரில் சுற்றிய
கான்சேரின் மானின் கணமஞ்சா—வான்சேர்
சிகர வரைசேரிற் றேனஞ்சா வஞ்சா
மிகுநீர்க் கயஞ்சேரின் மீன். ( ,, 613)

யாவர் வரினு மெதிரேற்குந் தெய்வமடப்
பாவை யகத்திருந்தும் பாழன்றே—மேவினரைத்
தண்ணார் கரதலத்தாற் றள்ளாவாய்த் தாமுமொரு
கண்ணாகி நிற்கின்ற கண். ( ,, 689)

கலிவர லூழியின் வாழ்க்கை கடிந்து
மலிபுகழ் வேண்டு மனத்தர்—ஒலிகடல்சூழ்
மண்ணகலம் வேண்டாது வான்வேண்டி யீண்டினர்
புண்ணியமாம் போர்க்களத்துப் போந்து. (புறத். 1346)

பதிப்பாளர் 'பழைய பாரதப்பாட்டுக்கள்' என்பதன்கீழ்க் கொடுத்துள்ள வற்றில் 41-வது செய்யுள் புறத்திரட்டுப் பிரதிகளிற் சிதைந்து காணப் படுவதாகக் குறித்திருக்கின்றார்கள். அப்பாடல் வருமாறு:

நல்வா னவர்காண நம்மை யமரகத்து
வெல்வான் விரும்பிய வேல்வேந்தைக்—கொல்வா
னுனக்கே யுரிமை யுளதெனினு மிப்போ
ரெனக்கே தருவா னிறை. (புறத். 1311)

**முழுவதும் அகப்பட்டுள்ள நூல்கள்**

இனி, முழுவதும் அகப்பட்டு வெளியிடப்பெற்றுள்ள நூல்களுள் ஒரு சிலவற்றிற்கும் புறத்திரட்டு உதவுகின்றது. நூல்கள் சிறந்தனவாயின், பலரும் கற்றுப் போற்றுதற்குரிய தகுதியும் பொருள் விளக்கமு முடையவாயின், அந்நூற்பிரதிகள் தமிழ் நாட்டில் மிகப் பலவாய்க் கிடைப்பனவாம். பிரதிகள் மிகுந்தோறும் பாடபேதங்களும் மிகைச்செய்யுட்களும் பெருகக் காணப்படும். நாளடைவில் உண்மையான பாடங்களை வரையறுப்பதும் நூற்குரிய செய்யுட்டொகை இனைத்தெனத் துணிவதும் எளிதில் இயலாதவாய் முடியும். பிழைகளும் மிகுதியாகப் பல்குதற்கு இடமுண்டு. செய்யுட்டொகை வரையறை, பாட நிச்சயம், பிழைதிருத்த மாகிய இம்மூன்றற்கும் புறத்திரட்டுப் பெரிதும் பயன் படுகின்றது. செய்யுட்டொகையை நிச்சயித்தலின்கண் மிகையாக வுள்ள செய்யுட்களை நோக்குதல் இன்றிமையாததாகும்.

**களவழி**

களவழிநாற்பது என்னுங் கீழ்க்கணக்கு நூலை யெடுத்துக்கொள்க. இதன்கணின்றும் 10 செய்யுட்கள் புறத்திரட்டிற் சேர்க்கப்பெற்றுள்ளன (1418-1427). இவற்றுள் இறுதிச் செய்யுள் வருமாறு:

படைப்பொலிதார் மன்னர் பருஉக்குடர் மாந்திக்
குடைப்புறத்துத் துஞ்சு மிகலன்—இடைப்பொலிந்த
திங்களிற் றோன்று முயல்போலுஞ் செம்பியன்
செங்கண் சிவந்த களத்து. (புறத். 1427)

இது கிடைத்த களவழிப் பிரதிகளிற் காணப்பெறவில்லை. காலஞ்சென்ற ஸ்ரீ இ. வை. அனந்தராமையரவர்கள் பதிப்பில் 41 செய்யுட்கள் உள்ளன. புறத்திரட்டிற்கண்ட மிகைச் செய்யுளும் இறுதியிற் பாடவேற்றுமை யுடன் குறிக்கப்பட்டிருக்கின்றது. களவழி நாற்பது எனத் தொகை

வரையறை செய்திருந்தபோதினும் ஆசிரியர் இரண்டொரு செய்யுட்களை அதிகமாக இயற்றியிருத்தலும் கூடும்.

**பழமொழி**

கீழ்க்கணக்கு நூல்களுள் முன்றுறையரையனாரது பழமொழியினின்றும் 319 செய்யுட்கள் புறத்திரட்டில் தொகுக்கப்பட்டுள்ளன. இங்ஙனந் தொகுக்கப்பட்டவற்றுள்,

அறியாமை யோடிளமை யாவதா மாங்கே
செறியப் படுவதாஞ் செல்வம்—சிறிய
பிறைபெற்ற வாணுதலாய் தானேயா மும்பேய்
பறைபெற்று லாடாதோ பாய்ந்து. (புறத். 1139)

என்ற செய்யுள் கிடைத்த பழமொழிப் பிரதிகளிற் காணப்படவில்லையென்று அந்நூலைப் பதிப்பித்த ஸ்ரீ செல்வக் கேசவராய முதலியாரவர்கள் எழுதியிருக்கின்றார்கள். பிறிதொரு செய்யுளும் பழமொழிப் பதிப்பிற் காணப்படவில்லை. அது வருமாறு:

அமையப் பொருளில்லா ராற்றுதா ரென்ப
திமையத் தனையார்க ணில்லை—சிமைய
நகையே ரிலங்கருவி நல்வரை நாட
நகையேதா னாற்றி விடும். (புறத். 1107)

இங்ஙனமே யுள்ளது 'அருளுடைமை' (புறத். 146) என்ற செய்யுளும். ஆனால் இவை பழமொழியைச் சார்ந்தனதாமோ வென்று ஐயுறுதற்குத் தக்க காரணம் உளது.

**சிந்தாமணி**

சிந்தாமணியினின்றும் 142 செய்யுட்கள் புறத்திரட்டில் தொகுக்கப்பட்டுள்ளன. இவற்றுள் 2 செய்யுட்கள் சிந்தாமணிப் பதிப்பிற் காணப்பெறவில்லை. அவை வருமாறு:

மலங்கிமதி யின்றியயர் வெய்திமயல் கூர
நலங்கியறி யாதுதுய ரெய்திநனி வாடும்
விலங்குறு கடுந்துயர் விலங்குதல் விரும்பிற்
புலன்கொள்வழி பொய்யுரை புறத்திடுமி னென்றான். (புறத். 315)

உள்ளமொழி செய்கைகளி னொன்றியுல கேத்துந்
தள்ளரிய தன்மைவழி நிற்றலுறு நல்லீர்
எள்ளுநர்கள் தன்மையிது நிற்கவிடர் செய்யுங்
கள்ளுமுணல் குற்றங் கடைப்பிடிமி னென்றான். ( ,, 1064)

இந்நூலின் உரைகாரராகிய நச்சினார்க்கினியர் தாமே சில செய்யுட்களின் முதற் குறிப்புக்களைத் தந்து 'அவை பயில வழங்கா' (442-ஆம் செய்யுளின் பின்) என்று எழுதினர். உரையோடு கூடிய செய்யுட்கள் சில பிரதிகளிற் காணப்படாமையும் பதிப்பாசிரியரவர்களாற் காட்டப்பெற்றுளது. இவையே யன்றிப் பல செய்யுட்கள் உரையின்றிக்

காணப்படுவனவாகவுங் குறிக்கப்பட்டுள்ளன (சிந்தா. மூன்றாம் பதிப்பு, பக். 138, 187, 191, 211, 298, 424, 548, 584). இங்ஙனம் மிகையாகப் பிரதிகளிலுள்ள செய்யுட்களென மேற்காட்டிய இரண்டனையும் கொள்ளுதல் கூடும். ஆனால் பதிப்பாசிரியரவர்கள் மூன்றாம் பதிப்பின் முகவுரையில்,

'ஏட்டுப் புத்தகங்களைச் சோதித்த பொழுது இரண்டு பழம் பிரதிகளில் 'தெருளிற் பொருள்வானுலகு' (2872) என்ற செய்யுளின் உரைக்குப் பின் மூன்று செய்யுட்களின் உரைகள் மட்டும் மிகப் பிழைபட்ட உருவத்துடன் எழுதப்பட்டிருந்தன. ஒரு பிரதியில் தனித்தனியே செய்யுட்களுக்கு இடம் விட்டும் மற்றொன்றில் இடம் விடாமலும் அவ்வுரைகள் இருந்தன. அவ்வுரைகளுக்குரிய 3 பாடல்களும் வேறு எந்தப் பிரதியிலும் கிடைக்கவில்லை. திருத்தமாக அவைகளும் பாடல்களும் கிடைத்தபின் வெளியிடப்படும்'

என்று எழுதியுள்ளார்கள். இம்மூன்று பாடல்களுள் மேற்காட்டிய 'மலங்கிமதி' (புறத். 315), 'உள்ளமொழி' (புறத். 1064) என்ற இரண்டு செய்யுட்களும் அகப்பட்டனவென்று கோடல் பொருந்துவதாகலாம். ஒருகால் 'மலங்கிமதி' என்ற செய்யுட்கருத்து 'மெய்யுரை விளங்குமணி' (சிந்தா. 2869) என்றதன்கண் ணுள்ளதென அதனையொதுக்கினும், 'உள்ளமொழி' என்ற செய்யுள் மேற்குறித்த மூன்றனுள் ஒரு செய்யுளாக இருத்தல் வேண்டுமெனத் தோன்றுகிறது. முன்பின்னுள்ள செய்யுட்களின் சந்த வொற்றுமையும் பொருளியையும் இக்கருத்திற்குரிய பெருஞ்சான்றுகளாம்.

மேலே குறித்த மூன்று செய்யுட்களின் உரைகளும் பதிப்பாசிரியரவர்களது அன்பினாற் கிடைத்தன. அவை வருமாறு:

1. '. . . பெருமற்[1] கள்ளுண்டார் தம்முள்ளே மறைக்கும் பொருளையும் ஈதென்று வெளியாக்குவர்; அவர்க்குத் தம்மா லெள்ளப்படுவாருந் தம்மையெள்ள நவையு முண்டாம்; அதனை நுகரவேண்டில், உயிர்க் கொலையும் வேண்டும்; ஆதலால் உணர்வழிக்குங் கள்ளுண்டலும் நமக்கு வேண்டா; அதனை யிகழ்ந்து தவிர்க' என்று கூறினா னென்றா னென்க.

2. தான ... ...
... ... ...
... ... ...
... ... ...

'தான ... ... மிடைந்த வூனிற் சீர் - என்பை நிரைத்து நரம்பாற் பின்னின வுடம்பின் கனம்; என்றது நிண[2] நெய்யை. உருண்ட ஈக்கள் பரந்து, மாம்பூவின் மதுவையுஞ் சீரையும் ஒரு நிகராக[3] ஈட்டி, அவையிற்றினின்று நுகராதே பறந்துபோன பின்பு, கண்டு ஆய்வார் கொணர்ந்[4] தோம்பிவைத்த

1. பெருமா. 2. பிண. 3. ஒரு சிறைக. 4. கண்டாராவாரகுணாந.

தேனை யுண்டலும் வேண்டா ; அதன் தீங்கைத் தெரிந்தறியின்' என்று கூறினு னென்று னென்க.

இழித ஈட்டியவை-இருல் இழித்ததல்...

3. அழுந்திளையர் - ஆடவர் ; அழுத்திளையரென விகாரம் ; என்றது ஊனை நுகர்தற்கு அழுந்தும் உணர்வில்லாதாரை. சார்தற்கு - நுகர்தற்கு. அரிகாயர் - ஐய வுடம்பினர் ; என்றது மகளிரை. புல்லுதல் - சமைத்தல் ; 'வெங்கருனை புல்லுதற்கு' (சீவகசிந். 2781) என்றாற் போல.

'அழுத்திளையர் அரிகாயராகிய வவரை நோக்கி, இழிக்குந் தகையவாகி ஈ மொய்த்துப் புழுப்பயிலுதலை யுடைத்தாகிய புண்ணுகிய பிணத்தை யாம் நுகர்தற்கு இணையில்லாவா யுவக்கும்படி கறியாகச் சமையென்று கூற ... ... ...பட்ட வூனை யுண்டலை உணர்ந்தவர்கள் தவிர்வீராக' என்று கூறினு னென்று னென்க.

இனி 'வழுத்திளையர்' என்று பாடமோதி, 'தம்மை யெப்பொழுதும் வழுத்து மடவார் நுகர்தற்குத் தசையை அரிகின்ற வுடம்பினை யுடையர்' என்று மகளிர்க்குப் பெயராக்கலு மொன்று. 'என்றான்' என்பதனை முன்னர்க் கவிகட்குங் கூட்டுக.

இவற்றுள்ளே, முதலிற் காணப்படுவது மேலே காட்டிய 'உள்ளமொழி' என்ற செய்யுளின் உரையென்பதிற் சிறிது ஐயுறவு கொள்ளுதற் கிடமுண்டு.

சூளாமணி

சிந்தாமணியினுஞ் சிறந்ததாக மதிக்கப்படுஞ் சூளாமணி யென்ற அரும்பெறற் காவியத்தினின்றும் 79 செய்யுட்கள் புறத்திரட்டிற் கோக்கப்பட்டுள்ளன. அவற்றுள் மூன்று செய்யுட்கள் ஸ்ரீ சி. வை. தாமோதரம் பிள்ளையவர்களது சூளாமணிப் பதிப்பிற் காணப்படவில்லை. அவை வருமாறு :

களவி ஞகிய காரறி வுள்ளன்மின்
விளைவில் வெவ்வினை வீவில் கதிகளுள்
உளைய வுள்ளழித் தொன்றல வேதனை
வளைய வாங்கி வருத்த முறுக்குமே. (புறத். 308)

கொன்றுயிர் நடுங்கச் சென்று கொலைத்தொழிற் கருவி யேந்தி
நின்றெரி நுடங்கு கண்ணுற் பாவமே நினைந்து செத்தார்
சென்றெரி நரகில் வீழ்வர் செவ்வனே துன்ப மஞ்சி
நன்றியில் கொலையி னீங்கி நற்றவம் புரிமி னென்றான். ( ,, 338)

கொலையி னீங்குமின் கொண்மி னுலகினுள்
தலைவ னல்லறந் தக்க தெனவுவந்
தலையி னீங்கிய வவ்வுல கெய்துதல்
முனைவர் சொன்ன முடிவிது வாகுமே. ( ,, 339)

பிள்ளையவர்கள் பதிப்பித்த சூளாமணி நூற்பிரதிகளும் இப்போது கிடைத்தற்கு அரியவாய் விட்டன. அவர்கள் ஒருசில பிரதிகளைக் கொண்டே பதிப்பித்திருக்கிறார்கள். பல பிரதிகள் கிடைக்குமெனத் தெரிகின்றபடியால் திருந்திய பதிப்பொன்று வெளிவருதல் நலமாகும்.

**இராமாவதாரம்**

லோகோத்தமமான மகாகாவியங்களுள் ஒன்றாகிய இராமாவதாரத்தினின்றும் 27 செய்யுட்கள் புறத்திரட்டிற் சேர்க்கப்பட்டுள்ளன. அவற்றுள்ளே இரண்டு செய்யுட்கள் இப்போதுள்ள இராமாயணப் பதிப்புக்களில் இல்லை. அவை வருமாறு:

*கொன்றவன் குறைத்தவன் கொணர்ந்து விற்றவன்*
*ஒன்றிய பொருள்கொடுத் துவந்து கொண்டவன்*
*நன்றிது வென்றவன் நாவிற் பெய்தவன்*
*என்றிவ ரறுவரு நரக மெய்துவார்.* (புறத். 332)

*எய்த வின்னல் வந்த போழ்தில் யாவ ரேனும் யாவையுஞ்*
*செய்ய வல்ல ரென்று கொள்க சேணெ றிக்க ணேகிட*
*மைய கண்ணி செய்ய பாதம் வல்ல வாய மற்றிவன்*
*கைக ளின்று பன்ன சாலை கட்ட வல்ல வாயவே.* ( ,, 725)

இவ்விரண்டாவது செய்யுள் வெகு காலத்திற்கு முன்னரே செந்தமிழ்ப் பத்திரிகையில் (தொகுதி, 1) வெளியிடப்பட்டது.

சென்ற ஒரு நூற்றாண்டிற்கு மேலாக இராமாயணம் பதிப்பிடுதலிற் பலரும் முயன்று வந்திருக்கிறார்கள். ஆனால் இதுவரை நூல் முழுதும் சுத்தமான பதிப்பாக வெளிவந்ததில்லை. நல்லபதிப்பு வெளிவரவேண்டுவது தமிழ்க் காவிய வுணர்ச்சிக்கு மிக இன்றியமையாததாகும்.

## V

**புறத்திரட்டினுற் பிழைகள் திருந்துதல்**

இனி, பாடநிச்சயம் முதலியவற்றிற்குப் புறத்திரட்டு உதவுகின்றமையை நோக்குவோம். பதினெண் கீழ்க்கணக்கு நூல்களிற் பெரும்பாலன நாம் இளமை தொடங்கிக் கற்றுவரும் நூல்கள். மாணவர்களுடைய பாட புத்தகங்களில் இந்நூல்களின் செய்யுட்கள் பலவாய்க் காணப்படும். இவையனைத்திற்கும் பழைய உரைகளும் உள்ளன. எனினும் இவைகள் இன்றுகாறும் திருத்தமாகப் பதிப்பிக்கப்பெறவில்லை. ஒரு சிலவற்றிற்கு இக்காலத்து அறிஞரிற் சிலர் தாமாகச் சொந்த உரை இயற்றி வெளியிட்டுள்ளார்களென்பது உண்மை. ஆனால் இவ்வுரைகள் பழைய உரையை நோக்காதபடியும் ஏட்டுப் பிரதிகள்பெற்று மூலபாடத்

தைப் பரிசோதியாதபடியும் எழுதப் பெற்றுள்ளனவாதலின், அவை கொள்ளுதற்குரியனவல்லவெனத் தோன்றுகிறது. பதினெண் கீழ்க் கணக்கு நூல்களிலிருந்து பல செய்யுட்கள் புறத்திரட்டில் தொகுக்கப்பட்டிருத்தலின், அச்செய்யுட் பாடங்கள் திருந்துதற்குப் புறத்திரட்டு மிகவும் பயன்படுகின்றது. உதாரணமாக, பழமொழி நூலினின்றும் ஒரு செய்யுள் தருகின்றேன்.

இந்நூலின் 320-ஆவது செய்யுள் பின்வருமாறு பதிப்பிக்கப் பட்டுள்ளது :

காப்பிகந் தோடிக் கழிபெருஞ் செல்வத்தைக்
கோப்பெரியான் கொள்ளக் கொடுத்திரா தென்செய்வார்
நீத்த பெரியார்க்கே யாயினும் மிக்கவை
மேவிற் பரிகார மில்.

இதன் பழையவுரை வருமாறு :

'(தான்காக்கும்) காவலைக் கடந்து (கொடுங்கோல் நெறியிலே) ஓடி, (ஒருவன் மாட்டுள்ள) மிக்க பெரிய செல்வத்தை அரசனானவன் (மனம்) வருந்தானும் வாங்கினால், (அவன் கீழ்வாழ்வார்) கொடுத்து (உயிர் பிழைத்து) இராமல் என்ன (பரிகாரம்) செய்வார்? (பிறர்க்குப் பயன்பட் டியல்பாகவே ஆகக்கடவ நிலம் முதலாயின தாம்) பயந்த பொருள்களை (த்தாமே) விரும்பி நுகரின், (அதற்குச் செய்யும்)பரிகாரம் இல்லை,(எல்லாப் பொருளையும்) நீத்தேயிருந்த துறந்தார்க்கே யாயினும்: (அதுபோல்)'

இவ்வுரையில் மூலத்திலில்லாது வருவித்துரைத்தன இருதலைப் பிறையுள் அமைக்கப்பட்டுள்ளன. 'பெரியான்' என மூலங் கொடுக்கப் பட்டிருக்க, உரை 'வருந்தானும்' என்று உள்ளது. உரைக்கேற்ற மூலம் 'பரியான்' என்பது எளிதில் உணரத்தகும். 'மிக்கவை' என்று மூலம் கொடுக்கப்பட்டிருக்க, உரை 'பயந்த பொருள்களை' என்று உள்ளது. உரைக்கேற்ற மூலம் 'ஈத்தவை' யென்பது தெளிவு. இப்பாடங்களே புறத்திரட்டிற் காணப்படுகின்றமை கீழ்வரும் செய்யுளால் உணரலாம் :

காப்பிறந் தோடிக் கழிபெருஞ் செல்வத்தைக்
கோப்பரியான் கொள்ளக் கொடுத்திரா தென்செய்வார்
நீத்த பெரியார்க்கே யாயினு மீத்தவை
மேவிற் பரிகார மில். (புறத். 680)

இதுபோன்று பழமொழிச் செய்யுட்கள் பலவற்றிற் பிழைகள் திருந்தப்பெற்று உண்மைப் பாடங்கள் துலங்குகின்றன.

ஒப்பு நோக்குதற்குச் சுத்தப் பிரதிகளின்றி ஒருவாறு பரிசோதித்து வெளியிடப்பெற்ற பழமொழி முதலிய நூல்கள் ஒருபுறம் இருப்ப, கிடைத்த பிரதிகளைக் கொண்டு நன்கு ஆராய்ந்து மிகச் செம்மையாகப் பரிசோதித்து வெளியிடப் பெற்ற நூல்களிலும் ஒருசில விடங்களிற் சிறந்த பாடங்களைப் புறத்திரட்டு உதவுகின்றது.

புறத்திரட்டினுற் பாடங்கள் சிறந்து விளங்குதல்

உதாரணமாக, சூளாமணியிலே மந்திரசாலைச் சருக்கத்தில் 12-ஆவது செய்யுள் பின்வருமாறு உள்ளது :

ஆற்றலென் றோதப் பட்ட வரசர்கட் கவற்றின் மிக்க
ஆற்றருன் சூழ்ச்சி யென்ப தாதலா லதனை யாயும்
ஆற்றலா ரமைச்ச ராக வமைச்சரோ டமர்ந்து செல்லும்
ஆற்றலா னரச ஞகி னரியதொன் றில்லை யன்றே.

இதன்கணுள்ள முதலிரண்டு சீர்களுக்குப் பதிலாக 'ஆற்றன்மூன் றோதப்' என்ற பாடம் புறத்திரட்டிற் (482) காணப்படுகின்றது. வடமொழி நீதிநூல்களிற் ப்ரபாவசக்தி, உத்ஸாக சக்தி, மந்த்ரசக்தி யென்பன சக்தித்ரயம் என்றும், இவற்றுள்ளே மந்த்ரசக்தி மேம்பட்டதாமென்றும் கூறப்படுதல் பலரும் அறிந்ததே. காமந்தகத்தில் 'ப்ரபாவோத்ஸாக சக்திப்யாம் மந்த்ரசக்தி: ப்ரசஸ்யதே'[1] என்று கூறப்பட்டுள்ளது. சக்தி த்ரயத்தை மூவகையாற்றலென்பர் தமிழாசிரியர்கள். பரிமேலழகர் 'ஆற்றலென்பது பெருமை, அறிவு, முயற்சி யென்னும் மூன்றன்மேலும் நிற்றலிற் சாதியொருமை' என்றனர்[2].

காமந்தகத்தில் வந்துள்ள இக்கருத்தே இச்செய்யுளின் முதலிரண்டடிகளிலும் கூறப்பட்டது. ஆகவே 'ஆற்றன்மூன் றோதப்பட்ட' என்ற பாடமே சிறப்புடையதாதல் காணலாம்.

இங்ஙனம் பிழைகள் திருந்துதற்கும் பாடங்கள் சிறத்தற்கும் உதவுவதோடு புறத்திரட்டின் பெருமை அமைந்துவிடவில்லை. கம்பராமாயணம் என்ற பிரசித்தகாவியம் இராமாவதாரம்[3] என்ற பெயரால் வழங்கி வந்தமை இக்காலத்தில் யாவரும் அறிவர். ஆனால் புறத்திரட்டின் மூலமாகத்தான் இவ்வுண்மை முதன்முதலில் வெளியிடப்பட்டது. இதன் பின்னரே 'இராமாவ தாரப்பேர்த் தொடை

கம்ப ராமாயணத்திற் குரிய பெயர் புறத்திரட்டினுல் தெரிந்தமை

---

1. 16-ஆவ்து ப்ரகாணம், ச்லோகம் 7.
2. குறள், 891. உரை.
3. காஷ்மீரி மொழியில் 'ராமாவதாரம்' என்ற பெயரினல் இராமசரிதம் வழங்கப்படுவதும் ஈண்டு அறிந்து இன்புறத்தக்கது.

நிரம்பிய தோமறு மாக்கதை' என்று கம்பர் அருளிய வாக்கின் பொருள் நன்கு விளங்குவதாயிற்று. புறத்திரட்டுச் சுருக்கங்களில் 'இராமகாதை' என்ற பெயர் காணப்படுதலினால் இப்பெயரானும் பிற்காலத்து இப்பெருங் காப்பியம் வழங்கப்பெற்றதாதல் வேண்டும். இவ்விரண்டு பெயர்களும் இக்காலத்து வழக்கொழிந்துவிட்டன. முதனூலாசிரியர் இட்ட 'இராமாயணம்' என்ற பெயரே கம்பரது அரும்பெருநூலுக்கும் பெயராக இப்பொழுது வழங்குகின்றது. கம்பர் இட்டபெயரை நாம் தெரிந்து கொள்ளுதற்குக் கருவியாய் முடிந்தது புறத்திரட்டேயாகும்.

இதுகாறும், பெயர்போலும் வேறு வழியாகக் கேள்வியுற்றிராத நூல்கள் ஒரு சிலவும், பெயரறிந்த நூல்களினின்று பாடல்கள் ஒரு சிலவும், அறைகுறையாய் அகப்பட்டுள்ள ஒரு சில நூல்களினின்று பாடல்கள் ஒருசிலவும், முழுவதும் அகப்பட்டுள்ள சில நூல்களுக்குரிய மிகைச்செய்யுட்கள் சிலவும், திருந்திய பாடங்கள் சிலவும், சிறந்த பாடங்கள் சிலவும், புறத்திரட்டினால் தெரியவருகின்றமை விரிவாகக் கூறப் பட்டது. இராமாவதாரம் என்ற பெயர்வழக்காறு இத்தொகை நூலால் விளங்கினமையும் காட்டப்பட்டது.

இனி இதன் பெருமையைப்பற்றிச் சொல்லவேண்டுவதாக எஞ்சி நிற்பது ஒரேயொரு விஷயமாகும். சிறந்த தமிழ் நூல்களைப் பல பிரதிகள் கொண்டு பன்முறை ஆராய்ந்து நன்கு பரிசோதித்துப் பதிப் பிடுதலில் தலைசிறந்து விளங்குபவர்கள் தாக்ஷிணாத்ய கலாநிதி மகாமகோபாத்யாய டாக்டர் உ. வே சாமிநாதையரவர்களேயாவர். அவர்கள் மிக அரிதின் முயன்று பதிப்பித்துள்ள பதிற்றுப்பத்து, பரிபாடல், புறநானூறு என்னும் அரும்பெறற் றமிழ்ச்செல்வ நிலயங்களிற் புறத்திரட்டின் புகழ் கமழ்கின்றது. புறநானூற்றின் பதிப்புரையிலே 'புறத்திரட்டென்னுந் தொகை நூலாலும் இந்நூல் மூலமும் உரை முதலியனவும் அடைந்த திருத்தங்கள் பல' என்று ஸ்ரீ. ஐயரவர்கள் எழுதியுள்ளார்கள். ஒருமுறை, அவர்களிடத்து இத்தொகை நூலைக் குறித்து யான் பேசிக்கொண்டிருந்த பொழுது, 'எனக்கு இது கண்ணைக் கொடுத்த நூல்' என்ற அழகிய சொற்களை அன்பினால் உளங்குழைந்து கூறினார்கள். ஐயரவர்களால் இங்ஙனம் மதிப்பிடப்பட்டமை புறத்திரட்டின் பெருமையை நன்கு அறிவுறுத்து கின்றது.

**சங்கநூற்பதிப்புக் களுக்குப் புறத்திரட்டு உதவியமை**

இத்தொகைநூலிலே தமிழ்மொழிக்கு இயல்பாக உரிய சுவை யாண்டும் புலனாகின்றது. நல்ல தமிழ் அருகி வருகின்ற இக்காலத்தே

இந்நூற் பயிற்சி மிகுதியும் வேண்டற்பாலதாகும். இந்நூற்பயிற்சியினால் சொல்லுவனவற்றிலும் எழுதுவனவற்றிலும் சுவை மிகுவதாகும். கவிதைச் சுவையும் பல விடங்களில் நயம்பெற அமைந்துள்ளது. உதாரணமாக முத்தொள்ளாயிரச் செய்யுட்களைக் கூறுதல் தகும். கவிச்சுவையை அறிந்து இன்புறுதற்கும் இந்நூல் பெரிதும் உதவுவதாகும்.

**புறத்திரட்டிலுள்ள தமிழ்ச் சுவையும் கவிச் சுவையும்**

ஆனால் இத்தொகைநூல் கவிதைச் சுவையைத் தலைமையாகக் கொண்டு தொகுக்கப்பெற்றதன்று; நல்லறிவு ஊட்டுதலையே தனது பெருநோக்கமாகக் கொண்டுள்ளது. இதற்கேற்பவே பால் அதிகாரங்கள் வகுக்கப்பட்டிருக்கின்றன. இம்முறையை விடுத்துக் கவிச்சுவையைத் தலைநோக்கமாகக் கொண்டு தொகை நூலொன்று திரட்டப் படுதல் மிக அவசியமாகும். கவித்வத்தின் இயல்பு இன்னதென்று பரந்துபட்ட ஆராய்ச்சியினால் நுணுகி விசாரித்தல் வேண்டும். கவித்வத்தின் கதியை இலக்கியக் கண்கொண்டு நோக்குதல் வேண்டும். கவித்வம் உரு வெடுக்கும் முறையை ஊன்றியுணர்தல் வேண்டும். சுருங்கக் கூறின், கவித்வம் பற்றிய பல திறப்பட்ட ஆராய்ச்சிகளையும் செவ்வனே நிகழ்த்துதல் வேண்டும். இவ்வகையாராய்ச்சியினால் கவித்வ உணர்ச்சி நிரம்பப் பெற்று, செவிநுகர் கனிகளைத் தேர்ந்து தேர்ந்து, இனியவற்றுளெல்லாம் இனியவற்றைத் தொகுத்தல் வேண்டும். இங்ஙனம் திரட்டப்பெற்ற ஓர் தொகைநூலே உண்மைக் கவிதைக்கு உரையாணியாக வல்லது; செஞ்சொற் கவியின்பத்துள் நம்மைத் திளைக்கும்படி செய்யவல்லது.

**இனித் திரட்டப் பெறவேண்டும் தொகைநூலின் இயல்பு**

கவிநயம் பலவும் பொருந்தும் இத்தகைய தொகை நூலொன்றினைத் திரட்டுதலில் நம்மவர்கள் இனி முயலுதல்வேண்டும். இம்முயற்சி நூலாகப் பரிணமிக்கும்வரை, புறத்திரட்டு விளைக்கும் தமிழ்ச் சுவையை நுகர்ந்து இன்புறுவோமாக!

# புறத்திரட்டு

## அறத்துப் பால்

### அதிகாரம் 1.

### கடவுள் வாழ்த்து

* தன்றே ஞன்கினு மொன்றுகைம் மிகூஉங்
களிறுவளர் பெருங்கா டாயினு
மொளிபெரிது சிறந்தன் றளியவென் னெஞ்சே.

* வேக மாநெறி சேரும் வினைகளும்
தாக போகம் விடாத தளர்ச்சியும்
சோக வாரியி னல்வருந் துன்பமும்
போக யானை முகத்தனைப் போற்றுவாம்.

1. மன்னிய நாண்மீன் மதிகனலி யென்றிவற்றை
முன்னம் படைத்த முதல்வனைப்—பின்னரும்
ஆதிரையா னாதிரையா னென்றே யறையுமால்
ஊர்திரைநீர் வேலி யுலகு.

(முத்தொள்.)

2. மதிமன்னு மாயவன் வாண்முக மொக்கும்
கதிர்சேர்ந்த ஞாயிறு சக்கர மொக்கும்
முதுநீர்ப் பழனத்துத் தாமரைத் தாளி
னெதிர்மலர் மற்றவன் கண்ணொக்கும் பூவைப்
புதுமல ரொக்கும் நிறம்.

(நான்மணி.)

3. கண்ணகன் ஞால மளந்ததூஉங் காமருசீர்த்
தண்ணறும் பூங்குருந்தஞ் சாய்த்ததூஉம்—நண்ணிய
மாயச் சகட முதைத்ததூஉ மிம்மூன்றும்
பூவைப்பூ வண்ண னடி.

(திரிகடு.)

4. கண்மூன் றுடையான்றாள் சேர்தல் கடிதினிதே
தொன்மாண் துழாய்மாலை யானைத் தொழலினிதே
முந்துறப் பேணி முகநான் குடையானைச்
சென்றமர்ந் தேத்த லினிது. (இனிய.)

---

* இச்செய்யுட்கள் நூற்குப் புறம்பாகப் பிரதிகளிற் காணப்படுகின்றன.
1. 11-12 னென்றென் றயருமால்; 14 வேலை. 2. 18 ரேய்க்கும்.
3. 'மூவிலை நெடுவேல்' (9) என்பதன் பின்; 5 தண்ணுறும்.

5. நீல நெடுங்கொண்மூ நெற்றி நிழனாறிக்
காலை யிருள்சீக்குங் காய்கதிர்போற்—கோல
மணித்தோகை மேற்றோன்றி மாக்கடற்சூர் வென்றோன்
அணிச்சே வடியெம் மரண்.

(இரும்பல்.)

6. மூவா முதலா வுலகம்மொரு மூன்று மேத்தத்
தாவாத வின்பந் தலையாயது தன்னி னெய்தி
ஓவாது நின்ற குணத்தொண்ணிதிச் செல்வ னென்ப
தேவாதி தேவ னவன்சேவடி சேர்து மன்றே.

(சிந்தா.)

7. முன்றான் பெருமைக்க ணின்றான்முடி வெய்து காறு
நன்றே நினைந்தான் குணமேமொழிந் தான்ற னக்கென்
றொன்றானு மில்லான் பிறர்க்கேயுறு திக்கு ழந்தா
னன்றே யிறைவ னவன்றாள்சர ணாங்க ளன்றே.

(குண்டல.)

8. கண்ணி கார்நறுங் கொன்றை காமர்
வண்ண மார்பிற் றாருங் கொன்றை
ஊர்தி வால்வெள் ளேறே சிறந்த
சீர்கெழு கொடியு மவ்வே றென்ப
கறைமிட றணியலு மணிந்தன் றக்கறை
மறைநவி லந்தணர் நுவலவும் படுமே
பெண்ணுரு வொருதிற னாகின் றவ்வுருத்
தன்னு ளடக்கிக் கரக்கினுங் கரக்கும்
பிறைநுதல் வண்ண மாகின் றப்பிறை
பதினெண் கணனு மேத்தவும் படுமே
எல்லா வுயிர்க்கு மேம மாகிய
நீரற வறியாக் கரகத்துத்
தாழ்சடைப் பொலிந்த வருந்தவத் தோற்கே. (புறம்)

9. மூவிலை நெடுவே லாதி வானவன்
இடமருங் கொளிக்கு மிமையக் கிழவி
தனிக்கண் விளங்கு நுதற்பிறை மேலோர்
மிகைப்பிறை கதுப்பிற் சூடி வளைக்கையின்
வாள்பிடித் தாளி யேறித் தானவன்
மாளக் கடும்போர் கடந்த குமரி
மூவா மெல்லடித் திருநிழல்
வாழி காக்கவிம் மலர்தலை யுலகே. (ஆசிரிய.)

---

**5.** 8 சோலை. **7.** 15 ழன்றா; 19-20 ணாகு மன்றே. **8.** 6, 1 மறைநுவ; 10, 2 கணங்களு. **9.** 2, 4 கள்வி; 3, 1 களிக்கண்; 5, 4 தானவர்.

**9 a.** கடியார் பசுந்துளபக் கார்மேனிச் செங்கண்
நெடியானை யெட்டெழுத்தாய் நின்றானைப் புள்ளின்
கொடியானை யென்னுளத்துட் கொண்டானை யேத்தும்
அடியா ரடியா ரடியா ரடியேனே (குருகை.)

இச் செய்யுள் சங்கத்துப் பிரதியில் உள்ளது.

## அதி. 2. அவையடக்கம் *

10. வியத்தக்க காணுங்கால் வெண்மையிற் றீர்ந்தார்
வியத்தக்க தாக வியப்ப—வியத்தக்க
அல்ல வெனினும் அறியாதார் தாம்போல
எல்லாம் வியப்ப ரினிது.

(தகடூர். $)

11. முந்நீர்ப் பிறந்த பவளத்தொடு சங்கு முத்தும்
அந்நீ ருவர்க்கு மெனின்யாரவை நீக்க கிற்பார்
இந்நீர வென்சொற் பழுதாயினுங் கொள்ப வன்றே
பொய்ந்நீர வல்லாப் பொருளால்விண் புகுது மென்பார்.

(சிந்தா. 5)

12. கற்பா லுமிழ்ந்த மணியுங்கழு வாது விட்டால்
நற்பா லழியுந் நகைவெண்மதி போனி றைந்த
சொற்பா லுமிழ்ந்த மறுவும்மதி யாற்க ழூஉவிப்
பொற்பா விழைத்துக் கொளற்பாலர் புலமை மிக்கார்.

( ,, 4)

13. நோய்க்குற்ற மாந்தர் மருந்தின்சுவை நோக்க கில்லார்
தீக்குற்ற காத லுடையார்புகைத் தீமை யோரார்
போய்க்குற்ற மூன்று மறுத்தான்புகழ் கூறு வேற்கென்
வாய்க்குற்ற சொல்லின் வழுவும்வழு வல்ல வன்றே.

(குண்டல.)

14. அறையு மாடரங் கும்படப் பிள்ளைகள்
தறையிற் கீறிடத் தச்சருங் காய்வரோ
பொறையிற் கேள்வியில் லாதவென் புன்கவி
முறையி னூலுணர்ந் தோரு முனிவரோ.

(இராமாவ. பாயி. 10)

## அதி. 3. நீத்தார் பெருமை †

15. மனத்தினும் வாயினு மெய்யினுஞ் செய்கை
யனைத்தினு மான்றவிந்தா ராகி—நினைத்திருந்
தொன்றும் பரியலரா யோம்புவா ரில்லெனிற்
சென்று படுமா முயிர். (பழமொழி, 359)

---

* இவ்வதிகாரம் 'நீத்தார் பெருமை'யின் பின் சிலபிரதிகளில் உள்ளது.
**10.** 3-4 வெம்மையிற் றீர்ந்தோர்; 6 தாகி; 7 வியப்பர்; 15 ரிருந்து.
$ பழமொழி. **12.** 16-17 பொற்பால் விளைத்துக். **13.** 13 மறுத்தான் குணம்; 16 வாய்க்குற்றஞ்.

**14a.** எழுத்துச் சொற்பொருள் யாப்பலங் காரமென் றிசைத்த
வழுத்து பஞ்சதி காரமு மாசறத் தறியேன்
பழுத்த பாவலர் பாதபைங் கமலமென் முடிமேல்
அழுத்து மஞ்சலி யாசறக் கற்றதே யறியேன். (குருகை.)

இச்செய்யுள் சங்கத்துப் பிரதியில் உள்ளது.

† முனிவர் பெருமை.

**15.** 8 நினைத்துணர்ந்; 13 சென்றும்.

16. கரிய மாலினுங் கண்ணுத லானினும்
உரிய தாமரை மேலுறை வானினும்
விரியும் பூதமோ ரைந்தினு மெய்யினும்
பெரிய ரந்தணர் பேணுதி யுள்ளத்தால்.

(இராமாவ. மந்தரை. 7)

17. அந்த ணாளர் முனியவு மாங்கவர்
சிந்தை யாலருள் செய்யவுந் தேவருள்
நொந்து ளாரையு நோவகன் றாரையும்
மைந்த வெண்ண வரம்புமுண் டாகுமோ.

( ,, 8)

18. ஆவ தற்கு மழிவதற் கும்மவர்
மேவ நிற்கும் விதியுமென் றாலினி
யாவ தெப்பொரு ளிம்மையு மும்மையுந்
தேவ ரைப்பா வுந்துணை சீர்த்ததே.

( ,, 10)

19. கிழிந்த சிதாஅ ருடுத்து மிழிந்தார்போல்
ஏற்றிரந் துண்டும் பெருக்கத்து நூற்றிதழ்த்
தாமரை யன்ன சிறப்பினர் தாமுண்ணின்
தீயூட்டி யுண்ணும் படிவத்தர் தீயவை
யாற்றுழி யாற்றிக் கழுவுபு தோற்றம்
அவிர்முருக்கந் தோலுரித்த கோலர் துவர்மன்னும்
ஆடையர் பாடி னருமறையர் நீடின்
உருவந் தமக்குத்தா மாய
இருபிறப் பாளர்க் கொருஉகமா தீதே.

(தகடூர்.)

## அதி. 4. பெறுதற்கருமை

20. மக்க ளுடம்பு பெறற்கரிது பெற்றபின்
மக்க ளறியு மறிவரிது—மக்கள்
அறிவறிந்தா ரென்பா ரறத்தின் வழுவார்
நெறிதலை நின்றொழுகு வார்.

(அறநெறி. 212)

21. பரவை வெண்டிரை வடகடற் படுநுகத் துளையுள்
திரைசெய் தென்கட லிட்டதோர் நோன்கழி சிவணி
யரச வத்துளை யகவயிற் செறிந்தென வரிதாற்
பெரிய யோனிகள் பிழைத்திவண் மானிடம் பெறலே.

(சிந்தா. 2749)

22. விண்டு வேய்நர லூன்விளை கானவ ரிடமுங்
கொண்டு கூர்ம்பனி குலைத்திடு நிலைக்களக் குறும்பும்
உண்டு நீரென வுரையினு மரியன வொருவி
மண்டு தீம்புனல் வளங்கெழு நாடெய்த லரிதே. ( ,, 2750)

---

**17.** 11-12 நொய்துயர்ந் தாரையு; 16 டாங்கொலோ. **19.** 1, 4 மிழந்தார் போல்; 6, 2 (ங்) கோலுடுத்த. **20.** 6 ளறிவு; 12 வழுவா. **21.** 14 செறித் தென; 19 மானுடம். **22.** 3 லூன்விழை, லூன்வினை.

23. வில்லின் மாக்கொன்று வெண்ணிணத் தடிவிளிம் படுத்த
பல்லி ஞர்களும் படுகடற் பரதவர் முதலா
எல்லை நீங்கிய விழிதொழி லிழிகுல மொருவி
நல்ல தொல்குலம் பெறுதலு நரபதி யரிதே.

(சிந்தா. 2751)

24. கருவி மாமழை கனைபெயல் பொழிந்தென வழிநாள்
அருவி போற்றொடர்ந் தருதன வரும்பிணி யழலுட்
கருவிற் காய்த்திய கட்டளைப் படிமையிற் பிழையார்
உருவின் மிக்கதோ ருடம்பது பெறுதலு மரிதே.

( „ 2752)

25. வினைபல வலியி னாலே வேறுவே றியாக்கை யாகி
நனிபல பிறவி தன்னுட் டுன்புறாஉ நல்லு யிர்க்கு
மனிதரி னரிய தாகுந் தோன்றுதல் தோன்றி னாலும்
இனியவை நுகர வெய்துஞ் செல்வமு மன்ன தேயாம்.

(வளையா.)

26. உயர்குடி நனியுட் டோன்ற லூனமில் யாக்கை யாதல்
மயர்வறு கல்வி கேள்வித் தன்மையால் வல்ல ராதல்
பெரிதுண ரறிவே யாதல் பேரறங் கோட லென்றாங்
கரிதிவை பெறுத லேடா பெற்றவர் மக்க ளென்பார்.

( „ )

27. தக்க தின்ன தகாதன வின்னவென்
றொக்க வுன்னல ராகி யுயர்ந்துள
மக்க ளும்விலங் கேமனு வின்னெறி
புக்க வேலவ் விலங்கும்புத் தேளிரே. (இராமாவ. வாலி. 112)

## அதி. 5. அறன் வலியுறுத்தல்

28. ஈனுலகத் தாயி னிசைபெறாஉம் அஃதிறந்
தேனுலகத் தாயி னினிததூஉந்—தானொருவன்
நாள்வாயு நல்லறஞ் செய்வாற் கிரண்டுலகும்
வேள்வாய் கவட்டை நெறி.

(பழமொழி, 6)

29. பலநாளு மாற்றா ரெனினு மறத்தைச்
சிலநாள் சிறந்தவற்றாற் செய்க—முலைநெருங்கி
நைவது போலு நுசுப்பினாய் நல்லறஞ்
செய்வது செய்யாது கேள்.

( „ 134)

30. முற்பெரிய நல்வினை முட்டின்றிச் செய்யாதார்
பிற்பெரிய செல்வம் பெறுபவோ—வைப்போ
டிகலிப் பொருள்செய்ய வெண்ணியக்கா லென்னும்
முதலிலார்க் கூதிய மில். ( „ 312)

---

**23.** 14 வழிகுல. **24.** 15-16 பிழையாதுருவின். **25.** 11 (ம்) பல்லு; 20 நுகரா. **26.** 8-9 கனிந்த கேள்வித்; 13-14 பெரிதுணர் வறிவே; 17 கேட்ட; 21 லோடே. **28.** 13 வேள்வேய். **30.** 10-11 பொருள் செய்த லெண்ணியக்கா.

31. தக்கமில் செய்கைப் பொருள்பெற்றா லப்பொருள்
தொக்க வகையு முதலும் அதுவானால்
மிக்க வகையா லறஞ்செய் யெனவெகுடல்
அக்காரம் பால்செருக்கு மாறு.

(பழமொழி, 199)

32. இன்றி யமையா விருமுது மக்களும்
பொன்றினமை கண்டும் பொருள்பொருளாக் கொள்பவோ
ஒன்றும் வகையா லறஞ்செய்க வூர்ந்துருளிற்
குன்று வழியடுப்ப தில்.

( ,, 303)

33. அரும்பெறல் யாக்கையைப் பெற்ற பயத்தாற்
பெரும்பயனு மாற்றவே கொள்க—கரும்பூர்ந்த
சாறுபோற் சாலவும் பின்னுதவி மற்றதன்
கோதுபோற் போகுமுடம்பு.

(நாலடி, 34)

34. கரும்பாட்டிக் கட்டி சிறுகாலைக் கொண்டார்
துரும்பெழுந்து வேங்காற் றுயராண் டுழவார்
வருந்தி யுடம்பின் பயன்கொண்டார் கூற்றம்
வருங்காற் பரிவ திலர்.

( ,, 35)

35. மக்களா லாய பெரும்பயனும் ஆயுங்கால்
எத்துணையும் ஆற்றப் பலவானால்—தொக்க
உடம்பிற்கே யொப்புரவு செய்தொழுகா தும்பர்க்
கிடந்துண்ணப் பண்ணப் படும்.

( ,, 37)

36. தாஞ்செய் வினையல்லாற் றம்மொடு செல்வதுமற்
றியாங்கணுந் தேரிற் பிறிதில்லை—யாங்குத்தாம்
போற்றிப் புனைந்த வுடம்பும் பயமின்றே
கூற்றங்கொண் டோடும் பொழுது.

( ,, 120)

37. நீரறம் நன்று நிழனன்று தன்னிலுட்
பாரறம் நன்றுபாத் துண்பானேற்—பேரறம்
நன்று தளிசாலை நாட்டிற் பெரும்போகம்
ஒன்றுமாஞ் சால வுடன்.

(சிறுபஞ்ச. 62)

38. உலகெலாங் காக்கு மொருவ னொருவன்
உலகெலாங் காலா லுழன்றும்—விலையுண்டாங்
காராது நல்கூரு மென்றா லறம்பாவம்
பாராத தென்னோவிப் பார்.

(பாரதம்)

39. காட்சி யொழுக்கொடு ஞானந் தலைநின்று
மாட்சி மணவாழ்த லன்றியு—மீட்சியில்

---

**32.** 14 வழியடைப்ப. **34.** 2 கட்டிச். **36.** 8 யீங்குத்தாம். **38. 7** லுழன்று; 8 விலையுண்டங். **39.** 3 கல்வி.

வீட்டுலக மெய்த லெனவிரண்டே நல்லறங்
கேட்டதனா லாய பயன்.

(அறநெறி. 10)

40. நற்றானஞ் சீல நடுங்காத் தவமறிவர் சிறப்பிந் நான்கும்
மற்றாங்குச் சொன்ன மனைவியரிந் நால்வர் வயிற்றுட் டோன்றி
யுற்றானொருமகனேமேற்கதிக்குக்கொண்டுபோமுரவோன்றன்னைப்
பெற்றார் மகப்பெற்றா ரல்லாதார் பிறர்மக்கள் பிறரே கண்டீர்.

(சிந்தா. 1545)

41. வேற்றுவ ரில்லா நுமரூர்க்கே செல்லினும் வெகுண்டீர் போல
ஆற்றுணாக் கொள்ளா தடிபுறத்து வைப்பீரே யல்லிர் போலுங்
கூற்றங்கொண் டோடத்தனியே கொடுநெறிக்கட் செல்லும்போழ்தைக்
காற்றுணாக் கொள்ளீ ரழகலா லறிவொன்று மிலிரே போலும்.

( ,, 1550)

42. புள்ளிநீர் வீழ்ந்தது பெருகிப் புன்புலால்
உள்வளர்ந் தொருவழித் தோன்றிப் போறம்
உள்குமேல் முழுப்புலாற் குரம்பை யுய்ந்துபோய்
வெள்ளநீ ரின்பமே விளைக்கு மென்பவே.

( ,, 2933)

43. பாற்றுளி பவளநீர் பெருகி யூன்றிரண்
டூற்றுநீர்க் குறம்புழை யுய்ந்து போந்தபின்
சேற்றுநீர்க் குழியுளே யழுந்திச் செல்கதிக்
காற்றுணாப் பெறாதழு தலறி வீழுமே.

( ,, 2934)

44. மாய்தலும் பிறத்தலும் வளர்ந்து வீங்கலும்
தேய்தலு முடைமையைத் திங்கள் செப்புமால்
வாய்புகப் பெய்யினும் வழுக்கி நல்லறங்
காய்வது கலதிமைப் பால தாகுமே.

( ,, 2932)

45. திருந்திய நல்லறச் செம்பொற் கற்பகம்
பொருந்திய பொருளொடு போகம் பூத்தலான்
வருந்தினும் அறத்தினை மறத்த லோம்புமின்
கரும்பெனத் திரண்டதோட் கால வேற்கணீர்.

( ,, 2935)

46. பிறந்தவர்க ளெல்லா மவாப்பெரிய ராகித்
துறந்துபுகழ் வேண்டாரோர் துற்றவிழு மீயார்
அறங்கரிது சேய்த்தென்ப தியாதுமறி யாரேல்
வெறும்பொருள தம்மா விடுத்திடுமி னென்றாள்.

( ,, 2622)

---

**40.** 4 தவமறிவாஞ்; 9-10 மனைவியர்க ணால்வர், மனைவியரிந் நால்வரவர். **41.** 16 நெடுநெறிக்கட்; 17 கொல்லும்; 18-19 போழ்தி னாற்றுணாக். **42.** 9 உள்குமின். **44.** 12 னல்லறங். **45.** 2 நல்லறஞ்; 10 அறத்திறம். **46.** 6 வேண்டாரே; 10-11 செய்யதென யாதுமறி.

47. புள்ளுவர் கையினு முய்யும் புள்ளுள
கள்ளவிழ் கோதையீர் காண்மி னல்வினை
யொள்ளியா னொருமக னுரைத்த தென்னன்மின்
தெள்ளியீ ரறத்திறந் தெரிந்து கொண்மினே.

(சிந்தா. 2931)

48. செய்குவங் கொல்லோ நல்வினை யெனவே
ஐய மறாஅர் கசடீண்டு காட்சி
நீங்கா நெஞ்சத்துத் துணிவில் லோரே
யானை வேட்டுவன் யானையும் பெறுமே
குறும்பூழ் வேட்டுவன் வறுங்கையும் வருமே
அதனால், உயர்ந்த வேட்டத் துயர்ந்திசி னோரே
செய்வினை மருங்கி னெய்த லுண்டெனிற்
செய்யா வுலகத்து நுகர்ச்சியுங் கூடுஞ்
செய்யா வுலகத்து நுகர்ச்சி யில்லெனின்
மாறிப் பிறப்பி னின்மையுங் கூடும்
மாறிப் பிறவா ராயினு மிமையத்துக்
கோடுயர்ந் தன்ன தம்மிசை நட்டுத்
தீதில் யாக்கையொடு மாய்தறவத் தலையே

(புறம், 214)

49. எளிதென விகழா தரிதென வுரையாது
நுமக்குநீர் நல்குதி ராயின் மனத்திடை
நினைப்பினும் பிறக்கும் மொழியினும் வளருந்
தொழிற்படிற் சினைவிடேஉப் பயக்கு முணர்த்தின்
இவணு மும்பருந் துணையே யதனால்
துறைதொறுந் துறைதொறு நோக்கி
யறமே நிறுத்துமி னறிந்திசி னோரே.

(ஆசிரிய.)

## அதி. 6. இல்வாழ்க்கை

50. மழையின்றி மாநிலத்தார்க் கில்லை மழையுந்
தவமிலா ரில்வழி யில்லை தவமும்
அரசிய லில்வழி யில்லை யரசனும்
இல்வாழ்வா னில்வழி யில். (நான்மணி. 47)

51. செல்வத்தைப் பெற்றார் சினங்கடிந்து செவ்வியராப்
பல்கிளையும் வாடாமற் பாத்துண்டு—நல்லன
தான மறவாத தன்மையோர்க் கஃதென்ப
யானைமேற் பெற்ற தவிசு. (அறநெறி. 67)

---

**47.** 2 கையுளு; 12 தெள்ளன்மின்; 16 கேண்மினோ. **48.** 2,4 காட்சி யொடு; 3,2 நெஞ்சத்; 5,1 குறும்புள்; 5,3 வெறுங்கையும். 8,1 ரெய்யா; 8,4, கூறு; 9, 1 ரெய்யா; 10, 3 னிளமையுங்; 11,3-4 ராயி னிமையத்துக். **49.** 1, 4 வரையாது; 3, 2 பிறர்க்கு. **50.** 9-10 மரசியலா னில்வழி, மரசிலா னில்வழி. **51.** 3 சினங்கடிந்துஞ்; 4 செவ்வியராய்ப்; 11-12 தன்மையரே லஃதென்ப; 13-14 யானைமேலிட்ட; 13-15 வானகத்து வைப்பதோர் வைப்பு.

52. மருவிய காதல் மனையாளுந் தானும்
இருவரும் பூண்டுய்ப்பி னல்லா—லொருவரால்
இல்வாழ்க்கை யென்னு மியல்புடைய வான்சகடஞ்
செல்லாது தெற்றிற்று நின்று.

(அறநெறி. 89)

53. வைத்ததனை வைப்பென் றுணரற்க தாமதனைத்
துய்த்து வழங்கி யிருபாலும்—அத்தகத்
தக்குழி நோக்கி யறஞ்செய்க அஃதன்றோ
எய்ப்பினில் வைப்பென் பது.

(பழமொழி, 37)

54. மல்லற் பெருஞ்செல்வம் மாண்டவர் பெற்றக்கால்
செல்வுழியும் ஏமாப்பச் செய்வதாம்—மெல்லியற்
சென்றொசிந் தொல்கு நுசுப்பினாய் பைங்கரும்பு
மென்றிருந்து பாகு செயல்.

( „ 289)

55. தான்பிறந்த இன்னினைந்து தன்னைக் கடைப்பிடித்துத்
தான்பிற ராற்கருதற் பாடுணர்ந்து—தான்பிறராற்
சாவ வெனவாழான் சான்றோராற் பல்யாண்டும்
வாழ்க வெனவாழ்த னன்று.

(சிறுபஞ்ச. 67)

56. அரம்போற் கிளையடங்காப் பெண்ணவியாத் தொண்டு
மரம்போல் மகன்மாறாய் நின்று—கரம்போலக்
கள்ளநோய் காணும் அயலைந்து மாறுமே
உள்ளநோய் வேண்டா வுயிர்க்கு.

( „ 61)

57. ஒழிந்தவை தானிரங்கான் கைவாரா நச்சான்
இகழ்ந்தவை யின்புறான் இல்லார்—மொழிந்தவை
மென்மொழியா னுண்ணெகிழ்ந் தீவானேல் விண்ணோரால்
இன்மொழியா லேத்தப் படும்.

( „ 81)

58. புண்பட்டார் போற்றுவா ரில்லாதார் போகுயிர்கள்
கண்கெட்டார் காலிரண்டு மில்லாதார்—கண்கட்பட்
டாழ்ந்து நெகிழ்ந்தவர்க் கீந்தார் கடைபோக
வாழ்ந்து கழிவார் மகிழ்ந்து.

( „ 77)

59. சிறைக்கிடந்தார் செத்தார்க்கு நோற்பார் பலநாள்
உறைக்கிடந்தா ரொன்றிடையிட் டுண்பார்—பிறைக்கிடந்து
முற்றனைத்து முண்ணுத் தவர்க்கீந்தார் மன்னராய்க்
கற்றனைத்தும் வாழ்வார் கலந்து. ( „ 70)

---

**52.** 5 இருவராய்ப்; 8 தொருவரா; 11 மியல்புடை; 12 பொற்சகடஞ்; 14 தெற்றித்து. **53.** 11 யறஞ் செய்யின். **54.** 7 செய்வர்தாம்; 11-12 நுழை நுண் ணுசுப்பினாய்; 14 வெல்லஞ். **55.** 9-10 சாவவென வாழாதான்; 12(ல்) எந்நாளும். **57.** 5 இழந்தவை, இழிந்தவை; 9 இன்மொழியா. **58.** 8 தங்கட் பட்; 15 வகுத்து. **59.** 10 முண்ணு; 12 மன்னவராய்க்.

60. துறந்தார் துறவாதார் துப்பிலார் தோன்று
திறந்தாரீ டற்று றிளையார்—சிறந்தவர்க்குப்
பண்ணுளுஞ் சொல்லாய் பழிப்பிலுண் பாற்படுத்தான்
மண்ணுளு மன்னனு மற்று.
(ஏலாதி, 35)

61. நடப்பார்க்கூ ணல்ல பொறைதாங்கி நாளுங்
கிடப்பார்க்கூண் கேளிர்க்கூண் கேடின்—றுடக்கார
வானகத்தார்க் கூணே மறுதலையார்க் கூணமைத்தான்
தானகத்தால் வாழ்வான் றக.
(,, 71)

62. அறிவ தறிந்தடங்கி யஞ்சுவ தஞ்சி
யுறுவ துலகுவப்பச் செய்து—பெறுவதனால்
இன்புற்று வாழு மியல்புடையா ரெஞ்ஞான்றுந்
துன்புற்று வாழ்த லரிது.
(நாலடி, 74)

63. கருமமு முள்படாப் போகமுந் துவ்வாத்
தருமமுந் தக்கார்க்கே செய்யா—வொருநிலையே
முட்டின்றி மூன்று முடியுமே லஃதென்ப
பட்டினம் பெற்ற கலம்.
(,, 250)

64. விருந்தின்றி யுண்ட பகலுந் திருந்திழையார்
புல்லப் புடைபெயராக் கங்குலும்—இல்லார்க்கொன்
றீயா தொழிந்தகன்ற காலையு மிம்மூன்றும்.
நோயே யுரனுடை யார்க்கு.
(திரிகடு. 44)

65. நோவஞ்சா தாரொடு நட்பும் விருந்தஞ்சும்
ஈர்வளையை யில்லத் திருத்தலுஞ்—சீர்பயவாத்
தன்மை யிலாள ரயலிருப்பு மிம்மூன்றும்
நன்மை பயத்த லில.
(,, 63)

66. கற்றவர் கடவுட் டானஞ் சேர்ந்தவர் களைக ணில்லார்
அற்றவ ரந்த ணாள ரன்றியு மனைய ரோர்க்
குற்றதோ ரிடுக்கண் வந்தா லுதவுதற் குரித்தன் றாயிற்
பெற்றவிவ் வுடம்பு தன்னாற் பெறும்பய னில்லை மன்னோ.
(சூளா. சீய. 202)

67. யாண்டுபல வாக நரையில வாகுதல்
யாங்கா கியரோ வென்குதி ராயின்
மாண்டவென் மனைவியொடு மக்களு நிரம்பினர்
யான்கண் டனையரென் னிளையரும் வேந்தனும்

---

60. 5-6 திறந்தாரிடத்தா; 7 ரினையார். 61. 4 ணர்க்கூண்; 5 கிடைப் பார்க்கூண்; 7 கேளின்; 8 றுடக்கான, றுடக்கார்ந்த, றுடற்சார; 12 கூண மைத்; 13 தானகத்தே. 62. 14-15 வாழ்வதிலர். 64. 10 தொழிந்தமைந்த. 65. 1 கொலையஞ்சா, கோலஞ்சா. 66. 11-12 மவர்கள் போல்வார்க்; 24 மன்னு. 67. 2, 3 வென்குவ; 7, 2 பலர்யாம்.

அல்லவை செய்யான் காக்கு மதன்றலை
ஆன்றவிந் தடங்கிய கொள்கைச்
சான்றோர் பலர்யான் வாழு மூரே. (புறம், 191)

## அதி. 7. கற்புடை மகளிர் *

68. சொல்லாமை நோக்கிக் குறிப்பறியும் பண்பிற்றம்
இல்லாளே வந்த விருந்தோம்பிச்—செல்வத்
திடரின்றி யேமார்ந் திருந்தாரே யென்றுங்
கடனுட் டொலாம்பண்ணி னார்.
(பழமொழி, 255)

69. கட்கினியாள் காதலன் காதல் வகைபுனைவாள்
உட்குடையா ளூரா ணியல்பினாள்—உட்கி
இடனறிந் தூடி யினிதி னுணரு
மடமொழி மாதராள் பெண்.
(நாலடி, 384)

70. நாலாறு மாறாய் நனிசிறிதா யெப்புறனு
மேலாறு மேனுறை சோரினு—மேலாய
வல்லாளாய் வாழுமூர் தற்புகழு மாண்கற்பின்
இல்லா ளமைந்ததே யில்.
(,, 383)

71. மழைதிளைக்கு மாடமாய் மாண்பமைந்த காப்பா
யிழைவிளக்கு நின்றிமைப்பி னென்னும்—விழைதக்க
மாண்ட மனையாளை யில்லாதா னில்லகங்
காண்டற் கரியதோர் காடு.
(,, 361)

72. கல்லெனீர் வேலிக் கணவன் கழல்வாழ்த்தி
ஒல்லும் வகையால் விருந்தோம்பிச்—செல்லுந்தம்
இற்செல்வ மன்றி யிரந்தவர்க் கீகல்லாப்
புற்செல்வம் பூவா புகழ்.
(வெண்பா. 279)

73. கொய்தார மார்பிற் கொழுநன் தணந்தபின்
பெய்வளை யாட்குப் பிறிதில்லை—வெய்ய
வளிமறையு மின்றி வழக்கொழியா வாயில்
நளிமனைக்கு நற்றுணை நாண்.
(,, 278)

74. நல்விருந் தோம்பலி னட்டாளாம் வைகலும்
இல்புறஞ் செய்தலி னீன்றதாய்—தொல்குடியின்
மக்கட் பெறலின் மனைக்கிழத்தி யிம்மூன்றுங்
கற்புடையாள் பூண்ட கடன். (திரிகடு. 64)

* வாழ்க்கைத் துணைநலம். **68.** 10 யேமாங். **69.** 6 ளூர்நா; 11 யியல்பி. **71.** 3 மாண்டமைந்த, 5-6 யிழைவிளக்கி னின்றிமைப்பி. **72.** 1 கல்லு நீர்; 2 வேலைக்; 10 மின்றி; 12 கீதல்கல்லாப். **73.** 8 செய்த. **74.** 4 வைகலின்; 5 இல்லறம், இல்வினை; 8 தொல்புவியின்.

75. வழிபா டுடையளாய் வாழ்க்கை நடாஅய்
முனியாது சொல்லிற்றுச் செய்தாங் கெதிருரையா
தேத்திப் பணியுமே லில்லாளை யாண்மகனும்
போற்றிப் புனையும் புரிந்து.

(அறநெறி. 92)

76. மக்கட் பெறுதல் மடனுடைமை மாதுடைமை
யொக்க வுடனுறைத லூணமைவு—தொக்க
அலவலை யல்லாதாட் கைந்திவை கண்டீர்
தலைமகனைத் தாழ்க்கு மருந்து.

(சிறுபஞ்ச. 52)

77. எப்பணியா லின்புறுவர் காதலரக் காதலரை
அப்பணியா லப்பொழுதே யன்புறுத்தி—யொப்ப
மனங்குழையும் வண்ண மகிழ்விப்ப தன்றே
கனங்குழையார் தங்கள் கடன்.

(பாரதம்)

78. நாடு மூரும் நனிபுகழ்ந் தேத்தலும்
பீடு றும்மழை பெய்கெனப் பெய்தலும்
கூட லாற்றவர் நல்லது கூறுங்காற்
பாடு சான்மிகு பத்தினிக் காவதே.

(வளையா.)

79. சாமெனிற் சாத ஞேதல் தன்னவன் றணந்த காலைப்
பூமனும் புனைத லின்றிப் பொற்புடன் புலம்ப வைகிக்
காமனே யெனினுஞ் சொல்லார் கணவற்கை தொழுது வாழ்வார்
தேமலர்த் திருவொ டொப்பார் சேர்ந்தவன் செல்லல் தீர்ப்பார்.

(சிந்தா. 1598)

## அதி. 8. கற்பில் மகளிர்

80. நிறையான் மிகுகலா நேரிழை யாரைச்
சிறையா லகப்படுத்த லாகா—அறையோ
வருந்த வலிதினின் யாப்பினும் நாய்வால்
திருந்துத லென்றுமோ வில்.

(பழமொழி, 30)

81. பேணடக்கம் பேணுப் பெருந்தகைமை பீடுடைமை
நாணொடுக்க மென்றைந்து நண்ணின்றுப்—பூணொடுக்கும்
பொன்வரைக் கோங்கமுலைப் பூந்திருவே யாயினுந்
தன்வரைத் தாழ்த்த லரிது.

(சிறுபஞ்ச. 44)

---

75. 5 முனியாது; 7-8 செய்யாதெதிருரையா; 9 தேற்றிப்; 14-15 புரியும் புகழ்ந்து. 76. 9-11 விலைமக ளல்லாதாட் கைந்திவையே; 10-12 யல்லாமை பெண்மகளிர்க் கைந்துங். 77. 3 காதலர்; 7 யின்புறுத்தி. 78. 5-6 பீட லுமழை, நீடு மாமழை; 16 யாவதே, யாதலே. 79. 11-12 புலம்பி வாடக், பொலிந்துவாடி; 13-14 சாமனே யென்றுஞ், காமனை யென்றுஞ்; 15 செல்லார்; 22 சேர்ந்தவர். 80. 3-4 நேரிழையார் தம்மைச்; 8 அறைகோ; 10 வலிதினி; 14 லொன்றுமோ. 81. 1 பேண்டகைமை; 7 நன்றுய்; 9-10 பொன்வரைக்கோங் கேர்முலைப்.

82. எறியென் றெதிர்நிற்பாள் கூற்றஞ் சிறுகாலை
அட்டில் புகாதா ளரும்பிணி—அட்டதனை
யுண்டி யுவவாதா ளில்வாழ்பே யிம்மூன்றுங்
கொண்டானைக் கொல்லும் படை.

(நாலடி, 363)

83. வழுக்கெனைத்து மில்லாத வாள்வாய்க் கிடந்தும்
இழுக்கினைத் தாம்பெறுப வாயின்—இழுக்கெனைத்துஞ்
செய்குறுப் பாணி சிறிதேயச் சின்மொழியார்
கையுறுப் பாணி பெரிது.

(,, 362)

84. உற்ற நலத்தா னொழுகாது நாளும்
பெற்றவ னேவியசொற் பேணாது—மற்றவன்முன்
திண்ணுருவங் கொண்டு சிலைக்கு மவளன்றே
பெண்ணுருவங் கொண்டதோர் பேய்.

(பாரதம்)

85. தலைமகனிற் றீர்ந்துறைதல் தான்பிறரிற் சேறல்
நிலைமையில் தீப்பெண்டிர்ச் சேர்தல்—கலனணிந்து
வேற்றார் புகுதல் விழாக்காண்டல் நோன்பெடுத்தல்
கோற்றொடியார் கோளழியு மாறு.

(அறநெறி. 94)

86. அயலூ ரவன்செல்ல அம்மஞ்ச ளாடிக்
கயலேர்கண் ணார வெழுதிப்—புயலைம்பால்
வண்டோச்சி நின்றுலாம் வாளார் தடங்கண்ணாள்
தண்டோச்சிப் பின்செல்லுங் கூற்று.

(,, 93)

87. பெண்ணெனப் படுவ கேண்மோ பீடில பிறப்பு நோக்கா
உண்ணிறை யுடைய வல்ல வொராயிர மனத்த வாகும்
எண்ணிப்பத் தங்கை யிட்டா லிந்திரன் மகளு மாங்கே[மன்றே.
வெண்ணெய்க்குன் றெரியுற் றாற்போல் மெலிந்துபின் னிற்கு

(சிந்தா. 1597)

88. பள்ள முதுநீர்ப் பழகினு மீனினம்
வெள்ளம் புதியது காணின் விருப்புறாஉம்
கள்ளவிழ் கோதையர் காமனோ டாயினும்
உள்ளம் பிறிதா யுருகலுங் கொண்ணீ.

(வளையா.)

89. உண்டியுட் காப்புண் டுறுபொருட் காப்புண்டு
கண்ட விழுப்பொருள் கல்விக்குக் காப்புண்டு

---

**82.** 10 யுதவாதா; 12 யிம்மூவர். **83.** 8 இழுக்கனைத்துஞ். **84.** 3-4 னொழுகாதங் கெந்நாளும். **85.** 2 றீர்ந்தொழுக; 4 சேர்தல்; 5-6 நிலைமையி றீப் பெண்டிரைச்; 12 நோன்பிடுதல், நோன்படுதல்; 13 கோற்றொடி யாள்; 14 கோளொழியு. **86.** 2 ரவன்போக, ரவன்போத; 6-7 ணார்மை யெழுதிப்; 11 வாளேர்; 13 கொண்டோச்சிப். **88.** 8 விரும்புறும்; 9-12 வெள்ளம் பழகினும் வேற்றோர் முகம்பெறின்; 15 யுருகிடுங்.

பெண்டிரைக் காப்ப திலமென்று ஞாலத்துக்
கண்டு மொழிந்தனர் கற்றறிந் தோரே.

(வளையா.)

90. எத்துணை யாற்று ளிடுமணல் நீர்த்துளி
புற்பனி யுக்க மரத்திலை நுண்மயிர்
அத்துணை யும்பிற ரஞ்சொலி னார்மனம்
புக்கன மென்று பொதியறைப் பட்டார்.

( ,, )

91. தளிப்பெயற் றண்டுளி தாமரை யின்மேல்
வளிப்பெறு மாத்திரை நின்றற் றொருவன்
அளிப்பவற் காணுஞ் சிறுவரை யல்லால்
துளக்கிலர் நில்லார் துணைவளைக் கையார்.

( ,, )

## அதி. 9. புதல்வரைப் பெறுதல்

92. சிதலை தினப்பட்ட வால மரத்தை
மதலையாய் மற்றதன் வீழூன்றி யாங்குக்
குதலைமை தந்தைகட் டோன்றிற்றான் பெற்ற
புதல்வன் மறைப்பக் கெடும்.

(நாலடி, 197)

93. கருங்கழல் வெண்குடைக் காவலற்குச் செவ்வாய்ப்
பெருங்கட் புதல்வன் பிறப்ப—பெரும்பெயர்
விண்ணோர் மலிந்தார் வியலிடத்தா ரேத்தினார்
எண்ணா ரவிந்தா ரிகல்.

(வெண்பா. 211)

94. எந்நெறி யானு மிறைவன்றன் மக்களைச்
செந்நெறிமேல் நிற்பச் செயல்வேண்டும்—அந்நெறி
மான்சேர்ந்த நோக்கினா யாங்க வணங்காகுந்
தான்செய்த பாவை தனக்கு.

(பழமொழி, 8)

95. தொக்கிள மலர்துதை விலாத சோலையும்
புக்கிளந் தாமரை நகாத பொய்கையும்
மிக்கிளம் பிறைவிரி விலாத வந்தியும்
மக்களை யிலாததோர் மனையு மொக்குமே.

(சூளா. மந்திர. 175)

96. சூழிநீண் முகத்தன துளைக்கைம் மாவொடு
மாழைநீண் மணியிவை யெளிய மாண்பினால்
வாழுநீர் மக்களைப் பெறுதல் மாதரார்க்
காழிசூழ் வையகத் தரிய தாவதே. (,, மந்திர. 177)

---

**92.** 14-15 மறைக்கப் படும். **93.** 9 விண்ணூர்; 10 மகிழ்ந்தார். **95.** 7 யிலாத ; 10 பிறைவர ; 10-11 பிறைவிசும் பிலாத; 14 யிலாதவர். **96.** 8 மாட்சியால்; 12-13 மாதரா ராழிசூழ்; 13 காழிநீர்.

97. மன்ன ரானவ ரல்லர்மேல் வானவர்க் கரசாம்
பொன்னின் வார்கழற் புரந்தரன் போலிய ரல்லர்
பின்னை மாதவந் தொடங்கிநோய் பிழைத்தவ ரல்லாற்
சொன்ம றுமகப் பெற்றவ ரருந்துயர் துறந்தார்.

(இராமாவ. மந்திர. 68)

98. பொறையிலா வறிவு போகப் புணர்விலா விளமை மேவத்
துறையிலா வனச வாவி துகிலிலாக் கோலத் தூய்மை
நறையிலா மாலை கல்வி நலமிலாப் புலமை நன்னீர்ச்
சிறையிலா நகரம் போலுஞ் சேயிலாச் செல்வ மன்றே.

(வளையா.)

99. படைப்புப்பல படைத்துப் பலரோ டுண்ணும்
உடைப்பெருஞ் செல்வ ராயினு மிடைப்படக்
குறுகுறு நடந்து சிறுகை நீட்டி
யிட்டுந் தொட்டுங் கவ்வியுந் துழந்தும்
நெய்யுடை யடிசில் மெய்பட விதிர்த்தும்
மயக்குறு மக்களை யில்லோர்க்குப்
பயக்குறை யில்லைத்தாம் வாழு நாளே.

(புறம், 188)

## அதி. 10. விருந்தோம்பல்

100. இன்சொ லளாவ லிடமினி தூண் யார்யார்க்கும்
வன்சொற் களைந்து வகுப்பானேல்—மென்சொல்
முருந்தேய்க்கு முட்போ லெயிற்றினாய் நாளும்
விருந்தேற்பர் விண்ணோர் விரைந்து.

(ஏலாதி, 7)

101. முறுவ லினிதுரை கானீர் மணைபாய்
கிடக்கையொ டிவ்வைந்து மென்ப தலைச்சென்றார்க்
கூணொடு செய்யுஞ் சிறப்பு.

(ஆசார. 54)

102. நின்ற புகழொடு நீடுவாழ் கிவ்வுலகில்
ஒன்ற வுயிர்தளிர்ப்ப வோம்பலால்—வென்றமருள்
வாள்வினை நீக்கி வருக விருந்தென்னும்
ஆள்வினை வேள்வி யவன்.

(வெண்பா. 215)

103. யாறு ளடங்குங் குளமுள வீறுசால்
மன்னர் விழையுங் குடியுள தொல்மரபின்
வேத முறுவன பாட்டுள வேளாண்மை
வேள்வியொ டொப்ப வுள. (நான்மணி. 52)

**97.** 3 ரல்லரேல்; 11 பின்னு; 17 றுமகற். **98.** 18 நன்னர்ச். **99.** 1, 3 பல்லாரோ; 6, 1 மயக்கு; 6, 3 யில்லோர்; 7, 1-2 பயக்குற வில்லதாம்; 7, 2 யிலர்தாம். **100.** 1-4 இன்சொலன் மாட்சி யிடமினிது யாவர்க்கும்; 1-3 இன்சொல் மலர்ச்சி யிடமினிதூண், இன்சொல்லு மாட்சி யிடமினிதூண்; 13 விரைந்தேற்பர்; 15 விருந்து. **102.** 6 வுயிர்களிப்ப, வுயிர்தளிப்ப; 10 வீக்கி.

104. வருந்தி யொருவன்பால் மற்றொருவன் வந்தாற்
பொருந்தி யகமலர்ந்து போற்றி—விருந்தேற்றுத்
தன்னா லியன்றளவுந் தானுதவா னாகினவற்
கின்னா நரகே யிடம்.

(பாரதம்)

## அதி. 11. இனியவை கூறல்

105. புன்சொல்லு நன்சொல்லும் பொய்யின் றுணர்கிற்பார்
வன்சொல் வழியராய் வாழ்தலு முண்டாமோ
புன்சொல் லிடர்ப்படுப்ப தல்லா லொருவனை
இன்சொல் லிடர்ப்படுப்ப தில்.

(பழமொழி, 277)

106. இன்சொலா னாகுங் கிளைமை யியல்பிலா
வன்சொலா னாகும் பகைமைமன்—மென்சொல்லி
னாய்வினா னாகு மருளி னுமனத்தான்
வீவிலா வீடாய் விடும்.

(நான்மணி. 104)

107. சிதைவுரையான் செற்ற முரையான்சீ ரில்லார்
இயல்புரையா னீன முரையான்—நசையார்க்குங்
கூடுவ தீவானைக் கொவ்வைபோற் செவ்வாயார்
நாடுவர் விண்ணோர் நயந்து.

(ஏலாதி, 34)

108. மலர்ந்தமுகத் தானு மதுரவுரை யானும்
நலந்தந் திடுவர்கள் நல்லோர்—புலந்திருந்த
இன்னா முகத்தா னருளா திடும்பொருள்
தன்னாற் பயனுண்டோ தான்.

(பாரதம்)

## அதி. 12. செய்ந்நன்றி யறிதல்

109. நன்கொன் றறிபவர் நாழி கொடுப்பவர்க்
கென்று முறுதியே சூழ்க வெறிதிரை
சென்றுலாஞ் சேர்ப்ப வதுபோல நீர்போயும்
ஒன்றிரண்டாம் வாணிக மில்.

(பழமொழி, 275)

110. தமரானுந் தம்மானு முற்றாலொன் றாற்றி
நிகராகச் சென்றாரு மல்லர்—இவர்திரை
நீத்தநீர்த் தண்சேர்ப்ப செய்த துவவாதார்க்
கீத்ததை யெல்லா மிழவு. (,, 307)

---

**104.** 6 முகமலர்ந்து; 8 விருந்தேன்று; 10 லியன்றன. **105.** 10·11 லிடர்ப்படுப் பினல்லா. **106.** 3 கிழமை; 7 வசைமன; 9-12 னாய்வினா னாகு மருள்மன மம்மனத்தான். **107.** 1 சிதையுரையான்; 8 நசைவாற்குக், நசையார்க்குங், நசையவர்க்குக். **108.** 3 மதுரமொழி; 8 புலர்ந்திருந்த; 12 திடும் பொருள்கள். **109.** 11 வதுபோலும். **110.** 9 நீத்துநீர்த்; 12 துதவாதார்க்.

111. தாமாற்ற கில்லாதார் தாஞ்சாரப் பட்டாரைத்
தீமாற்றத் தாலே பகைப்படுத்திட்—டேமாப்ப
முன்னோட்டுக் கொண்டு முரணஞ்சிப் போவாரே
யுண்ணோட் டகலுடைப் பார்.

(பழமொழி, 28)

112. நாடி நமரென்று நன்குபுறந் தந்தாரைக்
கேடு பிறரொடு சூழ்தல் கிளர்மணி
நீடகல் வெற்ப நினைப்பின்றித் தாமிருந்த
கோடு குறைத்து விடல்.

(,, 81)

113. தமனென் றிருநாழி யீத்தவ னல்லால்
நமனென்று காயினுந் தான்காயான் மன்னே
அவனிவ னென்றுரைத் தெள்ளிமற் றியாரே
நமனெய்யை நக்கு பவர்.

(,, 35)

114. தினையனைத்தே யாயினுஞ் செய்தநன் றுண்டாற்
பனையனைத்தா வுள்ளுவர் சான்றோர்—பனையனைத்
தென்றுஞ் செயினு மிலங்கருவி நன்னாட
நன்றில நன்றறியார் மாட்டு.

(நாலடி, 344)

115. ஆன்முலை யறுத்த வறனி லோர்க்கும்
மாணிழை மகளிர் கருச்சிதைத் தோர்க்கும்
பார்ப்பார்த் தப்பிய கொடுமை யோர்க்கும்
வழுவாய் மருங்கிற் கழுவாயு முளவே
நிலம்புடை பெயர்வ தாயினு மொருவன்
செய்தி கொன்றோர்க் குய்தி யில்லென
அறம்பா டின்றே யாயிழை கணவ
காலை யந்தியு மாலை யந்தியும்
புறவுக்கரு வன்ன புன்புல வரகின்
பாற்பெய் புன்கந் தேனொடு மயக்கிக்
குறுமுயற் கொழுஞ்சூடு கிழித்த வொக்கலொ
டிரத்தி நீடிய வகன்றலை மன்றத்துக்
கரப்பி லுள்ளமொடு வேண்டுமொழி பயிற்றி
அமலைக் கொழுஞ்சோ றார்ந்த பாணர்க்
ககலாச் செல்வ முழுவதுஞ் செய்தோன்
எங்கோன் வளவன் வாழ்க வென்றுநின்
பீடுகெழு நோன்றாள் பாடே னாயிற்
படுபறி யலனே பல்கதிர்ச் செல்வன்
யானோ தஞ்சம் பெருமவிவ் வுலகத்துச்
சான்றோர் செய்த நன்றுண் டாயின்

---

**112.** 4 தந்தார்க்குக், தந்தாற்குக்; 9 நீடுகெல். **113.** 13 நமனெயம். **114.** 4 றுண்டாற்; 6 (க்) கொள்ளுவர்; 13 நன்றில்லை, நன்றியில். **115.** 2, 3 கருவுசிதைத்; 7, 2 டிற்றே; 9, 3 புன்புற; 21, 2-3 தீண்டிய வின்குரல்.

இமையத் தீண்டி யின்குரல் பயிற்றிக்
கொண்டல் மாமழை பொழிந்த
நுண்பஃ றுளியினும் வாழிய பலவே.

(புறம், 34)

## அதி. 13. நடுவு நிலைமை

116. காய்த லுவத்த லகற்றி யொருபொருட்கண்
ஆய்த லறிவுடையார் கண்ணதே—காய்வதன்கண்
உற்ற குணந்தோன்றா தாகு முவப்பதன்கண்
குற்றமுந் தோன்றா கெடும்.

(அறநெறி. 22)

117. ஒக்கும் வகையா லுடன்பொருஞ் சூதின்கண்
பக்கத் தொருவ னொருவன்பாற் பட்டிருக்கும்
மிக்க சிறப்பின ராயினுந் தாயர்க்கு
மக்களுட் பக்கமோ வேறு.

(பழமொழி, 260)

118. வாரம் பட்டுழித் தீயவும் நல்லவாம்
தீரக் காய்ந்துழி நல்லவுந் தீயவாம்
ஓரும் வையத் தியற்கையன் றோவென
வீர வேனெடுங் கண்ணி விளம்பினாள்.

(சிந்தா. 888)

119. கோதி லார்குல மக்கள் மாக்கள்மற்
றேதி லாரென வியைந்த தீமையார்
ஆத லாற்றமர் பிறர்க ளாவதங்
கோதி னாலவர்க் குள்ளஃ தில்லையே.

(சூளா. சீய. 25)

## அதி. 14. அடக்கமுடைமை

120. அடங்கி யகப்பட வைந்தினையுங் காத்துத்
தொடங்கிய மூன்றினான் மாண்டீண்—டடம்பொழியச்
செல்லும்வாய்க் கேமஞ் சிறுகாலைச் செய்தாரே
கொல்லிமேற் கொட்டுவைத் தார்.

(பழமொழி, 99)

121. கற்றறிந்தார் கண்ட வடக்கம் அறியாதார்
பொச்சாந்து தம்மைப் புகழ்ந்துரைப்பர்—தெற்ற
அறைக லருவி யணிமலை நாட
நிறைகுடம் நீர்தளும்ப லில்.

(,, 243)

---

**117.** 13 மக்களிற். **118.** 6 காய்ந்திடில்; 9 ஓர; 12 றோவெனா. **119.** 2 லாதவர்; 3 மக்களம்; 4-5 மக்களுமேதி; 6-7 லாதவரியைந்த, லாரவரியைந்த; 8 தின்மையார் 12 னென்பதாங். **120.** 3 ஐந்தினைக்; 14 கோட்டுவைத். **121.** 1 கற்றறிவர்; 3 தடக்கம்; 4 அடங்காதார்; 5 பொச்சாந்துந்; 14 நீர்தளும்ப.

122. செம்மாந்து செல்லுஞ் செறுநரை யட்டவர்
தம்மேற் புகழ்பிறர் பாராட்டத்—தம்மேற்றும்
வீரஞ்சொல் லாமையே வீழ்க களிப்பினுஞ்
சோரப் பொதியாத வாறு.

(பழமொழி, 131)

123. பொல்லாத சொல்லி மறைந்தொழுகும் பேதைதன்
சொல்லாலே தன்னைத் துயர்ப்படுக்கும்—நல்லாய்
மணலுள் முழுகி மறைந்து கிடக்கும்
நுணலுந்தன் வாயாற் கெடும்.

(,, 184)

124. களிகடற் றண்சேர்ப்ப நல்கூர்ந்த மக்கட்
கணிகல மாவ தடக்கம்—பணிவில்சீர்
மாத்திரை யின்றி நடக்குமேல் வாழுமூர்
கோத்திரங் கூறப் படும்.

(நாலடி, 242)

125. கற்றறிந்த நாவினர் சொல்லார்தஞ் சோர்வஞ்சி
மற்றைய ராவார் பகர்வர் பனையின்மேல்
வற்றிய வோலை கலகலக்கு மெஞ்ஞான்றும்
பச்சோலைக் கில்லை யொலி.

(,, 256)

126. வாயி னடங்குதல் துப்புரவா மாசற்ற
செய்கை யடங்குதல் திப்பியமாம்—பொய்யின்றி
நெஞ்ச மடங்குதல் வீடாகு மிம்மூன்றும்
வஞ்சத்திற் றீர்ந்த பொருள்.

(திரிகடு. 43)

127. தன்னைத்தன் னெஞ்சங் கரியாகத் தானடங்கிற்
பின்னைத்தா னெய்தாப் பயனில்லை—தன்னைக்
குடிகெடுக்கு நெஞ்சிற்குக் குற்றேவல் செய்யிற்
பிடிபடுக்கப் பட்ட களிறு.

(அறநெறி. 207)

128. நின்னை யறப்பெறு கிற்கிலெ னன்னெஞ்சே
பின்னையான் யாரைப் பெறுகிற்பென்—நின்னை
அறப்பெறு கிற்பெனேற் பெற்றேன்மற் றீண்டே
துறக்கந் திறப்பதோர் தாழ்.

(,, 191)

129. இந்திரியக் குஞ்சரத்தை ஞான விருங்கயிற்றாற்
சிந்தனைத்தூண் பூட்டித் திதிபெறப்—பந்திப்பார்
இம்மைப் பயனு மினிச்செல் கதிப்பயனுந்
தம்மைத் தலைப்படுத்து வார். (,, 192)

---

**122.** 11 வீரக். **123.** 1 பொல்லாது; 9 மணலின். **124.** 1 களிர் கடற். **125.** 5-6 மற்றையர் யாவர். **126.** 5 கொள்கை. **127.** 6-7 னெய்தா நலனில்லைத்; 12 செய்தல். **128.** 2 யடப்பெறு; 10-12 கின்றேன் பெற்றேனஞ் சேன்மற்றீண்டுங்; 12 றீண்டுத். **129.** 6 கட்டித்; 10 புகழு; 14-15 தலைப்படுப் பார்தாம்.

130. ஆக்கப் படுக்கு மருந்தளைவாய்ப் பெய்விக்கும்
போக்கப் படுக்கும் புலைநரகத் துய்ப்பிக்கும்
காக்கப் படுவன விந்திரிய மைந்தினும்
நாக்கல்ல தில்லை நனிபேணு மாறே.

(வளையா.)

## அதி. 15. ஒழுக்கமுடைமை

131. நன்றி யறிதல் பொறையுடைமை யின்சொல்லொ
டின்னாத வெவ்வுயிர்க்குஞ் செய்யாமை கல்வியொ
டொப்புர வாற்ற வறித லருளுடைமை
நல்லினத் தாரொடு நட்ட லிவையெட்டும்
சொல்லிய வாசார வித்து.

(ஆசார. 1)

132. பிறப்பு நெடுவாழ்க்கை செல்வம் வனப்பு
நிலக்கிழமை மீக்கூற்றங் கல்விநோ யின்மை
இலக்கணத்தா லிவ்வெட்டு மெய்துப வென்றும்
ஒழுக்கம் பிழையா தவர்.

(,, 2)

133. வைகறை யாமந் துயிலெழுந்து தாஞ்செய்யும்
நல்லறமு மொண்பொருளுஞ் சிந்தித்து வாய்வதிற்
றந்தையுந் தாயுந் தொழுதெழுக வென்பதே
முந்தையோர் கண்ட நெறி.

(,, 4)

134. எச்சிலார் தீண்டார் பசுப்பார்ப்பார் தீத்தேவர்
உச்சந் தலையோ டிவையென்ப யாவருந்
திட்பத்தாற் றீண்டாப் பொருள்.

(,, 5)

135. தேவர் வழிபாடு தீக்கனு வாலாமை
உண்டது கான்றல் மயிர்களைத லூண்பொழுது
வைகு துயிலோ டிணைவிழைச்சுக் கீழ்மக்கள்
மெய்யுற லேனை மயலுற லீரைந்தும்
ஐயுறு தாடுக நீர்.

(,, 10)

136. அரச னுவாத்தியான் தாய்தந்தை தம்முன்
நிகரில் குரவரிவ் வைவ ரிவரிவரைத்
தேவரைப் போலத் தொழுதெழுக வென்பதே
யாவருங் கண்ட நெறி.

(,, 16)

137. முன்றுவ்வார் முன்னெழார் மீக்கூறா ரூணின்கண்
என்பெறினு மாற்ற வலமிரார் தம்மிற்
பெரியார்தம் பாலிருந்தக் கால்.

(,, 24)

---

**130.** 12 மைந்தினுள்; 15 நனிவெல்லு. **131.** 12 லறிவுடைமை.
**134.** 5 உச்சத்.

138. உச்சியம் போழ்தொ டிடையாம மீரந்தி
மிக்க விருதேவர் நாளொ டுவாத்திதிநாள்
அட்டமி யேனைப் பிறந்தநா ளிவ்வெட்டும்
ஓட்டா ருடனுறைவின் கண். (ஆசார. 43)

139. உடைநடை சொற்சோர்வு வைதலிந் நான்கும்
நிலைமைக்கு மாண்மைக்குங் கல்விக்குந் தத்தங்
குடிமைக்குந் தக்க செயல். („ 49)

140. பாழ்மனையுந் தேவ குலமுஞ் சுடுகாடும்
ஊரில் வழியெழுந்த வொற்றை முதுமரனுந்
தாமே தமியர் புகாஅர் பகல்வளரார்
நோயின்மை வேண்டு பவர். („ 57)

141. பார்ப்பார் தவரே சுமந்தார் பிணிப்பட்டார்
மூத்தா ரிளையார் பசுப்பெண்டி ரென்றிவர்கட்
காற்ற வழிவிலங்கி னூரே பிறப்பினுட்
போற்றி யெனப்படு வார். („ 64)

142. ஈன்றாள் மகடன் னுடன்பிறந்தா ளாயினுஞ்
சான்றோர் தமித்தா வுறையற்க வைம்புலனும்
தாங்கற் கரிதாக லான். („ 65)

143. அறியாத தேயத்தா னாதுலன் மூத்தான்
இளையா னுயிரிழந்தா னஞ்சினா னுண்டான்
அரசர் தொழிறலை வைத்தான் மணாளனென்
றொன்பதின்மர் கண்டீ ருரைக்குங்கா லாற்றவும்
ஆசாரம் வீடுபெற் றார். („ 100)

144. நகையொடு மந்திரம் நட்டார்க்கு வாரம்
பகையொடு பாட்டுரையென் றைந்துந்—தொகையொடு
மூத்தா ரிருந்துழி வேண்டார் முதுநூலுள்
யாத்தா ரறிவின ராய்ந்து. (சிறுபஞ்ச. 84)

145. தொழீஇ யடவுண்ணார் தோழரிற் றுஞ்சார்
வழீஇப் பிறர்பொருள் வெளவார்—கெழீஇக்
கலந்தபிற் கீழ்காணார் காணாய் மடவாய்
புலந்தபிற் போற்றார் புலை. („ 37)

146. அருளுடைமை கொல்லாமை யைந்தடக்கல் வாய்மை
இருளடையாக் கல்வியொ டீகை—புரையில்லா
உள்ளத்திற் றீர்த்த மிவையுள வாகப்பெற்றால்
வெள்ளத்திற் றீர்த்த மிகை. (பழமொழி ?)

---

**138.** 3-4 டிடையாமினியந்தி; 9-10 அட்டமியுமேனைப். **141.** 12 பிறப்பிடைப். **143.** 8 னுண்பான்; 10 திருத்தலை; 17 ஆசார. **144.** 13-14 ஆர்த்த வறிவின; ஆர்த்தா ரறிந்தவ; யாத்தா ரறிந்தவ. **145.** 3 தோழனிற். **146.** இது சிறுபஞ்சமூலச் செய்யுளாக இருத்தல் கூடும்.

147. தூய்மை மனத்தவர் தோழர் மனையகத்துந்
தாமே தமியர் புகல்வேண்டா—தீமையால்
ஊர்மிகி னில்லை கரியே யொலித்துடன்
நீர்மிகி னில்லை சிறை.

(பழமொழி, 190)

## அதி. 16. பிறர்மனை நயவாமை *

148. செம்மையொன் றின்றிச் சிறியா ரினத்தராய்க்
கொம்மை வரிமுலையாள் தோள்மரீஇ—உம்மை
வலியாற் பிறர்மனைமேற் சென்றாரே யிம்மை
அலியாகி யாடியுண் பார்.

(நாலடி, 85)

149. அறம்புகழ் கேண்மை பெருமையிந் நான்கும்
பிறன்றாரம் நச்சுவார்ச் சேரா—பிறன்றாரம்
நச்சுவார்ச் சேரும் பகைபழி பாவமென்
றச்சத்தோ டிந்நாற் பொருள்.

(,, 82)

150. புக்க விடத்தச்சம் போதரும் போதச்சம்
துய்க்கு மிடத்தச்சந் தோன்றாமற் காப்பச்சம்
எக்காலு மச்சந் தருமா லெவன்கொலோ
உட்கான் பிறனில் புகல்.

(,, 83)

151. அம்ப லயலெடுப்ப வஞ்சித் தமர்பரீஇ
வம்பலன் பெண்மரீஇ மைந்துற்று—நம்பு
நிலைமையி னெஞ்சத்தான் றுப்புரவு பாம்பின்
தலைநக்கி யன்ன துடைத்து.

(,, 87)

152. காணிற் குடிப்பழியாங் கையுறிற் கால்குறையு
மாணின்மை செய்யுங்கா லச்சமாம்—நீணிரையத்
துன்பம் பயக்குமாற் றச்சாரி நீகண்ட
இன்ப மெனக்கெனைத்தாற் கூறு.

(,, 84)

153. பெரியவாட் டடங்கட் செவ்வாய்ப் பிறர்மனை நயக்கு மாந்தர்
மரியவாய்ப் புறஞ்சொற் கூர்முள் மத்திகைப் புடைப்பு மன்றி
ஒருவர்வா யுமிழப் பட்ட தம்பல மொருவர் வாய்க்கொண்
டரியன செய்ப வையத் தாண்பிறந் தார்க ளன்றே.

(சிந்தா. 2821)

154. காதலாள் கரிந்து நையக் கடியவே கனைந்து கன்றி
ஏதிலான் தாரம் நம்பி யெளிதென விறந்த பாவத்
தூதுலை யுருக வெந்த வொள்ளழற் செப்புப் பாவை
ஆதகா தென்னப் புல்லி யலறுமா லானை வேந்தே. (,, 2769)

---

**147.** 11 கரியோ. * பிறனில் விழையாமை. **150.** 7 தோன்றுமைக். **152.** 5 மாணன்மை; 6 செய்யுமா; 12 நீகொண்ட. **153.** 5 பிழைக்கு, விழையு; 11 புடையு; 19 டரியவை; 20-22 செய்ய வைத்தாளுண்பிறந். **154.** 2 கசிந்து; 4 கடியவேள்; 22-23 யழலுமால் யானை.

155. தாரம் நல்கிதந் தாங்கித் தலைநின்மின்
ஊரும் நாடு முவத்த லொருதலை
வீர வென்றி விறல்மிகு விண்ணவர்
சீரி னேத்திச் சிறப்பெதிர் கொள்பவே.

(வளையா)

156. பெண்ணி னாகிய பேரஞர் பூமியுள்
எண்ண மிக்கவ ரெண்ணினு மெண்ணிலார்
பின்னி நின்ற பெருவினை மேல்வரும்
என்ன தாயினு மேதில்பெண் ணீக்குமின்.

( ,, )

## அதி. 17. பொறையுடைமை

157. கறுத்தாற்றித் தம்மைக் கடியசெய் தாரைப்
பொறுத்தாற்றிச் சேறல் புகழால்—ஒறுத்தாற்றின்
வானோங் குயர்வரை வெற்ப பயமின்றே
தானோன் றிடவருஞ் சால்பு.

(பழமொழி, 19)

158. தெரியா தவர்தந் திறனில்சொற் கேட்டாற்
பரியாதார் போல விருக்க—பரிவில்லா
வம்பலர் வாயை யவிப்பான் புகுவாரே
அம்பலந் தாழ்க்கூட்டு வார்.

(,, 135)

159. நோவ வுரைத்தாரைத் தாம்பொறுக்க லாற்றாதார்
நாவி னொருவரை வைதால் வயவுரை
பூவிற் பொலிந்தகன்ற கண்ணா யதுவன்றோ
தீயில்லை யூட்டுந் திறம்.

(,, 45)

160. நற்பால கற்றாரும் நாடாது சொல்லுவரால்
இற்பால ரல்லா ரியல்பின்மை நோவதென்
கற்பா விலங்கருவி நாடமற் றியாரானுஞ்
சொற்சோர் விலாதாரோ வில்.

( ,, 94)

161. கையார வுண்டமையாற் காய்வார் பொருட்டாகப்
பொய்யாகத் தம்மைப் பொருளல்ல கூறுபவேல்
மையார வுண்டகண் மாணிழா யென்பரிப
செய்யாத வெய்தா வெனின்.

( ,, 44)

162. மாற்றாராய் நின்றுதம் மாறேற்பார்க் கேலாமை
ஆற்றாமை யென்னா ரறிவுடையார்—ஆற்றாமை

---

**156.** 8 மெண்ணலாற். **157.** 9-10 வானோங்கு மால்வரை; 13-14 தானே கெடவருஞ். **158.** 8 பிரிவில்லா; 13-14 அம்பலத்தாள்கூட்டு; 14 தாழ்ப் பூட்டு. **159.** 4 லாகாதார். **160.** 4 சொல்லுவர்; 5-6 இற்பாலி லாதா; 13-15 சொற்சோரார் தாமோ விலர்; சொற்சோரா தாரோ விலர். **161.** 5 பொய்யாத; 7 பொருளல்லார்; 12 யென்பரிவ.

நேர்த்தின்னா மற்றவர் செய்தக்காற் றாமவரைப்
பேர்த்தின்னா செய்யாமை நன்று.

(நாலடி, 67)

163. இளையா னடக்க மடக்கங் கிளைபொருள்
இல்லான் கொடையே கொடைப்பயன்—எல்லாம்
ஒறுக்கு மதுகை யுரனுடை யாளன்
பொறுக்கும் பொறையே பொறை.

( „ 65)

164. கல்லெறிந் தன்ன கயவர்வா யின்னாச்சொல்
எல்லாருங் காணப் பொறுத்துய்ப்பர்—ஒல்லை
இடுநீற்றாற் பையவிந்த நாகம்போற் றத்தங்
குடிமையான் வாதிக்கப் பட்டு.

( „ 66)

165. காவா தொருவன்றன் வாய்திறந்து சொல்லுஞ்சொல்
ஓவாதே தன்னைச் சுடுதலால்—ஓவாதே
ஆய்ந்தமைந்த கேள்வி யறிவுடையா ரெஞ்ஞான்றுங்
காய்ந்தமைந்த சொல்லார் கறுத்து.

( „ 63)

166. நெடுங்கால மோடினும் நீசர் வெகுளி
கெடுங்கால மின்றிப் பரக்கும்—அடுங்காலை
நீர்கொண்ட வெம்மைபோற் றானே தணியுமே
சீர்கொண்ட சான்றோர் சினம்.

( „ 68)

167. உபகாரஞ் செய்ததனை யோராதே தங்கண்
அபகாரம் ஆற்றச் செயினும்—உபகாரந்
தாஞ்செய்வ தல்லாற் றவத்தினாற் றீங்கூக்கல்
வான்றோய் குடிப்பிறந் தார்க்கில்.

( „ 69)

168. எள்ளிப் பிறருரைக்கு மின்னாச்சொல் தன்னெஞ்சிற்
கொள்ளிவைத் தாற்போற் கொடிதெனினும்—மெள்ள
அறிவென்னு நீரா லவித்தடக்க லாற்றிற்
பிறிதொன்று வேண்டா தவம்.

(அறநெறி. 101)

169. அற்றவுறுப் பெல்லா மறுவையி னான்மறைப்ப
மற்றொருவர் காணா மறையுமால்—வெற்றி
அறையார் கழலா யவமாய வெல்லாம்
பொறையான் மறைக்குமேற் போம்.

(பாரதம்)

## அதி. 18. வெஃகாமை

170. உள்ள தொருவ ரொருவர்கை வைத்தக்கால்
கொள்ளும் பொழுதே கொடுக்கதாங்—கொள்ளார்

---

**164.** 8 தொல்லை. **165.** 6 தம்மைச்; 9 ஆய்ந்தமை. **168.** 5-7 கொள்ளிவைத்தாற் போலக் கொடிதேனும்; 8 தெள்ளி; 11 லவித்தொழுக. **170.** 7 கொடுப்பதாங்; 8 கொள்ளா.

நிலைப்பொரு ளென்றதனை நீட்டித்தல் வேண்டா
புலைப்பொருள் தங்கா வெளி.

(பழமொழி, 17)

171. அல்லது செய்வா ரரும்பொரு ளாக்கத்தை
நல்லது செய்வார் நயப்பவோ—ஒல்லொலிநீர்
பாய்வதே போலுந் துறைவகேள் தீயன
ஆவதே போன்று கெடும்.

( ,, 173)

172. மடங்கப் பசிப்பினு மாண்புடை யாளர்
தொடங்கிப் பிறருடைமை மேவார்—குடம்பை
மடலொடு புட்கலா மால்கடற் சேர்ப்ப
கடலொடு காட்டொட்ட வில்.

( ,, 372)

173. தானத்துக் குரித்து மன்று தன்கிளைக் கீயிற் சால
ஈனத்தி லுய்க்கு நிற்கு மெச்சத்தை யிழக்கப் பண்ணும்
மானத்தை யழிக்குந் துய்க்கின் மற்றவர்க் கடிமை யாக்கும்
ஊனத்து நரகத் துய்க்கும் பிறர்பொரு ளுவக்கில் வேந்தே.

(சாந்தி.)

## அதி. 19. அவா

174. முகம்புறத்துக் கண்டாற் பொறுக்கலா தாரை
அகம்புகுது மென்றிரக்கு மாசை—இருங்கடத்துத்
தக்க நெறியிடைப் பின்னுஞ் செலப்பெறார்
ஒக்கலை வேண்டி யழல்.

(பழமொழி, 46)

175. யாவரே யானு மிழந்த பொருளுடையார்
தேவரே யாயினுந் தீங்கோர்ப்பர்—பாவை
படத்தோன்று நல்லாய் நெடுவேல் கெடுத்தான்
குடத்துள்ளும் நாடி விடும்.

( ,, 179)

176. உரிதினிற் றம்மோ டுழந்தமை கண்டு
பிரிவின்றிப் போற்றப் படுவார்—திரிவின்றித்
தாம்பெற் றதனு ளுவவார் பெரிதகழிற்
பாம்புகாண் பாரு முடைத்து.

( ,, 25)

177. ஆகா தெனினு மகத்துநெய் யுண்டாகப்
போகா வெறும்பு புறஞ்சுற்றி—யாதும்

---

**172.** 1 மடங்கிப்; 11 மால்கடற்றண்; 14 காடொட்ட. **173.** இது மேருமந்தரபுராணத்தில் 308-ம் செய்யுள். 4-5 தானறிந்தீயிற், தானவி கதியிற், தானறி கதியிற்; 8-9 ணரகத்துய்க்கு; 8 லுய்க்க; 15 துய்த்தல்; 22 பிறன்பொரு. **174.** 6 மென்றுரைக்கு; 10 நெறியிடத்துப். **175.** 9 கெடத்தோன்று; 14 (ந்) தேடி; 15 விடல். **176.** 1 உரிதனிற். **177.** 2 வெனினு.

கொடாஅ ரெனினு முடையாரைப் பற்றி
விடாஅ ருலகத் தவர்.

(நாலடி, 337)

178. இன்றாது மிந்நிலையே யாது மினிச்சிறிது
நின்றாது மென்று நினைத்திருந்—தொன்றி
உரையின் மகிழ்ந்துதம் முள்ளம்வே றாகி
மரையிலையின் மாய்ந்தார் பலர்.

( ,, 359)

179. கள்வமென் பார்க்குந் துயிலில்லை காதலிமாட்
டுள்ளம்வைப் பார்க்குந் துயிலில்லை யொண்பொருள்
செய்வமென் பார்க்குந் துயிலில்லை யப்பொருள்
காப்பார்க்கு மில்லைத் துயில்.

(நான்மணி. 7)

180. தோள்வழங்கி வாழுந் துறைபோற் கணிகையும்
நாள்கழகம் பார்க்கும் நயமிலாச் சூதனும்
வாசிகொண் டொண்பொருள் செய்வானு மிம்மூவர்
ஆசைக் கடலுளாழ் வார்.

(திரிகடு. 81)

181. இரந்துகொண் டொண்பொருள் செய்வலென் பானும்
பரந்தொழுகும் பெண்பாலைப் பாசமென் பானும்
விரிகட லூடுசெல் வானுமிம் மூவர்
அரிய துணிந்தொழுகு வார்.

( ,, 73)

## அதி. 20. புறங்கூறாமை

182. முன்னின் றொருவன் முகத்தினும் வாயினும்
கன்னின் றுருகக் கலந்துரைத்துப்—பின்னின்
றழித்துரைக்கு மாந்தரை யஞ்சியே தேவர்
விழித்திமையா நின்ற நிலை.

(அறநெறி. 49)

183. தாக்குற்ற போழ்திற் றமரேபோல் நன்குரைத்துப்
போக்குற்ற போழ்திற் புறனழீஇ மேன்மைக்கண்
நோக்கற் றவரைப் பழித்தலென் னென்றானும்
மூக்கற்ற தற்கில் பழி.

(பழமொழி, 250)

184. பண்டின்ன ரென்று தமரையுந் தம்மையுங்
கொண்ட வகையாற் குறைதீர நோக்கியக்கால்
விண்டவரோ டொன்றிப் புறனுரைப்பி னஃதன்றோ
உண்டவிற் றீயிடு மாறு.

(,, 133)

---

**179.** 5-6 டுள்ளம்வைத் தார்க்குந். **181.** 6-8 பெண்பாலிற் பாசம்வைப் பானும்; 10 லூடுபோ; 14 துணிந்துவாழ். **182.** 5 கண்ணின்; 9 றிழித் துரைக்கு; 10 (ஞ்) சான்றோரை. **183.** 1 நோக்குற்ற; 7 புறனெழீஇ; 8 மெய்ம்மைக்கண்; 11-12 பழிப்பதெனென்றானு. **184.** 12 னஃதாலவ்.

## அதி. 21. இகழாமை

185. ஆவிற் கரும்பனி தாங்கிய மாலையுங்
கோவிற்குக் கோவல னென்றுலகங் கூறுமால்
தேவர்க்கு மக்கட் கெனவேண்டா தீங்குரைக்கும்
நாவிற்கு நல்குர வில்.

(பழமொழி, 152)

186. பல்லா ரவைநடுவட் பாற்பட்ட சான்றவர்
சொல்லா லொருவரையு முள்ளுன்றார்—பல்லா
நிரைப்புறங் காத்த நெடியோனே யானும்
உரைத்தா னுரைபெறாத னுண்டு.

( ,, 345)

187. உள்ளு ரவரா னுணர்ந்தார் முதலெனினும்
எள்ளாமை வேண்டு மிலங்கிழாய்—தள்ளா
தழுங்கல் முதுபதி யங்காடி மேயும்
பழங்கன்றே றாதலு முண்டு.

( ,, 108)

188. கள்ளி வயிற்றின் அகில்பிறக்கும் மான்வயிற்றின்
ஒள்ளரி தாரம் பிறக்கும் பெருங்கடலுட்
பல்விலைய முத்தம் பிறக்கும் அறிவார்யார்
நல்லாள் பிறக்குங் குடி.

(நான்மணி. 4)

189. பலகற்றேம் யாமென்று தற்புகழ வேண்டா
அலர்கதிர் ஞாயிற்றைக் கைக்குடையுங் காக்கும்
சிலகற்றார் கண்ணு முளவாம் பலகற்றார்க்
கச்சாணி யன்னதோர் சொல்.

(அறநெறி. 43)

190. சிலம்பிக்குத் தன்சினை கூற்றநீள் கோடு
விலங்கிற்குக் கூற்ற மயிர்தான்—வலம்படா
மாவிற்குக் கூற்றமாம் ஞெண்டிற்குத் தன்பார்ப்பு
நாவிற்கு நன்றல் வசை.

(சிறுபஞ்ச. 10)

## அதி. 22. தீவினையச்சம்

191. எனக்குத் தகவன்றா லென்பதே நோக்கித்
தனக்குக் கரியாவான் றானாய்த் தவற்றை
நினைத்துத்தன் கைகுறைத்தான் தென்னவனுங் காணா
ரெனச்செய்யார் மாணா வினை.

(பழமொழி, 102)

---

**185.** 11 கெனல்வேண்டா; 14-15 நல்கூர்வ தில். **186.** 6-7 ரொரு வரையு முள்ளுன்றப். **187.** 3 லுணர்ந்த, லுணர்ந்தா; 9 அழுங்கல். **188.** 4 மான்வயிற்று. **191.** 2-3 தகவன் றெனப்படுதல்.

192. அஃகுநீ செய்ய லெனவறிந் தாராய்ந்த
வெஃகல் வெகுடலே தீக்காட்சி—வெஃகிய
கள்ளத்த வல்ல கருதி னிவைமூன்றும்
உள்ளத்த வாக வுணர்.

(ஏலாதி, 27)

193. நிலையளவி னின்ற நெடியவர்தாம் நேராக்
கொலைகளவு காமத்தீ வாழ்க்கை—அலையளவி
மையென நீண்ட மலர்க்கண்ணா யிம்மூன்றும்
மெய்யன வாக மிகும்.

( ,, 29)

194. மையேர் தடங்கண் மயிலன்ன சாயலாய்
மெய்யே யுணர்ந்தவர் தாமுரையார்—பொய்யே
குறளை கடுஞ்சொற் பயனில்சொல் நான்கும்
மறலையின் வாயினவா மற்று.

(,, 28)

195. கோறலு நஞ்சுணைத் துய்த்தல் கொடுநஞ்சு
வேறலு நஞ்சுமா றல்லாணைத்—தேறினுன்
நீடாங்குச் செய்தலும் நஞ்சாம் இளங்கிளையை
நாடாதே தீதுரையும் நஞ்சு.

(சிறுபஞ்ச. 12)

196. தன்னைச் செருதானைக் காய்வான் தகாக்கொலையன்
பின்னைக் குரவரைப் பேணுதான்—முன்னொருவன்
இல்லாளைக் காதலித்தான் இந்நால்வர் வெந்நரகத்
தல்லா லழுந்தா தவர்.

(பாரதம்)

197. அற்றங்கள் பார்த்தங் கடைத்திருந்து சொல்வானுங்
குற்றம்போய்க் கோவுக் குரைப்பானுஞ்—செற்றத்தே
நின்றானுஞ் செய்ந்நன்றி நீத்தானும் அந்தணரைக்
கொன்றாரோ டொப்பர் குறித்து.

( ,, )

198. பொய்யன் மின்புறங் கூறன்மின் யாரையும்
வையன் மின்வடி வல்லன சொல்லிநீர்
உய்யன் மின்னுயிர் கொன்றுண்டு வாழுநாட்
செய்யன் மின்சிறி யாரொடு தீயன்மின்.

(வளையா.)

199. கள்ளன் மின்கள வாயின யாவையும்
கொள்ளன் மின்கொலை கூடி வருமறம்

---

**192.** 4 தாராய்ந்து; 8 வெஃகிமான், எஃகுமன், வெஃகிமாக்; 12 னவை மூன்றும். **193.** 1 நிலையளவு; 4 நேரார்; 8 அலையளவில்; 9-11 மையெனநீள் கண்ணாய் மறுதலையாம்; 13 மெய்யள; 15 விதி. **194.** 6-7 யுணர்ந்தார் மிகவு ரைப்பர்; 9-12 குறளைவடுத் தீச்சொற் பயனில்சொல் லைந்தும்; 13 மரலை யின்; மறலியின். **195.** 1-2 கோறலுநஞ் சூனதனைத்; 14 தீதுரைத்தல். **197.** 4 கொல்வானுங். **198.** 11 கொண்டுண்டு; 16 தீயன. **199.** 16 நண்ணீர்.

எள்ளன் மின்னில ரென்றெண்ணி யாரையும்
நள்ளன் மின்பிறர் பெண்ணொடு நண்ணன்மின்.

(வளையா.)

200. குழற்சிகைக் கோதை சூட்டிக் கொண்டவ னிருப்ப மற்றோர்
நிழற்றிகழ் வேலி னானை நேடிய நெடுங்க ணாளும்
பிழைப்பிலாட் புறந்தந் தானுங் குரவரைப் பேணல் செய்யா
திழுக்கினா ரிவர்கள் கண்டா யிடும்பைநோய்க் கிரைக ளாவார்.

(சிந்தா. 252)

201. நட்பிடைக் குய்யம் வைத்தான் பிறர்மனை நலத்தைச் சார்ந்தான்
கட்டழற் காமத் தீயிற் கன்னியைக் கலக்கி னானும்
அட்டுயி ருடலந் தின்றா னமைச்சனா யரசு கொன்றான்
குட்டநோய் நரகந் தம்முட் குளிப்பவ ரிவர்கள் கண்டாய்.

(,, 253)

202. கொல்வதே கன்றி நின்றார் கொடியவர் கடிய நீரார்
இல்லையே யிம்மை யல்லா லும்மையு மறனு மென்பார்
அல்லது தவமு மில்லைத் தானமு மிழவென் பாருஞ்
செல்பவர் நரகந் தன்னுட் டீவினைத் தேர்க ளூர்ந்தே.

( ,, 2776)

203. மல்லல் மலையனைய மாதவரை வைதுரைக்கும்
பல்லவரே யன்றிப் பகுத்துண்ணாப் பாவிகளும்
அல்குல் விலைபகரு மாய்தொடியா ராதியார்
வில்பொருதோள் மன்னா விலங்காய்ப் பிறப்பாரே.

( ,, 2789)

204. ஒழுக்கமே யன்றித் தங்க ளுள்ளுணர் வழிக்கு மட்டும்
புழுப்பயில் தேனு மன்றிப் பிறவற்றின் புண்ணு மாந்தி
விழுப்பய னிழுக்கு மாந்தர் வெறுவிலங் கென்ப மிக்கார்
பழித்தன வொழித்தல் சீலம் பார்மிசை யவர்கட் கென்றான்.

( ,, 2822)

205. வாயுவினை நோக்கியுள மாண்டவய நாவாய்
ஆயுவினை நோக்கியுள வாழ்க்கையது வேபோல்
தீயவினை நோக்குமியல் சிந்தனையு மில்லாத்
தூயவனை நோக்கியுள துப்புரவு மெல்லாம்.

(குண்டல.)

## அதி. 23. தானம்*

206. அச்சமே யாயுங்கால் நன்மை யறத்தொடு
கச்சமில் கைம்மா றருளோந்தால்—மெச்சிய
தோகை மயிலன்ன சாயலாய் தூற்றுங்கால்
ஈகை வகையி னியல்பு.

(சிறுபஞ்ச.)

---

**200.** 13 பிழைப்பிலார்ப். **201.** 21 தன்னுட். **202.** 4 கொடியவை; 6 நீரால். **203.** 12 ராதியா. **205.** 10 நோக்கியியல். * இவ்வதிகாரம் புறத்திரட்டுச் சுருக்கத்தில் 'ஈகை'யின்பின். **206.** 7 றெனவைந்தால்; 12 தூற்றங்கால்.

207. கைம்மாறு மச்சமுங் காணிற் பயமின்மை
பொய்ம்மாறு நன்மை சிறுபய—மெய்ம்மா
றருள்கூடி யாரறத்தொ டைந்தியைந் தீயிற்
பொருள்கோடி யெய்தல் புகன்று.

(சிறுபஞ்ச.)

208. பயனோக்கா தாற்றவும் பாத்தறிவொன் றின்றி
இசைநோக்கி யீகின்ற ரீகை—வயமாப்போல்
ஆலித்துப் பாயு மலைகடற் றண்சேர்ப்ப
கூலிக்குச் செய்துண்ணு மாறு.

(பழமொழி, 40)

209. இறப்பச் சிறிதென்னா தில்லென்னா தென்றும்
அறப்பயன் யார்மாட்டுஞ் செய்க—முறைப்புதவின்
ஐயம் புகூஉந் தவசி கடிஞைபோற்
பைய நிறைத்து விடும்.

(நாலடி, 99)

210. இம்மி யரிசித் துணையானும் வைகலும்
நும்மி லியைவ கொடுத்துண்மின்—உம்மைக்
கொடாஅ தவரென்பர் குண்டுநீர் வையத்
தடாஅ வடுப்பி னவர்.

( ,, 94)

211. உறக்குந் துணையதோ ராலம்வித் தீண்டி
இறப்ப நிழற்பயந் தாஅங்—கறப்பயன்
தான்சிறி தாயினுந் தக்கார்கைப் பட்டக்கால்
வான்சிறிதாப் போர்த்து விடும்.

( ,, 38)

212. இன்சொல் விளைநிலனா வீதலே வித்தாக
வன்சொற் களைகட்டு வாய்மை யெருவட்டி
அன்புநீ ராக வறப்பைங்கூ ழாக்குவார்க்
கென்று மிடும்பை யில.

(அறநெறி. 112)

213. ஈவாரி னில்லை யுலோப ருலகத்து
யாவருங் கொள்ளாத வாறெண்ணி—மேவர
மற்றுடம்பு கொள்ளும் பொழுதுந் தமதுடைமை
பற்று விடுத லிலர்.

( ,, 221)

214. பரப்புநீர் வையத்துப் பல்லுயிர்கட் கெல்லாம்
இரப்பவரின் வள்ளல்க ளில்லை—இரப்பவர்
இம்மைப் பயனு மினிச்செல் கதிப்பயனும்
கொண்மி னெனக்கொடுத்த லால்.

( ,, 220)

---

**206, 207.** இச்செய்யுட்கள் பதிப்புக்களிற் காணப்பெறவில்லை. **208.** 3 பார்த்தறிவொன். **209.** 10-11 புகுந்த வசனி; 14 நிறைந்து. **211.** 8 கறப் பயனுங். **212.** 3 ஈவது; 9-15 அன்புநீர் பாய்ச்சி யறக்கதி ரீன்றதோர் பைங்கூழ் சிறுகாலைச் செய். **213.** 3-4 யுலோபியுலகத்து; 8 மேவாது. **214.** 2 வையகத்துப்; 10 புகழு; 13-14 தம்மைத் தலைப்படுத்த.

215. துற்றுள வாகத் தொகுத்து விரல்வைத்த
தெற்றுக்கஃ தென்னி னிதுவதன் காரணம்
அற்றமில் தான மெனைப்பல வாயினுந்
துற்றவி ழொவ்வாத் துணிவென்னு மாறே.

(வளையா.)

216. கடைநின் றவருறு கண்கண் டிரங்கி
உடையதம் மாற்றலி னுண்டி கொடுத்தோர்
படைகெழு தானையர் பல்களி யானைக்
குடைகெழு வேந்தர்க ளாகுவர் கோவே.

(சூளா. துறவு. 158)

## அதி. 24. ஈகை

217. இரப்பவர்க் கீயக் குறைபடுமென் றெண்ணிக்
கரப்பவர் கண்டறியார் கொல்லோ—பரப்பிற்
றுறைத்தோணி நின்றுலாந் தூங்குநீர்ச் சேர்ப்ப
இறைத்தோறு மூறுங் கிணறு.

(பழமொழி, 344)

218. கரப்புடையார் வைத்த கடையு முதவா
துரப்புடைய மன்னர்க்கே துப்புரவ தல்லால்
நிரப்பிடும்பை மிக்கார்க் குதவவொன் றீதல்
சுரத்திடைத் தீரப் பெயல்.

( „ 169)

219. அடுத்தொன் றிரந்தாற்கொன் றீந்தானைக் கொண்டான்
படுத்தேழை யாமென்று போகினும் போக
அடுத்தேற லம்பாலா யாவர்க்கே யானுங்
கொடுத்தேழை யாயினா ரில்.

( „ 218)

220. முல்லைக்குத் தேரு மயிலுக்குப் போர்வையுந்
தொல்லை யளித்தாரைக் கேட்டறிதும்—சொல்லின்
நெறிமடற் பூந்தாழை நீடுநீர்ச் சேர்ப்ப
அறிமடமுஞ் சான்றோர்க் கணி.

( „ 361)

221. இரவலர் தம்வரிசை யென்பார் மடவார்
கரவலராய்க் கைவண்மை பூண்ட—புரவலர்
சீர்வரைய வாகுமாஞ் செய்கை சிறந்தனைத்தும்
நீர்வரைய வாநீர் மலர்.

( „ 381)

222. பெயற்பால் மழைபெய்யாக் கண்ணு முலகஞ்
செயற்பால செய்யா விடினும்—கயப்புலால்
புன்னை கடியும் பொருகடற் றண்சேர்ப்ப
என்னை யுலகுய்யு மாறு. (நாலடி, 97)

**215.** 1 துற்றன, துற்றள. **216.** 2 நிரந்தவர். **218.** 1 கரப்புடையர்; 5 துரப்புடை; 13-14 சுரத்திடைப் பெய்த. **219.** 1 மடுத்தொன்; 2-4 றிரந் தார்க்கொன் றீந்தாரைக் கொண்டார்; 9 அடுத்தற. **220.** 11 நெடுநீர்த் தண்; 13 அறிமடஞ். **221.** 12 சிறந்தெனைத்து.

223. ஏற்றகை மாற்றாமை யென்னானுந் தம்வரையான்
ஆற்றாதார்க் கீவதா மாண்கடன்—ஆற்றின்
மலிகடற் றண்சேர்ப்ப மாறீவார்க் கீதல்
பொலிகட னென்னும் பெயர்த்து.

(நாலடி, 98)

224. இல்லா விடத்து மியைந்த வளவினால்
உள்ள விடம்போற் பெரிதுவந்து—மெல்லக்
கொடையொடு பட்ட குணனுடை மாந்தர்க்
கடையாவா மாண்டைக் கதவு.

( ,, 91)

225. நடுக்குற்றுத் தற்சேர்ந்தார் துன்பந் துடையார்
கொடுத்துத்தற் றுய்ப்பினு மீண்டுங்கா லீண்டும்
மிடுக்குற்றுப் பற்றினும் நில்லாது செல்வம்
விடுக்கும் வினையுலந்தக் கால்.

( ,, 93)

226. நடுவூருள் வேதிகைச் சுற்றுக்கோட் புக்க
படுபனை யன்னர் பலர்நச்ச வாழ்வார்
குடிகொழுத்தக் கண்ணுங் கொடுத்துண்ணா மாக்கள்
இடுகாட்டு ளேற்றைப் பனை.

( ,, 96)

227. நூற்றுவரிற் றோன்றுந் தறுகண்ண ராயிரவ
ராற்றுளித் தொக்க வவையகத்து மாற்றமொன்
றுற்றக் கொடுக்கு மகன்றோன் றுந் தேற்றப்
பரப்புநீர் வையகந் தேரினு மில்லை
இரப்பாரை யெள்ளா மகன்.

(தகடூர்.)

228. மின்னுந் தமனியமும் வெற்றிரும்பு மோரினமாப்
பொன்னின் பெயர்படைத்தாற் போலாதே—கொன்னே
ஒளிப்பாரு மக்களா யொல்லுவ தாங்கே
அளிப்பாரு மக்களா மாறு.

(பெரும்பொருள்.)

229. மாய்ந்தவர் மாய்ந்தவ ரல்லர்கள் மாயா
தேந்திய கைகொ டிரந்தவ ரெந்தாய்
வீந்தவ ரென்பவர் வீந்தன ரேனும்
ஈந்தவ ரல்ல திருந்தனர் யாரே.

(இராமாவ. வேள்வி. 30)

230. தெண்கடல் வளாகம் பொதுமை யின்றி
வெண்குடை நிழற்றிய வொருமை யோர்க்கும்
நடுநாள் யாமத்தும் பகலுந் துஞ்சான்
கடுமாப் பார்க்குங் கல்லா வொருவற்கும்

---

**223.** 4 தாம்வரையாது, தாம்வரையார். **224.** 3 மியன்ற. **225.** 5 கொடுத்துத்தான். **226.** 2 வேதிகை; 13 சுடுகாட்டு; 14 ளேற்றுப். **227.** 14 வையகத்துத். **228.** 5 பொன்னென் ; 7 போலாதோ; 11 மொல்லுவ. **230.** 2, 4 யோற்கு; 3, 4 துஞ்சாக்; 6, 3 நேரொக்; 8, 3 தப்பின.

உண்பது நாழி யுடுப்பவை யிரண்டே
பிறவு மெல்லா மோரொக் கும்மே
அதனால், செல்வத்துப் பயனே ஈதல்
துய்ப்பே மெனினே தப்புந பலவே.

(புறம், 189)

## அதி. 25. ஈயாமை

231. நாவி னிரந்தார் குறையறிந்துந் தாமுடைய
மாவினை மாணப் பொதிகிற்பார்—தீவினை
அஞ்சிலெ னஞ்சா விடிலென் குருட்டுக்கண்
துஞ்சிலென் துஞ்சாக்கா லென்.

(பழமொழி, 238)

232. மாய்வதன் முன்னே வகைப்பட்ட நல்வினையை
ஆய்வின்றிச் செய்யாதார் பின்னை வழிநினைந்து
நோய்காண் பொழுதி னறஞ்செய்வார்க் காணாமை
நாய்காணிற் கற்காணா வாறு.

( ,, 261)

233. தம்மால் முடிவதனைத் தாமாற்றிச் செய்கலார்
பின்னை யொருவராற் செய்வித்து மென்றிருத்தல்
சென்னீ ரருவி மலைநாட பாய்பவோ
வெந்நீரு மாடாதார் தீ.

( ,, 293)

234. அடையப் பயின்றவர்சொல் லாற்றுவராக் கேட்டால்
உடையதொன் றில்லாமை யொட்டிற்—படைவென்
றடைய வமர்த்தகண் ணாயிழா யஃதால்
இடைய னெறிந்த மரம்.

( ,, 314)

235. பெற்றாலுஞ் செல்வம் பிறர்க்கீயார் தாந்துவ்வார்
கற்றாரும் பற்றி யிறுகுபவால்—கற்றா
வரம்பிடைப் பூமேயும் வண்புன லூர
மரங்குறைப்ப மண்ணா மயிர்.

( ,, 107)

236. இசைவ கொடுப்பதூஉ மில்லென் பதூஉம்
வசையன்று வையத் தியற்கையஃ தன்றிப்
பசைகொண் டவனிற்பப் பாத்துண்ணா னாயின்
நசைகொன்றான் செல்லுலக மில்.

( ,, 24)

237. துய்த்துக் கழியான் துறவோர்க்கொன் றீகலான்
வைத்துக் கழியு மடவோனை—வைத்த
பொருளு மவனை நகுமே யுலகத்
தருளு மவனை நகும்.

(நாலடி, 273)

---

**231.** 6 யாற்றப். **233.** 6 யொருவனாற்; 9 செந்நீ. **234.** 3 லாற்று வார்; 8 படைபெற்; 11 பைந்தொடி. **235.** 1 பெற்றானுஞ். **236.** 13 இசை கொன்றான். **237.** 3-4 றுறவாற்றி யீகலான்.

238. எனதென தென்றிருக்கும் ஏழை பொருளை
எனதென தென்றிருப்பென் யானுந்—தனதாகத்
தானு மதனை வழங்கான் பயன்றுவ்வான்
யானு மதனை யது.

(நாலடி, 276)

239. வழங்காத செல்வரி னல்கூர்ந்தா ருய்ந்தார்
இழந்தா ரெனப்படுத லுய்ந்தார்—உழந்ததனைக்
காப்புய்ந்தார் கல்லுதலு முய்ந்தார்தங் கைந்நோவ
யாப்புய்ந்தா ருய்ந்தார் பல.

( ,, 277)

240. இசையா வொருபொரு ளில்லென்றல் யார்க்கும்
வசையன்று வையத் தியற்கை—நசையழுங்க
நின்றோடிப் பொய்த்தல் நிரைதொடீஇ செய்ந்நன்றி
கொன்றாரிற் குற்ற முடைத்து.

( ,, 111)

241. மாசித் திங்கள் மாசின சின்னத் துணிமுள்ளின்
ஊசித் துன்ன மூசிய வாடை யுடையாகப்
பேசிப் பாவாய் பிச்சை யெனக்கை யகலேந்திக்
கூசிக் கூசி நிற்பர் கொடுத்துண் டறியாதார்.

(சிந்தா. 2929)

## அதி. 26. புகழ்

242. ஏற்றார்கட் கெல்லா மிசைநிற்பத் தாமுடைய
மாற்றார் கொடுத்திருக்கும் வள்ளன்மை—மாற்றாரை
மண்பற்றிக் கொள்கிற்கும் ஆற்றலார்க் கென்னரிதாம்
பெண்பெற்றா னஞ்சா னிழவு.

(பழமொழி, 318)

243. மண்ணின்மேல் வான்புகழ் நட்டானும் மாசில்சீர்ப்
பெண்ணினுட் கற்புடையாட் பெற்றானும்—உண்ணுநீர்க்
கூவல் குறையின்றித் தொட்டானு மிம்மூவர்
சாவா வுடம்பெய்தி னார்.

(திரிகடு. 16)

244. கடிப்பிடு கண்முரசங் காதத்தார் கேட்பர்
இடித்து முழங்கியதோ ரோசனையார் கேட்பர்
அடுக்கிய மூவுலகுங் கேட்குமே சான்றோர்
கொடுத்தா ரெனப்படுஞ் சொல்.

(நாலடி, 100)

245. ஒருவன திரண்டி யாக்கை யூன்பெய்து நரம்பு போர்த்த
உருவமும் புகழு மென்றாங் கவற்றினு ளூழின் வந்து
மருவிய யாக்கை யீங்கே மாய்ந்துபோ மற்றை யாக்கை
திருவமர்ந் துலக மேத்தச் சிறந்துபி னிற்கு மன்றே.

(சூளா. சீய. 204)

---

**238.** 8 தனதாயின். **239.** 14 ருய்ந்த. **240.** 9 நின்றோடப். **242.** 6 கொடுத்திருப்ப; 9 மண்ணகற்றிக். **243.** 2 மாண்புகழ்; 3 கண்டானு; 4 மாசிலாப்; 10 குறைவின்றித். **244.** 11 கேட்பரே.

## அதி. 27. அருளுடைமை

246. அற்றாக நோக்கி யறத்திற் கருளுடைமை
முற்ற வறிந்தார் முதலறிந்தார்—தெற்ற
முதல்விட் டஃதொழிந்தா ரோம்பா வொழுக்கம்
முயல்விட்டுக் காக்கை தினல்.

(பழமொழி, 141)

247. சிறந்த நுகர்ந்தொழுகுஞ் செல்வ முடையார்
அறஞ்செய் தருளுடைய ராதல்—பிறங்கல்
அமையொடு வேய்கலாம் வெற்ப வதுவே
சுமையொடு மேல்வைப்பா மாறு.

( ,, 215)

248. பொருளுடையான் கண்ணதே போகம் அறனும்
அருளுடையான் கண்ணதே யாகும்—அருளுடையான்
செய்யான் பழிபாவஞ் சேரான் புறமொழியும்
உய்யான் பிறர்செவிக் குய்த்து.

(சிறுபஞ்ச. 2)

249. தம்மை யிகழ்ந்தமை தாம்பொறுப்ப தன்றிமற்
றெம்மை யிகழ்ந்த வினைப்பயத்தால்—உம்மை
எரிவாய் நிரயத்து வீழ்வர்கொ லென்று
பரிவதூஉஞ் சான்றோர் கடன்.

(நாலடி, 58)

250. வைததனா லாகும் வசைவணக்கம் நன்றாகச்
செய்ததனா லாகுஞ் செழுங்குலமுற்—செய்த
பொருளினா லாகுமாம் போகம் நெகிழ்ந்த
• அருளினா லாகும் அறம்.

(நான்மணி. 101)

251. தன்னொக்குந் தெய்வம் பிறிதில்லைத் தான்றன்னைப்
பின்னை மனமறப் பெற்றானேல்—என்னை
யிருட்கண்ணே நோக்கா திருமையும் பெற்றாங்
கருட்கண்ணே நிற்ப தறிவு.

(அறநெறி. 171)

252. மெய்தகளி யாகப் பொறையாந் திரிக்கொளீஇ
நெய்தவ மாக நிறைதரப்—பெய்தாங்
கருளாம் விளக்கேற்றி யம்மைப்பாற் செல்ல
இருள்போய் வெளியாய் விடும்.

(பாரதம்)

253. அறவிய மனத்த ராகி யாருயிர்க் கருளைச் செய்யிற்
பறவையும் நிழலும் போலப் பழவினை யுயிரொ டொட்டா
மறவியொன் றானு மின்றி மனத்ததே சுரக்கு நல்லான்
கறவையிற் கறக்குந் தம்மாற் காமுறப் பட்ட வெல்லாம்.

(சிந்தா. 2877)

---

**246.** 6 வுணர்ந்தார். **247.** 1 சிறந்து. **248.** 14 பிறர்செவியிற். **249.** 10 நரகத்து. **251.** 9-11 எழுத்தெண்ணே நோக்கி யிருமையும்; 12 தண்டாங். **253.** 21 தன்னாற்.

254. தன்னுயிர் தான்பரிந் தோம்பு மாறுபோல்
மன்னுயிர் வைகலு மோம்பி வாழுமேல்
இன்னுயிர்க் கிறைவனு யின்ப மூர்த்தியாய்ப்
பொன்னுயி ராய்ப்பிறந் துய்ந்து போகுமே.

(சிந்தா. 3107)

255. ஆருயிர் யாதொன் றிடருறு மாங்கதற்
கோருயிர் போல வுருகி யுயக்கொண்மின்
நேரி னதுமுடி யாதெனி னெஞ்சகத்
தீர முடைமை யருளி னியல்பே.

(சூளா. துறவு. 170)

256. ஆற்று மின்னரு ளாருயிர் மாட்டெலாந்
தூற்று மின்னறந் தோம்நனி துன்னன்மின்
மாற்று மின்கழி மாயமு மானமும்
போற்று மின்பொரு ளாவிவை கொண்டுநீர்.

(வளையா.)

257. பொருளைப் பொருளாப் பொதிந்தோம்பல் செல்லா
தருளைப் பொருளா வறஞ்செய்தல் வேண்டும்
அருளைப் பொருளா வறஞ்செய்து வான்கண்
இருளிலியல் பெய்தாத தென்னோ நமரங்காள்.

( ,, )

## அதி. 28. புலால் மறுத்தல்

258. கொன்றா னுகருங் கொடுமையை யுண்ணினைந்
தன்றே யொழிய விடுவானேல்—என்றும்
இடுக்க ணெனவுண்டோ இல்வாழ்க்கை யுள்ளே
படுத்தானுந் தன்னைத் தவம்.

(அறநெறி. 62)

259. விடலரிய துப்புடைய வேட்கையை நீக்கிப்
படர்வரிய நன்னெறிக்க ணின்றார்—இடருடைத்தாப்
பெற்ற விடக்கு நுகர்தல் கடனீந்திக்
கற்றடியு ளாழ்ந்து விடல்.

(பழமொழி, 26)

260. கரப்பவர்க்குச் செல்சார் கவிழ்தலெஞ் ஞான்றும்
இரப்பவர்க்குச் செல்சார்வொன் றீவோர்—பரப்பமைந்த
தானைக்குச் செல்சார் தறுகண்மை யூனுண்டல்
செய்யாமை செல்சா ருயிர்க்கு.

(நான்மணி. 38)

261. துக்கத்துட் டூங்கித் துறவின்கட் சேர்கலா
மக்கட் பிணத்த சுடுகாடு—தொக்க
விலங்கிற்கும் புள்ளிற்குங் காடே புலங்கெட்ட
புல்லறி வாளர் வயிறு.

(நாலடி, 121)

---

**255.** 2-4 ஆங்கொன் றிடருறி லாங்கதற்; 8 யுயக்கொள்ளல். **256.** 11 யாயமு; 15 ளாமிவை. **257.** 13-14 இருளி னியல்பெயர்த்; 16 நமர்காள். **258.** 4 நெஞ்சுணர்ந்; 7 விடுபவால்; 13 மடுத்தானுந். **260.** 9 சேனைக்குச்.

262. அக்கேபோ லங்கை யொழிய விரலழுகித்
துக்கத் தொழுநோ யெழுபவே—அக்கால்
அலவனைக் காதலித்துக் கால்முரித்துத் தின்ற
பழவினை வந்தடைந்தக் கால்.

(நாலடி, 123)

263. வாயிற் சுவைவெஃகி மான்கொன்று மீன்கொன்று
நாயொத் துழல்வார்க்கு நாவளவே—போயிழிந்தால்
இன்னா தினிதென் றறியா ரிதற்காக
மன்னுயிரூன் தின்றல் வடு.

(பாரதம்)

264. தகாதுயிர்கொல் வானின் மிகாமையிலை பாவம்
அவாவிலையி லுண்பான் புலால்பெருகல் வேண்டும்
புகாவலை விலங்காய்ப் பொருதுபிற வூன்கொன்
றவாவிலையில் விற்பானு மாண்டருகல் வேண்டும்.

(வளையா.)

265. பிறவிக் கடலகத் தாராய்ந் துணரின்
தெறுவதிற் குற்ற மிலார்களு மில்லை
அறவகை யோரா விடக்கு மிசைவோர்
குறைவின்றித் தஞ்சுற்றந் தின்றன ராவர்.

( ,, )

266. உயிர்க ளோம்புமி னூன்விழைந் துண்ணன்மின்
செயிர்கள் நீங்குமின் செற்ற மிகந்தொரீஇக்
கதிகள் நல்லுருக் கண்டனர் கைதொழு
மதிகள் போல மறுவிலிர் தோன்றுவீர்.

( ,, )

267. ஊன்சுவைத் துடம்பு வீக்கி நரகத்தி லுறைதல் நன்றோ
ஊன்றினு துடம்பு வாட்டித் தேவரா யுறைதல் நன்றோ
ஊன்றியிவ் விரண்டி னுள்ளு முறுதிநீ யுரைத்தி டென்ன
ஊன்றினு தொழிந்து புத்தே ளாவதே யுறுதி யென்றான்.

(சிந்தா. 1235)

268. வெந்தடி தின்ற வெந்நோய் வேகத்தான் மீட்டு மாலைப்
பைந்தொடி மகளி ராடும் பந்தென வெழுந்து பொங்கி
வந்துடைந் துருகி வீழ்ந்து மாழ்குபு கிடப்பர் தண்டாய்
கந்தடு வெகுளி வேகக் கடாமுகக் களிற்று வேந்தே.

( ,, 2765)

## அதி. 29. தவம்

269. தத்தமக்குக் கொண்ட குறியோ தவமல்ல
செத்துக சாந்து படுக்கமன—மொத்துச்
சமத்தனாய் நின்றொழுகுஞ் சால்பு தவமே
நுகத்துப் பகலாணி போன்று.

(பழமொழி, 95)

---

**262**. 11 கால்முறித்துத். **264**. 7 புலாலருகல், புல்லால்பெருக; 9-10 புகாவலையி லங்காப்; புகாவிலையி லங்காப். 11-12 பொருதுபிறர் மீன்கொன். **266**. 15 மறுவிலர். **267**. 13 ஊன்றிய. **268**. 17 கிடப்பக். **269**. 9 சகத்தனாய்.

270. உயிர்நோய்செய் யாமை யுறுநோய் மறத்தல்
செயிர்நோய் பிறர்கட்செய் யாமை—செயிர்நோய்
விழைவு வெகுளி யிவைவிடுவ னாயின்
இழவன் றினிது தவம்.

(சிறுபஞ்ச. 31)

271. தூய்மை யுடைமை துணிவாந் தொழிலகற்றும்
வாய்மை யுடைமை வனப்பாகும்—தீமை
மனத்தினும் வாயினுஞ் சொல்லாமை மூன்றுந்
தவத்திற் றருக்கினார் கோள்.

(திரிகடு. 78)

272. ஊக்கித்தாங் கொண்ட விரதங்க ளுள்ளுடையத்
தாக்கருந் துன்பங்கள் தாந்தலை வந்தக்கால்
நீக்கி நிறூஉ முரவோரே நல்லொழுக்கங்
காக்குந் திருவத் தவர்.

(நாலடி, 57)

273. விளக்குப் புகவிருள் மாய்ந்தாங் கொருவன்
தவத்தின்முன் னில்லாதாம் பாவம்—விளக்குநெய்
தேய்விடத்துச் சென்றிருள் பாய்ந்தாங்கு நல்வினை
தீர்விடத்து நிற்குமாந் தீது.

( ,, 51)

274. விளையாமை யுண்ணாமை யாடாமை ஆற்ற
வுளையாமை யுட்குடைத்தா வேறல்—களையாமை
நூற்பட்டார் பூங்கோதாய் நோக்கி னிவையாறும்
பாற்பட்டார் கொண்டொழுகும் பண்பு.

(ஏலாதி, 13)

275. அழப்போகான் அஞ்சான் அலறினாற் கேளான்
எழப்போகான் ஈடற்றூ ரென்னான்—தொழப்போகான்
என்னேயிக் காலனொ டேற்பார் தவமுயலார்
கொன்னே யிருத்தல் குறை.

( ,, 37)

276. நீர்பலகால் மூழ்கி நிலத்தசைஇத் தோலுடையாச்
சோர்சடை தாழச் சுடரோம்பி—ஊரடையார்
கானகத்த கொண்டு கடவுள் விருந்தோம்பல்
வானகத் துய்க்கும் வழி.

(வெண்பா 168)

277. பொருளொடு போகம் புணர்த லுறினும்
அருளுதல் சான்ற அருந்தவஞ் செய்ம்மின்
இருளில் கதிச்சென் றினியிவண் வாரீர்
தெருள லுறினுந் தெருண்மி னதுவே. (வளையா.)

---

**270.** 4 துறத்தல், மறைத்தல்; 13 இழிவன், இழவென். **271.** 10 வாயானுஞ்; 11 செய்யாமை. **272.** 5 காக்கருந். **273.** 5 தவத்துமுன். **274.** 1 அளையாமை; 7 ரென்றுந், வென்று, லென்று; 12 னவையாறும். **275.** 4 போகான்; 7 ரென்று; 10-11 காலனீ டோர்ப்பார், காலனீ டோரான், காலனீடோரார்; 12 தவமுயல்வார். **276.** 9 கானகத்தே. **277.** 11 றினியவண்; 16 னிதுவே;

278. தவத்தின் மேனுறை தவத்திறை தனக்கல தரிதே
மயக்கு நீங்குதல் மனமொழி யொடுமெயிற் செறிதல்
உவத்தல் காய்தலொ டிலாதுபல் வகையுயிர்க் கருளை
நயத்து நீங்குதல் பொருடனை யனையது மறிநீ.

(வளையா.)

279. பவளவாய்ச் செறுவு தன்னுள் நித்திலம் பயில வித்திக்
குழவிநா றெழுந்து காளைக் கொழுங்கதி ரீன்று பின்னைக்
கிழவுத்தான் விளைக்கும் பைங்கூழ் கேட்டிரேற் பிணிசெய் பன்மா
உழவிர்காள் மேயுஞ் சீல வேலியுய்த் திடுமி னென்றான்.

(சிந்தா. 379)

280. ஒன்றாய வூக்கவேர் பூட்டி யாக்கைச் செறுவுழுது
நன்றாய்ந்த நல்விரதச் செந்நெல் வித்தி யொழுக்கநீர்
குன்றாமற் றாங்கொடுத்தைம் பொறியின் வேலி காத்தோம்பின்
வென்றார்தம் வீட்டின்பம் விளைக்கும் விண்ணோ ருலகீன்றே.

( ,, 962)

281. பருதி சூழ்ந்தவிப் பயங்கெழு மாநிலம்
ஒருபக லெழுவ ரெய்தி யற்றே
வையமுந் தவமுந் தூக்கிற் றவத்திற்
கையவி யனைத்து மாற்றா தாதலிற்
கைவிட் டனரே காதல ரதனால்
விட்டோரை விடாது திருவே
விடாஅ தோரிவண் விடப்பட் டோரே.

(புறம், 358)

282. கறங்குவெள் ளருவி யேற்றலி னிறம்பெயர்ந்து
தில்லை யன்ன புல்லென் சடையொ
டள்ளிலைத் தாளி கொய்யு மோனே
இல்வழங்கு மடமயில் பிணிக்குஞ்
சொல்வலை வேட்டுவ னாயினன் மன்னே. ( ,, 252)

283. வரிக்கடை நெடுங்கண் விளங்க மேதக
மணித்தோடு பெய்து வாண்முகந் திருத்தி
நானிலம் வளர்த்த பாவையொடு கெழீஇய
கான்யாற்று வருபுன லாடலுந் தேமலர்
வல்லிப் பந்தர் வண்டுவா ழொருசிறை
நிலமகட் புணருஞ் சேக்கையு மரமுதல்
மெல்லுரி வெண்டுகி லுடையுந் தொல்வகைப்
படையுழா விளையுளி னுணவுமந் திரத்துச்
சுடர்முதற் குலமுறை வளர்த்தலும் வரையாது
வருவிருந் தோம்புஞ் செல்வமும் வரைமுதற்
காடுகைக் கொள்ளு முறையுளு மென்றிவ்

**278.** 4-5 தனக்கக லரிதே; 13 டிலர்பல; 18 பொருடினை. **279.** 12 பின்னாட்; 20 மெய்யுஞ். **281.** 4, 1 கைவினை; 5, 3-4 காதலதனால்; 7, 2 தோரின்றவண். **282.** 4, 1 இல்விளங்கு. **283.** 3,1 நாணல்; 3,2 வளைத்த; 3, 4 கெழீஇக்; 4, 4 தேமுள்; 8, 1-2 படையமர் விளையி; 8, 3 னுணன்மந்; 13, 3 தாழ்க்கு; 14, 2-3 தவத்தினராசியற்.

வெண்வகை மரபி னிசைந்த வாழ்க்கை
ஐம்பொறிச் சேனை காக்கு மாற்றலொடு
வென்றுவிளங்கு தவத்தி னரசியற் பெருமை
மாக்கட லுடுத்த வரைப்பின்
யார்க்கினி தன்றஃ தறியுநர்ப் பெறினே.

(ஆசிரிய.)

## அதி. 30. கூடாவொழுக்கம்

284. இம்மைத் தவமும் அறமு மெனவிரண்டுந்
தம்மை யுடையா ரவற்றைச் சலமொழுகல்
இம்மைப் பழியேயு மன்றி மறுமையுந்
தம்மைத்தா மார்க்குங் கயிறு.

(பழமொழி, 346)

285. துயிலும் பொழுதே தொடவூண்மேற் கொண்டு
வெயில்விரி போழ்தின் வெளிப்பட்டா ராகி
அயில்போலுங் கண்ணு யடைந்தார்போற் காட்டி
மயில்போலுங் கள்வ ருடைத்து.

( ,, 353)

286. போர்த்து முரிந்திட்டும் பூசியும் நீட்டியும்
ஓர்த்தொரு பான்மறைத் துண்பான்மேய்—ஓர்த்த
அறமறமேற் சொற்பொறுக்க வன்றேற் கலிக்கண்
துறவறம்பொய் யில்லறமெய் யாம்.

(சிறுபஞ்ச. 66)

287. துறந்தார் துறவா ரெனவறிய லாகுந்
துறந்தவர் கொண்டொழுகும் வேடந்—துறந்தவர்
கொள்ப கொடுப்பவற்றுற் காணலா மற்றவர்
உள்ளங் கிடந்த வகை.

(அறநெறி. 25)

288. போர்த்தலுடை நீக்குதல் பொடித்துகண்மெய் பூசல்
கூர்த்தபனி யாற்றுதல் குளித்தழலு ணிற்றல்
சார்த்தரிடு பிச்சையர் சடைத்தலைய ராதல்
வார்த்தையிவை செய்தவ மடிந்தொழுக லென்றான்.

(குண்டல.)

## அதி. 31. புணர்ச்சி விழையாமை

289. விழுமிழை நல்லார் வெருள்பிணை நோக்கம்
கெழுமிய நாணை மறைக்கும்—தொழுனையுள்
மாலையு மாலுள் மயக்குறுத்தா ளஃதாலச்
சால்பினைச் சால்பறுக்கு மாறு.

(பழமொழி, 12)

---

**284**. 8 சலமொழுகில். **285**. 3 துடவூண்மேற், துடப்பூண்மேற்; 2-3 பொழுதத் துடைவூண்மேற். **286**. 2 முரித்திட்டும்; 6 பான்புரைத்; 9-10 அறமற மேற்பொறுக்க; 14-15 யில்லறமே வாய். **287**. 4 லாகா; 9 கொள்வ, கொள்ளல். **288**. நீலகேசித் தெருட்டு, 272, உரை பார்க்க. 3 பொடித்துக்கண்மெய்; 7-8 குளித்தல் புனலன்றேல், குளித்த புனலன்றே; 9 சாத்தலிடு; 12 ராயொழுகல். **289**. 3 வெருள்பிணைபோல்; 5 கழுமிய; 9-10 மாலையுள் மாலை.

290. பரவா வெளிப்படா பல்லார்கட் டங்கா
உரவோர்கட் காமநோ யோஒ கொடிதே
விரவாருள் நாணுப் படலஞ்சி யாதும்
உரையாதுள் ளாறி விடும்.

(நாலடி, 88)

291. அம்பு மழலு மவிர்கதிர் ஞாயிறும்
வெம்பிச் சுடினும் புறஞ்சுடும்—வெம்பிக்
கவற்றி மனத்தைச் சுடுதலாற் காமம்
அவற்றினு மஞ்சப் படும்.

( ,, 89)

292. ஆணை யூற்றின் மீன்சுவையி னசுண மிசையி னளிநாற்றத்
தேனைப் பதங்க முருவங்கண் டிடுக்க ணெய்து மிவையெல்லாம்
கான மயிலின் சாயலார் காட்டிக் கௌவை விளைத்தலான்
மான மாந்த ரெவன்கொலோ வரையா தவரை வைப்பதே.

(சாந்தி.)

293. எண்ணின்றி யேதுணியு மெவ்வழி யானு மோடும்
உண்ணின் றுருக்கு முரவோருரை கோட லின்றாம்
நண்ணின்றி யேயு நயவாரை நயந்து நிற்குங்
கண்ணின்று காம நனிகாமுறு வாரை வீழ்க்கும்.

(வளையா.)

294. சான்றோ ருவர்ப்பத் தனிநின்று பழிப்ப காணார்
ஆன்றாங் கமைந்த குரவர்மொழி கோட லீயார்
வான்றாங்கி நின்ற புகழ்மாசு படுப்பர் காமன்
தான்றாங்கி விட்ட கணைமெய்ப்படு மாயி னக்கால்.

( ,, )

295. மாவென் றுரைத்து மடலேறுப மன்று தோறும்
பூவென் றெருக்கி னிணர்சூடுப புன்மை கொண்டே
பேயென் றெழுந்து பிறரார்ப்பவு நிற்ப காம
நோய்நன் கெழுந்து நனிகாழ்க்கொள்வ தாயி னக்கால்.

( ,, )

296. நக்கே விலாவி றுவர்நா ணுவர் நாணும் வேண்டார்
புக்கே கிடப்பர் கனவுந்நினை கையு மேற்பர்
துற்றாண் மறப்ப ரழுவர்நனி துஞ்ச லில்லார்
நற்றோள் மிகைபெ ரிதுநாடறி துன்ப மாக்கும்.

( ,, )

297. அரசொடு நட்டவ ராள்ப விருத்தி
அரவொடு நட்டவ ராட்டியு முண்பர்
புரிவளை முன்கைப் புனையிழை நல்லார்
விரகில ரென்று விடுத்தனர் முன்னே.

( ,, )

---

**292.** 6-7 னளிநாற்ற மேனைப்; 18 விளைத்தாலு. **293.** 18 முனிகாமுறு. **294.** 2-3 ருவப்பச் சனநின்று; 4 பழிப்பர்; 13 புகழ்மாழ்கு; 14 படுப் பக். **295.** 10 கொண்ட; 14 நிற்பர். **296.** 8 கனவுந்நனி, கனவுந்நனவு; 17 மிகப்பெ; 20 மாகும். **297.** 7 ராடியு ; 9 புரிவளர்.

298. பனிமதி பொழிகதிர் பருகு மாம்பல்போல்
முனிமதி முகத்தியர் முறுவல் நம்பினார்
துனிவளர் கதிகளுட் டோன்றி நாடகங்
கனியநின் றாடுவர் கடையில் காலமே.

(சிந்தா. 1554)

299. நிழனிமிர் நெடுமதி நிகரில் தீங்கதிர்ப்
பழனவண் டாமரை பனிக்கு மாறுபோற்
குழனிமிர் கிளவியார் கோல மஞ்சினார்
தொழுநிமிர்ந் தமரராய்த் துறக்க மாள்வரே.

(,, 1555)

300. காதன் மிக்குழிக் கற்றவுங் கைகொடா
வாதல் கண்ணகத் தஞ்சனம் போலுமால்
தாது துற்றுபு தங்கிய வண்டனார்க்
கேத மிற்றென வெண்ணுமென் னெஞ்சரோ.

(,, 1632)

301. எரிதலைக் கொண்ட காமத் தின்பநீர்ப் புள்ளி யற்றால்
பிரிவினிற் பிறந்த துன்பம் பெருங்கட லனைய தொன்றால்
உருகினைந் துடம்பு நீங்கி னிம்மையோ டும்மை யின்றி
இருதலைப் பயனு மெய்தா ரென்றியாங் கேட்டு மன்றே.

(,, 1536)

302. வகையெழிற் றோள்க ளென்று மணிநிறக் குஞ்சி யென்றும்
புகழெழ விகற்பிக் கின்ற பொருளில்கா மத்தை மற்றோர் [பார்
தொகையெழுங் காதல் தன்னால் துய்த்துயாந் துடைத்து மென்
அகையழ லழுவந் தன்னை நெய்யினா லவிக்க லாமோ.

(குண்டல.)

303. அனலென நினைப்பிற் பொத்தி யகந்தலைக் கொண்ட காமக்
கனலினை யுவர்ப்பு நீராற் கடையற வவித்து மென்னார்
நினைவிலாப் புணர்ச்சி தன்னால் நீக்குது மென்று நிற்பார்
புனலினைப் புனலி னாலே யாவர்போ காமை வைப்பார்.

( ,, )

304. வெவ்விட மமுதென விளங்குங் கண்ணினார்க்
கெவ்விட முடம்பினி லிழிக்கத் தக்கன
அவ்விட மாடவர்க் கமிர்த மாதலால்
உய்விடம் யாதினி யுரைக்கற் பாலையே.

(நாரத.)

## அதி. 32. கள்ளாமை

305. முளரிமுக நாகமுளை யெயிறழுது கீற
அளவிறுயர் செய்வரிவண் மன்னவர்க ளாலும்
விளைவரிய மாதுயரம் வீழ்கதியு ளுய்க்கும்
களவுகட னாகக் கடிந்திடுதல் சூதே. (சிந்தா. 2870)

---

**299.** 7 பணிக்கு. **300.** 11 தாங்கிய; 14 மின்றென; 15-16 வெண்ணு மிந் நெஞ்சரோ. **301.** 7 பிரிவின்றிப்; 13 உரிதினைந்; 16 யிம்மையோ. **302.** 1-2 வகையெழுத் தோள்க; 7 புகையெழ. **303.** 3 போற்றி; 8 யுவப்பு; 23 காமல். **304.** 7 விழக்கத்; 16 பாலதே. **305.** 4 கீழ; 7-8 மன்னரத னாலும்.

306. களருமெரி விடமெழுதல் விழுதல்முத லாய
அளவிலரு நரகில்வரு நவைபலவு மஞ்சின்
உளமொழிமெய் நெறியொழுகி யுறுபொருள் சிதைக்குங்
களவுவிழை வொழிதல்கட னாக்கனனி நன்றே.

(சாந்தி.)

307. பிளவுகெழு வெழுநரக மெரிகொளுவ வீர்தல்
உளையவுடல் தடிவொடுறு துயரம்விளை விக்கும்
கிளையறவு தருமரிய புகழினை யழிக்குங்
களவுநனி விடுதலற மென்றுகரு தென்றான்.

( ,, )

308. களவி னாகிய காரறி வுள்ளன்மின்
விளைவில் வெவ்வினை வீவில் கதிகளுள்
உளைய வுள்ளழித் தொன்றல வேதனை
வளைய வாங்கி வருத்த முறுக்குமே.

(சூளா. ?)

309. பீடில் செய்திக ளாற்கள விற்பிறர்
வீடில் பல்பொருள் கொண்ட பயனெனக்
கூடிக் காலொடு கைகளைப் பற்றிவைத்
தோட லின்றி யுலையக் குறைக்குமே.

(வளையா.)

## அதி. 33. பொய்யாமை *

310. தான்கெடினுந் தக்கார்கே டெண்ணற்க தன்னுடம்பின்
ஊன்கெடினு முண்ணார்கைத் துண்ணற்க—வான்கவிந்த
வையக மெல்லாம் பெறினு முரையற்க
பொய்யோ டிடைமிடைந்த சொல்.

(நாலடி, 80)

311. இம்மை நலனழிக்கு மெச்சங் குறைபடுக்கும்
அம்மை யருநரகத் தாழ்விக்கும்—மெய்ம்மை
அறந்தேயும் பின்னு மலர்மகளை நீக்கும்
மறந்தேயும் பொய்யுரைக்கும் வாய்.

(சிறுபஞ்ச. $)

312. பொய்யி னீங்குமின் பொய்யின்மை பூண்டுகொண்
டைய மின்றி யறநெறி யாற்றுமின்
வைகல் வேதனை வந்துற லொன்றின்றிக்
கௌவை யில்லுல கெய்துதல் கண்டதே. (வளையா.)

---

**306.** 1 களருமரி; 6 நரகிலரு; 8 மஞ்சி, நச்சி; 15 னாகநனி, னாகனனி; 16 நின்றே. **307.** 1 பிளவுகழு; 4 வீர்தல், வீர்த்தல்; 5-6 உளையவுற வடிவொடுறு; 9 கிளையழிவு. **308.** 1-2 களவி னலாகிய; 4 வெள்ளன்மின்; 7 வீறில், வீறல்; 8 கதிக்குள்; 10 வுள்ளழிந்; 11 தொன்ற; 13 வளையுள்; 15 வருத்து. இது சூளாமணியிற் காணப்பெறவில்லை; வளையாபதிச் செய்யுளாக இருத்தல் கூடும். **309.** 1 வீடில்; 15 யுலைக்குங்; 16 குறைத்தனர். * வாய்மை. **310.** 4 தம்முடம்பில். **311.** இது பதிப்புக்களிற் காணப்படவில்லை. 14 பொய்மொழிந்த. $ பாரதம். **312.** 2-3 னெஞ்சம் பொறையொடு; 3 பொய்யன்மை; 12 லொன்றிலாக்.

313. கல்வி யின்மையும் கைப்பொருள் போகலும்
நல்லில் செல்லல்க ளானலி வுண்மையும்
பொய்யில் பொய்யொடு கூடுதற் காகுதல்
ஐய மில்லை யதுகடிந் தோம்புமின்.
(வளையா.)

314. மெய்யுரை விளங்குமணி மேலுலக கோபுரங்கள்
ஐயமிலை நின்றபுகழ் வையகத்து மன்னு
மையல்விளை மாநரக கோபுரங்கள் கண்டீர்
பொய்யுரையும் வேண்டா புறத்திடுமி னென்றான்.
(சிந்தா. 2869)

315. மலங்கிமதி யின்றியயர் வெய்திமயல் கூர
நலங்கியறி யாதுதுய ரெய்திநனி வாடும்
விலங்குறு கடுந்துயர் விலங்குதல் விரும்பிற்
புலன்கொள்வழி பொய்யுரை புறத்திடுமி னென்றான்.
( ,, )

## அதி. 34. வெகுளாமை

316. ஆய்ந்த வறிவின ரல்லாதார் புல்லுரைக்குக்
காய்ந்தெதிர் சொல்லுபவோ கற்றறிந்தார்—தீந்தேன்
முசுக்குத்தி நக்கு மலைநாட தம்மைப்
பசுக்குத்திற் குத்துவா ரில்.
(பழமொழி, 268)

317. மதித்திறப் பாரு மிறக்க மதியா
மிதித்திறப் பாரு மிறக்க—மிதித்தேறி
ஈயுந் தலைமே லிருத்தலா லஃதறிவார்
காயுங் கதமின்மை நன்று.
(நாலடி, 61)

318. கூர்த்துநாய் கௌவிக் கொளக்கண்டுந் தம்வாயாற்
பேர்த்துநாய் கௌவினா ரீங்கில்லை—நீர்த்தன்றிக்
கீழ்மக்கள் கீழாய சொல்லியக்காற் சொல்லுபவோ
மேன்மக்கள் தம்வாயான் மீட்டு.
( ,, 70)

319. நேர்த்து நிகரல்லார் நீரல்ல சொல்லியக்கால்
வேர்த்து வெகுளார் விழுமியோர்—ஓர்த்ததனை
யுள்ளத்தா னுள்ளி யுரைத்துரா யூர்கேட்பத்
துள்ளித்தூண் முட்டுமாங் கீழ்.
( ,, 64)

320. உழந்துழந்துங் கொண்ட வுடம்பினைக்கூற் றுண்ண
இழந்திழந் தெங்கணுந் தோன்றிச்—சுழன்றுழன்ற
சுற்றத்தா ரல்லாதா ரில்லைக்கா ணன்னெஞ்சே
செற்றத்தாற் செய்வ தெவன்.
(அறநெறி. 102)

**315.** இது சிந்தாமணியிற் காணப்பெறவில்லை. 6-7 யாத்துயர மெய்திநனி; 13 புலன்கள்வழி. **316.** 6 சொல்லுவரோ. **317.** 4 மதியார்; 8 மதித்தேறி. **319.** 2 நிகரல்லர்; 8 ஆர்த்ததனை. **320.** 1 உழந்துழந்து; 5-7 இழைந்திழைந் தெங்காணுந் தோன்றச்; 15 துரை.

321. தன்னை யொருவ னிகழ்ந்துரைப்பிற் றானவனைப்
பின்னை யுரையாப் பெருமையோன்—முன்னை
வினைப்பயனா னாயிற்றா லென்றதன்கண் மெய்ம்மை
நினைத்தொழிய நெஞ்சினோ யில்.

(அறநெறி. 96)

322. கற்றார்முன் தோன்றா கழிவிரக்கங் காதலித்தொன்
றாற்றார்முன் தோன்றா வசாவுதல்—தெற்றென
அல்ல புரிந்தார்க் கறந்தோன்றா வெல்லாம்
வெகுண்டார்முன் தோன்றா கெடும்.

(நான்மணி. 8)

## அதி. 35. இன்னாசெய்யாமை

323. வினைப்பய மொன்றின்றி வேற்றுமை கொண்டு
நினைத்துப் பிறர்பனிப்ப செய்யாமை வேண்டும்
புனப்பொன் னவிர்சுணங்கிற் பூங்கொம்ப ரன்னாய்
தனக்கின்னா வின்னா பிறர்க்கு.

(பழமொழி, 266)

324. ஆற்றா ரிவரென் றடைந்த தமரையுந்
தோற்றத்தா மெள்ளி நலியற்க—போற்றான்
கடையடைத்து வைத்துப் புடைத்தக்கால் நாயும்
உடையானைக் கௌவி விடும்.

( ,, 252)

325. பூவுட்குங் கண்ணாய் பொறுப்ப ரெனக்கருதி
யாவர்க்கே யாயினு மின்னா செயல்வேண்டா
தேவர்க்குங் கைகூடாத் திண்ணன்பி னார்க்கேயும்
நோவச் செயினோன்மை யில்.

( ,, 335)

326. இறப்ப நுமக்கடுத்த வெவ்வநோ யாவும்
பிறர்க்குமஃ தாமென்று கொண்மின்—உறக்கருதி
எவ்வா றுமக்குறுதி யெண்ணுதிர்நீ ரெல்லார்க்கும்
அவ்வாறே யெண்ணல் அறம்.

(பாரதம்)

## அதி. 36. கொல்லாமை

327. கொன்றான் கொலையை யுடம்பட்டான் கோடாது
கொன்றதனைக் கொண்டான் கொழிக்குங்கால்—கொன்றதனை
அட்டா னிடவுண்டா னெவரினு மாகுமெனக்
கட்டெறிந்த பாவங் கருது.

(சிறுபஞ்ச. 69)

---

**321.** 7 பெருமையான்; 9 வினைப்பய; 11 மென்றதன்கண்; **14** நெஞ்சேநோ, நெஞ்சநோ. **322.** 7 வுறாமுதல்; 9 அல்லல். **323.** 6 பிறர்துனிப்ப; 13 தமக்கின்னா. **324.** 6 னெள்ளி, வெள்ளி; 11 புடைத்துக்காண். **325.** 1 பூவுடங்கும். **326.** 10-11 றுமக்குநன் றெண்ணுதிர்நீ. **327.** 10 னடவுண்டா; 12 மேலுளவர்க்; 13 கட்டிறந்த.

328. நசைகொல்லார் நச்சியார்க் கென்றுங் கிளைஞர்
மிசைகொல்லார் வேளாண்மை கொல்லார்—இசைகொல்லார்
பொன்பெறும் பூஞ்சுணங்கின் மென்முலையாய் நன்குணர்ந்தார்
என்பெறினுங் கொல்லா ரியைந்து.

(சிறுபஞ்ச. 47)

329. இங்நோ யெமக்குமுண் டென்னலா ரெவ்வுயிரும்
முன்னேவக் கொல்லு முழுமக்கள்—எங்நோயும்
பண்ணப் படுநரகிற் பாவியரிற் பாவியரென்
றெண்ணப் படுவ ரிகழ்ந்து.

(பாரதம்)

330. ஆனை யடியு ளடங்காத வில்லையால்
ஏனைய வற்றடிகள் யாவையும்—ஊனுயிரைக்
கொல்லா வறத்தின் கொழுநிழலுட் பட்டடங்கும்
எல்லா வறனு மியைந்து,

( ,, )

331. அலைப்பான் பிறிதுயிரை யாக்கலுங் குற்றம்
விலைப்பாலிற் கொண்டூன் மிசைதலுங் குற்றம்
சொலற்பால வல்லாத சொல்லுதலுங் குற்றம்
கொலைப்பாலுங் குற்றமே யாம்.

(நான்மணி*. 26)

332. கொன்றவன் குறைத்தவன் கொணர்ந்து விற்றவன்
ஒன்றிய பொருள்கொடுத் துவந்து கொண்டவன்
நன்றிது வென்றவன் நாவிற் பெய்தவன்
என்றிவ ரறுவரு நரக மெய்துவார்.

(இராமாவ. ?)

333. அறம்பெரிய கூறின னலங்கலணி வேலோய்
மறம்புரியு நெஞ்சம்வழி யாப்புகுதந் தீண்டிச்
செறும்பெரிய தீவினைகள் சென்றுகடி தோடி
யுறும்பெரிய துன்ப முயிர்க்கொலையும் வேண்டா.

(சிந்தா. 2868)

334. மங்கை மனுவனைய மென்சூல் மடவுடும்பு
செங்கண் வரிவரால் செங்நீ ரிளவாளை
வெங்கருனை புல்லுதற்கு வேறுவே றுக்குறைப்ப
அங்காந்து நோக்குநோக் கார்கண்ணே நோக்குமே. ( ,, 2781)

---

**328.** 3 கொன்றும்; 15 ரிழந்து. **329.** 1-8 இங்நோய் நமக்குண்டென் றெண்ணுதே யெவ்வுயிரு-முன்னேவக் கொன்றுண்ணு மூர்க்கர்தா-மெங்நோவும்; 11-12 பாவிகளிற் பாவிகளென்; 12-13 பாவியரி லெண்ணப்; 15 ரிசைந்து. **330.** 3-4 ளடங்கா தனவில்லை; 8 ஊனுயிர்க். **331.** * யாப்பருங்கலம். இச்செய்யுள் நான்மணிக்கடிகைப் பிரதிகள் பலவற்றிற் காணப்படவில்லை. **332.** 1-4 கொன்றவர் குறைத்தவர் கொணர்ந்து விற்றவர்; 8 கொண்டவர்; 9-10 நன்றடு மடைமகன்; 10 வென்றவர்; 12 பெய்தவர். இது இராமாவதாரத் துள்ளதாகத் தெரியவில்லை; குண்டலகேசிச் செய்யுளாக இருத்தல் கூடும். **333.** 7 யாப்புகுந்; 11-12 சென்றுகதி யோடி. **334.** 16 நோக்குமால்.

335. வயிரமுள் நிரைத்து நீண்ட வார்சினை யிலவ மேற்றிச்
செயிரிற்றீ மடுப்பர் கீழாற் சென்னுனைக் கழுவி லேற்றி
மயிருக்கொன் றாக வாங்கி யகைத்தகைத் திடுவர் மன்னா
உயிரைப்பே துறக்கு மாந்த ருயிரைப்பே துறக்கு மாறே.
(சிந்தா. 2766)

336. சிலையினான் மாக்கள் கொன்று செழுங்கடல் வேட்ட மாடி
வலையினான் மீன்கள் வாரி வாழுயிர்க் கூற்ற மாய
கொலைஞரைக் கும்பி தன்னுட் கொந்தழ லழுத்தி யிட்டு
நலிகுவர் நாளு நாளு நரகரை நாம வேலோய்.
(,, 2770)

337. உலகுடன் விளங்கவுயர் சீர்த்திநிலை கொள்ளின்
நிலையில்கதி நான்கினிடை நின்றுதடு மாறும்
அலகிறுய ரஞ்சினுயி ரஞ்சவரும் வஞ்சக்
கொலையொழிமி னென்றுநனி கூறின ரறிந்தார்.
(வளையா.)

338. கொன்றுயிர் நடுங்கச் சென்று கொலைத்தொழிற் கருவி யேந்தி
நின்றெறி நுடங்கு கண்ணாற் பாவமே நினைந்து செத்தார்
சென்றெறி நரகில் வீழ்வர் செவ்வனே துன்ப மஞ்சி
நன்றியில் கொலையி னீங்கி நற்றவம் புரிமி னென்றான்.
(சூளா. ?)

339. கொலையி னீங்குமின் கொண்மி னுலகினுள்
தலைவ னல்லறந் தக்க தெனவுவந்
தலையி னீங்கிய வவ்வுல கெய்துதல்
முனைவர் சொன்ன முடிவிது வாகுமே.
( ,, )

## அதி. 37. செல்வ நிலையாமை

340. யானை யெருத்தம் பொலியக் குடைநிழற்கீழ்ச்
சேனைத் தலைவராய்ச் சென்றோரும்—ஏனை
வினையுலப்ப வேறாகி வீழ்வர்தாங் கொண்ட
மனையாளை மாற்றார் கொள.
(நாலடி, 3)

341. உண்ணா னொளிநிறா னோங்குபுகழ் செய்யான்
துன்னருங் கேளிர் துயர்களையான்—கொன்னே
வழங்கான் பொருள்காத் திருப்பானேல் அஆ
இழந்தானென் றெண்ணப் படும்.
(,, 9)

342. உடாஅது முண்ணாதுந் தம்முடம்பு செற்றுங்
கெடாஅத நல்லறமுஞ் செய்யார்—கொடாஅது

**335.** 10 செந்நுனை; 16 வகைத்தரிந்; 19 உயிரைப்பெய்; 22 ருயிரைப் பெய். **336.** 16 கொழுந்தழ; 17 லழுந்தி, (ல்) முருந்தி; 19 நலிபவர். **337.** 2 விளங்கவரு, வணங்கவுயர். **338.** 7-8 நின்றெதிர் தொடங்கு; 8 துடங்கு; 9 கண்ணாய்; 13 சென்றிடு. இதுவும் அடுத்த செய்யுளும் சூளாமணியிற் காணப்பெறவில்லை. **339.** 13 முனிவர்; 15 முடிவது. **340.** 13 மனையாரை; 14 மாற்றான். **342.** 5 கெடாஅது.

வைத்தீட்டி னூரிழுப்பர் வான்றோய் மலைநாடன்
உய்த்தீட்டுந் தேனீக் கரி.

(,, 10)

343. செல்வர்யா மென்றுதாஞ் செல்வுழி யெண்ணாத
புல்லறி வாளர் பெருஞ்செல்வம்—எல்லிக்
கருங்கொண்மூ வாய்திறந்த மின்னுப்போற் றோன்றி
மருங்கறக் கெட்டு விடும்.

(நாலடி, 8)

344. புண்ணிய முலந்தபின் பொருளி லார்களைக்
கண்ணிலர் துறந்திடுங் கணிகை மார்கள்போல்
எண்ணில ளிகழ்ந்திடும் யாவர் தம்மொடும்
நண்ணிய நண்பிலள் நங்கை வண்ணமே.

(சூளா. முத்தி. 15)

345. அடிமிசை யரசர்கள் வணங்க வாண்டவன்
பொடிமிசை யப்புறம் புரள விப்புறம்
இடிமுர சதிரவொ ரிளவல் தன்னொடுங்
கடிபுகு மவளது கற்பின் வண்ணமே.

(,, முத்தி. 22)

346. யானை துரப்ப வரவுறை யாழ்குழி
நானவிர்ப் பற்றுபு நாலு மொருவனோர்
தேனை யிழிதுளி நக்குந் திறத்தது
மானுய ரின்ப மதித்தனை கொண்ணீ.

(" துறவு. 149)

347. வெற்றிவேல் மணிமுடி வேந்தர் தம்மொடும்
உற்றதோ ருரிமைய ளல்லள் யாரொடும்
பற்றிலள் பற்றினர் பால ளன்னதால்
முற்றுநீர்த் துகிலிடை முதுபெண் ணீர்மையே.

(,, முத்தி. 21)

348. முல்லை முகைசொரிந்தாற் போன்றினிய பாலடிசில் மகளிரேந்த
நல்ல கருனையால் நாள்வாயும் பொற்கலத்து நயந்துண் டார்கள்
அல்ல லுடைய வடகிடுமி யோட்டகத்தென் றயில்வார்க் கண்டுஞ்
செல்வம் நமரங்காள் நினையன்மின்செய்தவமே நினைமின்கண்டீர்.

(சிந்தா. 2623)

349. வண்ணத் துகிலுடுப்பின்வாய்விட் டழுவதுபோல்வருந்துமல்குல்
நண்ணுச் சிறுகூறை பாகமோர் கைபாக முடுத்து நாளும்
அண்ணுந் தடகுரீஇ யந்தோ வினையேயென் றயர்வார்க் கண்டும்
நண்ணன்மின் செல்வம் நமரங்காள் நல்லறமே நினைமின்கண்டீர்.

(,, 2625)

---

**343.** 1 செல்வம்யா; 2 மென்றுதம்; 8 எல்லிற். **344.** 8 யார்சள்போல்; 12 தம்மையும். **345.** 4 வாண்டவர். **346.** 5 நாநவிர்; 5-6 நான விலைபற்றி; 9-10 தேனி னிழிதுளி, தேனி னழிதுளி; 11-12 நக்கியவனையது, நக்கியனையது; 13 மானுட. **347.** 6-7 ருரிமைக ளில்லள்; 9 பற்றலள்; 11 பலர்க; 12 ளாமிந்த; 14 துகிலுடை. **348.** 5மடவா; 17றயர்வார்க். **349.** 7 உண்ணுச்; 17 றயரக், றழுவார்க்.

350. நல்வினை யென்னும் நன்பொற் கற்பக மகளி ரென்னும்
பல்பழ மணிக்கொம் பீன்று பரிசில்வண் டுண்ணப் பூத்துச்
செல்வப்பொற் சிறுவ ரென்னுந் தாமங்கள் தாழ்ந்து நின்ற
தொல்கிப்போம் பாவக் காற்றி னொழிகவிப் பிறவி யென்றான்.
(சிந்தா. 2728)

351. வெள்ள மறவி விறல்வேந்தர் தீத்தாயங்
கள்வரென் றிவ்வாறிற் கைகரப்பத் தீர்ந்தகலும்
உள்ளி லுறுபொருளை யொட்டா தொழிந்தவர்
எள்ளும் பெருந்துயர்நோ யெவ்வ மிகப்பவே.
(வளையா.)

352. ஒழிந்த பிறவற னுண்டென்பா ருட்க
வழிந்து பிறரவாம் வம்பப் பொருளை
இழந்து சிறிதானு மெய்தா தொழிந்தார்
அழிந்து பெருந்துயர்நோய்க் கல்லாப் பிலரே.
( ,, )

353. இன்மை யிளிவாம் உடைமை யுயிர்க்கச்சம்
மன்னல் சிறிதாய் மயக்கம் பெரிதாகிப்
புன்மை யுறுக்கும் புரையி லரும்பொருளைத்
துன்னா தொழிந்தார் துறவோ விழுமிதே.
( ,, )

354. ஈண்ட லரிதாய்க் கெடுத லெளிதாகி
நாண்டல் சிறிதாய் நடுக்கம் பலதரூஉம்
மாண்பி லியற்கை மருவி லரும்பொருளை
வேண்டா தொழிந்தார் விறலோ விழுமிதே.
( ,, )

355. இல்லெனின் வாழ்க்கையு மில்லையுண் டாய்விடிற்
கொல்வர் கயவர் கொளப்பட்டும் வீடுவர்
இல்லையுண் டாய்விடி னிம்மை மறுமைக்கும்
புல்லென்று காட்டும் புணர்வது மன்றே.
( ,, )

356. பெற்றவை பெற்றுழி யருந்திப் பின்னரும்
மற்றுமோ ரிடவயின் வயிறு தானிறைத்
திற்றைநாள் கழித்தன மென்று கண்படும்
ஒற்றைமா மதிக்குடை யரசு முண்டரோ.
(நாரத.)

357. அரையது துகிலே மார்பின தாரம்
முடியது முருகுநாறுந் தொடையல் புடையன
பால்வெண் கவரியின் கற்றை மேலது
மாலை தாழ்ந்த மணிக்காற் றனிக்குடை
முன்னது முரசுமுழங்கு தானை யிங்கிலை

350. 7 பல்பல; 13 செல்வப்போர்ச்; 17-19 தாழ நாற்றி யொல்கிப்போம். 351. 6 றிவ்வாற்றிற்; 7 கைகலந்; 8 தீர்ந்த; 12 தொழிந்தவரர். 352. 6-7 பிறவா மலயப், பிறவா மேலப்; 9 இகழ்ந்து; 16 பவரே. 353. 2 யிழிவாம்; 10 யறுக்கும். 355. 14 காட்டேழ்; 356. 10 கழிந்தன, போக்கின.

இனைய செல்வத் தீங்கிவர் யாரே
தேவ ரல்ல ரிமைப்பதுஞ் செய்தனர்
மாந்த ரேயென மயக்கம் நீங்கக்
களிற்றுமிசை வந்தனர் நெருந லின்றிவர்
பசிப்பிணி காய்தலி னுணங்கித் துணியுடுத்து
மாசுமீப் போர்த்த யாக்கையொடு
தாமே யொருசிறை யிருந்தனர் மன்னே.

(ஆசிரிய.)

## அதி. 38. இளமை நிலையாமை

358. நரைவரு மென்றெண்ணி நல்லறி வாளர்
குழவி யிடத்தே துறந்தார்—புரைதீர்ந்த
மன்னா விளமை மகிழ்ந்தாரே கோலூன்றி
இன்னாங் கெழுந்திருப் பார்.

(நாலடி, 11)

359. வெறியயர் வெங்களத்து வேல்மகன் பாணி
முறியார் நறுங்கண்ணி முன்னர்த் தயங்க
மறிகுள குண்டன்ன மன்னா மகிழ்ச்சி
அறிவுடை யாளர்க ணில்.

( ,, 16)

360. தாழாத் தளராத் தலைநடுங்காத் தண்டூன்றா
வீழா விறக்கு மிவள்மாட்டுங்—காழிலா
மம்மர்கொள் மாந்தர்க் கணங்காகுந் தன்கைக்கோல்
அம்மனைக்கோ லாகிய ஞான்று.

( ,, 14)

361. கடிமாலை சூடிக் கருப்பூர முக்கித்
தொடைமாலை மென்முலையார் தோள்தோய்ந்த மைந்தர்
கடைமாலை மற்றவரே கண்புதைப்பச் செல்லும்
நடைமாலைத் திவ்வுலகம் நன்றரோ நெஞ்சே.

(சிந்தா. 1574)

362. முருந்தனைய தூமுறுவல் முற்றிழையார் சேரி
இருந்திளமைக் கள்ளுண் டிடைதெரித லின்றிக்
கருந்தலைகள் வெண்டலைக ளாய்க்கழியு முன்னே
அருந்தவமுந் தானமும் ஆற்றுமின்கள் கண்டீர்.

(,, 2619)

363. மைதிரண்டவார்குழல்மேல்வண்டார்ப்பமல்லிகைநன்மாலைசூடிக்
கைதிரண்ட வேலேந்திக் காமன்போற் காரிகையார் மருளச் சென்றார்
ஐதிரண்டு கண்டங் குரைப்பவோர் தண்டூன்றி யறிவிற் றள்ளி
நெய்திரண்டாற்போலுமிழ்ந்து நிற்குமிளமையோநிலையாதேகாண்.

( ,, 2626)

---

**357.** 5, 4 யின்னிலை; 6, 3-4 தீங்குவர் யாரோ; 7, 3 ரிமைப்பதுவுஞ்; 12, 2 யொருதனி. **358.** 8 புரைதீரா, புரைதீர. **360.** 3 தலைநடுக்காத். **361.** 6 வெம்முலையார்; 6 - 7 மென்முலையார்தொடர்ந்த; 11 கண்புகைப் பச். **362.** 11 ளாய்க்கழியா; 15 ஆற்றுமின். **363.** 4 மல்லிகைநாண்; 12 செல்வார்; 17 - 18 யறிவார்த்தள்ளி, யறிவாற்றள்ளி.

364. இன்புகை யார்ந்த விழுதார்மென் பள்ளிமேல்
அன்புருகு நல்லா ரவர்தோள்மேற் றுஞ்சினார்
தம்புலன்கள் குன்றித் தளரத்தங் காதலர்
அன்புருகு கண்புதைத் தாங்ககல்வர் நெஞ்சே.

(சிந்தா. 1576)

365. நீனிறங் கொண்ட வைம்பால் நிழல்மணி யுருவம் நீங்கிப்
பானிறங் கொண்டு வெய்ய படாமுலை பையிற் றூங்கி
வேனிற மழைக்கண் தாமு மிமைகுறைந் தழுகி மேனி
தானிறங் கரக்குங் காலந் தையலீர் மெய்ய தன்றே.

( ,, 2940)

366. ஊன்சே ருடம்பென்னு மோங்கல் மரச்சோலை
தான்சேர் பிணியென்னுஞ் செந்தீக் கொடிதங்கிக்
கான்சேர் கவினென்னுங் காமர் மலர்வாடத்
தேன்சேர் வரைமார்ப தீத்திட் டிறக்குமே.

( ,, 2797)

367. வேற்கண் மடவார் விழைவொழிய யாம்விழையக்
கோற்கண் நெறிகாட்டக் கொல்கூற் றுழையதா
நாற்ப திகந்தாம் நரைத்தூதும் வந்ததினி
நீத்தல் துணிவாம் நிலையா திளமையே.

(வளையா.)

368. இனிநினைந் திரக்க மாகின்று திணிமணற்
செய்வுறு பாவைக்குக் கொய்பூத் தைஇத்
தண்கய மாடு மகளிரொடு கைபிணைத்துத்
தழுவுவழித் தழீஇத் தூங்குவழித் தூங்கி
மறையென வறியா மாயமி லாயமொ
டுயர்சினை மருதத் துறையுறத் தாழ்ந்து
நீர்நணிப் படிகோ டேறிச் சீர்மிகக்
கரையவர் மருளத் திரையகம் பிதிர
நெடுநீர்க் குட்டத்துத் துடுமெனப் பாய்ந்து
குளித்துமணற் கொண்ட கல்லா விளமை
அளிதோ தானே யாண்டுண்டு கொல்லோ
தொடித்தலை விழுத்தண் டூன்றி நடுக்குற்
றிருமிடை மிடைந்த சில்சொற்
பெருமூ தாளரே மாகிய வெமக்கே.

(புறம், 243)

369. யாணர் வரவின் மேனா ளீங்கிவன்
இளமைச் செவ்வி நயந்த பேதையர்
காத லுண்கண் வருபனி நீங்கி
இன்னுந் துயில்கொண் டிலவே யின்றிவன்

---

**364.** 11 தளராத்தங்; 12 காதலார். **365.** 8 கொண்ட; 12 றூங்க; 17 தழுங்கி; 22 தையலார். **366.** 8 கொடித்தங்கிக்; 11 காம, கமல; 14 வரைமார்பந்; 15 தீந்திட். **367.** 4 யாழ்விழைக; 10 திகந்தார்; 10-11 திகந்தா னரைத்தூது; 14 துறவாம். **368.** 3, 3 மகாரொடு; 3, 4 கைபிணைந்து; 6, 4 தாழ்ந்த; 7, 2 படுகோ; 13, 1 றிருமலிடை.

போர்வை பசையற வுணங்கிப் பாணர்
பழந்தலைச் சீறியாழ் போலக் குரலழிந்து
நரம்புமடித் தியாத்த யாக்கை மூப்புறப்
பதிகெழு மூதூர் மன்றத்துப்
பொதியிற் புறஞ்சிறைச் சார்ந்தனன் மன்னே.

(ஆசிரிய.)

## அதி. 39. யாக்கை நிலையாமை

370. மலைமிசைத் தோன்று மதியம்போல் யானைத்
தலைமிசைக் கொண்ட குடையர்—நிலமிசைத்
துஞ்சினா ரென்றெடுத்துத் தூற்றப்பட் டாரல்லால்
எஞ்சினா ரிவ்வுலகத் தில்.

(நாலடி, 21)

371. மன்றங் கறங்க மணப்பறை யாயின
அன்றவற் காங்கே பிணப்பறையாய்—பின்றை
ஒலித்தலு முண்டாமென் றுய்ந்துபோ மாறே
வலிக்குமா மாண்டார் மனம்.

(,, 23)

372. புன்னுனிமேல் நீர்போல் நிலையாமை யென்றெண்ணி
இன்னினியே செய்க அறவினை—இன்னினியே
நின்றா னிருந்தான் கிடந்தான்றன் கேளலறச்
சென்றா னெனப்படுத லான்.

(,, 29)

373. கேளாதே வந்து கிளைகளா யிற்றோன்றி
வாளாதே போவரால் மாந்தர்கள்—வாளாதே
சேக்கை மரனொழியச் சேணீங்கு புட்போல
யாக்கை தமர்க்கொழிய நீத்து.

(,, 30)

374. ஆயா தறிவயர்ந் தல்லாந் தகலிடத்து
மாயா நிதிய மனைச்செறீஇ—வீயா
திறுகப் பொதியன்மி னின்றொடு நாளைக்
குறுகப் படுமரோ கூற்று.

(வெண்பா. 270)

375. சென்றநா ளெல்லாஞ் சிறுவிரல்வைத் தெண்ணலாம்
நின்றநாள் யார்க்கு முணர்வரிது—நின்றொருவன்
நன்மை புரியாது நாளுலப்ப விட்டிருக்கும்
புன்மை பெரிது புறம்.

(அறநெறி. 69)

376. தேங்கொள் பூங்கண்ணித் திருமுடித் திலகவெண் குடையோய்
ஈங்கி தன்றியு மிமையவ ரமையலர்க் கடந்த

---

**369.** 6, 1 பறந்தலைச்; **7**, 1 நரம்புமுடித்; 8, 2 மூதா. **371.** 5 அன்றவர்க்; 9 ஒலித்தது. **373.** 14 தமரொழிய. **374.** 2-3 தறிவறிந்தல்லா(ல); 3-4 தல்லாலகலிடத்து; 5 மாய; 7 (ம்) வரச்செறீஇ. **375.** 8 என்றொருவன்; 11 நாளுலக்க; 13-15 புன்மையே சாலப் பெரிது. **376.** 4 திலதவெண்; 9 ரமையவர்க்; 12 மாய்வன்கைச், மாயன்கைச்.

தாங்கு மாவண்கைச் சக்கர மிக்குயர் பிறரும்
யாங்க ணூரவ ரூரொடு பேரெமக் குரையாய்.
(சிந்தா. 2761)

377. இன்ன தன்மையி னருமையி னெய்திய பொழுதே
பொன்னும் வெள்ளியும் புணர்ந்தென வயிற்றகம் பொருந்தி
மின்னு மொக்குளு மெனநனி வீயினும் வீயும்
பின்னை வெண்ணெயிற் றிரண்டபின் பிழைக்கவும் பெறுமே.
( ,, 2754)

378. வெண்ணெ யாயது வீங்குபு கூன்புற யாமை
வண்ண மெய்தலும் வழுக்கவும் பெறுமது வழுக்கா
தொண்மை வாண்மதி யுருவொடு திருவெனத் தோன்றிக்
கண்ண ணூரழக் கவிழினுங் கவிழுமற் றறிநீ.
( ,, 2755)

379. அழித லின்றியங் கருநிதி யிரவலர்க் கார்த்தி
முழுதும் பேர்பெறு மெல்லையுள் முரியினு முரியும்
வழுவில் பொய்கையுள் மலரென வளர்ந்துமை யாடிக்
கெழீஇயி னூரொடுங் கிளையழக் கெடுதலுங் கெடுமே.
( ,, 2756)

380. கெடுத லவ்வழி யில்லெனிற் கேள்விகள் துறைபோய்
வடிகொள் கண்ணியர் மனங்குழைந் தனங்கனென் றிரங்கக்
கொடையுங் கோலமுங் குழகுந்தம் மழகுங்கண் டேத்த
விடையிற் செல்வுழி விளியினும் விளியுமற் றறிநீ.
( ,, 2757)

381. எரிபொன் மேகலை யிலங்கரிச் சிலம்பொடு சிலம்பும்
அரிபொற் கிண்கிணி யணியிழை மடந்தையர்ப் புணர்ந்து
தெரிவில் போகத்துக் கூற்றுவன் செகுத்திடச் சிதைந்து
முரியும் பல்சன முகம்புடைத் தகங்குழைந் தழவே.
( ,, 2758)

382. கோதை மங்கையர் குவிமுலைத் தடத்திடைக் குளித்துக்
காதல் மக்களைக் கண்டுவந் தினிதினிற் கழிப்பப்
பேது செய்பிணிப் பெரும்புலி பாய்ந்திடப் பிணமாம்
ஓத மாக்கட லுடைகலத் தவருற்ற துறவே.
( ,, 2759)

383. காமம் பைபயக் கழியத்தங் கடைப்பிடி சுருங்கி
ஊமர் போலத்தம் முரையவிந் துறப்பினி லுரையாத்
தூய்மை யில்குளந் தூம்புவிட் டாம்பொரு ளுணர்த்தி
ஈம மேறுத லொருதலை யிகலமர் கடந்தோய்.
( ,, 2760)

**377.** 8 புணர்ந்தன; 14 வீயலும்; 18 திரண்டன. இதன்பின் 'எரி புரை' (400) என்ற செய்யுள் ஒரு பிரதியில் உள்ளது. **378.** 9 பெறுவது; 12 வான்மதி; 17-20 ணூரொடுகிளையழக் கவிழினுங் கவிழும். **379.** 1 அழுத; 3 கருநெதி; 5 காற்றி; 6 முழுது; 6-7முழுவ தும்பெறு; 14 மலர்ந்துமை; 18 கிளையெழக். **380.** 13-14 குழகுந்தன் னழகுங்கொண்; 15 டெடுத்த; 19 வலியமற். **381.** 9 மடந்தையிற். **382.** 10 களிப்பப். **383.** 3 கழிதலுங்; 9-10 துறப்பினு மமையாத்; 10 வுறையாத்; 12 யில்குளத்.

384. பேதைமை யென்னும் வித்திற் பிறந்துபின் வினைக ளென்னும்
வேதனை மரங்கள் நாறி வேட்கைவேர் வீழ்த்து முற்றிக்
காதலுங் களிப்பு மென்னுங் கவடுவிட் டவலம் பூத்து
மாதுய ரிடும்பை காய்த்து மரணமே கனியு மன்றே.
(சிந்தா. 1389)

385. பிறந்துநாம் பெற்ற வாழ்நா ளித்துணை யென்ப தொன்றும்
அறிந்திலம் வாழ்து மென்னு மவாவினு ளழுந்து கின்றாம்
கறந்துகூற் றுண்ணு ஞான்று கண்புடைத் திரங்கி னல்லால்
இறந்தநாள் யாவர் மீட்பா ரிற்றெனப் பெயர்க்க லாமோ.
( ,, 2616)

386. உடற்றும் பிணித்தீ யுடம்பினுயிர் பெய்திட்
டடுத்துணர்வு நெய்யாக வாற்றறுவை யாகக்
குடித்துண்ணுங் கூற்றங் குடில்பிரியா முன்னே
கொடுத்துண்மின் கண்டீர் குணம்புரிமின் கண்டீர்.
( ,, 2620)

387. உழந்தாலும் புத்தச்சொன் றிட்டோர்தல் தேற்றா
திழந்தார் பலரா லிடும்பைநீர் யாற்றுள்
அழுந்துமா லப்பண்டி யச்சிறா முன்னே
கொளுஞ்சீலங் கூலியாக் கொண்டூர்மின் பாகீர்.
( ,, 2621)

388. போதர வுயிர்த்த வாவி புகவுயிர்க் கின்ற தேனும்
ஊதிய மென்று கொள்வ ருணர்வினான் மிக்க நீரார்
ஆதலா னழிதன் மாலைப் பொருள்களுக் கழிதல் வேண்டா
காதலா லழுது மென்பார் கண்ணனி களைய லுற்றார்.
(குண்டல.)

389. அரவின மரக்க ராளி யவைகளுஞ் சிறிது தம்மை
மருவினாற் றீய வாகா வரம்பில்கா லத்து ளென்றும்
பிரிவில மாகித் தன்சொற் பேணியே யொழுகு நங்கட்
கொருபொழு திரங்க மாட்டாக் கூற்றின்யா ருய்து மென்பார்.
( ,, )

390. பாளையாந் தன்மை செத்தும் பாலனாந் தன்மை செத்துங்
காளையாந் தன்மை செத்துங் காமுறு மிளமை செத்தும்
மீளுமிவ் வியல்பு மின்னே மேல்வரு மூப்பு மாகி
நாளுநாட் சாகின் றாமால் நமக்குநா மழாத தென்னோ. ( ,, )

391. கோள்வலைப் பட்டுச் சாவாங் கொலைக்களங் குறித்துச் சென்றே
மீளினு மீளக் காண்டு மீட்சியொன் றானு மில்லா

---

**384.** 3 வத்திற்; 11 வீழ்த்தி, விழுத்தி. **385.** 10 (ம்) வாழ்வினு, (ம்) வாயினு; 16 கண்புரைத்; 19 இறந்துநாள்; 21-23 பொய்ப்பா ரிற்றென விசைக்க. **386.** 1-2 உடற்றுப்பிணித்த(வு); 3-5 யுடம்பி னுயிர்பெய் தடுத் துணர்வு; 7-8 வாற்ற றுவையாக். **387.** 2 புத்தச்சென்; 5 திகழ்ந்தார்; 7 யிடும்பைநீர்; 13 கொழுஞ்சீலங். **388.** 4-5 புக்கதேற் புக்க; 17 கழுதல்; 19-20 காதல ரழுது; 22 கண்பனி. **389.** 13 பிரிவின; 15 தஞ்சொற்; 18 நுங்கட்; 22 கூற்றையா. **390.** 8 (ம்) பருவம்; 11 (ந்)தன்மை; 14 வயது; 21 றேமால். **391.** 2 பட்டுஞ்; 4 கோறலைக்; 6 சற்றே; 9 கண்டு; 15 தோறு; 21 பார்க்குச்.

நாளடி யிடுதல் தோன்றா நம்முயிர்ப் பருகுங் கூற்றின்
வாளின்வாய்த் தலைவைப் பாக்குச் செல்கின்றாம் வாழ்கின்றாமே.
(குண்டல.)

392. உள்ளது கரக்குமிக் கள்ள யாக்கை
மேம்படு குற்ற மூன்றொடு வழங்கலின்
உண்டிநல் லரசு தண்டத்தின் வருத்த
நோன்பிணி யகப்பட் டிருப்பினுந்
தோன்றுவது பின்னர்க் காப்பது முன்னே. (ஆசிரிய.)

## அதி. 40. பல்வகை நிலையாமை

393. சாவாத வில்லைப் பிறந்த வுயிரெல்லாந்
தாவாத வில்லை வலிகளும்—மூவா
இளமை யியைந்தாரு மில்லை வளமையிற்
கேடின்றிச் சென்றாரு மில்.
(நான்மணி. 77)

394. பலதிரண்ட செல்வத்தைப் பார்க்கிற் கனாவாம்
மலர்திரண்டாற் போலிளமை வாடுஞ்—சிலநிகழ்ந்த
மின்னொக்கும் வாழ்நா ளிவையிற்றை மெய்யென்றிட்
டுன்னிக் களிப்பா ருளர்.
(பாரதம்)

395. இன்றுளா ரின்றேயு மாய்வ ருடையதூஉம்
அன்றே பிறருடைய தாயிருக்கும்—நின்ற
கருமத்த தல்லாத கூற்றின்கீழ் வாழ்வார்
தருமந் தலைநிற்றல் நன்று.
(அறநெறி. 111)

396. இளமையும் நிலையாவா லின்பமும் நின்றவல்ல
வளமையு மஃதேயால் வைகலுந் துன்பவெள்ளம்
உளவென நினையாதே செல்கதிக் கென்றுமென்றும்
விளைநில முழுவார்போல் வித்துநீர் செய்துகொண்மின்.
(வளையா.)

397. இளமையு மெழிலும் வானத் திடுவிலி னீண்ட மாயும்
வளமையுங் கிளையும் வாரிப் புதியதன் வரவு போலும்
வெளியிடை விளக்கின் வீயு மாயுவு மென்று வீட்டுக்
குளபகல் ஊக்கஞ் செய்வ ருணர்வினாற் பெரிய நீரார்.
(மேருமந்தர. 109)

398. பண்ணார் களிறேபோற் பாயோங் குயர்நாவாய்
கண்ணார் கடல்மண்டிக் காற்றிற் கவிழுங்கால்

---

**392.** 2,1 மெய்படு; 3,3 கண்டிதின். **393.** 9 திளமை. **394.** 8 சலநிகழ்ந்த; 13 டுன்னக். **395.** 4 ரவருடைமை; 5 இன்றே; 6-7 பிறருடைமை யாயிருக்கும்; 8 நின்று; 10 ரல்லாத, வல்லரசு; 12 வாராத், வாழாத்; 15 சால்பு. **396.** 9 உளமென. **397.** 5-6 னீண்டிமாயும்; 6 மாயம்; 8 கிளைமை; 13 வெளியடை; 19 குளபல. **398.** 8 கவிழுங்காண்; 13-15 நண்ணார் நரகத்து நான்கா; 16 மடியின்றே.

மண்ணார் மணிப்பூணோய் மக்க ளுறுந்துன்பம்
நண்ணா நரகத்தி னான்கா மடியன்றே.

(சிந்தா. 2793)

399. கொலையானை மேலொர் குளிர்வெண் குடைக்கீழ்ப்
பலயானை மன்னர் பலர்போற்ற வந்தான்
மலையாகம் போழாக மற்றிவனோ சாய்ந்தான்
நிலையாமை சால நிலைபெற்ற தன்றே.

(சூளா. அரசிய. 334)

400. எரிபுரை யெழில தாய விளந்தளி ரிரண்டு நாளின்
மரகத வுருவ மெய்தி மற்றது பசலை கொண்டு
கருகிலை யாகி வீழ்ந்து கரிந்துமண் ணாதல் கண்டும்
வெருவிலர் வாழ்து மென்பார் வெளிற்றினை விலக்க லாமே.

(,, துறவு. 7)

401. மயங்கிருங் கருவிய விசும்புமுக னாக
இயங்கிய விருசுடர் கண்ணெனப் பெயரிய
வளியிடை வழங்கா வழக்கரு நீத்தம்
வயிரக் குறட்டின் வயங்குமணி யாரத்துப்
பொன்னந் திகிரி முன்சமத் துருட்டிப்
பொருநர்க் காணாச் செருமிகு முன்பின்
முன்னோர் செல்லவுஞ் செல்லா தின்னும்
விலைநலப் பெண்டிரிற் பலர்மீக் கூற
உள்ளேன் வாழி யானெனப் பன்மாண்
நிலமக ளழுத காஞ்சியும்
உண்டென வுரைப்ப ருணர்ந்திசி னோரே.

(புறம், 365)

402. நெருந லென்பது சென்றது நின்ற
இன்றுஞ் செல்லா நின்றது முன்சென்று
வருநாள் கண்டார் யாரே யதனால்
ஒருநாள் கைப்படுத் துடையோ ரின்மையின்
நல்லது நாடுமி னுள்ளது கொடுமின்
வழாஅ வின்பமும் புணர்மி னதாஅன்று
கீழது நீரகம் புகினு மேலது
விசும்பின் பிடர்த்தலை யேறினும் புடையது
நேமி மால்வரைக் கப்புறம் புகினுங்
கோள்வாய்த்துக் கொட்குங் கூற்றத்து
மீளிக் கொடுநா விலக்குதற் கரிதே.

(ஆசிரிய.)

---

**399.** 2 மேலோர்; 8 வந்தார், 11 மற்றவனோ, மற்றிவர்கள்; 12 சாய்ந்தார். **400.** இது ‘இன்ன தன்மையின்’ (377) என்றதன் பின்; 6 நாளுள்; 14 யாக; 16 கரந்துமண்; 19 வெருவலர்; 20-21 செய்யா மாந்தர்; 24 லாமோ. **401.** 2, 4 பெரிய; 3, 3 வழக்கறு; 6, 2 காணச்; 8, 1 விளைநற், விலைநற்; 9,1 உளனே; 10, 2-3 ளெழூத தாஞ்சியும். **402.** 2,2 செல்லாது; 2,3 நின்ற; 4, 2 அகப்படுத்; 5, 1 இல்லது; 6, 1-4 வாழ்வி லின்பமும் புணர்மி னஃ தான்று; 8, 1 விசும்பினம்; 11,1 வீளிக்.

## அதி. 41. தூய்தன்மை

403. மாக்கேழ் மடநல்லா யென்றரற்றுஞ் சான்றவர்
நோக்கார்கொல் நொய்யதோர் புக்கிலை—யாக்கைக்கோர்
ஈச்சிற கன்னதோர் தோலறினும் வேண்டுமே
காக்கை கடிவதோர் கோல்.
(நாலடி, 41)

404. முல்லை முகைமுறுவல் முத்தென் றிவைபிதற்றுங்
கல்லாப்புன் மாக்கள் கவற்ற விடுவெனோ
எல்லாருங் காணப் புறங்காட் டுதிர்ந்துக்க
பல்லென்பு கண்டொழுகு வேன்.
( ,, 45)

405. குடருங் கொழுவுங் குருதியு மென்புந்
தொடரு நரம்பொடு தோலும்—இடையிடையே
வைத்த தடியும் வழும்புமா மற்றிவற்றுள்
எத்திறத்தா ளீர்ங்கோதை யாள்.
( ,, 46)

406. என்பினை நரம்பிற் பின்னி யுதிரந்தோய்த் திறைச்சி மெத்திப்
புன்புறந் தோலைப் போர்த்து மயிர்புறம் பொலிய வேய்ந்திட்
டொன்பது வாயி லாக்கி யூன்பயில் குரம்பை செய்தான்
மன்பெருந் தச்ச னல்லன் மயங்கினார் மருள வென்றான்.
(சிந்தா. 1577)

407. மந்திர மருந்திவை யில்லை யாய்விடின்
ஐந்தலை யரவினை யாவர் தீண்டுவார்
சுந்தரச் சுரும்புசூழ் மாலை யில்லையேல்
மைந்தரு மகளிர்த மருங்கு சார்கிலார்.
( ,, 2936)

408. உருவமென் றுரைத்தி யாயி னிறைந்ததோற் றுருத்தி தன்னைப்
புருவமுங் கண்ணு மூக்கும் புலப்பட வெழுதி வைத்தாற்
கருதுவ தங்கொன் றுண்டோ காப்பியக் கவிகள் காம
எரியெழ விகற்பித் திட்டா ரிறைச்சிப்போ ரிதனை யென்றான்.
( ,, 1585)

409. மெய்ப்படு சாந்தும் பூவு மிகநனி கமழு மேனுங்
கைப்படு சாந்தும் பூவுங் கொண்டலாற் கலக்க லாகா
தைப்படு பித்து நெய்த்தோ ரசும்புசோ ரழுகற் புன்றோல்
பொய்ப்பட வுரைத்த துண்டோ பொன்னனீர் நம்மு ணாமால்.
( ,, 2938)

410. நன்கன நாறுமி தென்றிவ் வுடம்பு நயக்கின்ற தாயின்
ஒன்பது வாயில்க டோறு முண்ணின் றழுக்குச் சொரியத்
தின்பதொர் நாயு மிழுப்பத் திசைதொறுஞ் சீப்பில்கு போழ்தின்
இன்பநன் னாற்ற மிதன்க ணெவ்வகை யாற்கொள்ள லாமே.
(குண்டல.)

**403.** 9-10 ஈஇச் சிறகன்ன. **405.** 2 கொளுவுங். **406.** 4 யுதிரந் தோய்ந்; 6 மொய்த்துப்; 20-21 தச்சன் வல்லன். **407.** 14 மகளிரை; 15 மருங்குல்; 16 சாய்கலார். **408.** 4 னுறைந்ததோற்; 22 ரிறைச்சிப்பே. **409.** 6 மேலும்; **410.** 1 நன்கென; 17 சீழ்ப்பில்கு.

411. மாறுகொள் மந்தர மென்று மரகத வீங்கெழு வென்றுந்
தேறிடத் தோள்க டிறத்தே திறத்துளிக் காமுற்ற தாயிற்
பாறொடு நாய்க ளிசிப்பப் பறிப்பறிப் பற்றிய போழ்தின்
ஏறிய வித்தசை தன்மாட் டின்புற லாவதிங் கென்னே.

(குண்டல.)

412. உறுப்புக்கள் தாமுடன் கூடி யொன்றா யிருந்த பெரும்பை
மறைப்பில் விழைவிற்குச் சார்வாய் மயக்குவ தேலிவ் வுறுப்புக்
குறைத்தன போல வழுகிக் குறைந்து குறைந்து சொரிய
வெறுப்பிற் கிடந்த பொழுதின் வேண்டப் படுவது முண்டோ.

( ,, )

413. எனதெனச் சிந்தித்த லான்மற் றிவ்வுடம் பின்பத்துக் காமேல்
தினைப்பெய்த புன்கத்தைப் போலச் சிறியவு மூத்தவு மாகி
நுணைய புழுக்குலந் தம்மா னுகரவும் வாழவும் பட்ட
இனைய வுடம்பினைப் பாவி யானென தென்னலு மாமோ.

( ,, )

414. புழுமலக் குடருள் மூழ்கிப் புலால்கமழ் வாயிற் றேய்த்து
விழுமவை குழவி யென்றும் விளங்கிய காளை யென்றும்
பழுநிய பிறவு மாகிப் பல்பெயர் தரித்த பொல்லாக்
குழுவினை யின்ப மாகக் கொள்வரோ குருடு தீர்ந்தார்.

(நாரத.)

## அதி. 42. துறவு

415. செல்வத் துணைமையுந்தம் வாழ்நாட் டுணைமையுந்தாம்
தெள்ளி யுணரார் சிறிதிறைற் செம்மாந்து
பள்ளிப்பால் வாழார் பதிமகிழ்ந்து வாழ்வாரே
முள்ளித்தே னுண்ணு மவர்.

(பழமொழி, 274)

416. வன்னெஞ்சி ணர்பின் வழிநினைந்து செல்குவையால்
என்னெஞ்சே யின்றழிவா யாயினுய்—சென்னெஞ்சே
இல்சுட்டி நீயு மினிதுரைத்துச் சாவாதே
பல்கட்டப் பெண்டீர் மகார்.

( ,, 374)

417. சிறந்ததஞ் சுற்றமுஞ் செய்பொருளும் நீக்கித்
துறந்தார் தொடர்ப்பாடு கோடல்—கறங்கருவி
ஏனல்வாய் வீழு மலைநாட அஃதன்றே
யானைபோய் வால்போகா வாறு.

( ,, 342)

---

**411.** 7-11 தேறித் தோள்க டிததெதிர்த் துளிக காமுறத்; 14-15 நாய்கள் சிறப்பப்; 16 பறிபறிப்; 17 போகின்ற; **412.** 5 யியைத்த; 7 மறப்பில்; 10 மக்குவ. **413.** 5 பின்பற்றுக்; 13-16 வனையப் புழுக்குந்த மாவி காணவும்; 14-17 புழுக்கலந் தம்மா நுகரவு [மி]கழவும்; 22 யென்னென. நீலகேசியிற் கடவுள் வாழ்த்தின் உரையில் இது தரப்பட்டுள்ளது. **414.** 6 றேர்த்து; 20 21 யினமிக்காகக். இதன்பின் 'அருந்திய குறையிற்' (425). **415.** 2 துணையுந்தம், துடைமையுந்தம்; 4 டுணைமையுந்; 9-10 பள்ளிவாழா அர்; 10 வாரார்; 11 பதிக்கிடந்து. **416.** 4 செல்குவை, செய்குவையாய்; 6 யின்றழிவை; 13 பல்கட்டம். **417.** 6-7 தொடர்ப்பா டெவன்கொல்; 12 இஃதன்றே.

418. இல்ல மிளமை யெழில்வனப்பு மீக்கூற்றஞ்
செல்வம் வலியென் றிவையெல்லா—மெல்ல
நிலையாமை கண்டு நெடியார் துறப்பர்
தலையாயார் தாமுய்யக் கொண்டு.

(நாலடி, 53)

419. கொன்னே கழிந்தன் றிளமையு மின்னே
பிணியொடு மூப்பு வருமால்—துணிவொன்றி
என்னொடு சூழா தெழுநெஞ்சே போதியோ
நன்னெறி சேர நமக்கு.

( ,, 55)

420. வாளஞ்சான் வன்கண்மை யஞ்சான் வனப்பஞ்சான்
ஆளஞ்சா னாய்பொருள் தானஞ்சான்—நாளெஞ்சாக்
காலன் வரவொழிதல் காணின்வீ டெய்தியுறற்
பாலனூ லெய்தப் படும்.

(ஏலாதி, 22)

421. இளமை நிலைதளர மூப்போ டிறைஞ்சி
உளமை யுணரா தொடுங்கி—வளமை
வியப்போவ வில்லா வியலிடத்து வெஃகா
துயப்போக லெண்ணி னூறும்.

(வெண்பா. 273)

422. மற்றுந் தொடர்ப்பா டெவன்கொல் பிறப்பறுக்க
ஊற்றார்க் குடம்பு மிகையவை யுள்வழிப்
பற்றா வினையாய்ப் பலபல யோனிகள்
அற்றா யுழலு மறுத்தற் கரிதே.

(வளையா.)

423. உற்ற வுதிர மொழிப்பான் கலிங்கத்தை
மற்றது தோய்த்துக் கழுவுத லென்னொக்கும்
பற்றினா னாகிய பாவத்தை மீட்டும்
பற்றொடு நின்று பறைக்குறு மாறே.

( ,, )

424. தானஞ் செய்திலந் தவமு மன்னதே
கானந் தோய்நில விற்கழி வெய்தினம்
நானந் தோய்குழல் நமக்குய்த லுண்டோ
மானந்தீர் கொள்கையார் மாற்றம்பொய் யல்லவால்.

( ,, )

425. அருந்திய குறையிற் றுன்ப மாங்கவை நிறையிற் றுன்பம்
பொருந்துநோய்பொறுத்தல்துன்பம்பொருந்தியபோகத்துன்பம்
மருந்தினுக் குனாற்றல் துன்ப மற்றவை யருந்தல் துன்பம்
இருந்தவா றிருத்தல் துன்பம் யார்கொலோ துன்ப மில்லார்.

(நாரத.)

---

**420.** 5 தாளஞ்சா; 8 நாளஞ்சாக்; 10 வரவெழுதல்; 12 டெய்தியுறப், போதியப். **421.** 2 நிலைதாளா; 9 வியப்போத; 12 (ம்)வைகா; 13 துயப் போத; 14-15 லெண்ணனூறும். **422.** 14 வுழலு. **423.** 9 பற்றின; 10 னாகிப்; 13-15 அற்றொடு நின்று மழைக்குறு. **424.** 8 வெய்தின்; 9-11 நானந்தோய் கூந்தலாய் நமக்கெய்த; 14 கொள்கையான்; 16 யல்லவாய், யல்லமால். **425.** 10-12 பொருந்தியே போகத் தக்க; 17 யறுத்தல்.

426. வாழ்கின்றா மக்களுநம் வழிநின்றா ரெனவுள்ளந்
தாழ்கின்றார் தாழ்கில்லார் தமநில்லா வானக்கால்
ஆழ்கின்ற குழிநோக்கி யாதார மொன்றின்றி
வீழ்கின்றார் மெய்யதா மெய்தாங்க வல்லரோ.

(நாரத.)

427. அதளெறிந் தன்ன நெடுவெண் களரின்
ஒருவ னாட்டும் புல்வாய் போல
ஓடி யுய்தலும் கூடுமன்
ஒக்கல் வாழ்க்கை தட்குமா காலே.

(புறம், 193)

## அதி. 43. மெய் யுணர்தல்

428. திரியு மிடிஞ்சிலும் நெய்யுஞ்சார் வாக
எரியுஞ் சுடரோ ரனைத்தால்—தெரியுங்காற்
சார்வற வோடிப் பிறப்பறுக்கும் அஃதேபோல்
நீரற நீர்ச்சார் வறும்.

(பழமொழி, 219)

429. இளமை கழியும் பிணிமூப் பியையும்
வளமை வனப்பிவை வாடும்—உளநாளாற்
பாடே புரியாது பால்போலுஞ் சொல்லினாய்
வீடே புரிதல் விதி.

(ஏலாதி, 21)

430. பிணிபிறப்பு மூப்பொடு சாக்காடு துன்பந்
தணிவி னிரப்பிவை தாழா—அணியின்
அரங்கின்மே லாடுநர்போ லாகாதே யென்றும்
நிரம்புமே வீட்டு நெறி.

( ,, 24)

431. பொய்யில் புலவர் புரிந்துறை மேலுலகம்
ஐயமொன் றின்றி யறிந்துரைப்பின்—வெய்ய
பகலின் றிரவின்று பற்றின்று துற்றின்
றிகலின் றிளிவரவு மின்று.

(வெண்பா. 272)

432. ஆமினி மூப்பு மகன்ற திளமையுந்
தாமினி நோயுந் தலைப்படும்—யாமினி
மெய்யைந்து மீதூர வைகாது மேல்வந்த
ஐயைந்து மாய்வ தறிவு.

( ,, 187)

433. இருளே யுலகத் தியற்கை யிருளறுக்குங்
கைவிளக்கே கற்ற வறிவுடைமை கைவிளக்கின்

**426.** 1 வாழ்கின்றார்; 6 தாம் நில்லார்; **7** தமர்நில்லா; 14 வீழ்கின்றார். **427.** 2, 2 னோட்டும்; 3, 3 உண்டுமன். **428.** 6-7 சுடரே ரனைத்தாய்த், சுடரொன் றனைத்தால்; 10 வோடிற். **429.** 2 தறியும்; 4 பிவையும்; 6 வலியிவை. **430.** **5** தணியி; 7 வாழ்தல், தாழ்தல்; 10-11 லாடுதல் போலாதே, லாடுநர்போ லாகாமல்; 10-12 லாடுநர் போலுழலா தென்றும்; 12 நன்றாம்; 13 நிரம்புமேல். **431.** 3 புரிந்துறையு; 12 துற்றுத்து(ணி). **432.** **7** தலைவரு மால்; 11 வெஃகாது; 14 மாவ; 14-15 மாய்த லறிவு.

நெய்யேதன் னெஞ்சத் தருளுடைமை நெய்பயந்த
பால்போ லொழுக்கத் தவரே பரிவிலா
மேனுலக மெய்து பவர்.

(அறநெறி. 146)

434. இல்லியலார் நல்லறமு மேனைத் துறவறமும்
நல்லியலா னாடி யுரைக்குங்கால்—நல்லியற்
றானத்தாற் போகந் தவத்தாற் சுவர்க்கமாம்
ஞானத்தால் வீடாக நாட்டு.

(சிறுபஞ்ச. 35)

435. ஆவே றுருவின வாயினு மாபயந்த
பால்வே றுருவின வல்லவாம்—பால்போல்
ஒருதன்மைத் தாகு மறநெறி யாபோல்
உருவு பலகொள லீங்கு.

(நாலடி, 118)

436. பற்றென்னும் பாசத் தளையும் பலவழியும்
பற்றறு தோடு மவாத்தேருந்—தெற்றெனப்
பொய்த்துரை யென்னும் புகையிருளு மிம்மூன்றும்
வித்தற வீழும் பிறப்பு.

(திரிகடு. 22)

437. முந்நீர்த் திரையி னெழுந்தியங்கா மேதையும்
நுண்ணூற் பெருங்கேள்வி நூற்கரை கண்டானும்
மைந்நீர்மை யின்றி மயலறுப்பா னிம்மூவர்
மெய்ந்நீர்மை மேனின் றவர்.

( „ 35)

438. புருவந்து சாலப் பலர்கொலென் றெண்ணி
ஒருவந்த முள்ளத் துவத்த லொழிமின்
வெருவந்த துன்பம் விடுக்குந் திறலோன்
ஒருவ னுலகிற் குளனென்னு மாறே.

(வளையா.)

439. பெரிய வின்பத் திந்திரனும் பெட்ட செய்கைச் சிறுகுரங்கும்
உரிய செய்கை வினைப்பயனை யுண்ணு மெனவே யுணர்ந்தவனை
அரிய னென்ன மகிழாது மெளிய னென்ன விகழாதும்
இருசார் வினையுந் தெளிந்தாரே யிறைவ னாலுந் தெளிந்தாரே.

(சிந்தா. 2815)

440. மெய்வகை தெரிதல் ஞானம் விளங்கிய பொருள்க டம்மைப்
பொய்வகை யின்றித் தேறல் காட்சியைம் பொறியும் வாட்டி
உய்வகை யுயிரைத் தேயா தொழுகுத லொழுக்க மூன்றும்
இவ்வகை நிறைந்த போழ்தே யிருவினை கழியு மன்றே.

( „ 1436)

---

**433.** 11 தறிவுடைமை; 15 தினரே; 17-18 மேனுல கெய்து. **434.** 5 நல்லியலி, நல்லிய; 8 நல்லியலான்; 10 போதத். **436.** 6 தென்னு; 9 பொத்துரை; 9-10 பொய்யுரைத் தென்னும்; 11 பகையிருளு; 14 வீடும். **437.** 10 யன்றி. **438.** 6 வுள்ளத்; 7 துழல, தொழ; 8 லொழியின். **439.** 12 யுணர்ந்தவினை; 23 னுலகுர். **440.** 2 தெரிக்கு, தெரிந்த.

441. வேட்டன பெறாமை துன்பம் வீழ்நரைப் பிரிதல் துன்பம்
மோட்டெழி லிளமை நீங்க மூப்புவந் தடைதல் துன்பம்
ஏட்டெழுத் தறித லின்றி யெள்ளற்பா டுள்ளிட் டெல்லாம்
சூட்டணிந் திலங்கும் வேலோய் துன்பமே மாந்தர்க் கென்றான்.
(சிந்தா. 2799)

442. விண்ணி லின்பமும் வீதல் கேட்டுமால்
மண்ணி லின்பமும் மாய்தல் காண்டுமால்
எண்ணி லின்பமா மீறி லாததே
நண்ணி நாமினி நயக்கற் பாலதே.

(சாந்தி.)

443. ஓரில் நெய்தல் கறங்க வோரில்
ஈர்ந்தண் முழவின் பாணி ததும்பப்
புணர்ந்தோர் பூவணி யணியப் பிரிந்தோர்
பைத லுண்கண் பனிவார் புறைப்பப்
படைத்தோன் மன்றவப் பண்பி லாளன்
இன்னா தம்மவிவ் வுலகம்
இனிய காண்கித னியல்புணர்ந் தோரே.

(புறம், 194)

444. யாது மூரே யாவருங் கேளிர்
தீதும் நன்றும் பிறர்தர வாரா
நோதலுந் தணிதலு மவற்றோ ரன்ன
சாதலும் புதுவதோ வன்றே வாழ்தல்
இனிதென மகிழ்ந்தன்று மிலமே முனிவின்
இன்னா தென்றலு மிலமே மின்னொடு
வானந் தண்டுளி தலைஇ யானாது
கல்பொரு திரங்கு மல்லற் பேர்யாற்று
நீர்வழிப் படூஉம் புணைபோ லாருயிர்
முறைவழிப் படூஉ மென்பதைத் திறவோர்
காட்சியிற் றெளிந்தன மாயின மாட்சியிற்
பெரியோரை வியத்தலு மிலமே
சிறியோரை யிகழ்த லதனினு மிலமே.

( ,, 192)

## அதி. 44. அவா வறுத்தல்

445. அவாவறுக்க லுற்றான் தளரானவ் வைந்தின்
அவாவறுப்பி னுற்ற வமையும்—அவாவறு
னுகு மவனுயி னைங்களிற்றி னாட்டுண்டு
போகும் புழையுட் புலந்து.

(ஏலாதி, 11)

446. எண்ணக் குறைபடாச் செல்வமும் இற்பிறப்பும்
மன்ன ருடைய வுடைமையும்—மன்னரால்

---

**441**. 4 விழையுநர்ப், வீழ்ந்துரை; 9 நீங்கி; 24 கெல்லாம். **443**. 2, 2 முழவீன்ற; 2, 4 துளும்பப். **444**. 2, 1-2 தீது நன்று; 12, 2 மதித்தலு; 13, 2 யிகத்த. **445**. 3 தளராத, தளராதே; 12 னுற்றுண்டு, னோட்டுண்டு; 14 புழை யுட்; 15 புகுந்து. **446**. 4 இப்பிறப்பும்; 5 அன்னு; 10 ரெனல் வேண்டா.

இன்ன ரெனவேண்டா இம்மைக்கும் உம்மைக்குந்
தம்மை யுடைமை தலை.

(பழமொழி, 273)

447. மெய்வாய்கண் மூக்குச் செவியெனப் பேர்பெற்ற
ஐவாய வேட்கை யவாவினைக்—கைவாய்க்
கலங்காமற் காத்துய்க்கு மாற்ற லுடையான்
விலங்காது வீடு பெறும்.

(நாலடி, 59)

448. கனிந்தநெய்க் கவளங் கையில் வைத்துடன் கழறு வாரை
முனிந்திடு களிறு போல்வார் முத்தியை விளக்கு நீரார்
மனங்கொளத் துறந்தி டாதே வால்குழைத் தெச்சிற் கோடுஞ்
சுணங்கனைப் போலு நீரார் பற்றிடைச் சுழலு நீரார்.

(சாந்தி.)

## அதி. 45. பழவினை

449. பண்டுருத்துச் செய்த பழவினை வந்தெம்மை
இன்றுறுக் கின்ற தெனநினையார்—துன்புறக்கும்
மேவலரை நோவதென் மின்னேர் மருங்குலாய்
ஏவலா ளூருஞ் சுடும்.

(பழமொழி, 191)

450. உரைசான்ற சான்றோ ரொடுங்கி யுறைய
நிரையுள்ள ரல்லார் நிமிர்ந்து பெருகல்
வரைதா ழிலங்கருவி வெற்ப அதுவே
சுரையாழ அம்மி மிதப்பு.

( ,, 125)

451. அங்கண் விசும்பி னகனிலாப் பாரிக்குந்
திங்களுந் தீங்குறுதல் காண்டுமாற்—பொங்கி
அறைப்பா யருவி யணிமலை நாட
உறற்பால யார்க்கு முறும்.

( ,, 15)

452. இதுமன்னுந் தீதென் றியைந்ததூஉம் ஆவார்க்
கதுமன்னு நல்லதே யாகு—மதுநெய்தல்
வீநாறு கானல் விரிதிரைத் தண்சேர்ப்ப
தீநாள் திருவுடையார்க் கில்.

( ,, 84)

453. பன்னாளு நின்ற விடத்துங் கனிவேங்கை
நன்னாளே நாடி மலர்தலால்—மன்னர்
உவப்ப வழிபட் டொழுகினுஞ் செல்வந்
தொகற்பால போழ்தே தொகும்.

( ,, 120)

---

**447.** 13 விலங்காமல். **448.** இது மேருமந்தர புராணம், 136. 2-3 கவளந் தன்னை; 11 விளைக்கு; 14 தீர்ந்தி. **449.** 1 பண்டொறுத்துச்; 7 தெனவறியார்; 8 நின்றொறுக்கும். **450.** 5 நிறையுள்ள, நிரையுள, நிரையுளா; 12 இதுவே; 13 சுரைதாழ. **452.** 3 றியைந்ததும், றிசைந்ததூஉம்; 6 மல்லதே; 8 மதுமன்னும்; 11-12 விரிகடற் றண்சேர்ப்ப.

454. ஆருஞ் சமயத்தார்க் காள்வினையும் வேண்டாவாம்
போகும் பொறியார் புரிவும் பயமின்றே
ஏகல் மலைநாட என்செய்தாங் கென்பெறினும்
ஆகாதார்க் காகுவ தில்.

(பழமொழி, 127)

455. நெடியது காண்கலாய் நீயளியை நெஞ்சே
கொடியது கூறினாய் மன்ற—அடியுளே
முற்பகற் கண்டான் பிறன்கேடு தன்கேடு
பிற்பகற் கண்டு விடும்.

(,, 130)

456. சுட்டிச் சொலப்படும் பேரறிவி னார்கண்ணும்
பட்ட இழுக்கம் பலவானாற்—பட்ட
பொறியின் வகைய கருமம் அதனால்
அறிவினை யூழே யடும்.

(,, 203)

457. எவ்வந் துணையாப் பொருள்முடிக்குந் தாளாண்மை
தெய்வ முடிப்புழி யென்செய்யும்—மொய்கொண்டு
பூப்புக்கு வண்டார்க்கு மூர குறும்பியங்குங்
கோப்புக் குழிச்செய்வ தில்.

(,, 63)

458. கழுமலத் தியாத்த களிறுங் கருவூர்
விழுமியோன் மேற்சென் றதனால்—விழுமிய
வேண்டினும் வேண்டா விடினு முறற்பால
தீண்டா விடுத லரிது.

(,, 62)

459. வழங்கார் வலியிலார் வாய்ச்சொல்லும் பொல்லார்
உழந்தொருவற் குற்றா லுதவலு மில்லார்
இழந்ததில் செல்வம் பெறுதல் அதுவே
பழஞ்செய்போர் பின்று விடல்.

(,, 292)

460. இறந்த பிறப்பிற்றான் செய்த வினையைப்
பிறந்த பிறப்பா லறிக—பிறந்திருந்து
செய்யும் வினையா லறிக இனிப்பிறந்
தெய்தும் வினையின் பயன்.

(அறநெறி. 59)

461. பல்லாவு ளுய்த்து விடினுங் குழக்கன்று
வல்லதாந் தாய்நாடிக் கோடலைத்—தொல்லைப்
பழவினையு மன்ன தகைத்தேதான் செய்த
கிழவனை நாடிக் கொளற்கு.

(நாலடி, 101)

---

**454.** 7 புரியும்; 13-14 ஆகாதா ராகுவ. **455.** 3 நீயளிய. **456.** 6 விருத்தம்; 15 யிடும், படும். **457.** 8 நொய்கொண்டு; 10 வண்டாரற்று. **458.** 1-2 கழுமலத்தில் யாத்த. **459.** 9 இழந்தசில்; 11-12 பெறுதலும் வேறப், பெறுதலு மின்னார்; 14 பீன்று, ஈன்று, இன்று.

462. வளம்பட வேண்டாதார் யார்யாரு மில்லை
அளந்தன போக மவரவ ராற்றான்
விளங்காய் திரட்டினா ரில்லை—களங்கனியைக்
காரெனச் செய்தாரு மில்.

(நாலடி, 103)

463. சிறுகா பெருகா முறைபிறழ்ந்து வாரா
உறுகாலத் தூற்றாகா வாமிடத்தே யாகுஞ்
சிறுகாலைப் பட்ட பொறியு மதனால்
இறுகாலத் தென்னை பரிவு.

(,, 110)

464. ஈண்டுநீர் வையத்து ளெல்லாரு மெத்துணையும்
வேண்டார்மற் றீய விழைபய னல்லவை
வேண்டினும் வேண்டா விடினு முறற்பால
தீண்டா விடுத லரிது.

(,, 109)

465. நல்லார் நயவ ரிருப்ப நயமில்லாக்
கல்லார்க்கொன் றாகிய காரணந்—தொல்லை
வினைப்பய னல்லது வேனெடுங் கண்ணாய்
நினைப்ப வருவதொன் றில்.

( ,, 265)

466. ஆடகச் செம்பொற் கிண்ணத் தேந்திய வலங்கற் றெண்ணீர்
கூடகங் கொண்ட வாழ்நா ளுலந்ததேற் கொல்லும் பவ்வத்
தூடகம் புக்கு முந்நீ ரழுந்தினு முய்வர் நல்லோர்
பாடகம் போலச் சூழ்ந்த பழவினைப் பயத்தி னென்றான்.

(சிந்தா. 510)

467. ஆம்பொருள்க ளாகுமவை யார்க்குமழிப் புண்ணா
போம்பொருள்கள் போகுமவை பொறியின்வகை வண்ணந்
தேம்புனலை நீர்க்கடலுஞ் சென்றுதர லின்றே
வீங்குபுனல் யாறுமழை வேண்டியறி யாதே.

( ,, 848)

468. அல்லித்தா ளற்ற போழ்து மறாதநூ லதனைப் போலத்
தொல்லைத்தம் முடம்பு நீங்கத் தீவினை தொடர்ந்து நீங்காப்
புல்லிக்கொண் டுயிரைச் சூழ்ந்து புக்குழிப் புக்குப் பின்னின்
றெல்லையில் துன்ப வெந்தீச் சுட்டெரித் திடுங்க ளன்றே.

( ,, 2876)

469. கருத்துமாண் குலனுந் தேசுங் கல்வியும் வடிவுந் தம்முட்
பொருத்தினாற் பொருத்த லாகா புலமைமிக் குடைய ரேனும்
ஒருத்தனுக் கொருத்தன் கூக்கேட் டுற்றது செய்து வாழத்
திருத்தினா னிறைவ னேகாண் செய்வினைக் கிழவ னென்பான்.

(சிந்தா. ?)

---

**465.** 1 நல்லர்; 4 நயமில்லார்க். **466.** 8 கொண்டு. **467.** 14 யாரு மழை; 16 யாவே. **468.** இது சிந்தாமணியிற் காணப்பெற வில்லை. 1-2 அல்லித்தண்டற்ற; 10 (ச்)சூழ்வினை; 13-14 புல்லித்தம் முயிரைச்; 17 புக்கும். **469.** 10 புரைமைமிக்.

470. பெருமுழங்கு திரைவரைகள் நீந்திப்பிணி யுறினுந்
திருமுயங்க லில்லையெனி னில்லைபொரு ளீட்டம்
ஒருமுழமுஞ் சேறலில ரெனினும்பொரு ளூர்க்கே
வரும்வழி வினையுழந்து வாழ்கதவ மாதோ.

(சிந்தா. 2556)

471. அகப்படு பொறியி னுரை யாக்குவார் யாவ ரம்மா
மிகப்படு பொறியி னுரை வெய்யராச் செய்ய லாமோ
நகைக்கதிர் மதியம் வெய்தா நடுங்கச்சுட் டிடுத லுண்டே
பகைக்கதிர்ப் பருதி சந்து மாலியும் பயத்த லுண்டே.

( ,, 2315)

472. புரிமுத்த மாலை போல விளக்கினுட் பெய்த நெய்யுந்
திரியுஞ்சென் றற்ற போழ்தில் திருச்சுடர் தேம்பி னல்லால்
எரிமொய்த்துப் பெருக லுண்டே யிருவினை சென்று தேய்ந்தாற்
பரிவுற்றுக் கொடாமைச் செல்வம் பற்றியா ரதனை வைப்பார்.

( ,, 2316)

473. உய்த்தொன்றி யோர்தந் துழவுழு தாற்றவும்
வித்தின்றிப் பைங்கூழ் விளைக்குற லென்னைக்கும்
மெய்த்தவ மில்லான் பொருளொடு போகங்கட்
கெய்த்துழந் தேதா னிடர்ப்படு மாறே.

(வளையா.)

## அறத்துப்பால் முற்றும்.

---

**470.** 11-12 ரெனினும் பொருள்க ளூர்க்கே, ரெனினுமவ ளூர்க்கே; 14 வினைவுழந்து. **471.** 10 வெறியராச்; 12 லாமே. **472.** 1 முரிமுத்த; 2-3 மாலைப்பொற்கோல்; 9 போழ்தே; 14 பொலித; 20 கெடாமற். **473.** 1 உய்த்தன்றி; 2 யேதர், யோதறிர்; 13-14 கெய்த்துணர் செய்தா.

# பொருட் பால்

## அதி. 46. இறை மாட்சி

474. பத்திமை சான்ற படையும் பலர்தொகினும்
எத்துணையு மஞ்சா எயிலரணும்—வைத்தமைந்த
எண்ணி னுலவா விருநிதியு மிம்மூன்றும்
மண்ணாளும் வேந்தர்க் குறுப்பு.

(திரிகடு. 100)

475. கோலஞ்சி வாழுங் குடியுங் குடிதழீஇ
ஆலம்வீழ் போலு மமைச்சனும்—வேலின்
கடைமணிபோற் றிண்ணியான் காப்புமிம் மூன்றும்
படைவேந்தன் பற்று விடல்.

( ,, 33)

476. அங்கோ லவிர்தொடி யாழியா னாயினும்
செங்கோல னல்லாக்காற் சேர்ந்தாரு மெள்ளுவர்
வெங்கோன்மை வேந்தர்கண் வேண்டுஞ் சிறிதெனினுந்
தண்கோ லெடுப்புமா மொய்.

(பழமொழி, 248)

477. வார்சான்ற கூந்தல் வரம்புயர வைகலும்
நீர்சான் றுயரவே நெல்லுயரும்—சீர்சான்ற
தாவாக் குடியுயரத் தாங்கருஞ்சீர்க் கோவுயர்தல்
ஓவா துரைக்கு முலகு.

(சிறுபஞ்ச. 45)

478. கண்வனப்புக் கண்ணோட்டங் கால்வனப்புச் செல்லாமை
எண்வனப் பித்துணையா மென்றுரைத்தல்—பண்வனப்புக்
கேட்டார்நன் றென்றல் கிளர்வேந்தன் தன்னாடு
வாட்டானன் றென்றல் வனப்பு.

( ,, 8)

479. பெரும்பூட் சிறுதகைப் பெய்ம்மலர்ப் பைந்தார்க்
கருங்கழல் வெண்குடையான் காவல்—விரும்பான்
ஒருநாள் மடியி னுலகின்மே ணில்லா
திருநால் வகையா ரியல்பு.

(வெண்பா. 178)

480. ஒள்வா ளமரு ளுயிரோம்பான் தானீயக்
கொள்வார் நடுவட் கொடையோம்பான்—வெள்வாள்
கழியாமே மன்னர் கதங்காற்றும் வேலான்
ஒழியாமே யோம்பு முலகு.

( ,, 195)

---

**474**. 5 எத்திசையு; 10 னுதவா, னுலவா; 14 வேந்தற். **476**. 8 மெள்ளுவரால்; 10 வேந்தன்கண்; 13-15 தன்கோலொ டோம்புமா மொய்ம்பு, தண்கோலொ டோம்புமா மொய்ம்பு; 14 லெடுக்குமா; 15 மெய். **478**. 7 மென்றுணர்த்தல், மென்றுணர்தல். **479**. 2 சிறுநகை; 2-3 சிறுசொற் பெயுமலர்ப்; 8-9 விரும்பா தொருநாள்; 10 படியி; 13 னிருநால், னிருநாள்; 14 வரையா. **480**. 5 கொள்வான்; 9 கழியாமை; 13-14 ஒழியாம லோங்கு.

481. கண்ணெனப் படுவ மூன்று காவலன் கல்வி காமர்
விண்ணினைச் சுழல வோடும் வெய்யவ னென்னும் பேர
எண்ணினுள் தலைக்கண் வைத்த கண்ணது வில்லை யாயின்
மண்ணினுக் கிருளை நீக்கும் வகைபிறி தில்லை மன்னோ.

(சூளா. மந்திர. 30)

482. ஆற்றல்மூன் றோதப் பட்ட வரசர்கட் கவற்றின் மிக்க
ஆற்றல்தான் சூழ்ச்சி யென்ப வாதலா லதனை யாயும்
ஆற்றலா ரமைச்ச ராக வமைச்சரோ டமர்ந்து செல்லும்
ஆற்றலா னரச னாகி னரியதொன் றில்லை யன்றே.

( ,, 12)

483. எண்ணின ரெண்ணகப் படாத செய்கையன்
அண்ணின ரகன்றவர் திறத்து மாணையான்
நண்ணினர் பகைவரென் றிவர்க்கு நாளினுந்
தண்ணியன் வெய்யனந் தானை வேந்தனே.

(,, நகர. 17)

484. வைய மின்புறிற் றானு மின்புறும்
வெய்ய தொன்றுறிற் றானும் வெய்துறும்
செய்ய கோலினுய் செப்ப லாவதன்
றைய தாரினு னருளின் வண்ணமே.

( ,, சீய. 26)

485. வீவில் வீங்குநீர் வேலி வாழ்பவர்க்
காவி யாபவ ரரைச ராதலால்
காவ லோவுங்கொ லென்று கண்படான்
மாவல் தானையம் மன்னர் மன்னனே.

(,, 27)

486. தண்சுடர்க் கடவுள் போலத் தாரகைக் குழாங்கள் தாமே
விண்சுடர் விளக்க மாக விளங்கல வேந்தர் போல
மண்சுடர் வரைப்பின் மிக்க மக்களு மில்லைக் கண்டாய்
கண்சுடர் கனலச் சீறுங் கடாமுகக் களிற்று வேந்தே.

(,, மந்திர. 32)

487. ஒருமையாற் றுன்ப மெய்து மொருவனை யொருமை யாலே
திருமையான் முயங்குஞ் செல்வச் செருக்கொடு திளைப்ப நோக்கி
இருமையு மொருமை யாலே யியற்றலி னிறைவன் போலப்
பெருமையு முடைய தெய்வம் பிறிதினி யில்லை யன்றே.

( ,, 29)

488. அடிநிழ லரசரை யளிக்கு மாய்கதிர்
முடிநிழல் முனிவரர் சரண மூழ்குமே
வடிநுனை வண்கதி ரெஃகின் மற்றவன்
குடைநிழ லுலகெலாங் குளிர நின்றதே.

( ,, நகர. 20)

---

**481.** 8 சூழ; 24 மன்னு. **482.** 1 ஆற்றமூன்; 14 னமைச்ச. **483.** 3 படாது; 14 வெய்யனத்; 16 மன்னனே. **485.** 6 யார்ப்பவ. **486.** 10 விளங்க லால்; 13 வண்சுடர்; 22 கமழ்கடாக். **487.** 11 கினைப்ப; 11-12 கிளைப்ப நோக்கும். **488.** 6 முனிவர்கள்; 9 வடிதுணை; 15 குளிர்ந்து.

489\. மரந்தலை பிணங்கி வான்றோய் மணிவளர் வயிரக் குன்றம்
உரந்தனக் குயர வேந்தி யுய்த்திடு மொருவற் கேனும்
அருந்தவ மரசர் பார மவைபொறை யரிது கண்டாய்
இரந்தவர்க் கீட்டப் பட்ட விருநிதிக் கிழவ வென்றான்.
(சூளா. மந்திர. 35)

490\. எரியு மாணையாற் குளிரு மீகையாற்
பெரியன் மாண்பினாற் சிறிய னன்பினால்
அரியன் வேந்தர்கட் கெளியன் மாந்தர்கட்
குரிய னோங்குதற் கோடை யானையான்.
(,, சீய. 22)

491\. தன்னை வென்றதண் டார்வய வேந்தனைப்
பின்னை வென்றி பெறற்கரி தாகலான்
மன்னி மற்றிவ னாண்டிடும் வையகம்
பொன்னின் மாரி பொழிந்திடு கின்றதே.
( ,, 52)

492\. தருமன் தண்ணளி யாற்றன தீகையால்
வருணன் கூற்றுயிர் மாற்றலின் வாமனே
அருமை யாலழ கிற்கணை யைந்துடைத்
திரும கன்றிரு மாநில மன்னனே.
(சிந்தா. 160)

493\. கோதை நித்திலஞ் சூழ்குளிர் வெண்குடை
ஓத நீருல கொப்ப நிழற்றலால்
தாதை யேயவன் தாணிழற் றங்கிய
காத லாற்களிக் கின்றதிவ் வையமே.
(,, 159)

494\. இறந்த நற்குண மெய்தற் கரியவாய்
உறைந்த தம்மையெல் லாமுட னாக்குவான்
பிறந்த மூர்த்தியொத் தான்றிங்கள் வெண்குடை
அறங்கொள் கோலண்ணல் மும்மத யானையான்.
(குண்டல.)

495\. சீற்றஞ் செற்றுப்பொய் நீக்கிச்செங் கோலினாற்
கூற்றங் காய்ந்து கொடுக்க வெனுந்துணை
மாற்ற மேநவின் றான்றடு மாற்றத்துத்
தோற்றந் தன்னையுங் காமுறத் தோன்றினான்.
( ,, )

496\. வல்லென்ற சொல்லும் புகழ்வாய்மை வழீஇய சொல்லும்
இல்லென்ற சொல்லு மிலனாகலின் யாவர் மாட்டுஞ்
சொல்லுங் குறையின் மையிற்சோரரு மின்மை யாலே
கொல்லென்ற சொல்லு முரைகற்றிலன் கொற்ற வேலான்.
(நாரத.)

---

**489.** 4 மணிவரை; 14 மரசு; 15 பாச; 24 னென்றான். **490.** 5 பெரிய; 8 னண்பினால். **491.** இது 'தருமன் தண்ணளி' (492) என்பதன் பின். 10 மற்றவ. **495.** இது 'இறந்த' (494) என்பதன் முன். 3 நீங்கிச்செங்; 8 வெனுந்துணை; 11 றன்றுணை. **496.** 18 மிறைகற்றிலன்.

497. நெல்லு முயிரன்றே நீரு முயிரன்றே
மன்ன னுயிர்த்தே மலர்தலை யுலகம், அதனால்
யானுயி ரென்பதை யறிதல்
வேன்மிகு தானை வேந்தற்குக் கடனே.

(புறம், 186)

498. கால்பார் கோத்து ஞாலத் தியங்குங்
காவற் சாகா டுகைப்போன் மாணின்
ஊறின் றாகி யாறினிது படுமே
உய்த்தல் தேற்றா னாயின் வைகலும்
பகைக்கூ ழள்ளற் பட்டு
மிகப்பஃ றீநோய் தலைத்தலைத் தருமே.

(,, 185)

499. மூத்தோர் மூத்தோர்க் கூற்ற முய்த்தெனப்
பால்தர வந்த பழவிறற் றாயம்
எய்தின மாயி னெய்தினஞ் சிறப்பெனக்
குடிபுர விரக்குங் கூரி லாண்மைச்
சிறியோன் பெறினது சிறந்தன்று மன்னே
மண்டமர்ப் பரிக்கு மதனுடை நோன்றாள்
விழுமியோன் பெறுகுவ னாயிற் கழுநீர்
அறுகய மருங்கிற் சிறுகோல் வெண்கிடை
என்றூழ் வாடுவறல் போல நன்று
நொய்தா லம்ம தானே மையற்று
விசும்புற வோங்கிய வெண்குடை
முரசுகெழு வேந்த ரரசுகெழு திருவே.

(,, 75)

## அதி. 47. கல்வி

500. ஆற்றவுங் கற்றா ரறிவுடையா ரஃதுடையார்
நாற்றிசையுஞ் செல்லாத நாடில்லை யந்நாடு
வேற்றுநா டாகா தமவேயா மாயினால்
ஆற்றுணா வேண்டுவ தில்.

(பழமொழி, 55)

501. சொற்றொறுஞ் சோர்வு படுதலாற் சோர்வின்றிக்
கற்றொறுங் கல்லாதே னென்று வழியிரங்கி
உற்றொன்று சிந்தித் துழந்தொன் றறியுமேற்
கற்றொறுந்தான் கல்லாத வாறு.

(,, 332)

502. ஆற்று மிளமைக்கண் கல்லாதான் மூப்பின்கண்
போற்று மெனவும் புணருமே—ஆற்றச்

---

**497.** 3, 1 யாமுயி; 3,2-3 ரென்பதறிதல்; 4,3 வேந்தர்க்குக். **498.** 1,4 தியக்குங்; 5,1-2 பகைக்குழிக்குளறப். **499.** 5, 2 பெறினிது; 5, 4 மன்னோ; 7,3-4 னாயினீணீர்; 9,4 நான்று; 10,3 தாமே. **501.** 7 நின்று; 11 துழன்றொன். **502.** 3 கற்கலான், கல்லாதார்; 7 புணருமோ; 11-12 நில்லையேயில்லை.

சுரம்போக்கி யுல்குகொண்டா ரில்லைமற் றில்லை
மரம்போக்கிக் கூலிகொண் டார்.

(பழமொழி, 60)

503. விளக்கு விலைகொடுத்துக் கோடல் விளக்குத்
துளக்கமின் றென்றனைத்துந் தூக்கி—விளக்கு
மருள்படுவ தாயின் மலைநாட என்னை
பொருள்கொடுத்துங் கொள்ளா ரிருள்.

( ,, 334)

504. திரியழற் காணின் தொழுப விறகின்
எரியழற் காணின் இகழ்ப—ஒருகுடியிற்
கல்லாது மூத்தானைக் கைவிட்டுக் கற்றான்
இளமைபா ராட்டு முலகு.

(நான்மணி. 64)

505. கற்பக் கழிமட மஃகு மடமஃகக்
புற்கந்தீர்ந் திவ்வுலகிற் கோளுணருங் கோளுணர்ந்தால்
தத்துவ மான நெறிபடரு மந்நெறி
இப்பா லுலகத் திசைநிறீஇ யுப்பால்
உயர்ந்த வுலகம் புகும்.

( ,, 28)

506. கடற்குட்டம் போழ்வர் கலவர் படைக்குட்டம்
பாய்மா வுடையா னுடைக்கிற்குந் தோமில்
தவக்குட்டந் தன்னுடையா னீந்து மவைக்குட்டங்
கற்றான் கடந்து விடும்.

( ,, 16)

507. வாலிழையார் முன்னர் வனப்பிலான் பாடிலன்
சாலு மவைப்படிற் கல்லாதான் பாடிலன்
கற்றா னொருவனும் பாடிலனே கல்லாத
பேதையார் முன்னர்ப் படின்.

( ,, 97)

508. பொன்பெறுங் கற்றான் பொருள்பெறும் நற்கவி
என்பெறும் வாதி யிசைபெறும்—முன்புறக்
கல்லார்கற் றாரினத்த ரல்லார் பெறுபவே
நல்லா ரினத்து நகை.

(சிறுபஞ்ச. 55)

509. கண்ணுங்காற் கண்ணுங் கணித மெழுத்தியாழோ
டெண்ணுங்காற் சாந்தே யிலைநறுக்கிட்—டெண்ணுங்கால்
இட்டவிவை யைந்து மறிவா னிடையாய
சிட்டனென் றெண்ணப் படும்.

( ,, 94)

---

**503.** 2 விலை கொடுத்துங்; 4 விளக்குங்; 9 மிருள்படுவ. **505.** 4 மது வஃகக்; 5 புற்பந்தீர்ந், குற்றந் தீர்ந்; 8 கோளுணரத். **507.** 9 கற்றோ. **508.** 8 முன்பெறக். **509.** இதுவும் அடுத்த செய்யுளும் ‘கல்வி கரையில’ (512) என்பதன் பின். 2 கண்ணில்; 3-7 கணிதமே யாழினொ டெண்ணுங் காற் சாந்தே யெழுத விலைநறுக்கிட்; 9-10 இட்டவிவ் வைந்து.

510. சத்தமே ஞானந் தருக்கஞ் சமயமே
வித்தகர் கண்டவீ டுள்ளிட்டாங்—கத்தகத்
தந்தவிவை யைந்து மறிவான் றலையாய
சிந்திப்பிற் சிட்டன் சிறந்து.

(சிறுபஞ்ச. 93)

511. அறுவர்தந் நூலு மறிந்துணர்வு பற்றி
மறுவரவு மாறாய நீக்கி—மறுவரவில்
மாசா ரியனாய் மறுதலைச்சொல் மாற்றுதலே
ஆசா ரியன தமைவு.

(ஏலாதி, 75)

512. கல்வி கரையில கற்பவர் நாள்சில
மெல்ல நினைப்பிற் பிணிபல—தெள்ளிதின்
ஆராய்ந் தமைவுடைய கற்பவே நீரொழியப்
பாலுண் குருகிற் றெரிந்து.

(நாலடி, 135)

513. கைப்பொருள் கொடுத்துங் கற்க கற்றபின் கண்ணு மாகும்
மெய்ப்பொருள்விளக்குநெஞ்சின்மெலிவிற்கோர்துணையுமாகும்
பொய்ப்பொருள் பிறகள் பொன்னும் புகழுமாந்துணைவியாக்கும்
இப்பொரு ளெய்தி நின்றீ ரிரங்குவ தென்னை யென்றான்.

(சிந்தா. 1595)

514. உற்றுழி யுதவியு முறுபொருள் கொடுத்தும்
பிற்றைநிலை முனியாது கற்றல் நன்றே
பிறப்போ ரன்ன வுடன்வயிற் றுள்ளுஞ்
சிறப்பின் பாலாற் றாயுமனந் திரியும்
ஒருகுடிப் பிறந்த பல்லோ ருள்ளும்
மூத்தோன் வருக வென்னா தவருள்
அறிவுடை யோனா றரசுஞ் செல்லும்
வேற்றுமை தெரிந்த நாற்பா லுள்ளுங்
கீழ்ப்பா லொருவன் கற்பின்
மேற்பா லொருவனு மவன்கட் படுமே.

(புறம், 183)

## அதி. 48. கல்லாமை

515. கற்றானுங் கற்றார்வாய்க் கேட்டானு மல்லாதான்
தெற்ற வுணரான் பொருள்களை—எற்றே
அறிவிலான் மெய்த்தலைப் பாடு பிறிதில்லை
நாவற்கீழ்ப் பெற்ற கனி.

(பழமொழி, 138)

---

**510.** 9-10 தந்தவிவ் வைந்து. **511.** 1 அறுவரவர்; 5-6 இறுவாயு மற்றாய; 8 மறுவாயில்; 11 மறுதலைத்து; 12 மாற்றுதல்; 13-15 ஆசாரியன்ற னமைவு. **513.** 10 விளைவுக்கோர்; 14 பிறர்கள்; 18 யாகும். **514.** 3, 2 ரன்ன; 4, 2-3 பாலாத் தாயுமனர்; 6, 1 மூத்தோர்; 6, 4 ரவருள். **515.** 4 மல்லாதார், மில்லாதார்; 6 வுணரார்; 8 (த்) தெற்றே, (த்) தெற்ற.

516. கல்லாதான் கண்ட கழிநுட்பங் கற்றார்முற்
சொல்லுங்காற் சோர்வு படுதலால்—நல்லாய்
விளைமுந்து றாத வுரையில்லை யில்லைக்
கனைமுந்து றாத வினை.

(பழமொழி, 2)

517. கல்லாதான் கண்ட கழிநுட்பங் காட்டரிதால்
நல்லேம்யா மென்றொருவன் நன்கு மதித்தலென்
சொல்லால் வணக்கி வெகுண்டடு கிற்பார்க்குஞ்
சொல்லாக்காற் செல்லுவ தில்.

(,, 367)

518. கல்லாதா னூருங் கலிமாப் பரிப்பின்னா
அல்லாதான் சொல்லு முரையின் பயனின்னா
இல்லாதா னல்ல விழைவின்னா வாங்கின்னா
கல்லாதான் கோட்டி கொளல்.

(இன்னா. 29)

519. கல்லாது நீண்ட வொருவ னுலகத்து
நல்லறி வாள ரிடைப்புக்கு—மெல்ல
இருப்பினும் நாயிருந் தற்றே யிராஅ
துரைப்பினும் நாய்குரைத் தற்று.

(நாலடி, 254)

520. பல்லான்ற கேள்விப் பயனுணர்வார் வீயவுங்
கல்லாதார் வாழ்வ தறிதிரே—கல்லாதார்
சேதன மென்னுமச் சேறகத் தின்மையாற்
கோதென்று கொள்ளாதாங் கூற்று.

( ,, 106)

## அதி. 49. கேள்வி

521. உணற்கினிய இன்னீர் பிறிதுழியில் லென்னுங்
கிணற்றகத்துத் தேரைபோ லாகார்—கணக்கினை
முற்றப் பகலு முனியா தினிதோதிக்
கற்றலிற் கேட்டலே நன்று.

(பழமொழி, 61)

522. கள்ளி யகிலுங் கருங்காக்கைச் சொல்லும்போல்
எள்ளற்க யார்வாயும் நல்லுரை—தெள்ளிதின்
ஆர்க்கு மருவி மலைநாட நாய்கொண்டாற்
பார்ப்பாருந் தின்ப ருடும்பு.

( ,, 87)

523. கல்லாரே யாயினுங் கற்றாரைச் சேர்ந்தொழுகின்
நல்லறிவு நாளுந் தலைப்படுவர்—தொல்சிறப்பின்

**516.** இதுவும் அடுத்ததும் தம்முள் மாறியுள்ளன. 6 சோரப். **517.** 4 காட்டரிதாம்; 6 மென்றொருவர்; 8 மதித்தாலென்; 11 வேண்டுகிற்; 14 சொல்லுவ. **518.** 4 பரப்பின்னா; 12 தாங்கின்னா; 14 கோட்டங். **519.** 12-13 யிருந்து குரைப்பினும். **521.** 2 இந்நீர்; 4 லேனுங்; 14-15 கேட்டலினிது. **522.** 6 யாவர்வாய், யார்வாயின்; 12 நோய்கொண்டாற். **523.** 14 தாம்பயந்; 14-15 தான்பயந்த வாங்கு.

ஒண்ணிறப் பாதிரிப்பூச் சேர்தலாற் புத்தோடு
தண்ணீர்க்குத் தான்பயந் தாங்கு.

(நாலடி, 139)

524. தேவ ரனையர் புலவருந் தேவர்
தமரனைய ரோரூ ருறைவார் தமருள்ளும்
பெற்றன்னர் பேணி வழிபடுவார் கற்றன்னர்
கற்றாரைக் காத லவர்.

(நான்மணி. 74)

525. தண்ணுமை யாழ்குழல் கீதமென் றின்னன
நண்ணி நயப்ப செவியல்ல—திண்ணிதின்
வெட்டென்ற சொன்னீக்கி விண்ணொடு வீட்டின்பங்
கட்டுரை கேட்ப செவி.

(அறநெறி. 195)

526. புண்ணாகப் போழ்ந்து புலால்குளிப்பத் தாழ்வளர்த்து
வண்ணப்பொன் செய்வ செவியல்ல—நுண்ணூல்
அறவுரை கேட்டுணர்ந் தஞ்ஞானம் நீக்கித்
துறவுரை கேட்ப செவி.

( ,, 194)

527. மறவுரையுங் காமத் துரையு மயங்கிப்
பிறவுரையு மல்கிய ஞாலத்—தறவுரையைக்
கேட்குந் திருவுடை யாரே பிறவியை
மீட்குந் திருவுடை யார்.

( ,, 1)

## அதி. 50. அறிவுடைமை

528. அறிவினான் மாட்சியொன் றில்லா வொருவன்
பிறிதினான் மாண்ட தெவனாம்—பொறியின்
மணிபொன்னுஞ் சாந்தமு மாலையுமற் றின்ன
அணியெல்லாம் ஆடையின் பின்.

(பழமொழி, 271)

529. புலமிக் கவரைப் புலமை தெரிதல்
புலமிக் கவர்க்கே புலனாம்—நலமிக்க
பூம்புன லூர பொதுமக்கட் காகாதே
பாம்பறியும் பாம்பின கால்.

( ,, 5)

530. செல்லற்க சேர்ந்தார் புலம்புறச் செல்லாது
நில்லற்க நீத்தார் நெறியொரீஇப்—பல்கானும்

---

**524.** 5-7 தமரையனைய ரொருவர்; 11 யொழுகுவார்; 14-15 கல்லாதவர். **525.** இது 'கள்ளியகினும்' (522) என்பதன் பின். 1 பண்ணமை; 12 வீட்டின்பக். **526.** 3-4 புலால் பழிப்பத் தாம்வளர்ந்து; 9 அறிவுரை. **527.** 4 மயக்கிப்; 8 தறிவுரை. **528.** 1 அறிவினா; 2 மாட்சிமையொன்; 5 பிறிவினான்; 11-12 மாலையு மின்ன; 14 ஆடையிற். **529.** 6 கவற்கே; 12 காகாவே; 13-14 பாம்பறியுமே பாம்பின். **530.** 1 சொல்லற்க; 4 சொல்லாது; 7 நிலையொரீஇப்; 10 தான் கண்ட, தாஞ்செய்த.

நாடுக தான்செய்த நுட்பத்தைக் கேளாதே
யோடுக வூரோடும் ஆறு.

(பழமொழி, 392)

531. ஓதநீர் வேலி யுலகத்தா ரிந்நெறி
காதல ரென்ப தறிந்தல்லால்—யாதொன்றுங்
கானக நாட பயிலார் பயின்றதூஉம்
வானக மாகி விடும்.

( ,, 393)

532. மனங்கொண்டக் கண்ணு மருவில செய்யார்
கனங்கொண் டுரைத்தவை காக்கவே வேண்டும்
சனங்க ளுவப்பன செய்யாவுஞ் செய்க
இனங்கழு வேற்றினு ரில்.

( ,, 230)

533. இணரோங்கி வந்தாரை யென்னுற்றக் கண்ணும்
உணர்பவ ரஃதே யுணர்ப—உணர்வார்க்
கணிமலை நாட அளருடிக் கண்ணு
மணிமணி யாகி விடும்.

( ,, 78)

534. கற்றதொன் றின்றி விடினுங் கருமத்தை
அற்ற முடிப்பா னறிவுடையான்—உற்றியம்பும்
நீத்தநீர்ச் சேர்ப்ப இளையானே யாயினும்
மூத்தானே யாடு மகன்.

( ,, 186)

535. பெண்விழைந்து பின்செலினுந் தன்செலவிற் குன்றுமை
கண்விழைந்து கையுறினுங் காதல் பொருட்கின்மை
மண்விழைந்து வாழ்நாள் மதியாமை யிம்மூன்றும்
நுண்விழைந்த நூலவர் நோக்கு.

(திரிகடு. 29)

536. நன்னிலைக்கண் தன்னை நிறுப்பானுந் தன்னை
நிலைகலக்கிக் கீழிடு வானும் நிலையினும்
மேன்மே லுயர்த்து நிறுப்பானுந் தன்னைத்
தலையாகச் செய்வானுந் தான்.

(நாலடி, 248)

537. கரும வரிசையாற் கல்லாதார் பின்னும்
பெருமை யுடையாருஞ் சேறல்—அருமரபின்
ஓத மரற்று மொலிகடற் றண்சேர்ப்ப
பேதைமை யன்ற தறிவு.

(,, 249)

538. வேம்பி னிலையுட் கனியினும் வாழைதன்
தீஞ்சுவை யாதுந் திரியாதாம்—ஆங்கே

**531.** 4 ரங்நெறி; 12 பயின்றது. **532.** 11 செய்யவுஞ். **533.** 3 யென்னுற்ற, யெண்ணுற்றக்; 5-6 உணர்பவஃதே; 10-11 நாடவன்றங்காடிக்; 13 மணிமலை. **534.** 9 நீத்துநீர்ச்; 14 யாகு. **535.** இது ‘செல்லற்க சேர்ந்தார்’ (530) என்பதன் பின். 9 பண்விழைந்து; 10 வாழ்நர். **536.** 10 லுயர. **537.** 2 வகையராக்; 10 மொலிக்கு. **538.** 3 பொதியினும்; 7 திரியாவாம்.

இனந்தீ தெனினு மியல்புடையார் கேண்மை
மனந்தீதாம் பக்க மரிது.

(நாலடி, 244)

539. கடல்சார்ந்து மின்னீர் பிறக்கு மலைசார்ந்தும்
உப்பீண் டுவரி பிறத்தலால் தத்தம்
இனத்தனைய ரல்ல ரெறிகடற்றண் சேர்ப்ப
மனத்தனையர் மக்களென் பார்.

(,, 245)

540. மெல்லிய நல்லாருள் மென்மை யதுவிறந்
தொன்னாருட் கூற்றுட்கு முட்குடைமை—யெல்லாஞ்
சலவருட் சாலச் சலமே நலவருள்
நன்மை வரம்பாய் விடல்.

(,, 188)

541. இம்மூ வுலகி லிருள்கடியு மாய்கதிர்போல்
அம்மூன்று முற்ற வுணர்தலால்—தம்முள்
உறழா மயங்கி யுறழினு மென்றும்
பிறழா பெரியார்வாய்ச் சொல்.

(வெண்பா. 167)

542. இளையர் முதிய ரெனவிருபால் பற்றி
விளையு மறிவென்ன வேண்டா—இளையனாய்த்
தன்றாதை காமம் நுகர்தற்குத் தான்காமம்
ஒன்றாது நீத்தா னுளன்.

(பெரும்பொருள்.)

## அதி. 51. குற்றங் கடிதல்

543. போகம் பொருள்வேட்கை மான்வேட்டம் பொல்லாக்கள்
சோகம் படுசூதே சொல்வன்மை—சோகக்
கடுங்கதத்துத் தண்டம் அடங்காமை காப்பின்
அடுங்கதமி லேனை யரசு.

(ஏலாதி, 18)

544. ஆர்வமே செற்றங் கதமே யறையுங்கால்
ஓர்வமே செய்யு முலோபமே—சீர்சாலா
மானமே மாய வுயிர்க்கூன மென்னுமே
ஊனமே தீர்ந்தவ ரோத்து.

(,, 61)

545. அச்ச மலைகடலிற் றோன்றலு மார்வுற்ற
விட்டகல கில்லாத வேட்கையுங்—கட்டிய
மெய்ந்நிலை காணா வெகுளியு மிம்மூன்றுந்
தந்நெய்யிற் றாம்பொரியு மாறு.

(திரிகடு. 65)

---

**540.** 2 நல்லாருள்; 6 கூற்றுக்கு; 15 விடும். **541.** 14 பெரியர்வாய்ச். **542.** 3 ரெனவிருபாற். **543.** 2 பொருட்கேடு; 2-3 பொருளொா டெணவேட்டம்; 8 சோகங்; 9-10 கடுங்கதங்காணின். **544.** 8 சீர்சான்ற; 10-12 மாய வுயிர்க் கூனமே யென்னுமே; 11 முயிர்க்கூன. **545.** 5 விட்டலக; 10 காண; 13-14 தன்னெயிற் றான்பொரியு, தன்னைத்தா னேபொரியு.

546. தன்னை வியந்து தருக்கலுந் தாழ்வின்றிக்
கொன்னே வெகுளி பெருக்கலும்—முன்னிய
பல்பொருள் வெஃகுஞ் சிறுமையு மிம்மூன்றுஞ்
செல்வ முடைக்கும் படை.

(திரிகடு. 38)

547. அற்புப் பெருந்தளை யாப்பு நெகிழ்ந்தொழுகல்
கற்புப் பெரும்புணை காதலிற் கைவிடுதல்
நட்பு நயநீர்மை நீங்க லிவைமூன்றுங்
குற்றந் தரூஉம் பகை.

( ,, 86)

548. கெடுவ லெனப்பட்டக் கண்ணுந் தனக்கோர்
வடுவல்ல செய்தலே வேண்டும்—நெடுவரை
முற்றுநீ ராழி வரையகத் தீண்டிய
கற்றேயுந் தேயாது சொல்.

(பழமொழி, 394)

549. பொருந்தாப் பழியென்னும் பொல்லாப் பிணிக்கு
மருந்தாகி நிற்பதாம் மாட்சி—மருந்திற்
றணியாது விட்டக்கால் தண்கடற் சேர்ப்ப
பிணியீ டழித்து விடும்.

( ,, 355)

550. காதல் கவறாடல் கள்ளுண்டல் பொய்ம்மொழிதல்
ஈதல் மறுத்த லிவைகண்டாய்—போதிற்
சினையாமை வைகுந் திருநாட செம்மை
நினையாமை பூண்டார் நெறி.

(நளன். கலிதோடர். 39)

551. மண்ணுளார் தம்மைப் போல்வார் மாட்டதே யன்று வாய்மை
நண்ணினார் திறத்துங் குற்றங் குற்றமே நல்ல வாகா
விண்ணுளார் புகழ்தற் கொத்த விழுமியோ னெற்றி போழ்ந்த
கண்ணுளான் கண்டந் தன்மேற் கறையையார் கறையன் றென்பார்.

(குண்டல.)

## அதி. 52. பெரியாரைத் துணைக்கோடல்

552. செயல்வேண்டா நல்லவை செய்விக்குந் தீய
செயல்வேண்டி நிற்பின் விலக்கும்—இகல்வேந்தன்
தன்னை நலிந்து தனக்குறுதி கூறலால்
முன்னின்னா மூத்தார்வாய்ச் சொல்.

(பழமொழி, 357)

553. கற்றார் பலரைத்தங் கண்ணாக வில்லாதார்
உற்றிடர்ப் பட்ட பொழுதின்கண் தேற்றம்

**547.** 4 நெகிழ்ந் தொழிதல்; 7 (க்) காதலியைக்; 9 நட்பின்; 11 நீங்கி. **548.** 2 லெனப்பட்ட; 8 நெடுவானை. **549.** 13 பிணிபீ. **550.** பாரதம். 11 திருநாடா; 13 சிலையாமை; 15 அறம். **551.** 4-5 மாட்டாதே யென்று, மாட்டாதே யன்று; 23 கறைநன். **552.** 2 நல்லன; 12 கூறுவான்; 13 முன்னின்னார். **553.** 2-4 பலரைத்தன் கண்ணாக வில்லாதான்; 8 பெற்ற, தெற்ற; 9 வுரையா; 15 தாற்று.

மரையா துணைபயிரு மாமலை நாட
சுரையாழ் நரம்பறுத் தற்று.

(பழமொழி, 228)

554. சுடப்பட் டுயிருய்ந்த சோழன் மகனும்
பிடர்த்தலைப் பேரானைப் பெற்றுக்—கடைக்காற்
செயிரறு செங்கோல் செலீஇயினான் இல்லை
உயிருடையா ரெய்தா வினை.

( ,, 105)

555. பொலந்தா ரிராமன் துணையாகப் போந்த
இலங்கைக் கிழவற் கிளையான்—இலங்கைக்கே
பேர்ந்திறை யாயதூஉம் பெற்றான் பெரியாரைச்
சார்ந்து கெழீஇயிலா ரில்.

( ,, 92)

556. இரும்பி னிரும்பிடை போழ்ப பெருஞ்சிறப்பின்
நீருண்டா னீரான்வாய் பூசுப—தேரின்
அரிய அரியவற்றாற் கொள்ப பெரிய
பெரியரா னெய்தப் படும்.

(நான்மணி. 34)

557. ஊரங் கணநீ ருரவுநீர்ச் சேர்ந்தக்காற்
பேரும் பிறிதாகித் தீர்த்தமாம்—ஓருங்
குலமாட்சி யில்லாருங் குன்றுபோல் நிற்பர்
நலமாட்சி நல்லாரைச் சார்ந்து.

(நாலடி, 175)

558. ஒண்கதிர் வாண்மதியஞ் சேர்தலா லோங்கிய
அங்கண் விசும்பின் முயலுந் தொழப்படூஉம்
குன்றிய சீர்மைய ராயினுஞ் சீர்பெறுவர்
குன்றன்னார் கேண்மை கொளின்.

(,, 176)

559. பாலோ டளாயநீர் பாலாயி னல்லதை
நீராய் நிறந்திரிந்து தோன்றாதாம்—தேரிற்
சிறியார் சிறுமையுந் தோன்றாதாம் நல்ல
பெரியார் பெருமையைச் சார்ந்து.

(,, 177)

560. கொல்லை யிரும்புனத்துக் குற்றி யடைந்தபுல்
ஓல்காவே யாகு முழவ ருழுபடைக்கு
மெல்லியரே யாயினும் நற்சார்வு சார்ந்தார்மேற்
செல்லாவாஞ் செற்றார் சினம்.

(,, 178)

**554.** 6 போரானைப்; 7 பெற்ற; 8 கடைகாற், **555.** 4-5(த்) தான் போந் திலங்கைக்; 14 கெடீஇயின, கெடீஇயியா, கழீஇயியா. **556.** 5-6 நீருண்டார் நீரான்வாய்; 11 கொள்க; 13 பெரியாரி. **557.** 10 யில்லோருங். **558.** 2 வான்மதியஞ்; 8 தொழப்படும். **559.** 4 னல்லது; 6 நிறந்தெரிந்து; 7 தோன்றுவாம்; 11 தோன்றுவாம். **560.** 9-11 மெல்லியரேயானும் நற் சார்பு.

## அதி. 53. நன்கறிவுறுத்தல்*

561. அறிமி னறநெறி அஞ்சுமின் கூற்றம்
பொறுமின் பிறர்கடுஞ்சொற் போற்றுமின் வஞ்சம்
வெறுமின் வினைதீயார் கேண்மையெஞ் ஞான்றும்
பெறுமின் பெரியார்வாய்ச் சொல்.

(நாலடி, 172)

562. அந்தணர் சான்றோ ரருந்தவத்தோர் தம்முன்னோர்
தந்தைதா யென்றிவர்க்குத் தார்வேந்தே—முந்தை
வழிநின்று பின்னை வயங்குநீர் வேலி
மொழிநின்று கேட்டல் முறை.

(வெண்பா. 221)

563. ஒன்றி லிரண்டாய்ந்து மூன்றடக்கி நான்கினால்
வென்று களங்கொண்ட வேல்வேந்தே—சென்றுலாம்
ஆழ்கடல்சூழ் வையகத் தைந்துவென் றாறகற்றி
ஏழ்கடிந் தின்புற் றிரு.

(,, 225)

564. முல்லைக்குத் தேரு மயிலுக்குப் போர்வையும்
எல்லைநீர் ஞாலத் திசைவிளங்கத்—தொல்லை
இரவாம லீந்த இறைவர்போல் நீயும்
கரவாமை யீதல் கடன்.

( ,, 194)

565. தந்நடை நோக்கார் தமர்வந்த வாறறியார்
செந்நடை சேராச் சிறியார்போ லாகாது
நின்னடை யானே நடவத்தா நின்னடை
நின்னின் றறிகிற்பா ரில்.

(பழமொழி, 288)

566. உறவர்ப் பேண லுவர்ப்பின்மை யுலையா வின்பந் தலைநிற்றல்
அறிவர் சிறப்பிற்கெதிர்விரும்பல்அழிந்தோர்நிறுத்தலறம்பகர்தல்
சிறியா ரினத்திற் சேர்வின்மை சினங்கை விடுதல் செருக்கவித்தல்
இறைவ னறத்து ளார்க்கெல்லா மினிய ராத லிதுதெளிவே.

(சிந்தா. 2816)

567. பால்வளை பரந்து மேயும் படுகடல் வளாக மெல்லாம்
கோள்வளை யாமற் காத்துன் குடைநிழற் றுஞ்சல் நோக்கி
நூல்விளைந் தனைய நுண்சொற் புலவரோ டறத்தை யோம்பின்
மேல்விளை யாத வின்பம் வேந்தமற் றில்லை கண்டாய்.

( ,, 2906)

---

* இவ்வதிகாரம் ஒரு பிரதியிற் காணப் பெறவில்லை; இதன்கணுள்ள செய்யுட்கள் 'பெரியாரைத் துணைக்கோடல்' என்றதன்பாற்சேர்ந்துள்ளன. **562.** 6 யென்றிவர்க்குந்; 10 பின்னர்; 14 கேட்டி. **563.** 12 றுறடக்கி. **564.** 5 ஒல்லைநீர். **565.** இது ஒரு பிரதியில் இல்லை. 9 நன்னடை; 12 நன்னடை; 13-14 நின்னினறிகிற்பா, யின்னெறி கற்பிப்பா. **566.** 7 அறவர்; 19-20 இறைவன்றிறத்து; 23 ஞத. **567.** 9 காத்துக்; 11 றுஞ்ச; 13 நூல்வளைந், நூல்வனைந்; 22 வேந்தன்மற்.

568. பல்சான் றீரே பல்சான் றீரே
கயல்முள் ளன்ன நரைமுதிர் திரைகவுட்
பயனில் மூப்பிற் பல்சான் றீரே
கணிச்சிக் கூர்ம்படைக் கடுந்திற லொருவன்
பிணிக்குங் காலை யிரங்குவிர் மாதோ
நல்லவை செய்த லாற்றீ ராயினும்
அல்லவை செய்த லோம்புமின், அதுதான்
எல்லாரு முவப்ப தன்றியும்
நல்லாற்றுப் படூஉ நெறியுமா ரதுவே.

(புறம், 195)

569. எருமை யன்ன கருங்கல் லிடைதோ
றானிற் பரக்கும் யானைய முன்பிற்
கானக நாடனை நீயோ பெரும
நீயே யாகலி னின்னொன் றுமொழிவல்
அருளு மன்பு நீக்கி நீங்கா
நிரையங் கொள்வாரொ டொன்றாது காவல்
குழவி கொள்பவரி னோம்புமதி
அளிதோ தானேயது பெறலருங் குரைத்தே.

( ,, 5)

570. சேற்றுவளர் தாமரை பயந்த வொண்கேழ்
நூற்றித ழலரி நிரைகண் டன்ன
வேற்றுமை யில்லா விழுத்திணைப் பிறந்து
வீற்றிருந் தோரை யெண்ணுங் காலை
உரையும் பாட்டு முடையோர் சிலரே
மரையிலை போல மாய்ந்திசி னோர் பலரே
புலவர் பாடும் புகழுடையோர் விசும்பின்
வலவ னேவா வான வூர்தி
எய்துப வென்பதஞ் செய்வினை முடித்தெனக்
கேட்ப லெந்தை சேட்சென்னி நலங்கிள்ளி
தேய்த லுண்மையும் பெருக லுண்மையும்
மாய்த லுண்மையும் பிறத்த லுண்மையும்
அறியா தோரையு மறியக் காட்டித்
திங்கட் புத்தேள் திரிதரு முலகத்து
வல்லா ராயினும் வல்லுந ராயினும்
வருந்தி வந்தோர் மருங்கு நோக்கி
அருள வல்லை யாகுமதி யருளிலர்
கொடாஅமை வல்ல ராகுக
கெடாஅத் துப்பினின் பகையெதிர்ந் தோரே.

( ,, 27)

**568.** 7, 1 வல்லவை; 7, 4 இதுதான்; 9, 3-4 நெறியுமற் றதுவே, நெறியுமற் றிதுவே. **569.** 1, 4 லடைதொ; 4,2 யாதலி; 7, 2 கொள்வரி. **570.** 9, 2 வெனத்தஞ்; 18, 2 வல்லுந; 19, 1 கெடாஅமைத்.

571. ஒருதிசை யொருவனை யுள்ளி நாற்றிசைப்
பலரும் வருப பரிசில் மாக்கள்
வரிசை யறிதலோ அரிதே பெரிதும்
ஈத லெளிதே மாவண் டோன்றல்
அதுநற் கறிந்தனை யாயிற்
பொதுநோக் கொழிமதி புலவர் மாட்டே.

(புறம், 121)

572. நீயே, பிறரோம்புற்ற மறமன்னெயில்
ஓம்பாது கடந்தட்டவர்
முடிபுனைந்த பசும்பொன்னின்
அடிபொலியக் கழல்தைஇய
வல்லாளனை வயவேந்தே
யாமேநின், இகழ்பாடுவோ ரெருத்தமடங்கப்
புகழ்பாடுவோர் பொலிவுதோன்ற
இன்றுகண் டாங்குக் காண்குவ மென்றும்
இன்சொலெண் பதத்தை யாகுமதி பெரும
ஒருபிடி படியுஞ் சீறிடம்
எழுகளிறு புரக்கு நாடுகிழ வோயே.

( ,, 40)

## அதி. 54. சிற்றினஞ் சேராமை

573. மொய்சிதைக்கும் ஒற்றுமை யின்மை யொருவனைப்
பொய்சிதைக்கும் பொன்போலு மேனியைப்—பெய்த
கலஞ்சிதைக்கும் பாலின் சுவையைக் குலஞ்சிதைக்கும்
கூடார்கட் கூடி விடின்.

(நான்மணி. 21)

574. முயறலே வேண்டா முனிவரை யானும்
இயல்பின்ன ரென்ப தினத்தான் அறிக
கயலியலுண் கண்ணாய் கரியவரோ வேண்டா
அயலறியா அட்டூணோ வில்.

(பழமொழி, 237)

575. இழுக்க லியல்பிற் றிளமை பழித்தவை
சொல்லுதல் வற்றாகும் பேதைமை யாண்டும்
செறுவொடு நிற்குஞ் சிறுமையிம் மூன்றும்
குறுகா ரறிவுடை யார்.

(திரிகடு. 14)

576. நெருப்பழற் சேர்ந்தக்கால் நெய்போல் வதூஉம்
எரிப்பச்சுட் டெவ்வநோ யாக்கும்—பரப்பக்
கொடுவினைய ராகுவர் கோடாருங் கோடிக்
கடுவினைய ராகியார்ச் சார்ந்து.

(நாலடி, 124)

---

**571**. 2,2 வருவர்; 5, 1 அதுநன். **572**. 1, 3 மன்னெயில்; 3, 2 பசும்பொன்; 4, 2 கவின்றைஇய; 8, 4 மென்றினும்; 9, 1-2 இன்சொலெண்பதை; 10, 2 படருஞ்; 10, 3 சீறடி. **574**. 1 முயறலோ, முயலவோ; 3 முனிவரே; 8 அறிப; 9 கயலியலுங்; 11 கரியரோ; 14 அட்டுணை, வீட்டூணோ. **575**. 4 வழுக்குதல். **576**. 4 அதூஉம்; 7 யாகும்; 8 பரப்புக்.

577. இசைந்த சிறுமை யிசைவிலா தார்கட்
பசைந்த துணையும் பரிவாம்—அசைந்த
நகையேயும் வேண்டாத நல்லறிவி னார்கட்
பகையேயும் பாடு பெறும்.

(நாலடி, 187)

578. ஆன்படு நெய்பெய் கலனு ளதுகளைந்து
வேம்படு நெய்பெய் தனைத்தரோ—தேம்படு
நல்வரை நாட நயனுணர்வார் நண்பொரீஇப்
புல்லறிவி னாரொடு நட்பு.

( ,, 239)

579. மனத்தான் மறுவில ரேனுந்தாஞ் சேர்ந்த
இனத்தான் இகழப் படுப—புனத்து
வெறிகமழ் சந்தனமும் வேங்கையும் வேமே
எறிபுனந் தீப்பட்டக் கால்.

( ,, 180)

580. அறியாப் பருவத் தடங்காரோ டொன்றி
நெறியல்ல செய்தொழுகி யவ்வும்—நெறியறிந்து
நற்சார்வு சாரக் கெடுமே வெயில்முறுகப்
புற்பனிப் பற்றுவிட் டாங்கு.

(,, 171)

581. இறப்ப நினையுங்கா லின்னா தெனினும்
பிறப்பினை யாரு முனியார்—பிறப்பினுள்
பண்பாற்று நெஞ்சத் தவர்களோ டெஞ்ஞான்றும்
நண்பாற்றி நட்கப் பெறின்.

(,,. 174)

582. உணர வுணரு முணர்வுடை யாரைப்
புணரப் புணருமா மின்பம்—புணரின்
தெரியத் தெரியுந் தெளிவிலா தாரைப்
பிரியப் பிரியுமாம் நோய்.

( ,, 247)

## அதி. 55. தெரிந்து செயல்வகை

583. தற்றாக்கித் தன்றுணையுந் தூக்கிப் பயன்தூக்கி
மற்றது கொள்க மதிவல்லார்—அற்றன்றி
யாதானு மொன்றுகொண் டியாதானுஞ் செய்தக்கால்
யாதானு மாகி விடும்.

(பழமொழி, 321)

584. ஆஅ மெனக்கெளிதென் றன்றுலக மாண்டவன்
மேஎந் துணையறியான் மிக்குநீர் பெய்திழந்தான்

---

**577.** 3 யிசைவலா; 9 நசையேயும்; 10 வேண்டாதா. **578.** 4 மது களைந்து. **579.** 3 லெனினுந்தாஞ்; 7 படுவர்; 8 புனத்துள்; 13 பொறிபுனந். **580.** 7 யாவும்; 8 நெறியறிந்த. **582.** 11 தெருளிலா, தெரிவிலா. **583.** 5-7 யற்றது கொள்க வறிவுடையார்; 5 மற்றவை, யற்றது; 6 கொள்வ; 8 அற்றின்றி. **584.** 2 மெனக்கீதென்; 2-3 மெனக்கெளி தென்றுலக; 5 மேவுந்; 8 பெய்திழிந்தான்; 13-14 தாந்தர வாராத.

தோலு முடைய தொடங்குவார்க் கில்லையே
தாஅந் தரவாரா நோய்.

(பழமொழி, 7)

585. நயவர நட்டொழுகு வாருந்தாங் கேட்ட
துயவா தொழிவா ரொருவரு மில்லைப்
புயலமை கூந்தற் பொலந்தொடீஇ சான்றோர்
கயவர்க் குரையார் மறை.

(,, 229)

586. அன்பறிந்த பின்னல்லால் யார்யார்க்குந் தம்மறையை
முன்பிறர்க் கோடி மொழியற்க—தின்குறுவான்
கொல்வாங்குக் கொன்றபி னல்ல துயக்கொண்டு
புல்வாய் வழிப்படுவா ரில்.

(,, 257)

587. உவப்ப வுடன்படுத்தற் கேய கருமம்
அவற்றவற் றூந்துணைய வாகிப் பயத்தான்
வினைமுதிரிற் செய்தான்மே லேறும் பனைமுதிரின்
தாய்தாண்மேல் வீழ்ந்து விடும்.

(,, 327)

588. பந்த மிலாத மனையின் வனப்பின்னா
தந்தை யிலாத புதல்வ னழகின்னா
அந்தண ரில்லிருந் தூணின்னா வாங்கின்னா
மந்திரம் வாயா விடின்.

(இன்னா. 2)

589. அந்தண ரொழுக்கமு மரசர் வாழ்க்கையும்
மந்திர மில்லையேல் மலரு மாண்பில
இந்திர னிறைமையு மீரைஞ் ஞூற்றுவர்
தந்திரக் கிழவர்கள் தாங்கச் செல்லுமே.

(சூளா. இரதநூ. 119)

590. வாள்வலித் தடக்கை மன்னர் வையகம் வணக்கும் வாயில்
தோள்வலி சூழ்ச்சி யென்றாங் கிருவகைத் தொகையிற் றாகும்
ஆள்வலித் தானை யார்கட் காதிய தழகி தேனுங்
கோள்வலிச் சீய மொய்ம்பிற் சூழ்ச்சியே குணம தென்றான்.

(,, மந்திர. 10)

591. உரிதினி னொருவன் செய்த வூழ்வினை யுதயஞ் செய்து
விரிதலி னதனை துண்மை விளங்கினாற் போல வேந்தர்

---

**585.** 1 நயவாரை; 11 பொலந்தொடி; 12 சென்றோர்; 14-15 கசை யார் மிகை. **586.** 1-2 அன்பறிந்தன்பினல்லால்; 4 தம்மறையே, தம்மறையு; 5-6 முன்புறக் கெட்டு, முன்புறக் கொட்டி; 7 மொழிவரத்; 10 கொன்றிடி. **587.** 2-3 வுடம்படுதல் செய்த; 5-6 அவற்றவற்றா னத்துணைய, அவற்றவற்றா கத்துணைய; 9 வினைமுதிரச்; 13 தாயதாள், தாய்கான் மேல். **588.** 1-2 பந்தமில் லாத; 3 மனைவி; 5-6 தந்தையில் லாத; 12 தாங்கின்னா; 13 மந்திரி. **589.** 7 மல்கு; 10 ரிறைமையு; 13 தந்திரிச்; 15 தாங்கிச். **590.** 3 மன்னா; 5-6 வணக்குமாயின்; 15 யார்தோட்; 16 காகிய; 18 தென்றுங்; 21 மோராய். **591.** 1 உரிதனி; 8 னறன; 15-16 சூழ்ச்சிவயத்தினாற்; 23-24 தென்னை யென்றான்.

கருதிய கருமச் சூழ்ச்சிப் பயத்தினாற் கருதும் வண்ணம்
எரிதிகழ்ந் திலங்கு வேலோ யெண்ணுவ தெண்ண மென்றான்.
(சூளா. மந்திர. 36)

592. ஒன்றாநன் றெனவுணர் வொருவன் கொள்ளுமேல்
அன்றதென் றொருவனுக் கறிவு தோன்றுமால்
நின்றதொன் றாண்டுகேள் நீதி நூலினோ
டொன்றினின் றவரொடு முணர்க வொட்டியே.
( ,, இரதநூ. 118)

593. மண்ணியல் வளாகங் காக்கு மன்னரால் வணக்க லாகாப்
புண்ணிய நீர ரேனும் புலவராற் புகலப் பட்ட
நுண்ணிய நூலி னன்றி நுழைபொரு ளுணர்தல் செல்லா
தெண்ணிய துணர்ந்து செய்யுஞ் சூழ்ச்சியு மில்லை யன்றே.
( ,, மந்திர. 4)

594. பகைய லாதவ ரைப்பகை யாக்கலும்
நகையில் தீமனத் தாரைநண் பென்னலும்
முகையின் வேய்ந்ததொர் மொய்ம்மலர்க் கண்ணியாய்
மிகையின் மற்றவை பின்னை வெதுப்புமே.
( ,, சீய. 75)

595. உள்ளுநின் றொலிபுறப் படாத தொண்சிறைப்
புள்ளுமல் லாதவும் புகாத நீரது
வெள்ளிவெண் விளிம்பினால் விளங்கும் வேதிகை
வள்ளல்தன் மந்திரச் சாலை வண்ணமே.
( ,, மந்திர. 2)

596. பஞ்சிநின் றாட்டப் பட்ட மாதுளம் பருவ வித்து
மஞ்சினின் றகன்ற சாகை மலரிடை வடிவு காட்டும்
அஞ்சுநின் றனலும் வேலோய் சூழ்ச்சியு மன்ன தேயால்
வெஞ்சொலொன் றுரைக்க மாட்டா விடுசுடர் விளங்கு பூணோய்.
( ,, 37)

597. காய்ந்தெறி கடுங்கற் றன்னைக் கவுட்கொண்ட களிறு போல
ஆய்ந்தறி வுடைய ராகி யருளொடு வெகுளி மாற்றி [கண்டாய்
வேந்தர்தாம் விழைப வெல்லாம் வெளிப்படா மறைத்தல்
நாந்தக வுழவ ரேறே நன்பொரு ளாவ தென்றான்.
(சிந்தா. 2910)

## அதி. 56. வலி யறிதல்

598. இகலின் வலியாரை யெள்ளி யெளியார்
இகலி னெதிர்நிற்ற லேதம்—அகலப்போய்
என்செய்தே யாயினு முய்ந்தீக சாவாதான்
முன்கை வளையுந் தொடும். (பழமொழி, 384)

---

**592.** 2-3 றெனவுணர்ந் தொருவன்; 5 அன்றிதென்; 8 தோன்றுமே; 10 றாண்டுநீ; 14-16 றவருரை யுலக மொட்டுமே. **593.** 18 சொல்லா, சாலா. **594.** 10 வேய்ந்த; 10-11 வேய்ந்தமொய் பூமலர்க்; 13 மிகையு; 13-16 மிகையு மன்றி வெதும்பிடும் பின்னரே; 16 வெதும்புமே. **595.** 10 விசும்பினால்; 14 மந்திர. **596.** 1 பஞ்சினின்; 10 மலிரிடை; 13 அஞ்சிநின்; 15 வேலோர். **597.** 3 றான்றன்; 14 விளைப்ப; 16 வெளிப்படார்; 17 மறைப்பு; 20-21 வுழவர்க்கன்றே. **598.** 4 யறியார்; 6 நெறிநிற்ற.

599. ஆமாலோ வென்று பெரியாரை முன்னின்று
தாமாச் சிறியார் தறுகண்மை செய்தொழுகல்
போமா றறியா புலன்மயங்கி யூர்புக்குச்
சாமாகண் காணாத வாறு.

(பழமொழி, 233)

600. நூக்கி யவர்வெலினுந் தாம்வெலினும் வெஞ்சமத்துத்
தாக்கி யெதிர்ப்படுவர் தக்கவ ரஃதன்றிக்
காப்பி னகத்திருந்து காய்வார் மிகவுரைத்தல்
யாப்பினு ளட்டிய நீர்.

( ,, 296)

601. ஆர்கலி ஞாலத் தறங்காவ லாற்சிறந்த
பேரருளி னாற்குப் பெறலருமை யாதரோ
வார்திரைய மாமகர வெள்ளத்து நாப்பண்ணும்
போர்மலைந்து வெல்லும் புகழ்.

(இரும்பல்.)

602. அரிய வரைகீண்டு காட்டுவார் யாரே
பெரிய வரைவயிரங் கொண்டு—தெரியிற்
கரிய வரைநிலையார் காய்ந்தாலென் செய்வார்
பெரிய வரைவயிரங் கொண்டு.

(யாப்பருங். 60, உரை)

603. உறுபடை மன்னர் தம்மை யுடற்றியொன் றானு மின்றிச்
சிறுபடை யவர்கள் வென்று செகுப்பவோ வென்னல் வேண்டா
செறியெயிற் றாளி வேழப் பேரினஞ் செகுத்த தன்றே
உறுபுலி யொன்று தானே கலையின முடற்றிற் றன்றே.

(சிந்தா. 814)

## அதி. 57. கால மறிதல்

604. அன்பி னெகிழ வழிபட்டுக் கொள்ளாது
நின்ற பொழுதின் முடிவித்துக் கொள்வதே
கன்றுவிட் டாக்கறக்கும் போழ்திற் கறவானாய்
அம்புவிட் டாக்கறக்கு மாறு.

(பழமொழி, 77)

605. புரையக் கலந்தவர்க் கண்ணுங் கருமம்
உரையின் வழுவா துவப்பவே கொள்க
வரையக நாட விரையிற் கருமம்
சிதையும் இடராய் விடும்.

( ,, 227)

606. ஆற்றுந் துணையும் அறிவினை யுள்ளடக்கி
ஊற்ற முரையா ருணர்வுடையார்—ஊற்றம்

---

**599.** 10 றறியாப், றறியார்; 11 புனமயங்கி; 12 யுள்புக்குச்; 13 சாமாக் கண். **600.** 1 தூக்கி; 4 வெஞ்சமத்துள்; 6-7 யெதிர்ப்படுவேர்த் தாக்க(வ); 11 காய்வான். **601.** 9 வூர்திரைய. **602.** 10 வரைநிலையாய். **603.** 16 போரினஞ்; 22-23 கலையுமுன் னுடற்றிற். **604.** 3 வழிப்பட்டு; 6 பொழுது; 7 முடிகவித் துக்; 8 கொள்வது; 11 போது. **605.** 2 கலந்தவக், கலந்தவர்; 7 துரைப் பவே; 13 சிதையின், சிதைவாய். **606.** 6 முடையா.

உறுப்பினு லாராயு மொண்மை யுடையார்
குறிப்பின்கீழ்ப் பட்ட துலகு.

(நாலடி, 196)

607. வெள்ளம்போல் தானை வியந்து விரவாரை
எள்ளி யுணர்த லியல்பன்று—தெள்ளியார்
ஆறுமே லாறியபி னன்றித்தங் கைக்கொள்ளார்
நீறுமேற் போர்த்த நெருப்பு.

(வெண்பா. 166)

608. நாள்கூட்ட மூழ்த்த மிவற்றொடு நன்றாய
கோள்கூட்டம் யோகங் குணனுணர்ந்து—தோள்கூட்ட
லாற்றானு மல்லானு மைந்து முணர்வானாற்
பெற்றானுட் கொள்க பெரிது.

(சிறுபஞ்ச. 43)

609. இடத்தொடு பொழுது நாடி யெவ்வினைக் கண்ணு மஞ்சார்
மடப்பட லின்றிச் சூழு மதிவலார்க் கரிய துண்டே
கடத்திடைக் காக்கை யொன்றே யாயிரங் கோடி கூகை
இடத்திடை யிரங்கச் சென்றாங் கின்னுயிர் செகுத்த தன்றே.

(சிந்தா. 1927)

610. சில மல்லன நீக்கிச்செம் பொற்றலைத்
தால மன்ன தனிநிலை தாங்கிய
ஞால மன்னர்க்கு நல்லவர் நோக்கிய
கால மல்லது கண்ணுமுண் டாகுமோ.

(இராமாவ. மந்தரை. 19)

## அதி. 58. இட னறிதல்

611. பெரியாரைச் சார்ந்தார்மேற் பேதைமை கந்தாச்
சிறியார் முரண்கொண் டொழுகல்—வெறியொலி
ஓநா யினம்வெரூஉம் வெற்ப புலம்புகில்
தீநா யெடுப்புமா மெண்கு.

(பழமொழி, 139)

612. இறப்ப வெமக்கீ திளிவர வென்னார்
பிறப்பிற் சிறியாரைச் சென்று—பிறப்பினாற்
சாலவு மிக்கவர் சார்ந்தடைந்து வாழ்பவே
தால அடைக்கலமே போன்று.

( ,, 198)

613. வான்சேரிற் புள்ளஞ்சா வல்லரில் சுற்றிய
கான்சேரின் மானின் கணமஞ்சா—வான்சேர்

---

**607.** 6 யுரைத்த(ப்), புணர்த; 9 ஆற்றமே; 12கைவையார்; 14 நீற்றுமேற்; நீற்றின்மேற். **608.** 2 மூத்த; 3 மியத்தொடு; 6 போகங்; 8 கோள்கூட்ட, தோள்கூட; 10-11 மல்லாத வைந்து. **609.** 9 (க்) கண்ட; 23 கெடுத்த. **610.** 2-3 நல்லன தாங்கிச்செம்; 6 மன்னர். **611.** 2 சேர்ந்தார்மேற்; 7 டெழுதல்; 8 வெறியோவா, வெறியொவ்வா, வெறிபோய; 9 கோனு; 12 புலவுறில், புலம்புறிற், பலவுறிற்; 14 யெழுப்புமா. **612.** 1-3 இறப்பவெமக் கீதி னிளிவர; 3 திழிவர; 3-4 திழிவரவென் றெண்ணார்; 14 அடைக்கலம்.

சிகர வரைசேரிற் றேனஞ்சா அஞ்சா
மிகுநீர்க் கயஞ்சேரின் மீன்.

(பாரதம்)

614. உளையச் சிலைக்கு முழுவையுந் தான்றன்
அளையிற்றீர்ந் தூரடைந்த தாக—இளிவந்
துயிரிழப்ப தென்று னுறுமிடநீத் தென்கொல்
செயிருழக்குந் தீங்கு செயல்.

( ,, )

615. இழைபொறை யாற்ற கில்லா திட்டிடை தளர நின்ற
குழைநிற முகத்தி னார்போற் குறித்ததே துணிந்து செய்யார்
முழையுறை சிங்கம் பொங்கி முழங்கிமேற் பாய்ந்து மைதோய்
வழையுறை வனத்து வன்க ணரிவலைப் பட்ட தன்றே.

(சிந்தா. 1928)

## அதி. 59. தெரிந்து தெளிதல்

616. சுற்றத்தார் நட்டா ரெனச்சென் றொருவரை
அற்றத்தாற் றேறா ரறிவுடையார்—கொற்றப்புள்
ஊர்ந்துலகந் தாவிய வண்ணலே யாயினுஞ்
சீர்ந்தது செய்யாதா ரில்.

(பழமொழி, 67)

617. மறந்தானுந் தாமுடைய தாம்போற்றி னல்லால்
சிறந்தார் தமரென்று தேற்றார்கை வையார்
கறங்குநீர்க் கல்லலைக்குங் கானலஞ் சேர்ப்ப
இறந்தது பேர்த்தருவா ரில்.

(,, 43)

618. தெற்ற வொருவரைத் தீதுரை கண்டக்கால்
இற்றே யவரைத் தெளியற்க—மற்றவர்
யாவரே வேண்டினும் நன்கொழுகார் கைக்குமே
தேவரே தின்னினும் வேம்பு.

(,, 114)

619. விளிந்தாரே போலப் பிறராகி நிற்கும்
முளிந்தாரைத் தஞ்ச மொழியலோ வேண்டா
அளிந்தார்க ணாயினு மாராயா னாகித்
தெளிந்தான் விரைந்து கெடும்.

(,, 42)

620. பொருள்போக மஞ்சாமை பொன்றுங்காற் போந்த
அருள்போகா வாரறமென் றைந்தும்—இருள்போகக்

---

**613.** 14 கயஞ்சேரு. நான்மணிக் கடிகை. **614.** 3-4 முழுவையுந் தான் றன்னை; 6-7 தூரடைந்தாகா; 8 வெளிவந்; 13 செயிரிழக்குந். **615.** 1-2 இழைபொறுத் தாற்ற; 5 தாழா; 7-8 குழைமுக நிறத்தி; 12 செய்யா; 19 வழையுறு. **616.** 4 றொருவனை; 6 றேற்றா; 10 தாங்கிய, தாங்கின; 13 சார்ந்தது. **617.** 2 தம்முடைய; 7-8 தேற்றா தறையார்; 10 காலலைக்குங்; 13 பிறந்தது; 14 பேர்த்தறிவா, போத்தருவா, போதருவா. **618.** 5 எற்றே; 8 மற்றவர்வாய்; 10 யாயினும்; 12 கைக்குமாம். **619.** 5 முனிந்தாரைத்; 9 வளர்ந்தார்க; 12 ணயில்; 14-15 விளிந்துவிடும். **620.** 4 போர்த்த; 7 றைந்தின், றூற்ற; 8 இருடீரக்.

கூறப் படுங்குணத்தான் கூர்வேல்வல் வேந்தனால்
தேறப் படுங்குணத்தி னான்.

(சிறுபஞ்ச. 58)

621. ஒருவ னறிவானு மெல்லாம்யா தொன்றும்
ஒருவ னறியா தவனும்—ஒருவன்
குணனடங்கக் குற்ற மிலானு மொருவன்
கணனடங்கக் கற்றானு மில்.

(நான்மணி. 102)

622. மக்களு மக்களல் லாரு மெனவிரண்டு
குப்பைத்தே குண்டுநீர் வையகம்—மக்கள்
அளக்குங் கருவிமற் றெண்பொரு ளொன்றோ
துளக்கறு வெள்வளையார் தோள்.

(அறநெறி. 211)

623. அங்கொளி விசும்பிற் றோன்று மந்திவா னகட்டுக் கொண்ட
திங்களங் குழவிப் பால்வாய்த் தீங்கதி ரமுத மாந்தித்
தங்கொளி விரிந்த வாம்பல் தாமரை குவிந்த வாங்கே
எங்குளா ருலகில் யார்க்கு மொருவரா வினிய நீரார்.

(சூளா. கலியாண. 205)

## அதி. 60. தெரிந்து வினையாடல்

624. உற்றா னுறாஅ னெனவேண்டா வொண்பொருளைக்
கற்றானை நோக்கியே கைவிடுக—கற்றான்
கிழவ னுரைகேட்குங் கேளா னெனினும்
இழவன் றெருதுண்ட வுப்பு.

(பழமொழி, 38)

625. விட்டுக் கருமஞ் செயவைத்த பின்னரும்
முட்டா தவரை வியங்கொள வேண்டுமால்
தொட்டக்கால் மாழ்குந் தளிர்மேலே நிற்பினும்
கொட்டாமற் செல்லா துளி.

( ,, 279)

626. மடியை வியங்கொள்ளின் மற்றக் கருமம்
முடியாத வாறே முயலும்—கொடியன்னாய்
பாரித் தவனை நலிந்து தொழில்கோடல்
மூரி யெருத்தா னுழவு.

( ,, 389)

627. உடைப்பெருஞ் செல்வத் துயர்ந்த பெருமை
அடக்கமி லுள்ளத்த னாகி—நடக்கையை
ஒள்ளியா னல்லான்மேல் வைத்தல் குரங்கின்கைக்
கொள்ளி கொடுத்து விடல். ( ,, 200)

---

**621.** 11 முளானு. **623.** 4-5 மந்திவான் முகட்டுக்; 10-11 தீஞ்சுவை யமுத; தீங்கதிர் முறுவன்; 18 தாங்கே; 19 எங்குள. **624.** 3 னெனல் வேண்டா; 7 கைவிடுக்க; 12 றெனினும்; 13 இழிவன்; 14 றெதிருண்ட. **625.** 7 வியங்கொளல்; 8 வேண்டுமாம்; 9 தொட்டாக்கால்; 13 தட்டாமற். **626.** 3 மற்றைக்; 10 தவரை; 11-12 வலிந்து வியங்கொள்ளின்; 14 யெருத்தி; 14-15 யுழுதுவிடல். **627.** 8 நடக்கையின்; 10 ரல்லார்மேல்.

628. காட்டிக் கருமங் கயவர்மேல் வைத்தவர்
ஆக்குவ ராற்ற வெமக்கென் றமர்ந்திருத்தல்
மாப்புரை நோக்கின் மயிலன்னாய் பூசையைக்
காப்பிடுதல் புன்மீன் றலை.

(பழமொழி, 128)

629. தமரல் லவரைத் தலையளித்தக் கண்ணும்
அமராக் குறிப்பவர்க் காகாதே தோன்றும்
சுவர்நிலஞ் செய்தமைத்துக் கூட்டியக் கண்ணும்
உவர்நில முட்கொதிக்கு மாறு.

( ,, 144)

630. நாட்டிக் கொளப்பட்டார் நன்மை யிலராயிற்
காட்டிக் களைது மெனவேண்டா—ஓட்டி
இடம்படுத்த கண்ணா யிறக்குமை யாட்டை
உடம்படுத்து வேள்வுண்டா ரில்.

( ,, 39)

631. உழையிருந்து நுண்ணிய கூறிக் கருமம்
புரையிருந்த வாறறியான் புக்கான் விளிதல்
நிரையிருந்து மாண்ட வரங்கினுள் வட்டுக்
கரையிருந் தார்க்கெளிய போர்.

( ,, 86)

632. கட்டுடைத் தாகக் கருமஞ் செயவைப்பிற்
பட்டுண்டாங் கோடும் பரியாரை வையற்க
தொட்டாரை யொட்டாப் பொருளில்லை யில்லையே
அட்டாரை யொட்டாக் கலம்.

( ,, 118)

633. அகந்தூய்மை யில்லாரை யாற்றப் பெருக்கி
இகந்துழி விட்டிருப்பி னஃதால்—இகந்து
நினைந்து தெரியானாய் நீள்கயத்து ளாமை
நனைந்துவா வென்று விடல்.

( ,, 263)

634. ஆணியாக் கொண்ட கருமம் பதிற்றியாண்டும்
பாணித்தே கொள்ப வியங்கொள்ளிற்—காணி
பயவாமைச் செய்வார்யார் தஞ்சாகா டேயும்
உயவாமைச் சேறலோ வில்.

( ,, 308)

635. உறுமக்க ளாக வொருவரை நாட்டிப்
பெறுமாற்ற மின்றிப் பெயர்த்தே யொழிதல்

---

**628.** 6-8 ராற்றவெமக் கென்றே யமர்ந்திருத்தல்; 12 பூச்சையைக். **629.** 1 தரமல்; 5 அமரக்; 7 காகாவே. **630.** 6-7 களைத லெனவேண்டா; 7 மெனல்வேண்டா; 9 இடம்பட்ட; 14 வேள்வேண்டா. **631.** 2 நண்ணிய; 8 விளித்தல்; 9 நிரையிருந்த; 12 விட்டுக். **632.** 7 பகவியரை; 8 வையகத்; 13 பட்டாரை. **633.** 10 தெரியாது, தெரியாத; 11 திண்கயத்து. **634.** 5 பாணியே; 8 காணிற்; 13 உயவாமற்.

சிறுமைக் கமைந்ததோர் செய்கை யதுவே
குறுமக்கள் காவு நடல்.

(பழமொழி, 172)

636. உழுந்த தூஉம் பேணு ரொறுத்தமை கண்டும்
விழைந்தார்போல் தீயவை பின்னருஞ் செய்தல்
தழங்கண் முழவியம்புந் தண்கடற் சேர்ப்ப
முழங்குறைப்பச் சாணீளு மாறு.

( ,, 211)

637. தந்தொழி லாற்றுந் தகைமையார் செய்வன
வெந்தொழில ராய வெகுளிகட்குக் கூடுமோ
மைந்திறை கொண்ட மலைமார்ப ஆகுமோ
நந்துழுத வெல்லாங் கணக்கு.

( ,, 245)

638. வழிப்பட் டவரை வலியராச் செய்தார்
அழிப்பினு மாக்கினு மாகும்—விழுத்தக்க
பையர வல்குற் பணைத்தோளாய் பாத்தறிவென்
மெல்லக் கவுட்கொண்ட நீர்.

( ,, 364)

639. ஊழாயி னாரைக் களைந்திட் டுதவாத
கீழாயி னாரைப் பெருக்குதல்—யாழ்போலுந்
தீஞ்சொல் மழலையாய் தேனர் பலாக்குறைத்துக்
காஞ்சிரை நட்டு விடல்.

( ,, 371)

640. தெற்ற அறிவுடையார்க் கல்லாற் றிறனில்லா
முற்றலை நாடிக் கருமஞ் செயவையார்
கற்றுன் றறிந்து கசடற்ற காலையும்
அற்றதன் பாற்றேம்பல் நன்று.

( ,, 373)

641. பண்டாரம் பல்கணக்குக் கண்காணி பாத்தில்லார்
உண்டா ரடிசிலே தோழனிற்—கண்டாரா
யாக்கைக்குத் தக்க வறிவில்லார்க் காப்படுப்பிற்
காக்கையைக் காப்படுத்த சோறு.

(சிறுபஞ்ச. 39)

642. வான்குரீஇக் கூடரக்கு வாலுலண்டு கோற்புழுத்
தேன்புரிந்த தியார்க்குஞ் செயலாகா—தாம்புரீஇ
வல்லவர் வாய்ப்பன வென்னு ரொரோவொருவர்க்
கொல்காதோ ரொன்று படும்.

( ,, 26)

---

**635.** 14 காஅ. **636.** 3 தொறுத்தமை; 9 தழங்கன்; 13 முழங்குறையச். **637.** 5-6 வெந்தொழிலாய; 13-14 நந்துழிக்கெல்லாங். **638.** 4 செய்தால்; 12 பார்த்துறவென், பாத்துறவென்; 13 மெள்ளக். **639.** 11 தேனுய்; 12 பலாக்குறைந்து; 13 காஞ்சுரை. இதனையடுத்து 'இரும்பனை வெண்டோடு' (781) புறத்திரட்டுச் சுருக்கத்திலுள்ளது. **640.** 1 கொற்ற; 2-4 அறிவுடையார் கல்லாத் திறனில்லார்; 13-14 மற்றதன்பாற் றேம்பாமை. **641.** 6-8 ரடிசில் தொழநிற்பக் கண்டார்யார்; 8 கண்டரா; 13 காக்கைக்குக்; காக்கைக்கா. **642.** 3 வல்லுலண்டு; 4 கோற்றருதல்; 5 தேன்புரிந்; 8 தான்புரீஇ; 12 ரொருவருக்; 13 கொல்காதா.

## அதி. 61. சுற்றந் தழால்

643. மெய்யா வுணரிற் பிறர்பிறர்க்குச் செய்வதென்
ஐயா ரகலல்குற் பைந்தொடி யெக்காலுஞ்
செய்யா ரெனினுந் தமர்செய்வர் பெய்யுமாம்
பெய்யா தெனினு மழை.

(பழமொழி, 109)

644. உளைய வுரைத்து விடினு முறுதி
கிளைகள்வாய்க் கேட்பது நன்றே—விளைவயலுட்
பூமிதித்துப் புட்கலாம் பொய்கைப் புனலூர
தாய்மிதித்த வாகா முடம்.

( ,, 299)

645. அல்ல லொருவர்க் கடைந்தக்கால் மற்றவர்க்கு
நல்ல கிளைக ளெனப்படுவார்—நல்ல
வினைமரபின் மற்றதனை நீக்கு மதுவே
மனைமர மாய மருந்து.

( ,, 53)

646. முன்னின்று ராயினு மூடு மிடர்வந்தாற்
பின்னின்று ராகிப் பிரியா ரொருகுடியார்
பொன்னுச் செயினும் புகாஅர் புனலூர
துன்னினு ரல்லார் பிறர்.

( ,, 66)

647. சேர்ந்தா ரொருவரைச் சேர்ந்தொழுகப் பட்டவர்
தீர்ந்தாராக் கொண்டு தெளியினுந்—தேர்ந்தவர்க்குச்
செல்லாமை காணுக்காற் செல்லும்வா யென்னுண்டாம்
எல்லாம்பொய் யட்டூணே வாய்.

( ,, 213)

648. கூஉய்க் கொடுப்பதொன் றில்லெனினுஞ் சார்ந்தார்க்குத்
தூஉய்ப் பயின்றுரே துன்பந் துடைக்கிற்பார்
வாய்ப்பத்தான் மாழ்கியக் கண்ணும் பெருங்குதிரை
யாப்புள்வே றுகி விடும்.

( ,, 162)

649. பல்கிளையும் பாத்துரு ணுகி யொருவனை
நல்குரவால் வேறுக நன்குணரான்—சொல்லின்
உரையுள் வளவியசொற் சொல்லா ததுபோல்
நிரையுள்ளே யின்று வரைவு.

( ,, 366)

650. வயாவும் வருத்தமு மீன்றக்கால் நோவுங்
கவாஅன் மகற்கண்டு தாய்மறந் தாஅங்

---

**643.** 4 செய்வதெனப். **644.** 10 புட்குலாம்; 13-14 தாய்மிதித் தாகா. **645.** 6-7 கிளைக ணெனப்படுவார். **646.** 9 பொன்றுற்; 11 புகாஅர்ப்; 13 துன்னின்று. **647.** 5 தீர்ந்தாரக்; 9 சொல்லாமை; 11 சொல்லும்வா. **648.** 4 சான்றோர்க்குத், சொன்னோர்க்குத்; 10 வாடியக். **649.** 1 பல் கிளையுட்; 9-10 யுரையுளவையச்சொற்; 14 பின்று.

கசாஅத்தா னுற்ற வருத்த முசாஅத்தன்
கேளிரைக் காணக் கெடும்.

(நாலடி, 201)

651. அழல்மண்டு போழ்தி னடைந்தவர்கட் கெல்லாம்
நிழல்மரம்போல் நேரொப்பத் தாங்கிப்—பழுமரம்போற்
பல்லார் பயன்றுய்ப்பத் தான்வருந்தி வாழ்வதே
நல்லாண் மகற்குக் கடன்.

( ,, 202)

652. பொற்கலத்துப் பெய்த புலியுகிர் வான்புழுக்கல்
அக்காரம் பாலோ டமரார்கைத் துண்டலின்
உப்பிலிப் புற்கை யுயிர்போற் கிளைஞர்மாட்
டெக்கலத் தானும் இனிது.

( ,, 206)

653. அடுக்கல் மலைநாட தற்சேர்ந் தவரை
எடுக்கல மென்னார் பெரியோர்—அடுத்தடுத்து
வன்காய் பலாப்பல காய்ப்பினு மில்லையே
தன்காய் பொறுக்கலாக் கொம்பு.

( ,, 203)

## அதி. 62. பொச்சாவாமை

654. சில்சொற் பெருந்தோள் மகளிரும் பல்வகையுந்
தாளிற் றந்த விழுநிதியும் நாடொறும்
நாத்தளிர்ப்ப வாக்கிய வுண்டியு மிம்மூன்றுங்
காப்பிகழ்த லாகாப் பொருள்.

(திரிகடு. 47)

655. அலைபுனலுள் நிற்பினுந் தாமரை யீன்ற
இலையின்கண் நீர்திவளா வாகும்—நிலையில்
புலங்களுள் நிற்பினும் பொச்சாவா னாயின்
மலங்கடி வாள னவன்.

(அறநெறி. 214)

656. தன்னுடம்பு தாரம் அடைக்கலந் தன்னுயிர்க்கென்
றுன்னித்து வைத்த பொருளோ டிவைநான்கும்
பொன்னினைப் போற்போற்றிக் காத்துய்க்க காவாக்கால்
அன்றே விழுமந் தரும்.

(ஆசார. 95)

657. வண்ணப்பூ மாலை சாந்தம் வாலணி கலன்க ளாடை
கண்முகத் துறுத்தித் தூய்மை கண்டலாற் கொள்ள வேண்டா
அண்ணலம் புள்ளோ டல்லா லாயிரம் பேடைச் சேவல்
உண்ணுநீ ரமுதங் காக்க வூகமொ டாய்க வென்றான்.

(சிந்தா. 1893)

---

**651.** 8 பழமரம்போற்; 12 வாழ்பவே. **652.** 3 புதியுகிர்; 13 டெக்காலத். **653.** 9-10 வன்காய் பலபல; 13 நன்காய். **654.** 3 மகளிரையும்; 7 விருநிதியும்; 13 காப்பிகழ. **655.** 5 அலையின்கண்; 9 புலங்களில். **656.** 4 தன்னுயிர்க்கொன்; 12 வுய்யாக்கால்; 13 நன்றே; 13-15 மன்னிய செல்வங் கெடும். **657.** 23 டாக.

658. அஞ்சனக் கோலி ஞற்று நாகமோ ரருவிக் குன்றிற்
குஞ்சரம் புலம்பி வீழக் கூர்நுனை யெயிற்றிற் கொல்லும்
பஞ்சினு மெல்லி தேனும் பகைசிறி தென்ன வேண்டா
அஞ்சித்தற் காக்க வேண்டு மரும்பொரு ளாக வென்றான்.
(சிந்தா. 1894)

659. பொருந்தலாற் பல்லி போன்றும் போற்றலாற் றாய ரொத்தும்
அருந்தவர் போன்று காத்து மடங்கலா லாமை போன்றும்
திருந்துவேற் றெவ்வர் போலத் தீதற வெறிந்து மின்ப
மருந்தினல் மனைவி யொத்து மதலையைக் காமி னென்றான்.
(,, 1895)

660. இகழ்ச்சி யிற்கெடு வார்களை யெண்ணுக
மகிழ்ச்சி யின்மன மைந்துறும் போழ்தெனப்
புகழ்ச்சி நூலுட் புகன்றனர் பூவினுள்
திகழ்ச்சி சென்றசெம் பொன்முடி மன்னனே.
(சூளா. சீய. 56)

## அதி. 63. செங்கோன்மை

661. எங்கண் ணனைய ரெனக்கருதி னேதமால்
தங்கண்ணே யானுந் தகவில கண்டக்கால்
வன்கண்ண னாகி யொறுக்க வொறுக்கல்லா
மென்கண்ண னாளா னரசு.
(பழமொழி, 322)

662. சால மறைத்தோம்பிச் சான்றவர் கைகரப்பக்
காலை கழிந்ததன் பின்றையும்—மேலைக்
கறவைக்கன் றூர்ந்தானைத் தந்தையு மூர்ந்தான்
முறைமைக்கு மூப்பிளமை யில்.
( ,, 93)

663. முறைதெரிந்து செல்வர்க்கும் நல்கூர்ந் தவர்க்கும்
இறைதிரியா னேரொத்தல் வேண்டும்—முறைதிரிந்து
நேரொழுகா னாயி னதுவா மொருபக்கம்
நீரொழுகப் பாலொழுகு மாறு.
( ,, 206)

664. உரைமுடிவு காணா னிளமையோ னென்ற
நரைமுது மக்க ளுவப்ப—நரைமுடித்துச்
சொல்லால் முறைசெய்தான் சோழன் குலவிச்சை
கல்லாமற் பாகம் படும்.
( ,, 21)

665. செயிரறு செங்கோற் சினவேந்தன் செய்கை
பயிரறு பக்கத்தார் கொள்வர்—துகிர்புரையுஞ்

---

**658**. 13 பஞ்சியின். **659**. 14 றேவர்; 18 பின்பு. **661**. 2 ணினைய; 5-6 தங்கண்ண ரானுந். **662**. 2 மறைந்தோம்பிச்; 6 கழிந்தன; 7 பிற்றையும். **663**. 1 முறைதிரிந்த, முறைதெரிந்த; 5 நிறைதிரியா; 6 னேரொக்க; 8 முறைதெரிந்து; 13 நீரொழுகிப். **664**. 5 நரைமுதிர்; 14 பாதம். **665**. 4 தீமை; 5 பயிரறி; 10-11 முறுவனற் சின்மொழியாய்; 12 செய்யானை.

செவ்வாய் மணிமுறுவற் சின்மொழி செய்தானை
ஒவ்வாத பாவையோ வில்.

(பழமொழி, 226)

666. இறப்பப் பெருகி யிசைபடுவ தல்லாற்
சிறப்பிற் சிறுகுவ துண்டோ அறக்கோலால்
ஆர்வமுஞ் செற்றமும் நீக்கிமற் றியார்கண்ணும்
இன்னாத வேண்டா விகல்வேல் மறமன்னர்
ஒன்னார்க் குயர்த்த படை.

(தகடூர்.)

667. அறம்புரிந்தன் றம்ம வரசிற் பிறத்தல்
துறந்த தொடர்பொடு துன்னிய கேண்மை
சிறந்தார்க்கும் பாடு செயலீயார் தத்தம்
பிறந்தவேல் வென்றிப் பொருட்டு.

( ,, )

668. உறங்கு மாயினு மன்னவன் றன்னொளி
கறங்கு தெண்டிரை வையகங் காக்குமால்
இறங்கு கண்ணிமை யார்விழித் தேயிருந்
தறங்கள் வௌவ அதன்புறங் காக்கலார்.

(சிந்தா. 248)

669. ஆறிலொன் றறமென வருளி னல்லதொன்
றாறுசெய் துலகினு ளுவப்ப தில்லையால்
மாறிநின் றவரையும் வணக்கி னல்லது
சீறிநின் றவருயிர் செகுத்த தில்லையே.

(சூளா. நகர. 19)

670. நாமவேல் நரபதி யுலகங் காக்குநாள்
காமவேள் கவர்கணை கலத்த லல்லது
தாமவேல் வயவர்தங் தழலங் கொல்படை
ஏமநீர் வரைப்பகத் தியைந்த தில்லையே.

(,, 18)

671. குடிமிசை வெய்ய கோலுங் கூற்றமும் பிணியும் நீர்சூழ்
படிமிசை யில்லை யாயின் வானுள்யார் பயிறு மென்பார்
முடிமிசை திவள வேந்தர் முறைமுறை பணிய விம்மி
அடிமிசை யறையுஞ் செம்பொ னதிர்கழ லரச ரேறே.

(,, மந்திர. 31)

672. இருமுந்நீர்க் குட்டமும்
வியன்ஞாலத் தகலமும்
வளிவழங்கு திசையும்
வறிதுநிலைஇய காயமும், என்றாங்
கவையளந் தறியினு மளத்தற் கரியை

**666.** 8 அறக்கோலார்; 15 ரிகல்வேல்; 16 மறமன்னன். 3-ம் அடி பல பிரதிகளில் இல்லை. **667.** 12 தந்தம். **668.** 13-14 தறங்கொள் வேள்வி. **670.** 7-8 கலக்க வல்லது; 10 வலவர்தங்; 15 தியைவ. **671.** 5-6 பிணிநீர் சூழப்; 14 தவள. **672.** 2, 1 இயன்ஞாலத்; 6,2 வீரமும்; 10-11 திருவி லல்லது படையு மறியார்; 14, 3-4 வேட்டே ணல்லது; 19, 2 லறியா; 20, 2-3 யாகலின் மற்றே.

அறிவும் ஈரமும் பெருங்கண் ணோட்டமுஞ்
சோறுபடுக்குந் தீயொடு
செஞ்ஞாயிற்றுத் தெறலல்லது
பிறிதுதெற லறியார்நின் னிழல்வாழ் வோரே
திருவி லல்லது கொலைவி லறியார்
நாஞ்சி லல்லது படையு மறியார்
திறனறி வயவரொடு தெவ்வர் தேயப்
பிறர்மண் ணுண்ணுஞ் செம்மனின் னாட்டு
வயவுறு மகளிர் வேட்டுணி னல்லது
பகைவ ருண்ணா வருமண் ணினையே
அம்புதுஞ்சுங் கடியரணால்
அறந்துஞ்சுஞ் செங்கோலையே
புதுப்புள் வரினும் பழம்புட் போகினும்
விதுப்புற வறியா வேமக் காப்பினை
அனையை யாகன் மாறே
மன்னுயி ரெல்லாம் நின்னஞ் சும்மே.

(புறம், 20)

## அதி. 64. கொடுங்கோன்மை

673. வெண்குடைக்கீழ் வாழுங் குடிகட்கு வேந்தனுஞ்
செங்கோல னல்லனேற் செய்வதென்—பொங்கு
படுதிரைநீர்ச் சேர்ப்பமற் றில்லையே யானை
தொடுவுண்ணின் மூடுங் கலம்.

(பழமொழி, 391)

674. அடைய அடைந்தாரை யல்லவை செய்து
கொடைவேந்தன் கோல்கொடிய னாகிக்—குடிகள்மேற்
கூட்டிறப்பக் கொண்டு தலையளிப்பி னஃதாலச்
சூட்டறுத்து வாயி லிடல்.

(,, 329)

675. கூற்ற முயிர்கொள்ளும் போழ்து குறிப்பறிந்து
மாற்ற முடையாரை யாராயா—தாற்றவும்
முல்லை புரையு முறுவலாய் செய்வதென்
வல்லை யரசாட் கொளின்.

(,, 110)

676. தோற்றத்தாற் பொல்லார் துணையிலார் நல்கூர்ந்தார்
மாற்றத்தாற் செற்றா ரெனவலியா ராட்டியக்கால்
ஆற்றா தவரழுத கண்ணீ ரவரவர்க்குக்
கூற்றமாய் வீழ்ந்து விடும்.

(,, 166)

**673.** 7 செய்வதெவன்; 9 படுதிரைச். **674.** 5 குடைவேந்தன்; 11 தலைபனிப்பி; 12 னஃதன்றே. **675.** 1 கூற்றும்; 3 போழ்துங் 14 யரசர். **676.** 1 தோற்றத்தார்; 3 துணையில; 5 மாற்றத்தார்; 8 ரட்டக்கால்; 12 ரவையவர்க்கு, ரவரவர்.

677. கோணிலை திரிந்து நாழி குறைபடப் பகல்கள் மிஞ்சி
நீணில மாரி யின்றி விளைவஃகிப் பசியும் நீடிப்
பூண்முலை மகளிர் பொற்பிற் கற்பழிந் தறங்கண் மாறி
ஆணையிவ் வுலகு கேடா மரசுகோல் கோடி னென்றான்.

(சிந்தா. 255)

678. நிறையி னீங்கிய மகளிர் நீர்மையும்
பொறையி னீங்கிய தவமும் பொங்கருட்
டுறையி னீங்கிய அறமுந் தொல்லையோர்
முறையி னீங்கிய வரசின் முந்துமே.

(இராமாவ. கிளைகண்டு. 100)

679. தற்பாடு பறவை பசிப்பப் பசையற
நீர்சூற் கொள்ளாது மாறிக் கால்பொரச்
சீரை வெண்டலைச் சிறுபுன் கொண்மூ
மழைகா லூன்று வளவயல் விளையா
வாய்மையுஞ் சேட்சென்று காக்குந் தீதுதரப்
பிறவு மெல்லா நெறிமாறு படுமே
கடுஞ்சினங் கவைஇய காட்சிக்
கொடுங்கோல் வேந்தன் காக்கு நாடே.

(ஆசிரிய.)

## அதி. 65. வெருவந்த செய்யாமை

680. காப்பிறந் தோடிக் கழிபெருஞ் செல்வத்தைக்
கோப்பரியான் கொள்ளிற் கொடுத்திரா தென்செய்வர்
நீத்த பெரியார்க்கே யாயினு மீத்தவை
மேவிற் பரிகார மில்.

(பழமொழி, 320)

681. தீயினம் படர்ந்து வேந்தன் செறுவதே புரியு மாயின்
போயினம் படர்ந்து வாழும் புகலிட மின்மை யாலே
வேயினம் படர்ந்த சாரல் வேங்கையை வெருவிப் புல்வாய்
மாயினம் படர்வ தெல்லாம் வையகம் படரு மன்றே.

(சூளா. மந்திர. 27)

682. நிறந்தலை மயங்க வெம்பி நெடுங்கடல் சுடுவ தாயின்
இறந்தலை மயங்கு நீர்வா ழுயிர்க்கிட ரெல்லை யுண்டே
மறந்தலை மயங்கு செவ்வேல் மன்னவன் வெய்ய னாயின்
அறந்தலை மயங்கி வைய மரும்பட ருழக்கு மன்றே.

( ,, 25)

683. மண்குளிர் கொள்ளக் காக்கு மரபொழிந் தரசர் தங்கள்
விண்குளிர் கொள்ள வோங்கும் வெண்குடை வெதும்பு மாயின்

---

**677.** 5 பகைகள்; 6 விஞ்சி; 11 பசியின்; 24 யென்றான், லென்றான். **678.** 9-10 டுறையு நீங்கிய; 13 முறையு நீங்கிய; 15 வரசு. **679.** 1,1-2 தற்பாடுழவை; 2,1 நற்சூல்; 5,4 தீதுப்; 7,1 கடுஞ்சினை, கதஞ்சினங். **680.** 1 காப்பிகந்; 5 கோப்பெரியான்; 6 கொள்ளக்; 8 தென்செய்வான்; 12 நீத்தவை, மிக்கவை, மிக்கன்று; 13 மேவிப், மேலிற். **682.** 2 மயங்கி, மங்க; 8 பேரு. **683.** 4 மறமொழிந்; 16-17 கடிகயற் றடமுந்.

கண்குளிர் கொள்ளப் பூக்குங் கடிக்கயத் தடமுங் காவும்
தண்குளிர் கொள்ளு மேனுந் தான்மிக வெதும்பு மன்றே.

(சூளா. மந்திர. 26)

684. காய்நெல் லறுத்துக் கவளங் கொளினே
மாநிறை வில்லதும் பன்னாட் காகும்
நூறுசெறு வாயினு மிதித்துப்புக் குணினே
வாய்புகு வதனினுங் கால்பெரிது கெடுக்கும்
அறிவுடை வேந்த னெறியறிந்து கொளினே
கோடி யாத்து நாடுபெரிது நந்தும்
மெல்லியன் கிழவ னாகி வைகலும்
வரிசை யறியாக் கல்லென் சுற்றமொடு
பரிவுதபக் கொள்ளும் பிண்ட நச்சின்
யானை புக்கபுலம் போலத்
தானு முண்ணா னுலகமுங் கெடுமே.

(புறம், 184)

## அதி. 66. கண்ணோட்டம்

685. தெற்றப் பகைவ ரிடர்ப்பாடு கண்டக்கால்
மற்றுங்கண் ணோடுவர் மேன்மக்கள்—தெற்ற
நவைக்கப் படுந்தன்மைத் தாயினுஞ் சான்றோர்
அவைப்படிற் சாவாது பாம்பு.

(பழமொழி, 313)

686. எல்லை யெனவின்றி இன்னாசெய் தாரையும்
ஒல்லை வெகுளா ருலகாண்டு மென்பவர்
சொல்லின் வளாஅய்த்தந் தாணிழற்கீழ்க் கொள்பவே
கொல்லையிற் கூழ்மரமே போன்று.

( ,, 272)

687. கண்ணுக் கணிகலங் கண்ணோட்டங் காமுற்ற
பெண்ணுக் கணிகலம் நாணுடைமை—நண்ணும்
மறுமைக் கணிகலங் கல்வியிம் மூன்றுங்
குறியுடையார் கண்ணே யுள.

(திரிகடு. 52)

688. ஒன்று நரம்பென்கோ வொன்றாத வென்பென்கோ
இன்றசை தானென்கோ யாதென்கோ—மென்றொடையாழ்
பண்ணோட்டு மின்சொற் பணைத்தோளாய் சேர்ந்தவர்பாற்
கண்ணோட்ட மில்லாத கண்.

(பாரதம்)

---

**684.** 2, 3 பலநாட்; 3, 3 (ந்) தமித்துப்புக், 5, 2-3 வேந்தர் நெறி யறிந்து; 6, 2 யார்த்து; 6, 3 நாடுமிக; 9, 1 பரிதபக்; 9, 1-2 பரிவுதவ வெடுக்கும்; 10, 2-3 புக்கபுலம்போல். **685.** 3 ரிடைப்பாடு; 4 கண்டக்கண்; 8-9 தெற்றென் றவைக்கப்; 10 படுநவைய. **686.** 1-2 எல்லையொன் றின்றியே; 3-4 இன்னாத செய்தாரை; 7 ருலகாடு, ருலகாளு; 10 வளாயதந்; 11 தாணிழற்; 13 கொல்லையுட்; 14 கூழ்மரம். **687.** 1 கண்ணிற்; 5 பெண்ணிற்.

689. யாவர் வரினு மெதிரேற்குந் தெய்வமடப்
பாவை யகத்திருந்தும் பாழன்றே—மேவினரைத்
தண்ணார் கரதலத்தாற் றள்ளாவாய்த் தாமுமொரு
கண்ணாகி நிற்கின்ற கண்.

(பாரதம்)

690. வெண்மை கருமை விரிசெம்மை நீண்மைவனப்
பொண்மை யிவற்றோன் றொழித்தேனுங்—கண்மையினை
வையாது மாந்தர் மயில்போ லெனத்தனது
கையா லிறைவகுத்தான் கண்.

( ,, )

## அதி. 67. ஒற்றாடல்

691. எள்ளப் படுமரபிற் றாகலு முள்பொருளைக்
கேட்டு மறவாத கூர்மையு முட்டின்றி
உள்பொருள் சொல்லு முணர்ச்சியு மிம்மூன்றும்
உள்ளதே யொற்றாட் குணம்.

(திரிகடு. 85)

692. அருமறை காவாத நட்பும் பெருமையை
வேண்டாது விட்டொழிந்த பெண்பாலும் யாண்டானுஞ்
செற்றங்கொண் டாடுஞ் சிறுதொழும்பு மிம்மூவர்
ஒற்றா ளெனப்படு வார்.

( ,, 55)

693. ஒற்றினா னொற்றிப் பொருடெரிதல் முன்னினிதே
முற்றான் றெரிந்து முறைசெய்தல் முன்னினிதே
பற்றிலனாய்ப் பல்லுயிர்க்கும் பாத்துற்றுப் பாங்கறிதல்
வெற்றிவேல் மன்னர்க் கினிது.

(இனிய. 35)

694. ஒற்றர் தங்களை யொற்றரி னாய்தலும்
கற்ற மாந்தரைக் கண்ணெனக் கோடலுஞ்
சுற்றஞ் சூழ்ந்து பெருக்கலுஞ் சூதரோ
கொற்றங் கொள்குறிக் கொற்றவர்க் கென்பவே.

(சிந்தா. 1921)

## அதி. 68. ஊக்க முடைமை

695. இசையு மெனினு மிசையா தெனினும்
வசைதீர வெண்ணுவர் சான்றோர்—விசையின்
நரிமா வுளங்கிழித்த வம்பினிற் றீதோ
அரிமாப் பிழைப்பெய்த கோல்.

(நாலடி, 152)

---

**689.** 7 பாடின்றே; 8 - 11 மேவினர்மேற் றண்ணாருங் கண்ணோட்ட மின்மையாய்த்; 11 தள்ளலாய்த். **690.** 6-7 யிவற்றி னமைந்ததெனுங்; 11-12 மயிலேபோ லத்தமது; 15 காண். **691.** 3 றாகியு; 5 கெட்டு; 9 உள்ள பொருள்; 13 ஒள்ளிய. **693.** 9 பற்றினாய்ப்; 11 பார்த்துற்றுப்; 13 வெற்ற வேல். **694.** 3 யொற்றின; 8 (ச்) சேர்தலுஞ்; 14 கொள்குறிற். **695.** 10 வுரல்கிழித்த.

696. எமக்குத் துணையாவார் யாவரென் றெண்ணித்
தமக்குத் துணையாவார்த் தாந்தெரிதல் வேண்டா
பிறர்க்குப் பிறர்செய்வ துண்டோமற் றில்லைத்
தமக்கு மருத்துவர் தாம். (பழமொழி, 56)

697. வன்சார் புடைய ரெனினும் வலிபெய்து
தஞ்சார்பி லாதாரைத் தேசூன்ற லாகுமோ
மஞ்சுசூழ் சோலை மலைநாட யார்கண்ணும்
அஞ்சுவார்க் கில்லை யரண். ( ,, 254)

698. அருவிலை மாண்கலனு மான்ற பொருளுந்
திருவுடைய ராயின் றிரிந்தும் வருமால்
பெருவரை நாட பிரிவின் றதனால்
திருவினுந் திட்பமே நன்று. (,, 136)

699. ஊக்க முரண்மிகுதி யொன்றிய நற்சூழ்ச்சி
ஆக்க மிவன்க ணகலாவால்—வீக்கம்
நகப்படா வென்றி நலமிகு தாராற்
ககப்படா வில்லை யரண். (வெண்பா. 100)

700. விளைபதச் சீறிடம் நோக்கி வளைகதிர்
வல்சி கொண்டளை மல்க வைக்கும்
எலிமுயன் றனைய ராகி யுள்ளதம்
வளன்வலி யுறுக்கு முளமி லாளரொ
டியைந்த கேண்மை யில்லா கியரோ
கடுங்கட் கேழ லிடம்பட வீழ்ந்தென
அன்றவ ணுண்ணு தாகி வழிநாட்
பெருமலை விடரகம் புலம்ப வேட்டெழுந்
திருங்களிற் றொருத்தல் நல்வலம் படுக்கும்
புலிபசித் தன்ன மெலிவி லுள்ளத்
துரனுடை யாளர் கேண்மையொ
டியைந்த வைக லுளவா கியரோ.

(புறம், 190)

## அதி. 69. தாளாண்மை*

701. இனியாரு மில்லாதா ரெம்மிற் பிறர்யார்
தமியெம்யா மென்றொருவர் தாமடியல் வேண்டா
முனிவில ராகி முயல்க முனியாதார்
முன்னிய தெய்தாத தில். (பழமொழி, 161)

---

**696.** 2 துணையாவர்; 3 வேண்டுமென்; 7 தாந்தெளிதல். **697.** 5-6 தஞ்சார மில்லாரைத்; 7 தேசுறுத்த; 12 யார்க்கானும். **698.** 3 மாணுப், மாணுப்; 7 திரித்தும், திரிந்து; 11-12 பிறாது தன்றாற்; 14-15 திட்பம் பெறும். **699.** 2 முணர்மிகுதி; 4 நாட்சூழ்ச்சி; 12 தாரார்க்; 14 தில்லை. **700.** 1,4 விளைகதிர்; 4, 2 யறுக்கு; 7, 3 தாகும்; 8, 3 சிலம்ப; 10, 4 னுள்ளத்; 12, 4 குகவே. * மடியின்மை. **701.** 4 பலரால்; 5 தனியேம்யா; 7 தாண்முனியல், தாமுனியல்; 12 முனிவில்லார்; 14-15 தெய்தாமை யில்.

702. வேளாண்மை செய்து விருந்தோம்பி வெஞ்சமத்து
வாளாண்மை யானும் வலியராய்த்—தாளாண்மை
தாழ்க்கு மடிகோ ளிலராய் வருந்தாதார்
வாழ்க்கை திருந்துத லின்று.

(பழமொழி, 175)

703. வீங்குதோட் செம்பியன் சீற்றம் விறல்விசும்பிற்
றூங்கு மெயிலுந் தொலைத்தலான்—ஆங்கு
முடியுந் திறத்தான் முயல்கதாங் கூரம்
படியிழுப்பி னில்லை யரண்.

( ,, 49)

704. ஆடுகோ டாகி யதரிடை நின்றதூஉம்
காழ்கொண்ட கண்ணே களிறணைக்குங் கந்தாகும்
வாழ்தலு மன்ன தகைத்தே யொருவன்றான்
தாழ்வின்றித் தன்னைச் செயின்.

(நாலடி, 192)

705. உறுபுலி யூனிரை யின்றி யொருநாட்
சிறுதேரை பற்றியுந் தின்னும்—அறிவினாற்
காற்றொழி லென்று கருதற்க கையினான்
மேற்றொழிலு மாங்கே மிகும்.

(,, 193)

706. நல்ல குலமென்றுந் தீய குலமென்றும்
சொல்லள வல்லாற் பொருளில்லைத்—தொல்சிறப்பின்
ஒண்பொரு ளொன்றோ தவங்கல்வி யாள்வினை
என்றிவற்றா னாகுங் குலம்.

( ,, 195)

707. கோளாற்றக் கொள்ளாக் குளத்தின்கீழ்ப் பைங்கூழ்போற்
கேளீவ துண்டு கிளைகளோ துஞ்சுக
வாளாடு கூத்தியர் கண்போற் றடுமாறுந்
தாளாளர்க் குண்டோ தவறு.

( ,, 191)

708. இசையா தெனினு மியற்றியோ ராற்றான்
அசையாது நிற்பதா மாண்மை—இசையுங்கால்
கண்டல் திரையலைக்குங் கானலந் தண்சேர்ப்ப
பெண்டிரும் வாழாரோ மற்று.

( ,, 194)

709. கண்டதே செய்பவாங் கம்மிய ருண்டெனக்
கேட்டதே செய்ப புலனுள்வார் வேட்ட
இனியவே செய்ப வமைந்தார் முனியாதார்
முன்னிய செய்யுந் திரு. (நான்மணி. 39)

**702.** 7 வலியார்தந். **703.** 2 செம்பியன்றன்; 13 படியிருப்பி, பிடியிருப்பி. **704.** 11 தொகைத்தே. **705.** 1 உறும்புலி; 6 பீறியுந்; 10 லென்றே. **706.** 13 என்றவற்றா. **707.** 1 கோளாற்றுக்; 6 துண்டோ; 13 தாடாளர்க். **708.** 13 பெண்டிரோ. **709.** 2 செய்வதாங், செய்வராங்; 6 செய்வர்; 8 வேட்ப, பெட்ட, பெட்ப.

710. உள்ளமுடை யான்முயற்சி செய்யவொரு நாளே
வெள்ளநிதி வீழும்வினை யாததனி னில்லைத்
தொள்ளையுணர் வின்னவர்கள் சொல்லின்மடி கிற்பின்
எள்ளுநர்கட் கேக்கழுத்தம் போலவினி தன்றே.
(சிந்தா. 496)

## அதி. 70. இடுக்க ணழியாமை

711. நனியஞ்சத் தக்கவை வந்தக்கால் தங்கண்
துனியஞ்சார் செய்வ துணர்வார்—பனியஞ்சி
வேழம் பிடிதழூஉம் வேய்சூழ் மலைநாட
ஊழம்பு வீழா நிலத்து.
(பழமொழி, 265)

712. விலங்கிவில் லுமிழும் பூணன் விழுச்சிறைப் பட்ட போழ்தும்
அலங்கலந் தாரி னுன்வந் தருஞ்சிறை விடுத்த போழ்தும்
புலம்பலு மகிழ்வும் நெஞ்சிற் பொலிதலு மின்றிப் பொன்னூர்ந்
துலங்கலந் துயர்ந்த தோளா னூழ்வினை யென்று விட்டான்.
(சிந்தா. 1167)

713. இடுக்கண்வந் துற்ற காலை யெரிகின்ற விளக்குப் போல
நடுக்கமொன் றானு மின்றி நகுகதான் நக்க போழ்தவ்
விடுக்கணை யரியு மெஃகா மிருந்தழு தியாவ ருய்ந்தார்
வடுப்படுத் தென்னை யாண்மை வருபவந் துறுங்க ளன்றே.
( ,, 509)

714. சாதலும் பிறத்தல் தானுந் தம்வினைப் பயத்தி னாகும்
ஆதலு மழிவு மெல்லா மவைபொருட் கியல்பு கண்டாய்
நோதலுந் தணிவு மெல்லாம் நுண்ணுணர் வின்மை யன்றே
பேதைநீ பெரிதும் பொல்லாய் பெய்வளைத் தோளி யென்றான்.
( ,, 269)

715. பிரிந்தவர்க் கிரங்கிப் பேதுற் றழுதநங் கண்ணி னீர்கள்
சொரிந்தவை தொகுத்து நோக்கிற் றொடுகடல் வெள்ள மாற்றா
முரிந்தநம் பிறவி மேனாள் முற்றிழை யின்னும் நோக்காய்
பரிந்தழு வதற்குப் பாவா யடியிட்ட வாறு கண்டாய்.
( ,, 1391)

716. மயற்கையிம் மக்கள் யோனிப் பிறத்தலும் பிறந்து வந்தீங்
கியற்கையே பிரிவு சாத லிமைப்பிடைப் படாத தொன்றாற்
கயற்கணி னளவுங் கொள்ளார் கவற்சியுட் கவற்சி கொண்டார்
செயற்கையம் பிறவி நச்சுக் கடலகத் தழுந்து கின்றார்.
( ,, 1393)

---

**710.** 10 வில்லவர்கள்; 12 கற்பின். **711.** 1 நணியஞ்சத்; 2 - 3 தக்க வவைவந்தால்; 7 துணரார்; 10 பிடிகழூஉம். **713.** 12 போதவ்; 22 வருவவந். **714.** 8 (ம்) பிறவு, மிழவு, மவையு. **715.** 4 றழுததங்; 5 - 6 கண்ணுணீர்கள், கண்ணுநீர்கள்; 8 தொகுத்த; 10 றொழுகடல்; 13 பிறந்தநம்; 20 தவற்குப். **716.** 1 மயக்கியிம்; 10 லியைப்பிடைப்; 10-11 லிமைப்பிடை விடாத; 13-14 கயற்கணீ ரளவுங்; 19-20 செயற்கையும் பிரிவு.

717\. பிறங்கின கெடுங்கள் யாவும் புணர்ந்தவர் பிரிவர் பேசின்
இறங்குபு வீழ்ழ மேலா லோங்கின வெண்ணில் யோனி
பிறந்தவர் சாவர் செத்தார் பிறப்பவே யென்ன நோக்கிக்
கறங்கிசை வண்டு பாடுங் கோதைநீ கவல லென்றாள்.
(சிந்தா. 1535)

718\. தொல்லைநம் பிறவி யெண்ணிற் றெடுகடல் மணலு மாற்றா
எல்லைய வவற்று ளெல்லாம் ஏதிலம் பிறந்து நீங்கிச்
செல்லுமக் கதிகள் தம்முட் சேரலஞ் சேர்ந்து நின்ற
இல்லினு ளிரண்டு நாளைச் சுற்றமே யிரங்கல் வேண்டா.
( ,, 270)

719\. அன்பினி னவலித் தாற்றா தழுவது மெளிது நங்கள்
என்பினி னுவி சோர விறுவது மெளிது சேர்ந்த
துன்பத்தாற் றுகைக்கப் பட்டார் துகைத்தவத் துன்பந் தாங்கி
இன்பமென் றிருத்தல் போலு மரியதிவ் வுலகி னென்றாள்.
( ,, 1392)

720\. மன்னுநீர் மொக்கு ளொக்கு மன்னுயி ரிளமை யின்பம்
மின்னினொத் திறக்குஞ் செல்வம் வெயிலுறு பனியி னீங்கும்
இன்னிசை யிரங்கு நல்யா ழிசையினு மினிய சொல்லாய்
அன்னதான் வினையி னுக்க மழுங்குவ தென்னை யென்றாள்.
( ,, 1537)

721\. தேன்சென்ற நெறியுந் தெண்ணீர்ச் சிறுதிரைப் போர்வை போர்த்து
மீன்சென்ற நெறியும் போல விழித்திமைப் பவர்க்குந் தோன்றா
மான்சென்ற நோக்கின் மாதே மாய்ந்துபோ மக்கள் யாக்கை
ஊன்சென்று தேயச் சிந்தித் துருவதோ தகுவ தென்றாள்.
( ,, 1390)

722\. மதியினை மலரச் சூழ்ந்து வருந்தித்தாம் படைக்கப் பட்ட
நிதியினை நுகர்வ லென்று நினைந்தினி திருந்த போழ்தில்
பதியினைக் கலக்கிச் சென்று பறித்துயிர் பிறர்க்கு நீட்டும்
விதியினை விலக்க மாட்டார் மெலிபவே வெளிய நீரார்.
(சூளா. சீய. 96)

723\. மறிப மறியு மலிர்ப மலிரும்
பெறுப பெறும்பெற் றிழப்ப விழக்கும்
அறிவ தறிவா ரழுங்கா ருவவார்
உறுவ துறுமென் றுரைப்பது நன்று. (குண்டல.)

724\. வேரிக் கமழ்தா ரரசன்விடு கென்ற போழ்துந்
தாரித்த லாகா வகையாற்கொலை சூழ்ந்த பின்னும்
பூரித்தல் வாடுதலென் றிவற்றாற்பொலி வின்றி நின்றான்
பாரித்த தெல்லாம் வினையின்பய னென்ன வல்லான். ( ,, )

---

**717.** 4 புரிந்தவர்; 5 மறிவர். **718.** 23 யிரங்க. **719.** 2-4 (ன்) வலித் தாற்றா நின்றழுவது; 4 நின்றது; 9 நீங்க. **720.** 4 மானுய; 20 விளையி. **721.** 4 செறிதிரைப்; 9 வானில்; 12 தோன்ற. **722.** இதுவும் அடுத்ததும் தம்முள் மாறியுள்ளன. 10 நினைத்தினி; 13 மதியினைக்; 16 பறித்தது; 22 மெலிவவே; 23 வெறிய. **723.** 3-4 மாலிபமலிறும்; மாலிபலிறும்; 10 தறியா. **724.** 4 கின்ற; 6 தாரிக்க; 19 மென்ன.

725. எய்த வின்னல் வந்த போழ்தில் யாவ ரேனும் யாவையுஞ்
செய்ய வல்ல ரென்று கொள்க சேணெ றிக்க ணேகிட
மைய கண்ணி செய்ய பாதம் வல்ல வாய மற்றிவன்
கைக ளின்று பன்ன சாலை கட்ட வல்ல வாயவே.

(இராமாவ. ?)

## அதி. 71. அமைச்சு

726. ஐயறிவுந் தம்மை யடைய வொழுகுதல்
எய்துவ தெய்தாமை முற்காத்தல்—வைகலும்
மாறேற்கு மன்னர் நிலையுணர்த லிம்மூன்றும்
வீறுசால் பேரமைச்சர் கோள்.

(திரிகடு. 61)

727. குடியோம்பல் வன்கண்மை நூல்வன்மை கூடம்
மடியோம்பு மாற்ற லுடைமை—முடியோம்பு
நாற்றஞ் சுவைவெஃகி நல்லா ரினஞ்சேர்தல்
தேற்றானேற் றேறு மமைச்சு.

(ஏலாதி, 17)

728. தன்னிலையுந் தாழாத் தொழினிலையுந் துப்பெதிர்ந்தார்
இன்னிலையு மீடி னியனிலையுந்—துன்னி
அளந்தறிந்து செய்வா னமைச்சனும் யாதும்
பிளந்தறியும் பேராற்ற லான்.

(சிறுபஞ்ச. 57)

729. செறிவுடைத் தார்வேந்தன் செவ்விமா றாமல்
அறிவுடையா ரவ்வியமுஞ் செய்ப—வறிதுரைத்துப்
பிள்ளை களைமருட்டுந் தாயர்போ லம்புவிமேல்
ஒள்ளியகாட் டாளர்க் கரிது.

(பழமொழி, 323)

730. உலப்பி லுலகத் துறுதியே நோக்கிக்
குலைத்தடக்கி நல்லறங் கொள்ளார்க் குறுத்தல்
மலைத்தழு துண்ணாக் குழவியைத் தாயர்
அலைத்துப்பால் பெய்து விடல்.

( ,, 212)

731. வடந்தவழ் முலையி னார்தங் காமத்தின் மதர்த்த மன்னர்க்
கடைந்தவர் மாண்பு மாங்கொன் றில்லையே லரச வாழ்க்கை
கடந்தவழ் கடாத்து வேழங் களித்தபின் கல்வி மாணா
மடந்தவ மொருவன் மேல்கொண் டன்னதோர் வகையிற் றாமே.

(சூளா. மந்திர. 13)

---

**725.** 12-13 செங்நெறிக்க; 21 மற்றவன்; 23 ணின்று. இஃது இராமாவதாரத்துள் காணப்பெறவில்லை. **726.** 1 ஐயறிவு; 11 நிலையறித; 13 சீரேற்ற; 15 செய்கை. **727.** 4 கூடி; 10 சுவைகேள்வி; 14 றேற்று. **728.** 1 தொன்னிலையுந். **729.** 3-4 செவ்வியல பெற்றால்; 6 ரவ்வியஞ்; 7 செய்வர்; 8 அறிவுரைத்துப்; 12 லம்புலிமேல்; 13 உள்ளியகாட், எள்ளியகாட்; 14 டாளற். **730.** 3 துறுதியை; 8 கொளுத்தல். **731.** 1 வடந்திகழ்; 19 தடந்தவ; 20 லொருவன், ஞொருவன்.

732. தன்னுணர் பொறிப்புலன் பிறர்கண் கூடென
இன்னண மிருவகைத் திறைவர் வாழ்க்கைதான்
தன்னுணர் பொறிப்புலந் தன்னி னாம்பிறி
தின்னண மியற்றுகென் றமைச்ச ரேவுவார். (சூளா.இரதநூ. 115)

733. வீங்குநீ ருலகங் காக்கும் விழுநுக மொருவ னாலே
தாங்கலாந் தகைமைத் தன்று தளையவிழ் தயங்கு தார்ச்சீர்ப்
பாங்கலார் பணியச் சூழும் நூல்வலார் பாக மாகப்
பூங்குலா மலங்கல் மாலைப் புரவலன் பொறுக்கு மன்றே.
(,, மந்திர. 7)

734. எடுத்தத னிலங்கு சோதி யெழிலொடு திகழு மேனும்
அடுத்ததன் நிறத்த தாகு மணிகிளர் பளிங்கு போல
வடுத்தவ மணந்த நுண்ணூல் மதியவர் வினைய மாட்சி
கொடுத்தத னிலைமை மன்னர் குணங்களாக் கொள்ப வன்றே.
(,, 15)

735. தண்ணிய தடத்தவே யெனினுந் தாமரை
விண்ணியல் கதிரினால் விரியும் வேந்தரும்
புண்ணியப் பொதும்பரே பொருந்தி வைகினுங்
கண்ணிய புலவரா லலர்தல் காண்டுமே.
(,, இரதநூ. 116)

736. சுற்றுநின் றெரியுஞ் செம்பொன் மணிமுடி சுடரச் சூடி
வெற்றவெண் குடையி னீழல் வேந்தன்வீற் றிருக்கு மேனும்
மற்றவன் மனமுங் கண்ணும் வாழ்க்கையும் வலியுஞ் சால்பும்
அற்றமில் புகழுங் கோலு மாபவ ரமைச்ச ரன்றே.
(,, மந்திர. 6)

737. அற்றமின் றுலகங் காக்கு மருந்தொழில் புரிந்து நின்றான்
கற்றவர் மொழிந்த வாறு கழிப்பது கடன தாகும்
மற்றவர்க் குறுதி நோக்கி வருபழி வழிகள் தூரச்
செற்றவர்ச் செருக்குஞ் சூழ்ச்சி தெருண்டவர் கண்ட தன்றே.
(,, 8)

738. செறிந்தவர் தெளிந்த நூலாற் சிறந்தன தெளிந்து சொன்னால்
அறிந்தவை யமர்ந்து செய்யு மமைதியா னரச னாவான்
செறிந்தவர் தெளிந்த நூலாற் சிறந்தன தெரிந்து கூறி
அறிந்தவை யாற்ற கிற்கு மமைதியா னமைச்ச னாவான்.
(,, 9)

739. சுந்தரச் சுரும்புண் கண்ணிச் சூழ்கழ லரசர் வாழ்க்கை
தந்திர மறிந்து சூழ்வான் சூழ்ச்சிய தமையல் வேண்டும்
மந்திரம் வழுவு மாயின் வாளெயிற் றரவு காய்ந்து
தந்திரந் தப்பினாற்போற் றன்னையே தபுக்கு மன்றே. (,, 14)

---

**732.** 6 விருவகைத்; 7 துறவர்; 12-13 னாம்பிற கின்னண, னாம்பிற னின்னண. **733.** 12 ததவவு; 16 நூலவர். **734.** இது சில பிரதிகளில் இல்லை. **735.** 5 விண்ணுயர். **736.** 1 முற்றுநின்; 6 சூட்டி; 7 வெற்றிவெண்; 13 மற்றவர்; 22 மாள்பவ, மாய்பவ. **737.** 1 - 2 அற்றமி லுலகங்; 5 புரிந்து; 16 வரும்வழி; 17-18 வழிகண் ரேச். **738.** 13 செறிந்தவை; 15 நூலார்; 16 செறிந்தன; 17 தெரிந்த. **739.** 5 லமைச்சர்; 23 தாக்கு.

740. மாலமர் நெடுங்கடல் மதலை பற்றிலாக்
காலமைந் தொழுகுமேற் கரையுங் காணுமே
நூலமர் நுழைவொடு நுழைந்து செல்லுமேல்
வேலவ ரொழுக்கமும் வேலை காணுமே.

(சூளா. இரதநூ. 117)

741. நீதி யாலறுத் தந்நிதி யீட்டுதல்
ஆதி யாய வரும்பகை நாட்டுதல்
மோதி முள்ளொடு முட்பகை கண்டிடல்
பேது செய்து பிளந்திடல் பெட்டதே.

(சிந்தா. 1920)

742. ஆயிரங் கதிருடை யருக்கன் பாம்பினால்
ஆயிரங் கதிரொடு மழுங்கக் கண்டுகொல்
ஆயிரங் கண்ணுடை யமரர் கோனுமோ
ராயிர மமைச்சர்சொல் வழியி னையதே.

(சாந்தி.)

743. உற்றது கொண்டு மேல்வந் துறுபொரு ளுணர்வா ருற்றால்
மற்றது வினையின் வந்த தாயினு மாற்ற லாற்றும்
பெற்றியர் பிறப்பின் மேன்மைப் பெரியவ ரரிய நூலுங்
கற்றவர் மான நோக்கிற் கவரிமா வனைய நீரார்.

(இராமாவ. மந்திர. 7)

744. நல்லவுந் தீயவு நாடி நாயகற்
கெல்லையின் மருத்துவ ரியல்பி னெண்ணுவார்
ஒல்லைவந் துறுவன வுற்ற பெற்றியிற்
றொல்லைநல் வினையென வுதவுஞ் சூழ்ச்சியார்.

( ,, 10)

745. தம்முயிர்க் குறுதி யெண்ணார் தலைமகன் வெகுண்ட போதும்
வெம்மையைத் தாங்கி நீதி விடாதுநின் றுரைக்கு மெய்யர்
செம்மையிற் றிறம்பல் செல்லாத் தேற்றத்தார் தெரியுங் கால
மும்மையு முணர வல்லா ரொருமையே மொழியு நீரார்.

( ,, 9)

## அதி. 72. சொல்வன்மை

746. கேட்பாரை நாடிக் கிளக்கப் படும்பொருட்கண்
வேட்கை யறிந்துரைப்பர் வித்தகர்—வேட்கையால்
வண்டு வழிபடரும் வாட்கண்ணாய் தோற்பன
கொண்டு புகாஅ ரவை.

(பழமொழி, 4.)

---

**740.** 4 யாசிலாக்; 12 செல்வரேல், வெல்லுமேல்; 16 நண்ணுமே. **741.** 2 யான்மறுத்; 3 தன்னிதி, திந்நிதி, தன்னெதி; 11 முட்புடை; 12 கொண்டிடல்; 14 பெய்து. **742.** 7 (ம்) விழுங்கக்; 15 வழிய; 16 னைனதே. **743.** 6 னுற்றால்; 12 வாற்றும். **744.** 4 நாயகர்க். **745.** 3 யெண்ணாத்; 8 தாங்க; 12 மெய்யார்; 14 றப்பல்; 16 தேற்றத்தால்; 18 காலை; 20-21 முடைய ரல்லா; 22 ரொருமையை. **746.** 3 கிளத்தப்; 6 யறிந் துரைப்ப; 12 தோற்பது.

747. நல்லவுந் தீயவு நாடிப் பிறருரைக்கும்
நல்ல பிறவு முணர்வாரைக் கட்டுரையின்
வல்லிதி னாடி வலிப்பதே புல்லத்தைப்
புல்லம் புறம்புல்லு மாறு.

(பழமொழி, 104)

748. துன்னி யிருவர் தொடங்கிய மாற்றத்திற்
பின்னை யுரைக்கப் படற்பாலான்—முன்னி
மொழிந்தால் மொழியறியான் கூறல் முழந்தாள்
கிழிந்தானை மூக்குப் பொதிவு.

( ,, 347)

749. ஒருவ ருரைப்ப வுரைத்தா லதுகொண்
டிருவரா வாரும் எதிர்மொழியற் பாலா
பெருவரை நாட சிறிதேனு மின்னா
திருவ ருடனாடல் நாய்.

( ,, 352)

750. மாற்றத்தை மாற்ற முடைத்தலான் மாற்றவர்க்
காற்றும் வகையா னவர்க்களைய வேண்டுமே
வேற்றுமை யார்க்குமுண் டாதலா னாற்றுவான்
நூற்றுவரைக் கொண்டு விடும்.

( ,, 369)

751. விரைந்துரையார் மேன்மே லுரையார்பொய் யாய
பரந்துரையார் பாரித் துரையார்—ஒருங்கெனைத்துஞ்
சில்லெழுத்தி னானே பொருளடங்கக் காலத்தாற்
சொல்லுக செவ்வி யறிந்து.

(ஆசார. 76)

752. மயிர்வனப்புங் கண்வவ்வு மார்பின் வனப்பும்
உகிர்வனப்புங் காதின் வனப்புஞ்—செயிர்தீர்ந்த
பல்லின் வனப்பும் வனப்பல்ல நூற்கியைந்த
சொல்லின் வனப்பே வனப்பு.

(சிறுபஞ்ச. 36)

753. சாவ தெளிதரிது சான்றாண்மை நல்லது
மேவ லெளிதரிது மெய்யோர்த்தல்—ஆவதன்கண்
சேற லெளிது நிலையரிது தெள்ளியரா
வேற லெளிதரிது சொல்.

(ஏலாதி, 39)

---

**747.** 7 முணரவரைக்; 8 கண்டுரையின்; 11வலப்பதே. **748.** 10மொழியான; 11 கூடல்; 13 கழிந்தானை. **749.** 2 ருவப்ப; 5-6 டிருவர வானும்; 6-8 வானும் எதிர்மொழியற் பாலான்; 7-8 எதிர்மொழியற் பாலர்; 9 பொருவரை; 11 சிறிதெனினு; 12 மன்னா; 14 ருடன்விட்ட. **750.** 4 மற்றவர்க்; 6 பகையா; 7 னவாகளைய; 9 வேற்றுடை; 12 னாற்றவர்; 14 கொன்று. **751.** 1 விரிந்துரையார்; 8 நெருங்கினைத்துஞ், ஒருங்கனைத்துஞ். **752.** 2 கண்கவரு, கண்வனப்பு; 6 காலின்; 12 நூற்கிசைந்த, நூற்கியைந்தோர். **753.** 7 மெய்யோர்தல், மெய்போர்த்தல்; 10 லரிது; 11 நிலைதிரியா; 12 தெள்ளியர்; 12 - 13 தெள்ளியார்த் தேற.

754. நுண்மொழி நோக்கிப் பொருள்கொளலும் நூற்கேலா
வெண்மொழி வேண்டினுஞ் சொல்லாமை—நன்மொழியைச்
சிற்றின மல்லார்கட் சொல்லலு மிம்மூன்றும்
கற்றறிந்தார் பூண்ட கடன்.

(திரிகடு. 32)

755. பொழிப்பகலம் நுட்பநூ லெச்சமிந் நான்கிற்
கொழித்தகலங் காட்டாதார் சொற்கள்—பழிப்பில்
நிரையாமா சேக்கு நெடுங்குன்ற நாட
உரையாமோ நூலிற்கு நன்கு.

(நாலடி, 319)

756. சொல்லுங்காற் சொல்லின் பயன்காணுந் தான்பிறர்
சொல்லிய சொல்லை வெலச்சொல்லும் பல்லார்
பழித்தசொற் றீண்டாமற் சொல்லும் விழுத்தக்க
கேட்டார்க் கினியவாச் சொல்லானேற் பூக்குழலாய்
நல்வய லூர னறுஞ்சாந் தணியகலம்
புல்லலி னூட லினிது.

(தகடூர்.)

## அதி. 73. வினைசெயல்வகை

757. மறையா தினிதுரைத்தல் மாண்பொரு ளீதல்
அறையா னகப்படுத்துக் கோடல்—முறையால்
நடுவணுச் சென்றவரை நன்கெறித லல்லால்
ஒடியெறியத் தீரா பகை.

(பழமொழி, 387)

758. தெள்ளி யுணருந் திறனுடையார் தம்பகைக்
குள்வாழ் பகைவர்ப் பெறுத லுறுதியே
கள்ளினாற் கள்ளறுத்தல் காண்டும் அதுவன்றே
முள்ளினால் முட்களையு மாறு.

( ,, 54)

759. யானுமற் றிவ்விருந்த வெம்முன்னு மாயக்கால்
ஈனஞ் செயக்கிடந்த தில்லென்று—கூனற்
படைமாறு கொள்ளப் படைதீண்ட லஃதே
இடைநாய்க் கெலும்பிடு மாறு.

( ,, 73)

760. தன்னலி கிற்பான் தலைவரிற் றானவற்குப்
பின்னலி வானைப் பெறல்வேண்டும்—என்ன தூஉம்
வாய்முன்ன தாக வலிப்பினும் போகாதே
நாய்பின்ன தாகத் தகர்.

( ,, 156)

---

**754.** 1 வண்மொழி; 11 சொல்லுதலு, செல்லலு; 13 கற்றறிந்தான். **755.** 3-4 லெச்சமென் றூற்ற; 9 நிரையமா, நரையாமா; 13 உரையாயே. **756.** தகரேமாலை. 14 கினியவை; 23 லரிது. **757.** 4 ளாதல்; 7 கொண்டான், கொண்டன்; 9 நடுவனுச்; 11-12 நன்கெறியினல்லால்; 14 தீராப். **758.** 6 பகைவாய்; 7 பொறுத்த. **759.** 4 மாயத்தால்; 8 கூர்நற்; 13 நடைநாய்க்; 13-14 இடைநாயிற் கென்பிடு. **760.** 4 றானவர்க்குப்.

761. ஆண முடைய வறிவினார் தந்நல
மாணு மறிவி னவரைத் தலைப்படுத்தல்
மானமர் கண்ணாய் மறங்கெழு மாமன்னர்
யானையால் யானையாத் தற்று.

(பழமொழி, 223)

762. தெருளா தொழுகுந் திறனிலா தாரைப்
பொருளா னறுத்தல் பொருளே—பொருள்கொடுப்பப்
பாணித்து நிற்கிற்பார் யாருளரோ வேற்குத்திற்
காணியின் குத்தே வலிது.

( ,, 32)

763. மெய்ந்நீர ராகி விரியப் புகுவார்க்கும்
பொய்ந்நீர ராகிப் பொருளை முடிப்பார்க்கும்
எந்நீர ராயினு மாக அவரவர்
தந்நீர ராதல் தலை.

( ,, 395)

764. சிறையில் கரும்பினைக் காத்தோம்ப லின்னா
உறைசேர் பழங்கூரை சேர்ந்தொழுக லின்னா
முறையின்றி யாளு மரசின்னா வின்னா
மறையின்றிச் செய்யும் வினை.

(இன்னா. 6)

765. சூதினா னாகத்தன் றோள்வலியாற் றானாக
யாதினா னாயினும்வந் தெய்துமேல்—தீதெண்ணிச்
சூழ்வாரைத் தாமுன்னஞ் சூழ்வதே மன்னராய்
வாழ்வாருக் குள்ள வழக்கு.

(பாரதம்)

766. நலிவில் குன்றொடு காடுறை நன்பொருட்
புலியனார்மகட் கோடலும் பூமிமேல்
வலியின் மிக்கவர் தம்மகட் கோடலும்
நிலைகொள் மன்னர் வழக்கென நேர்பவே.

(சிந்தா. 1919)

## அதி. 74. தூது

767. மாண்டமைந்தா ராய்ந்த மதிவனப்பே வன்கண்மை
யாண்டமைந்த கல்வியே சொல்லாற்றல்—பூண்டமைந்த
கால மறிதல் கருதுங்காற் றூதுவர்க்கு
ஞால மறிந்த புகழ். (ஏலாதி, 26)

768. ஒல்லெனீர் ஞாலத் துணர்வோ விழுமிதே
நல்லிசை முச்செந்தீ நான்மறையோன்—செல்லலும்

---

**761.** 3-4 வறிவினார்க் கந்நல, வறிவினாற் கன்னல; 5 மாணு; 8 தலைப் படுதல்; 14 யானையார்த். **762.** 2 தொழிந்துந்; 11 யாருளரே. **763.** 5-6 பொய்ந்நீர்மை யாகிப்; 8 முடியார்க்கும்; 9-11 மைந்நீர ராயினு மாகா. **764.** 5 துறைசேர்; 7 சோர்ந்தொழுக; 10 (ச்) செய்யு. **765.** 2 னாகதன்; 3-4 றோள்வலி யின்னாக, றோள்வலி யானாக. **766.** 11 தம்மக்கட். **767.** 2 ராய; 5 மாண்டமைந்த. **768.** 1 ஒல்லைநீர்; 6 முற்சேர்ந்த; 12-13 வெம் பகையி னன்றன்றி; 13 யின்றன்றி; யின்னன்றி.

வென்றன்றி மீளா விறல்வேந்தர் வெம்பகை
யென்றன்றி மீண்ட திலர்.

(வெண்பா. 172)

769. செருக்குடை மன்ன ரிடைப்புக் கவருள்
ஒருத்தற் குதவாத சொல்லிற் றனக்குத்
திருத்தலு மாகாது தீதா மதுவே
எருத்திடை வைக்கோல் தினல்.

(பழமொழி, 187)

770. ஒருவ ரகத்தொருவ ருண்டுடுத்துத் தம்மின்
மருவி மனமகிழ்வ ராயிற்—செருமுனையின்
மன்னைப்போர் செய்யு மழைமதமால் யானையாய்
பின்னைப்போர் தக்கதோ பேசு.

(பாரதம், 165)

771. செல்லுங்காற் றேயத் தியறெரிந்து சென்றக்கால்
புல்லிய சுற்றம் புணர்வறிந்து—புல்லார்
மனத்தாற் பிரித்து வலியா லுதவும்
இனத்தாற் றெரிவது தூது.

( ,, )

772. தடுமாற்ற மின்றித் தகைசான்ற சொல்லான்
வடுமாற்றம் வாய்சோரா னாகி—விடுமாற்றம்
எஞ்சாது கூறி யிகல்வேந்தன் சீறுங்கால்
அஞ்சா தமைவது தூது.

( ,, )

773. படையளவு கூறுர் பெரியார்முன் மாற்றுர்
படையளவிற் றென்று வியவார்—கொடைவேந்தன்
ஈத்ததுகண் டின்புறு ரேந்திழையார் தோள்சேரார்
பாத்திபர்தூ தாயடைந்தார் பண்பு.

( ,, )

774. தானறிந்து கூறுந் தலைமற் றிடையது
கோனறைந்த தீதென்று கூறுமால்—தானறியா
தோலையே காட்டுங் கடையென் றெருமூன்று
மேலையோர் தூதுரைத்த வாறு.

( ,, )

775. அன்புடைமை யாய்ந்த வறிவுடைமை யிற்பிறப்பு
நன்குடைமை நல்ல நயனுடைமை—நன்கமைந்த
சுற்ற முடைமை வடிவுடைமை சொல்வன்மை
கற்றடங்கல் தூதின் கடன்.

( ,, )

---

**769.** 1 நெருக்குடை; 6 குறுதூது; 14-15 வைக்கொன் றிலன். **770.** 5 மருவின். **771.** 5-6 புல்லிப் பசுமை; 8 புல்லி; 10 பிரிந்து; 12 வுதவும். **772.** 4 சொல்லன். **773.** 3 வெறியார்முன்; 4 தான்மாற்றுர்; 5 படையள வின். **774.** 3 தலைமாற்; 5 கோன்றந்த, கோனறிந்த, கோனறிந்து.

776. கால வெகுளிப் பொறையகேள் நம்பியைச்
சாலுந் துணையுங் கழறிச் சிறியதோர்
கோல்கொண்டு மேற்சேறல் வேண்டா வதுகண்டாய்
நூல்கண்டார் கண்ட நெறி.

(தகடூர்.)

777. ஆதிநூ லமைச்சர்க் கோது மாண்பெலா மமைந்து நின்றான்
தூதனாச் செல்லிற் செல்லாச் சூழ்பொரு ளில்லை போலாம்
ஏதிலார்க் காவ துண்டே யின்னன புகுந்த போதிற்
கோதிலாக்குணங்கள்தேற்றிக்கொழித்துரைகொடுத்தலென்றான்.

(சூளா. தூது. 136)

778. மந்திரக் கிழவர் கண்ணா மக்கடன் றாள்க ளாகச்
சுந்தர வயிரத் திண்டோள் தோழராச் செவிக ளொற்றா
அந்தர வுணர்வு நூலா வரசெனு முருவு கொண்ட
எந்திர மிதற்கு வாயாத் தூதுவ ரியற்றப் பட்டார்.

( ,, 135)

779. கற்றவர் கற்றன கருதுங் கட்டுரைக்
குற்றன வுற்றன வுரைக்கு மாற்றலான்
மற்றவன் மரிசியே யவனை நாம்விடச்
சுற்றமுங் கருமமுஞ் சொல்ல வல்லனே.

(மந்திர. 189)

780. இவ்வே, பீலி யணிந்து மாலை சூட்டிக்
கண்டிர ணோன்காழ் திருத்தி நெய்யணிந்து
கடியுடை வியனக ரவ்வே யவ்வே
பகைவர்க் குத்திக் கோடுநுதி சிதைந்து
கொற்றுறைக் குற்றில மாதோ வென்றும்
உண்டாயிற் பதங்கொடுத்
தில்லாயி னுடனுண்ணும்
இல்லோ ரொக்கற் றலைவன்
அண்ணலெங் கோமான் வைந்நுதி வேலே.

(புறம், 95)

781. இரும்பனை வெண்டோடு மலைந்தோ னல்லன்
கருஞ்சினை வேம்பின் தெரியலோ னல்லன்
நின்ன கண்ணியு மார்மிடைந் தன்றே, நின்னொடு
பொருவோன் கண்ணியு மார்மிடைந் தன்றே
ஒருவிர் தோற்பினுந் தோற்பதுங் குடியே
இருவிர் வேற லியற்கையு மன்றே, அதனால்
குடிப்பொரு ளன்றுநுஞ் செய்தி கொடித்தேர்

---

**776-808.** இச்செய்யுட்கள் மதுரைச்சங்கத்துப் பிரதியொன்றில்இல்லை. **777.** 9 சொல்லாச்; 15 துண்டோ; 22 கொழிந்துரை. **778.** 5 றாளா; 6 ணாளாச்; 13-14 அந்தண ருணர்வு. **780.** 2, 1-2 கண்டீர் ரோன்காழ்; 2,2 செனனகாழ்; 4, 3 கோடுநுனி, கோடுநுழை, கோடுநனி; 5, 4 வொன்றும்; 9, 1-2 அண்ண லெங்கோன். **781.** 1,2 வெண்டார்; 1, 3 மிலைந்தோ; 2, 1 கடுஞ்சினை; 5, 1 ஒருவீர்; 6, 1 இருவீர், இருவர்; 7, 3 செயல்.

நும்மோ ரன்ன வேந்தர்க்கு
மெய்ம்மலி யுவகை செய்யுமிவ் விகலே.

(புறம், 45)

782. வயலைக் கொடியின் வாடிய மருங்கின்
உயவ லூர்திப் பயலைப் பார்ப்பான்
எல்லி வந்து நில்லாது புக்குச்
சொல்லிய சொல்லோ சிலவே யதற்கே
ஏணியுஞ் சீப்பு மாற்றி
மாண்வினை யானையு மணிகளைந் தனவே.

( ,, 305)

783. இரும்பிடித் தொழுதியொடு பெருங்கயம் படியா
நெல்லுடைக் கவளமொடு நெய்ம்மிதி பெறாஅ
திருந்தரை நோன்வெளில் வருந்த வொற்றி
நிலமிசைப் புரளுங் கைய வெய்துயிர்த்
துலமரல் யானை யுருமென முழங்கவும்
பாலில் குழவி யலறவு மகளிர்
பூவில் வறுந்தலை முடிப்பவு நீரில்
வினைபுனை நல்லி லினைகூஉக் கேட்பவும்
இன்னா தம்ம வீண்டினி திருத்தல்
துன்னருந் துப்பின் வயமான் றோன்றல்
அறவை யாயி னினதெனத் திறத்தல்
மறவை யாயிற் போரொடு திறத்தல்
அறவையு மறவையு மல்லை யாகத்
திறவா தடைத்த திண்ணிலைக் கதவின்
நீண்மதி லொருசிறை யொடுங்குதல்
நாணுத்தக வுடைத்திது காணுங் காலே.

( ,, 44)

784. அடுநை யாயினும் விடுநை யாயினும்
நீயளந் தறிதிநின் புரைமை வார்கோற்
செறியரிச் சிலம்பிற் குறுந்தொடி மகளிர்
பொலஞ்செய் கழங்கிற் றெற்றி யாடுந்
தண்ணான் பொருனை வெண்மணற் சிதையக்
கருங்கைக் கொல்ல னரஞ்செ யவ்வாய்
நெடுங்கை நவியம் பாய்தலி னிலையழிந்து
வீகமழ் நெடுஞ்சினை புலம்பக் காவுதொறுங்
கடிமரந் தடியு மோசை தன்னூர்
நெடுமதில் வரைப்பிற் கடிமனை யியம்ப
ஆங்கினி திருந்த வேந்தனொ டீங்குநின்
சிலைத்தார் முரசங் கறங்க
மலைத்தனை யென்பது நாணுத்தக வுடைத்தே.

( ,, 36)

---

**783.** 5, 1 தலமரல்; 10,2 (ங்) கதுப்பின்; 13, 4 யாகித், யாகில்.
**784.** 5, 4 சிதைஇக்; 7, 4 னவியழிந்து; 12, 1 நிலைத்தார்.

785. ஒளிவிடு பசும்பொ னோடை சூட்டிய
வெளிறில் வெண்கோட்ட களிறுகெழு வேந்தே
வினவுதி யாயிற் கேண்மதி சினவா
தொருகுடர்ப் படுதர வோரிரை துற்றும்
இருதலைப் புள்ளி னோருயிர் போல
அழிதரு வெகுளி தாங்காய் வழிகெடக்
கண்ணுறு பொழுதிற் கைபோ லெய்தி
நும்மூர்க்கு, நீதுணை யாகலு முளையே நோக்க
முன்னவை வருஉங் காலை நும்மு
னுமக்குத்துணை யாகலு முரிய னதனாற்
றொடங்க வரிய வினைபெரி தாயினும்
அடங்கல் வேண்டுமதி யத்தை யடங்கான்
துணையிலன் றமியன் மன்னும் புணையிலன்
பேர்யா றெதிர்நீந்து மொருவ னதனைத்
தாழ்த லன்றோ வரிது தலைப்படுதல்
வேண்டிற் பொருந்திய
வினையி னடங்கல் வேண்டும்
அனைய மாகீண் டறிந்திசி னோர்க்கே.

(தகடூர்.)

786. மொய்வேற் கையர் முரசெறிந் தொய்யென
வையக மறிய வலிதலைக் கொண்ட
திவ்வழி யென்றி யியறூர் மார்ப
எவ்வழி யாயினு மவ்வழித் தோன்றித்
திண்கூ ரெஃகின் வயவர்க் காணிற்
புண்கூர் மெய்யி னராஅய்ப் பகைவர்
பைந்தலை யெறிந்த மைந்துமலி தடக்கை
யாண்டகை மறவர் மலிந்துபிறர்
தீண்டற் காகாது வேந்துடை யரணே.

( ,, )

## அதி. 75. மன்னரைச் சேர்ந்தொழுகல்

787. விடலைமை செய்ய வெருண்டகன்று நில்லா
துடலரு மன்ன ருவப்ப வொழுகின்
மடலணி பெண்ணை மலிதிரைச் சேர்ப்ப
கடல்படா வெல்லாம் படும்.

(பழமொழி, 225)

---

**785.** இதுவும் அடுத்த செய்யுளும் ஒரு பிரதியிற் காணப்பெறவில்லை; வேறொரு பிரதியில் இவை அடுத்த அதிகாரத்தின் முதலிரண்டு செய்யுட்களாக வுள்ளன. 1, 4 சூடிய; 4, 2 படுத்த; 4, 3 வேளிரை; 8, 1 நம்மூர்க்கு; 8, 3 யாதலு; 8,5 நோக்கு; 9, 1 முன்னென; 9, 4 நும்பி, நும்மி; 14, 2-4 றெதிர்ந்து நீந்துமொரு வனதனகத்; 15, 2 லொன்றோ; 15,4 கரைப்படுதல்; 16, 1 வேண்டியிற். **786.** தகடூர்மாலை. 1, 1 மெய்வேற்; 2, 3 மலைத்தலைக்; 3,1 தெவ்வழி; 3,3 யியன்றூர்; 5, 3 வயவற்; 6, 3-4 னராஅ யப்பகை; 7, 2 யெறிந்ததம்; 8, 3 மலிந்துபின்; 9,4 யோனே. **787.** 3 வெருண்டகன்று; 9 மடன்மணி.

788. ஆண்டகை மன்னரைச் சேர்ந்தா ரலவுறினும்
ஆண்டொன் றும் வேண்டுது மென்ப துரையற்க
பூண்டகு மார்ப பொருடக்கார் வேண்டாமை
வேண்டிய தெல்லாந் தரும்.

(பழமொழி, 178)

789. வெற்றிவேல் வேந்தன் வியங்கொண்டால் யாமொன்றும்
பெற்றிலே மென்பது பேதைமையே—மற்றதனை
ஐய மிலராகிச் செய்க வதுவன்றே
செய்கென்று ணுண்கென்னு மாறு.

( „ 181)

790. பன்னாள் தொழில்செய் துடைய கவர்ந்துண்டார்
இன்னாத செய்யாமை வேண்டி யிறைவர்க்குப்
பொன்யாத்துக் கொண்டு புகுதல் குவளையைத்
தன்னாரால் யாத்து விடல்.

( „ 365)

791. வேந்தன் மதித்துணரப் பட்டாரைக் கொண்டேனை
மாந்தரு மாங்கே மதித்துணர்ப—ஆய்ந்த
நலமென் கதுப்பினாய் நாடினெய் பெய்த
கலமேநெய் பெய்து விடும்.

( „ 397)

792. செருக்கெழு மன்னர்த் திறலுடையார் சேர்ந்தால்
ஒருத்தரை யஞ்சி யுலைதலு முண்டோ
உருத்த சுணங்கி னொளியிழையாய் கூரி
தெருத்து வலியதன் கொம்பு.

( „ 76)

793. காவலனை யாக வழிபட்டான் மற்றவன்
ஏவல் வழிசெய் திருந்தார்க் குதவடுத்தல்
ஆவணைய நின்றதன் கன்று முலையிருப்பத்
தாயணல் தான்சுவைத் தற்று.

( „ 20)

794. ஏமரிது செய்க வெமக்கென்று வேந்தன்
தமரைத் தலைவைத்த காலைத்—தமரவற்கு
வேலின்வா யாயினும் வீழ்வார் மறுத்துரைப்பின்
ஆலென்னிற் பூலென்னு மாறு.

( „ 31)

795. சிறிதாய கூழ்பெற்றுச் செல்வரைச் சேர்ந்தாற்
பெரிதாய கூழும் பெறுவர்—அரிதாம்
இடத்து ளொருவ னிருப்புழிப் பெற்றாற்
கிடப்புழியும் பெற்று விடும்.

( „ 235)

---

**788.** 4 லலவுறினும், லறிவுறினும்; 11 பொருட்காகா. **789.** 2 மன்னன்; 7 பேதைமை. **790.** 3 துடையார்; 8 யிறைவற்குப்; 14 யார்த்து. **791.** 11 நாடிநெய்; 12 பெய்தால். **792.** 1 செருக்குடை; 3 திறனுடையார்; 5 ஒருத்தனை; 14 வலியெதன். **794.** 11 வீழ்வர்; 12 மறத்துரைப்பின்; 14 பூலென்று. **795.** 8 சிறிதாம்; 9-10 இடத்தி னொருவ; 11 னிருப்புழியும்.

796. ஆற்ற வினைசெய்தார் நிற்பப் பலவுரைத்
தாற்றுதார் வேந்தனை நோவது—சேற்றுள்
வழாஅமைக் காத்தோம்பி வாங்கு மெருத்தும்
எழாஅமைச் சாகா டெழல்.

(பழமொழி, 155)

797. சிறப்புடை மன்னரைச் செவ்வியா னோக்கித்
திறத்தி னுரைப்பார்க்கொன் றாகாத தில்லை
விறற்புகழ் மன்னர்க் குயிரன்ன ரேனும்
புறத்தமைச்சி னன்றகத்துக் கூன்.

( ,, 295)

798. மன்னர் திருவு மகளி ரெழினலமுந்
துன்னியார் துய்ப்பர் தகல்வேண்டா—துன்னிக்
குழைகொண்டு தாழ்ந்த குளிர்மர மெல்லாம்
உழைதங்கட் சென்றார்க் கொருங்கு.

(நாலடி, 167)

799. கடைவிலக்கிற் காயார் கழிகிழமை செய்யார்
கொடையளிக்கட் பொச்சாவார் கோலநேர் செய்யார்
இடையறுத்துப் போகிப் பிறனொருவற் சேரார்
கடைபெருகி வாழ்துமென் பார்.

(ஆசார. 66)

800. முனியார் துனியார் முகத்தெதிர் நில்லார்
தனிமை யிடத்துக்கண் தங்கருமஞ் சொல்லார்
இனியவை யாமறிது மென்னார் கரிதன்று
காக்கைவெள் ளென்னு மெனின்.

( ,, 69)

801. உமிவு முயர்ந்துழி யேறலும் பாகும்
வகையி னுரையும் வளர்ச்சியு மைந்தும்
புணரார் பெரியா ரகத்து.

( ,, 70)

802. இறைவர்முற் செல்வமுங் கல்வியுந் தேசும்
குலனுங் குணனுடையார் கூறார் பகைவர்போற்
பாரித்துப் பல்காற் பயின்று.

( ,, 71)

803. நின்றக்கால் நிற்க வடக்கத்தா லென்றும்
இருந்தக்கா லேவாமை யேறார்—பெருந்தக்கார்
சொல்விற் செவிகொடுத்துக் கேட்டீக மீட்டும்
வினவற்க சொல்லொழிந்தக் கால்.

( ,, 74)

804. தம்மேனி நோக்கார் தலையுளரார் கைந்நொடியார்
எம்மேனி யாயினு நோக்கார் தலைமகன்
தன்மேனி யல்லாற் பிற. ( ,, 77)

---

**796.** 11 வாழு; 12 மெருதும். **797.** 1 சிறப்புடைய; 2 மன்னவரைச்; 10 மன்னற்;11 குயிரல்ல; 14 னன்றகத்திற். **798.** 13 உழைதன்கட். **799.** 4 பேசார்; 5 கொடையளிக்கப்; 7 கோனேவ; 9 இடையிறுத்துப்; 10 போகிற்; 13 கடைபோக. **800.** 2 துணியார்; 14 ளென்று; 15 மெனல். **801.** 1 உமியு, உமிழ்வு. **803.** 12 மீட்டு. **804.** 10 யல்ல.

805. பிறரொடு மந்திரங் கொள்ளா ரிறைவனைச்
சாரார் செவியோரார் சாரிற் பிறிதொன்று
தேர்வார்போல் நிற்க திரிந்து.
(ஆசார. 78)

806. நிரைபடச் செல்லார் நிழல்மிதித்து நில்லார்
உரையிடைப் பாய்ந்துரையா ரூர்முனிவ செய்யார்
அரசர் படையளவுஞ் சொல்லாரே யென்றும்
புரைதீர்ந்த காட்சி யவர்.
( ,, 83)

807. அறத்தொடு கல்யாண மாள்வினை கூரை
இறப்பப் பெருகியக் கண்ணுந்—திறப்பட்டார்
மன்னரின் மேம்படச் செய்யற்க செய்பவேல்
மன்னிய செல்வங் கெடும்.
( ,, 85)

808. அளையுறை பாம்பு மரசு நெருப்பு
முழையுறை சீயமு மென்றிவை நான்கும்
இளைய வெளிய பயின்றனவென் றெண்ணி
இகழி னிழுக்கந் தரும். ( ,, 84)

## அதி. 76. குறிப்பறிதல்

809. வெள்ளம் வருங்காலை யீர்ப்படுக்கு மஃதேபோற்
கள்ள முடையாரைக் கண்டே யறியலாம்
ஒள்ளமர்க் கண்ணு யொளிப்பினு முள்ளம்
பரந்ததே கூறு முகம்.
(பழமொழி, 41)

810. நோக்கி யறிகல்லாத் தம்முறுப்புக் கண்ணாடி
நோக்கி யறிப வதுவேபோல்—நோக்கி
முகனறிவார் முன்ன மறிப வதுவே
மகனறிவு தந்தை யறிவு.
( ,, 301)

811. பேருலையுட் பெய்த வரிசியை வெந்தமை
யோரவிழி னாலே யுணர்ந்தாங்கு—யார்கண்ணும்
கண்டதனாற் காண்டலே வேண்டுமாம் யாதற்குங்
கண்டது காரணமா மாறு.
( ,, 348)

812. நினைத்த திதுவென்றந் நீர்மையைப் பார்த்து
மனத்த தறிந்தீவர் மாண்டார்—புனத்த
குடிஞை யிரட்டுங் குளிர்வரை நாட
கடிஞையுட் கல்லிடுவா ரில். ( ,, 246)

---

**805**. 3 கொள்வா; 7 சாற்றிற்; 9 தேர்வான்போல். **806**. 1. நிரல் படச்; 2 சொல்லார்; 4 நல்லார்; 10 படையளவு; 11 செல்லாரே. **807**. 8 திறப்பட்ட, திறப்பட; 10 மேம்பட்ட. **808**. 11 பயின்றவென். **810**. 2 யறி கல்லார்; 3 தம்முரு, தம்முறு, தம்முறுப்பு; 6-7 யறிவது வேபோல; 9 முகன றியார். **811**. 1 பேருலையிற்; 5 யோர்விழியி; 10 காணவே; 15 மற்று. **812**. 10 யாற்றுங்.

813. நாற்ற முரைக்கு மலருண்மை கூறிய
மாற்ற முரைக்கும் வினைநலந் தூக்கின்
அகம்பொதிந்த தீமை முகனுரைக்கு மெல்லா
முகம்போல முன்னுரைப்ப தில்.

(நான்மணி. 46)

814. மகனுரைக்குந் தந்தை நலத்தை யொருத்தன்
முகனுரைக்கு முண்ணின்ற வேட்கை—அகனீர்ப்
பிலத்தியல்பு புக்கா னுரைக்கும் நிலத்தியல்பு
வான முரைத்து விடும்.

( ,, 69)

815. புகைவித்தாப் பொங்கழல் தோன்றுஞ் சிறந்த
நகைவித்தாத் தோன்று முவகை—பகையொருவன்
முன்னம்வித் தாக முளைக்கு முளைத்தபின்
இன்னாவித் தாகி விடும்.

( ,, 31)

816. சொல்லா னறிப வொருவனை மெல்லென்ற
நீரா னறிப மடுவினை யார்கண்ணும்
ஒப்புரவி னானறிப சான்றாண்மை மெய்க்கண்
மகிழா னறிப நறா.

( ,, 78)

## அதி. 77. அவையறிதல்*

817. நடலை யிலராகி நன்றுணரா ராய
முடலை முழுமக்கள் மொய்கொ ளவையுள்
உடலா வொருவற் குறுதி யுரைத்தல்
கடலுளால் மாவடித் தற்று.

(பழமொழி, 72)

818. அறிவன் றழகன் றறிவதூஉ மன்று
சிறிய ரெனற்பாடுஞ் செய்யும்—எறிதிரை
சென்றுலாஞ் சேர்ப்ப குழுவத்தார் மேயிருந்த
குன்றா டறப்பினு மன்று.

( ,, 207)

819. கல்வி யகலமுங் கட்டுரை வாய்பாடுங்
கொல்சின வேந்த னவைகாட்டு—மல்கித்
தலைப்பெய் திழிதரூஉந் தண்புனல் நீத்த
மலைப்பெயல் காட்டுந் துணை.

( ,, 264)

820. கல்வியி னாய கழிநுட்பங் கல்லார்முற்
சொல்லிய நல்லவுந் தீயவாம்—எல்லா

---

**813**. 9 அகம்பொதி. **814**. 4 யொருவன்; 6 முன்னின்ற; 8 அகநீர்ப்; 9 புலத்தியல்பு, பிலத்தியலப். **815**. 1 புகைவித்தாய்; 5 நகைவித்தாய்த்; **816**. இது சில பிரதிகளில் இல்லை; ஒரு பிரதியில் 'அறிவன்' (818) என் பதன்பின். 3 வறிவினை; 11 சான்றாண்மை; 12 மிக்க; 13 மகிழ்வா; 13-14 மகிழ்பா லறிப; 14 லறிக. * இவ்வதிகாரம் 819-வது செய்யுளிலிருந்து தொடங்குகிறது. **818**. 3 றறிவது; 5 சிறியா; 12 மேலிருந்த. **819**. 10 யழிதரூஉந். **820**. 1 கல்வியா; 9 மிகவரை; 14 காடுமொன்.

மிவர்வரை நாட தமரையில் லார்க்கு
நகரமுங் காடுபோன் றங்கு.

(பழமொழி, 3)

821. கல்லா தவரிடைக் கட்டுரையின் மிக்கதுபோற்
பொல்லாத தில்லை யொருவற்கு—நல்லாய்
இழுக்கத்தின் மிக்க விழிவில்லை யில்லை
ஒழுக்கத்தின் மிக்க வுயர்வு.

( ,, 64)

822. அல்லவையுட் டோன்றி யலவலைத்து வாழ்பவர்
நல்லவையுட் புக்கிருந்து நாவடங்காக்—கல்வி
யளவிறந்து மிக்கா ரறிவெள்ளிக் கூறல்
மிளகுளு வுண்பான் புகல்.

( ,, 326)

823. பாடமே யோதிப் பயன்றெரிதல் தேற்றாத
மூடர் முனிதக்க சொல்லுங்காற்—கேடருஞ்சீர்ச்
சான்றோர் சமழ்த்தனர் நிற்பவே மற்றவரை
யீன்றாட் கிறப்பப் பரிந்து.

(நாலடி, 316)

824. மெய்ஞ்ஞானக் கோட்டி யுறழ்வழி விட்டாங்கோர்
அஞ்ஞானந் தந்திட் டதுவாங் கறத்துழாய்க்
கைஞ்ஞானங் கொண்டொழுகுங் காரறி வாளர்முன்
சொன்ஞானஞ் சோர விடல்.

( ,, 311)

825. சொற்றாற்றுக் கொண்டு சுனைத்தெழுதல் காமுறுவர்
கற்றாற்றல் வன்மையுந் தாந்தேறார்—கற்ற
செலவுரைக்கு மாறறியார் தோற்ப தறியார்
பலவுரைக்கு மாந்தர் பலர்.

( ,, 313)

826. தவலருந் தொல்கேள்வித் தன்மை யுடையார்
இகலில ரெஃகுடையார் தம்முட் குழீஇ
நகலி னினிதாயிற் காண்பா மகல்வானத்
தும்ப ருறைவார் பதி.

( ,, 137)

827. குடிப்பிறப் புடுத்துப் பனுவல் சூடி
விழுப்பே ரொழுக்கம் பூண்டு காமுற
வாய்மைவாய் மடுத்து மாந்தித் தூய்மையின்
காத லின்பத்துட் டங்கித் தீதறு
நடுவுநிலை நெடுநகர் வைகி வைகலும்
அழுக்கா றின்மை யவாவின்மை யென்றாங்

**821.** 2 வதரிடைக்; 4 மிக்கபோற்; 5 சொல்லாத; 14-15 ஊதிய மற்று. **822.** 7 நாமடங்காக்; 9 யளவறிந்து. **823.** 9 சான்றார். **825.** 3 துனைத் தெழுதல்; 5 (க்) குற்றாற்ற; 7 தாந்தேற்றார். **826.** 1 தொகலருந்; 3 தம்மை. **827.** 4, 4 தீதுறு; 5, 2 நெடுங்கா; 9, 1-2 யுடனம ரிருக்கை; 11,3 புலவரப்.

இருபெரு நிதியமு மொருதா மீட்டுந்
தோலா நாவின் மேலோர் பேரவை
யுடன்மரீஇ யிருக்கை யொருநாள் பெறுமெனிற்
பெறுகதில் லம்ம யாமே வரன்முறைத்
தோன்றுவழித் தோன்றுவழிப் புலவுப் பொதிந்து
ஞாங்கர் ஞாங்கர் நின்றுழி நில்லாது
நிலையழி யாக்கை வாய்ப்பவிம்
மலர்தலை யுலகத்துக் கொட்கும் பிறப்பே.

(ஆசிரிய.)

## அதி, 78. நாடு

828. எண்ணி னிடரெட்டு மின்றி வயற்செந்நெற்
கண்ணின் மலரக் கருநீலம்—விண்ணின்
வகைத்தாய் வளனுடும் வைகின்றே வென்வேல்
நகைத்தாரான் தான்விரும்பு நாடு.

(வெண்பா. 205)

829. அள்ளற் பழனத் தரக்காம்பல் வாய்நெகிழ
வெள்ளந்தீப் பட்ட தெனவெரீஇப்—புள்ளினந்தங்
கைச்சிறகாற் பார்ப்பொடுக்குங் கவ்வை யுடைத்தரோ
நச்சிலைவேற் கோக்கோதை நாடு.

(முத்தொள்.)

830. நந்தி னிளஞ்சினையும் புன்னைக் குவிமொட்டும்
பந்த ரிளங்கமுகின் பாளையும்—சிந்தித்
திகழ்முத்தம் போற்றோன்றுஞ் செம்மற்றே தென்னன்
நகைமுத்த வெண்குடையா னாடு.

( ,, )

831. காவ லுழவர் களத்தகத்துப் போரேறி
நாவலோஒ வென்றழைக்கு நாளோதை—காவலன்றன்
கொல்யானை மேலிருந்து கூற்றிசைத்தாற் போலுமே
நல்யானைக் கோக்கிள்ளி நாடு.

( ,, )

832. நற்றவஞ்செய் வார்க்கிடந் தவஞ்செய்வார்க்கு மஃதிடம்
நற்பொருள்செய் வார்க்கிடம் பொருள்செய்வார்க்கு மஃதிடம்
வெற்றவின்பம் விழைவிப்பான் விண்ணுவந்து வீழ்ந்தென
மற்றநாடு வட்டமாக வைகுமற்ற நாடரோ.

(சிந்தா. 77)

833. சொல்லருஞ் சூற்பசும் பாம்பின் றோற்றம்போல்
மெல்லவே கருவிருந் தீன்று மேலலார்

---

**828.** 2 னிடரேழு; 4 யவற்செந்நெற்; 9-12 வகைத்தார்த் தெரியல் வளனுடு வைகிற்றே; 12 வெள்வேல். **829.** 4 வாயவிழ. **830.** 6 ரிளங்க முகம்; 10 போற்றோன்று; 11 செம்மைத்தே. **831.** 3 கடுங்களத்துப்; 5 நாவ லோர்; 5-6 நாவ லெனவழைக்கு. **832.** இதன்பின் 'கரும்பிவை' (838) 'நெறிகடந்து' (839) என்பன. 10 வீழ்விப்பான்; 14 வட்டமா; 15 வைகு மற்றை. **833.** இதன்பின் 'கூற்றமில்லை' (840). 16 காய்த்ததே.

செல்வமே போற்றலை நிறுவித் தேர்ந்தநூற்
கல்விசேர் மாந்தரி னிறைஞ்சிக் காய்த்தவே.

(சிந்தா. 53)

834. மோடு கொண்டெழு மூரிக் கழைக்கரும்
பூடு கொண்ட பொதும்ப ரொளிவிராய்த்
தோடு கொண்டபைங் காய்க்கதிர்ச் செந்நெலின்
காடு கொண்டுள கண்ணக னாடெலாம்.

(சூளா. நாட்டு. 25)

835. வானிலங் கருவிய வரையு முல்லைவாய்த்
தேனிலங் கருவிய திணையுந் தேறல்சேர்
பானலங் கழனியுங் கடலும் பாங்கணி
நானிலங் கலந்துபொன் னரலு நாடதே.

( ,, 6)

836. சங்க நித்தில முங்கட லிப்பியுந்
தெங்கந் தீங்குலை யூறிய தேறலும்
வங்க வாரியும் வாரலை வாரியும்
தங்கு வாரிய தண்கட னாடெலாம்.

( ,, 26)

837. செந்நெலங் கரும்பினொ டிகலுந் தீஞ்சுவைக்
கன்னலங் கரும்புதான் கமுகைக் காய்ந்தெழும்
இன்னவை காண்கில னென்று பூகமும்
முன்னிய முகில்களான் முகம்பு தைக்குமே.

(வளையா.)

838. கரும்பிவை கமுகிவை யென்று கண்டறி
வருந்துணை யுயர்தலி னருந்து மேதிகள்
கரும்புக ளிவையெனக் கணையுங் கார்ப்பொழிற்
சுரும்பிவர் கமுகினைக் குயில்கள் சொல்லுமே.

( ? )

839. நெறிக டந்து பரந்தன நீத்தமே
குறிய ழிந்தன குங்குமத் தோள்களே
சிறிய வும்மவர் தேயு மருங்குலே
வெறிய வும்மவர் மென்மலர்க் கூந்தலே.

(இராமாவ. நாட்டு. 39)

840. கூற்ற மில்லையொர் குற்ற மிலாமையாற்
சீற்ற மில்லைத்தஞ் சிந்தையிற் செய்கையால்
ஆற்ற நல்லற மல்லதி லாமையால்
ஏற்ற மல்ல திழித்தக வில்லையே.

( ,, 38)

---

**834.** 4 (த்)தழைக்கரும்; 7-8 பொதும்பரொ ளேள்விராய்த்; 12 செந் நெலிற்; 14 கொண்டது; 15-16 கண்டக நாடெலாம், தண்டக நாடெலாம். **835.** இதன்பின் 'செந்நெலங்' (837). 7 தினையுந். **836.** 11 வார்வலை; 15 கண்டக, தண்டக. **837.** 6 கரும்புதாம்; 10 காண்கல; 10-11 காண் கலே மென்று. **838.** 6 யாதலி; 11 களையும். **840.** 15 திழிதக; விழித்தக.

841. ஆலைவாய்க் கரும்பின் தேனு மரிதலைப் பாளைத் தேனுஞ்
சோலைவீழ் கனியின் தேனுந் தொடையளி யிழுலின் தேனும்
மாலைவா யுக்க தேனும் வரம்பிகந் தோடி வங்க
வேலைவாய் மடுப்ப வேலை மீனெலாங் களிக்கு மாதோ.
(இராமாவ. நாட்டு. 9)

842. வரம்பெலா முத்தந் தத்து மடையெலாம் பணில மாநீர்க்
குரம்பெலாஞ் செம்பொன் மேதிக் குழியெலாங் கழுநீர்க் கொள்ளை
பரம்பெலாம் பவளஞ் சாலிப் பரப்பெலா மன்னம் பாங்கர்க்
கரும்பெலாஞ் செந்தேன் சந்தக் காவெலாங் களிவண் டீட்டம்.
( „ 2)

843. வெண்டளக் கலவைச் சேறுங் குங்கும விரைமென் சாந்துங்
குண்டலக் கோதை மாதர் குடைந்தநீர்க் கொள்ளைச் சாற்றிற்
றண்டலைப் பரப்புஞ் சாலி வேலியுந் தழீஇய வைப்பின்
வண்டலிட் டோட மண்ணு மதுகர மொய்த்த தன்றே.
( „ 12)

844. பெருநீரால் வாரி சிறக்க விருநிலத்
திட்டவித் தெஞ்சாமை நாறுக நாறுர
முட்டாது வந்து மழைபெய்க பெய்தபி
ஞெட்டாது வந்து கிளைபயில்க வக்கிளை
பால்வார் பிறைஞ்சிக் கதிரீன வக்கதிர்
ஏர்கெழு செல்வர் களநிறைக வக்களத்துப்
போரெலாங் காவாது வைகுக போரின்
உருகெழு மோதை வெரீஇப் பெடையொடு
நாரை யிரியும் விளைவயல்
யாணர்த் தாகவவ னகன்றலை நாடே.
(தகடூர்.)

845. திருவுடைத் தம்ம பெருவிறற் பகைவர்
பைங்கண் யானைப் புணர்நிரை துமிய
உரந்துரந் தெறிந்த கறையடிக் கழற்காற்
கடுமான் மறவர் கதழ்தொடை மறப்ப
வினையினிது தந்த விளைவுமுட் டுறாது
புலம்பா வுறையுள் நீதொழி லாற்றலின்
விடுநிலக் கரம்பை விடரளை நிறையக்
கோடை நீடக் குன்றம் புல்லென
அருவி யற்ற பெருவறற் காலையும்

---

**841.** 8 கமுகின்; 10 தொடையழி, தொடையிழி; 14 யுகுத்த; 24 மன்றே. **842.** 6 மானீர்க்; 8 செங்கண்; 15 சோலைப்; 18 பாங்கார்; 23 களவண். **843.** 1 வெண்டலக்; 20 டோடு; 21 மன்னு; 23-24 மொய்க்கு மாதோ. **844.** தகடூர் மாலை. 1,1 பெய்நீரால், பெயுநீரால், பொய்நீரால்; 2,4 நார; 5,3 கதிரீன்க; 6, 3, களநிறைக்க; 9, 3 வளைவயல். **845.** 2, 3 புணரி நிரை; 3, 1 ஊர்ந்தூர்ந், விரந்துரந்; 4, 3 கமழ்தொடை, திகழ்கொடை; 5, 1 விளைவினிது; 5, 4 டாது; 9, 3 பெருவறக்; 10, 1-2 நீர்வந்து கரை யழிதரு; 10,2 யழிதரு; 12, 4 மலர் நிறையச்; 14, 3 னகன்ற.

நிவந்துகரை யிழிதரு நனந்தலைப் பேர்யாற்றுச்
சீருடை வியன்புலம் வாய்பரந்து மிகீஇயர்
உவலை சூடி யுருத்துவரு மலிர்நிறைச்
செந்நீர்ப் பூச லல்லது
வெம்மை யறியாநின் னகன்றலை நாடே.

(பதிற்று. 28)

846. தாமரை வெண்கிழங்கு விரவி யோராங்குக்
கருமலங்கு மிளிரக் கொழுமுகந் தியக்கி
பழஞ்சேற்றுப் பரப்பிற் பருமுத லெடுத்து
நெடுங்கதி ரிறைஞ்ச வாங்கிக் கால்சாய்த்து
வாளிற் றுமித்த சூடே மாவின்
சினைகளைந்து பிறக்கிய போர்பே யெருத்தின்
கவையடி [ய]வைத்த வுணவே மருதின்
கொழுநிழற் குவைஇய குப்பையொ டணைத்தினும்
பலர்மகிழ் தூங்க வுலகுபுறந் தரூஉ
மாவண் சோணாட் டேர்தொறும்
ஏரோர் களவழி வாழிய நெடிதே.

(ஆசிரிய.)

## அதி. 79. அரண்

847. நீண்டநீர் காடுகளர்நிவந்து விண்டோயு
மாண்ட மலைமக்க ளுள்ளிட்டு—மாண்டவர்
ஆய்ந்தன வைந்து மரணு வுடையானை
வேந்தென நாட்டல் விதி.

(சிறுபஞ்ச. 48)

848. அமையா விடத்தோ ரரும்பொருள் வைத்தால்
இமையாது காப்பினு மாகா—இமையாரும்
அக்காலத் தோம்பி யமிழ்துகோட் பட்டமையின்
நற்காப்பிற் றீச்சிறையே நன்று.

(பழமொழி, 336)

849. அகழ்கிடங் கந்துகி லாய்பொற் பாம்புரி
புகழ்தரு மேகலை ஞாயில் பூண்முலை
திகழ்மணிக் கோபுரந் திங்கள் வாண்முகஞ்
சிகழிகை நெடுங்கொடி செல்விக் கென்பவே.

(சிந்தா. 1444)

850. இஞ்சி மாக நெஞ்சுபோழ்ந் தெல்லை காண வேகலின்
மஞ்சு சூழ்ந்து கொண்டணிந்து மாக நீண்ட நாகமும்
அஞ்சு நின்னை யென்றலி னுண்டு நின்று நீண்டதன்
குஞ்சிமாண் கொடிக்கையாற் கூவி விட்ட தொத்ததே.

( ,, 143)

---

**846**. 2, 1 (த்)தருமலங்கு; 2, 2 மிளிராக்; 2, 4 தியக்கிய; 4,2 ருரிஞ்ச; 5,3 சூடு; 6,3 போர்வே; 10, 1 மாவன்; 10, 2 சோழநாட்; 11, 1 ஓரோர். **847**. 14 நாடல். **848**. 11 யமிழ்துதொடப், யழித்தோட்டப், யழிதோட்டப். **849**. 3 லாம்பொற்; 5 புகழ்தகு; 9 திகழணி. **850**. 22 கூடு.

851. மாற்றவர் மறப்படை மலைந்துமதில் பற்றின்
நூற்றுவரைக் கொல்லியொடு நூக்கியெறி பொறியும்
தோற்றமுறு பேய்களிறு துற்றுபெரும் பாம்புங்
கூற்றமன கழுகுதொடர் குந்தமொடு கோண்மா.
(சிந்தா. 101)

852. விற்பொறிகள் வெய்யவிடு குதிரைதொட ரயில்வாள்
கற்பொறிகள் பாவையன மாடமடு செந்தீக்
கொற்புனைசெய் கொள்ளிபெருங் கொக்கெழில்செய் கூகை
நற்றலைகள் திருக்கும்வலி நெருக்குமர நிலையே.
(,, 102)

853. செம்புருகு வெங்களிக ளுமிழ்வதிரிந் தெங்கும்
வெம்புருகு வட்டுமிழ்வ வெந்நெய்முகந் துமிழ்வ
அம்புமிழ்வ கல்லுமிழ்வ வேலுமிழ்வ வாகித்
தம்புலன்க ளால்யவனர் தாட்படுத்த பொறியே.
(,, 103)

854. கரும்பொனியல் பன்றிகத நாகம்விடு சகடம்
குரங்குபொரு தகரினொடு கூர்ந்தரிவ நுண்ணூல்
பரந்தபசும் பொற்கொடி பதாகையொடு கொழிக்குந்
திருந்துமதில் தெவ்வர்தலை பணிப்பத்திருந் தின்றே.
( ,, 104)

855. வயிரவரை கண்விழிப்ப போன்றுமழை யுகளும்
வயிரமணித் தாழ்க்கதவின் வாயின்முக மாக
வயிரமணி ஞாயின்முலை வான்பொற்கொடிக் கூந்தல்
வயிரக்கிடங் காடைமதிற் கன்னியது கவினே.
( ,, 105)

856. செஞ்சுடர்க் கடவுட் டிண்டே ரிவுளிகால் திவள வூன்றா
மஞ்சுடை மகர நெற்றி வானுழு வாயில் மாடத்
தஞ்சுட ரிஞ்சி யாங்கோ ரகழணிந் திருந்த தோற்றம்
வெஞ்சுடர் விரியு முந்நீர் வேதிகை மீதிட் டன்றே.
(சூளா. நகர. 3)

857. நால்வகைச் சதுரம் விதிமுறை நாட்டி
நனிதவ வுயர்ந்தன மதிதோய்
மால்வரைக் குலத்தில் யாவையு மில்லை
யாதலா னுவமைமற் றில்லை
நூல்வகைத் தொடர்ந்து பயத்தொடும் பழகி
நுணங்கிய நுவலரு முணர்வே
போல்வரைத் தல்லா லுயர்வினோ டுயர்ந்த
தென்னலாம் பொன்மதி னிலையே.
(இராமாவ. நகர.8)

---

**851**. 3 மறந்துமதில்; 4 பற்றி; 7 நூக்கிநெறி. **852**. 13-14 நற்றலை கடிக்கும்வலி; 14 திருக்கும்வகை. **853**. 10-11 வேலுமிழ்வ கல்லுமிழ்வ; 12 தாகத்; 14 ளால்வயவர். **854**. 10 பொற்கொடிகள்; 12 கொட்குந். **855**. 11 வான்முற்கொடிக். **856**. 7 மஞ்சுறை; 10 வானுழை; 16 (ர்) மகணிணங்; 23 மிதித்திட். **857**. 7 பனிதோய்; 18 மகிழ்ந்து; 19 நடங்கிய; 20 நுவல்வரு; 24 வுயர்வினோ.

858. கோலிடை யுலக மளத்தலிற் பகைஞர்
முடித்தலை கோடலின் மனுவின்
நூலிடை நடக்குஞ் செவ்வையின் யார்க்கு
நோக்கருங் காவலின் வலியின்
வேலொடு வாள்விற் பயிறலின் வெய்ய
சூழ்ச்சியின் வெலற்கரு நலத்திற்
சால்புடை யுயர்விற் சக்கர நடத்துந்
தன்மையிற் றலைவரொத் துளதே.

(இராமாவ. நகர. 11)

859. மேவரு முணர்வு முடிவிலா மையினால்
வேதமு மொக்கும் விண்புகலால்
தேவரு மொக்கும் முனிவரு மொக்குந்
திண்பொறி யடக்கிய செயலால்
காவலிற் கலையூர் கன்னியை யொக்குஞ்
சூலத்தாற் காளியை யொக்கும்
யாவரு மொக்கும் பெருமையா லெய்தற்
கருமையா லீசனை யொக்கும்.

( „ 9)

860. சினத்தயில் கொலைவாள் சிலைமழுத் தண்டு
செம்புருக் கரக்கெணெய் சிவணிக்
கனத்திடை யுருமின் வெருவருங் கவண்க
லென்றிவை கணிப்பில களிற்றின்
இனத்தையு முவணத் திறையையு மியங்குங்
காலையு மதியெலா நினையு
மனத்தையு மெறியும் பொறியுள வென்றால்
மற்றினி யுணர்த்து மாறெவனோ.

( „ 12)

861. மன்னன் மேவு கோயில் மேரு மான மற்றிமண்ணெலா
மென்ன லாய வூரிடத் திலங்கு மாளி கைக்குலம்
பொன்னின் மேரு வின்புறம் பொருப்பு நேர வப்புறந்
துன்னு நேமி வெற்பை யென்பர் சூழ்மதிற் பரப்பையே.

(நாரத.)

## அதி. 80. நகர்

862. களிகள் களிகட்கு நீட்டத்தங் கையாற்
களிகள் விதிர்த்திட்ட வெங்கட்—டுளிகலக்
தோங்கெழில் யானை மிதிப்பச்சே றாகுமே
பூம்பொழில் வஞ்சி யகம்.

(முத்தொள்.)

---

**858**. 3 மளித்தலிற்; 8 நூலுடை; 10 செவ்வியின்; 17 பயிற்றலின்; 18 செய்ய; 21 நிலத்திற்; 25 நடாத்துங். **859**. 1-2 மேவர வுணர்வு, மேவர வுணர; 6-7 (ம்) பொருள்களு மொக்கும். **860**. 3 சினமழுத்; 5 செப்புருக்; 11 கருங்க; 13-14 கணிப்பிலங் களப்பின்; 14 (ங்) களம்பின், களங்கம்பின்; 20 மதியினர், மதியினை, மதியலா; 21 நினைக்கைய. **861**. 1 மன்ன; 6 மாற்றி மண்ணெலா; 15 வின்புறப்; 18 மாண்புறத்; 22 யென்ப. **862**. 6 விதித்திட்ட; 8 டளிகலங்; 12-13 றாயிற்றெம் பூம்புனல்.

863. மாலை விலைபகர்வார் கிள்ளிக் களந்தபூச்
சால மருவியதோர் தன்மைத்தால்—காலையே
விற்பயில் வானகம் போலுமே வெல்வளவன்
பொற்பா ருறந்தை யகம்.

(முத்தொள்.)

864. மைந்தரோ டூடி மகளிர் திமிர்ந்திட்ட
குங்கும வீர்ஞ்சாந்தின் சேறிழுக்கி—எங்குந்
தடுமாற லாகிய தன்மைத்தே தென்னன்
நெடுமாடக் கூட லகம்.

( ,, )

865. மலிதேரான் கச்சியு மாகடலுந் தம்முள்
ஒலியும் பெருமையு மொக்கும்—மலிதேரான்
கச்சி படுவ கடல்படா கச்சி
கடல்படுவ தெல்லாம் படும்.

(யாப்பருங். 61, உரை)

866. உலக மொருநிறையாத் தானோர் நிறையாப்
புலவர் புலக்கோலாற் றூக்க—உலகனைத்துந்
தான்வாட வாடாத தன்மைத்தே தென்னவன்
நான்மாடக் கூட னகர்.

(பரிபாடலுறுப்பு)

867. நிழலகந் தவழ்ந்துதே னிமிர்ந்து தாதுசேர்
பொழிலகம் பூவையுங் கிளியும் பாடுமே
குழலகங் குடைந்துவண் டுறங்குங் கோதையர்
மழலையும் யாழுமே மலிந்த மாடமே.

(சூளா. நாட்டு. 4)

868. சங்கமேய் தரங்க வேலைத் தடங்கடற் பொய்கை பூத்த
அங்கண்மா ஞால மென்னுந் தாமரை யகத்து ளாங்கே
செங்கண்மால் சுரமை யென்னுந் தேம்பொகுட் டகத்து வைகும்
நங்கையோர் படிவங் கொண்ட நலத்தது நகர மன்றே.

( ,, நகர. 2)

869. அகிலெழு கொழும்புகை மஞ்சி னூடவும்
முகிலிசை யெனமுழா முரன்று விம்மவும்
துகிலிகைக் கொடியனர் மின்னிற் றோன்றவும்
இகலின மலையொடு மாட மென்பவே.

( ,, 6)

870. மாடவாய் மணிமுழ விசையு மங்கையர்
ஆடுவார் சிலம்பிணை யதிரு மோசையும்
பாடுவார் பாணியும் பயின்று பல்கல
மூடிமா நகரது முரல்வ தொத்ததே.

( ,, 8)

---

**863.** இது 'மைந்தரொடூடி' (864) என்பதன்பின். 5 சாலை; 6 மிருவ தோர்; 7 தன்மைத்தாய்க்; 8 காலைய. **864.** 7 சேறுழக்கி; 10 லாகாத; 15 னகர். **866.** 2 மொருகுறையாத். **867.** 3 னிரந்து, னிமிர்ந்த; 4 தாதுசேர். **868.** 11யதனு; 14 சுரபை. **870.** 6 சிலம்பினை; 12 பல்பகல்.

871\. திருவ நீணகர்ச் செம்பொனி னீடிய
வுருவ வொண்கொடி யூழி னுடங்குவ
பரவை வெங்கதிர்ச் செல்வன பன்மயிர்ப்
புரவி பொங்கழ லாற்றுவ போன்றவே.

(சிந்தா. 126)

872\. எறிசுற விளையவ ரேந்து பூங்கொடி
மறிதிரை வரைபுரை மாட மாக்கலம்
பெறலருந் திருவனு ரமுதம் பேரொலி
அறைகடல் வளநக ராய தென்பவே.

( ,, 1446)

873\. பாத்தரும் பசும்பொனின் மாடத் துச்சிமேல்
தூத்திரள் மணிக்குடம் நிரைத்துத் தோன்றுவ
பூத்தன வேங்கைமேற் பொலிந்து கார்நினைந்
தேத்தரு மயிற்குழா மிருந்த போன்றவே.

( ,, 87)

874\. மாயோன் கொப்பூழ் மலர்ந்த தாமரைப்
பூவொடு புரையுஞ் சீரூர் பூவின்
இதழகத் தனைய தெருவ மிதழகத்
தரும்பொகுட் டனைத்தே யண்ணல் கோயில்
தாதி னனையர் தண்டமிழ்க் குடிகள்
தாதுண், பறவை யனையர் பரிசில் வாழ்நர்
பூவினுட் பிறந்தோ னுவினுட் பிறந்த
நான்மறைக் கேள்வி நவில்குர லெடுப்ப
ஏம வின்றுயி லெழுத லல்லதை
வாழிய வஞ்சியுங் கோழியும் போலக்
கோழியி னெழாதெம் பேரூர் துயிலே.

(பரிபாடலுறுப்பு)

875\. தன்றமிழ் வேலித் தமிழ்நாட் டகமெல்லாம்
நின்று நிலைஇப் புகழ்பூத்த லல்லது
குன்றுத லுண்டோ மதுரைக் கொடித்தேரான்
குன்றமுண் டாகு மளவு.

( ,, )

876\. செய்யாட் கிழைத்த திலகம்போற் சீர்க்கொப்ப
வையம் விளங்கிப் புகழ்பூத்த லல்லது
பொய்யாத லுண்டோ மதுரைப் புனைதேரான்
வையையுண் டாகு மளவு.

( ,, )

877\. கார்த்திகைக் காதிற் கனமகர குண்டலம்போற்
சீர்த்து விளங்கித் திருப்பூத்த லல்லது
கோர்த்தையுண் டாமோ மதுரைக் கொடித்தேரான்
வார்த்தையுண் டாகு மளவு.

( ,, )

---

**871.** 4 னீட்டிய; 16 போன்றதே. **872.** 6 மலைபுரை; 16 வென்பவே. **873.** 1 மாற்றரும்; 12 கார் நிரைந்; 15 மிருத்தல். **874.** 2, 3 சீறூர்; 7, 3 ளுவினிற்; 11, 3 பேரூர்த், பேரூரிருந், பேரிருந். **877.** 9 கோத்தையுண்.

878. ஈவாரைக் கொண்டாடி யேற்பாரைப் பார்த்துவக்குஞ்
சேய்மாடக் கூடலுஞ் செவ்வேள் பரங்குன்றும்
வாழ்வாரே வாழ்வா ரெனப்படுவார் மற்றையார்
போவாரார் புத்தே ளுலகு.

(பரிபாடலுறுப்பு)

## அதி. 81. பொருள்செயல்வகை

879. வடுவிலா வையத்து மன்னிய மூன்றின்
நடுவண தெய்த விருதலையு மெய்தும்
நடுவண தெய்தா தானெய்தும் உலைப்பெய்
தடுவது போலுந் துயர்.

(நாலடி, 114)

880. கல்லிற் பிறக்குங் கதிர்மணி காதலி
சொல்லிற் பிறக்கு முயிர்மதம்—மெல்லென்
அருளிற் பிறக்கும் அறநெறி யெல்லாம்
பொருளிற் பிறந்து விடும்.

(நான்மணி. 5)

881. ஒல்லாதொன் றின்றி யுடையார் கருமங்கள்
நல்லவாய் நாடி நடக்குமாம்—இல்லார்க்
கிடரா யியலு மிலங்குநீர்ச் சேர்ப்ப
கடலுள்ளுங் காண்பவே நன்கு.

(பழமொழி, 145)

882. சிறிய பொருள்கொடுத்துச் செய்த வினையாற்
பெரிய பொருள்கருது வாரே—விரிபூ
விராஅம் புனலூர வேண்டயிரை யிட்டு
வராஅல் வாங்கு பவர்.

( ,, 302)

883. பொருத்த மழியாத பூந்தண்டார் மன்னர்
அருத்த மடிநிழ லாரை—வருத்தாது
கொண்டாரும் போலாது கோட லதுவன்றே
வண்டோதா துண்டு விடல்.

( ,, 242)

884. பாற்பட்டு வாழ்வ ரெனினுங் குடிகள்மேல்
மேற்பட்ட கூட்டு மிகைநிற்றல் வேண்டாவே
கோற்றலை யாயினுங் கொண்டுக காணுங்காற்
பாற்றலைப் பாலூற லில்.

( ,, 333)

---

**878.** இது ‘தன்றமிழ்’ (875) என்பதன்பின்; ஒரு பிரதியில் ‘செய்யாட்கிழைத்த’ (876) என்பதன் பின். 10 வாழ்ந்தா; 13 போவாராம். **879.** 5 - 6 நடுவணை யெய்த, நடுவணை யெய்தி(லி); 9 - 10 நடுவணை யெய்தாதா; 10-11 தெய்தாதே லெய்தும், தெய்தானே லெய்தும். **880.** 9 றருளிற். **881.** 1 அல்லாதொன்; 7 நடிக்குமாம்; 14 காணவே. **882.** 2 பொருள் கொடுத்துஞ்; 3 செய்க; 8 தெரியில்; 11 வேண்டுமிரை, வேண்டவிரை, வேணவிரை; 12 விட்டு. **883.** 2 மிழிவாகப், மழிவாகப், மிலராகிப்; 9-10 கொண்டாலும் பொல்லாது; 13 வண்டுதா. **884.** 3 மெனினுங்; 7 மிகநிற்றல்; 9 கோற்றலையே; 12 கார்முகங்காற்; 14 பாலுற.

885. எனைப்பலவே யாயினுஞ் சேய்த்தாப் பெறலிற்
றினைத்துணை யானு மணிக்கொண்ட னன்றே
இனைக்கலை தேன்கிழிக்கு மேகல்சூழ் வெற்ப
பனைப்பதித் துண்ணார் பழம்.

(பழமொழி, 68)

886. தந்தம் பொருளுந் தமர்கள் வளமையும்
முந்துற நாடிப் புறந்தர லோம்புக
அந்த ணருவி மலைநாட சேணோக்கி
நந்துநீர்க் கொண்டதே போன்று.

( ,, 69)

887. உடையதனைக் காப்பா னுடையா னதுவே
உடையானைக் காப்பதூஉ மாகும்—அடையிற்
புதற்குப் புலியும் வலியே புலிக்குப்
புதலும் வலியாய் விடும்.

( ,, 282)

888. ஊக்கி யுழந்தொருவ ரீட்டிய வொண்பொருளை
நோக்குமி னென்றுவந்து நொவ்வியார் கைவிடுதல்
போக்குநீர் தூக்கும் பொருகடற் றண்சேர்ப்ப
காக்கையைக் காப்பிட்ட சோறு.

( ,, 315)

889. முன்னை யுடையது காவா திகழ்ந்திருந்து
பின்னையஃ தாராய்ந்து கொள்குறுதல்—இன்னியற்கைப்
பைத்தகன்ற வல்குலா யஃதாலவ் வெண்ணெய்மேல்
வைத்து மயில்கொள்ளு மாறு.

( ,, 325)

890. களமர் பலரானும் கள்ளம் படினும்
வளமிக்கார் செல்வம் வருந்தா—விளைநெல்
அரிந ரணைதிறக்கு மூர அறுமோ
நரிநக்கிற் றென்று கடல்.

( ,, 177)

891. அருமை யுடைய பொருளுடையார் தங்கட்
கரும முடையாரை நாடார்—எருமைமேல்
நாரை துயில்வதியு மூர குளந்தொட்டுத்
தேரை வழிச்சென்றா ரில்.

( ,, 23)

892. நோக்கி யிருந்தா ரிமைக்கு மளவின்கண்
ஒப்பப் படினு முணங்கலைப் புட்கவரும்
போற்றிப் புறந்தந்தக் கண்ணும் பொருளினைக்
காப்பாரிற் பார்ப்பார் மிகும். ( ,, 259)

**885.** 3 சேய்த்தாற்; 7 நனிகொண்ட; 11 மெக்கல்சூழ். **886.** 9 வந்து; 12 சேணுக்கி; 13 நந்துசீர், நந்துநீர். **887.** 12 வலிக்குப்; 14 வளையாய். **888.** 2 யுழன்றொருவ, யுலந்தொருவ; 7 நோவறியார்; 10 தூங்கும்; 13 யாக்கையைக்; 14 காப்பட்ட. **889.** 11 யஃதலதவ், யஃதேலவ்; 14 மயில்கொல்லு; 15 (ம்) வாறு. **890.** 1 களவர்; 7 வருந்தார்; 9 வருநீ, அரிநீ; 10 ரணைதீர்க்கு. **891.** 2 யுடையர்; 15 ருமில். **892.** 10-12 புறந்தங் தகப்பட்ட வொண்பொருட்குக்.

893. அருளுடை யாருமற் றல்லா தவரும்
பொருளுடை யாரைப் புகழாதா ரில்லை
பொருபடைக் கண்ணு யதுவாற் றிருவுடையார்
பண்ட மிருவர் கொளல்.

(பழமொழி, 269)

894. செய்கபொரு ளாருஞ்செறு வாரைச்செறு கிற்கும்
எஃகுபிறி தில்லையிருந் தேயுயிரு முண்ணும்
ஐயமிலை யின்பமற னோடெவையு மாக்கும்
பொய்யில்பொரு ளேபொருண்மற் றில்லைபிற பொருளே.

(சிந்தா. 497)

895. பொன்னி னாகும் பொருபடை யப்படை
தன்னி னாகுந் தரணி தரணியிற்
பின்ன ராகும் பெரும்பொரு ளப்பொருள்
துன்னுங் காலைத் துன்னாதன வில்லையே.

( ,, 1923)

896. வென்றி யாக்கலு மேதக வாக்கலும்
அன்றி யுங்கல்வி யோடழ காக்கலும்
குன்றி னார்தமைக் குன்றென வாக்கலும்
பொன்றுஞ் சாகத்தி னுய்பொருள் செய்யுமே.

( ,, 1922)

897. குலந்தருங் கல்வி கொணர்ந்து முடிக்கும்
அலந்த கிளைக ளழிபசி தீர்க்கும்
நிலம்பக வெம்பிய நீள்சுரம் போகிப்
புலம்பில் பொருடரப் புன்கண்மை யுண்டோ.

(வளையா.)

## அதி. 82. படைமாட்சி

898. போரறின் வாடும் பொருநர்சீர் கீழ்வீழ்ந்த
வேரறின் வாடு மரமெல்லாம்—நீர்பாய்
மடையறின் நீணெய்தல் வாடும் படையறின்
மன்னர்சீர் வாடி விடும்.

(நான்மணி. 42)

899. பொய்யகல நாளும் புகழ்விளைத்த லென்வியப்பாம்
-வையகம் போர்த்த வயங்கொலிநீர்—கையகலக்
கற்றோன்றி மண்டோன்றாக் காலத்தே வாளோடு
முற்றோன்றி மூத்த குடி.

(வெண்பா. 35)

900. மின்னார் சினஞ்சொரிவேல் மீளிக் கடற்றானை
யொன்னார் நடுங்க வுலாய்நிமிரின்—என்னாங்கொல்
ஆழித்தேர் வெல்புரவி யண்ணல் மதயானைப்
பாழித்தோள் மன்னர் படை.

( ,, 131)

---

**893.** 9 பொருள்படைக், பெரும்படைக். **894.** 1 செய்யபொரு; 3 வாரைச்சிறு; 7 - 8 தேயுமுயி ருண்ணும்; 11 னோடவையு; 15 றல்லபிற. **895.** 7-8 தரணியிற்றரணி; 9-10 பின்னை யாகும்; 10 தாகும். **897.** 9 நிலம் புக. **898.** 1 போரன்றி; 5 வேரன்றி; 9-10 மடையிறி னீர்நெய்தல். **899.** 3 புகழ்விளைத.

901. தமருட் டலையாதல் தார்தாங்கி நிற்றல்
எமருள்யா மின்னமென் றெண்ணல்—அமருள்
முடிகழலின் முந்துறுதல் முல்லைத்தார் வேந்தன்
தொடிகழல் மைந்தர் தொழில்.

(வெண்பா. 41)

902. மறுமனத்தா னல்லாத மாநலத்த வேந்தன்
உறுமனத்தா னாகி யொழுகின்—தெறுமனத்தார்
பாயிரங் கூறிப் படைதொக்கா லென்செய்ப
ஆயிரங் காக்கைக்கோர் கல்.

(பழமொழி, 165)

903. மொய்கொண் டெழுந்த வமரகத்து மாற்றார்வாய்ப்
பொய்கொண் டறைபோய்த் திரிபவர்க் கென்கொலாம்
மையுண் டமர்த்தகண் மாணிழாய் சான்றவர்
கையுண்டுங் கூறுவர் மெய்.

( ,, 241)

904. உருத்தரு ஞாட்பினு ளொன்னார் தொலையச்
செருக்கினாற் செய்கலார் செய்வாரே போலத்
தருக்கினாற் றம்மிறைவன் கூழுண் பவரே
கருத்தினாற் கூறைகொள் வார்.

( ,, 378)

905. கொடையு மொழுக்கமுங் கோளுள் ளுணர்வும்
உடைய ரெனப்பட் டொழுகிப் பகைவர்
உடையமேற் செல்கிற்கு மூற்ற மிலாதார்
படையிற் படைத்தனிமை நன்று.

( ,, 324)

906. அமர்விலங்கி யாற்ற வறியவும் பட்டார்
எமர்மேலை யின்னரால் யார்க்குரைத்து மென்று
தமர்மறையாக் கூழுண்டு சேற லதுவே
மகன்மறையாத் தாய்வாழு மாறு.

( ,, 116)

907. தன்னின் வலியானைத் தானுடைய னல்லாக்கால்
என்ன குறைய னிளையரான்—மன்னும்
புலியிற் பெருந்திறல வாயினும் பூசை
எலியில் வழிப்பெறு பால்.

( ,, 330)

908. உடையிட்டார் புன்மேய்வா ரோடுநீர்ப் புக்கார்
படையிட்டார் பற்றேது மின்றி—நடையிட்டார்

---

**901.** 5 எமருளர்யா; 6 மின்னணமென்; 9 முடிகழலின்; 10 முந்துறு கண்; 14 வேந்தன், மைந்தன். **902.** 3 மானத்தார்; 5 உறுமனத்த; 7 யொழுகித்; 10 கூறப்; 11 படைநோக்கா; 15 கோல். **903.** 2 டெழுந்து; 4 மற்றார்வாய்ப்; 8 கென்கொலோ; 9 மைகொண். **904.** 1 உருத்தகு; 5 செருக்கினார்; 7 செல்வாரே. **905.** 3 கொள்ளுள்; 10 செல்கிற்று ; 12 மிலாத. **906.** 3 லறியவும்; 6 யின்னலமாரால்; 12 லிதுவே; 13 மகள்மறையாத்; மகன்மறையத். **907.** 6 குறையி; 6-7 குறைபினுடை யாரிடத்து, குறைபின்னே யாரிடத்து; 7 னினையரான்; 10 பொருந்திறல; 14 வழிப்பெறுப், வழிப்பேறும். **908.** 2 புன்மேய்ந்தா; 8 நடைவிட்டார்; 9-10 இவ்வகைய ரை வரையு; 10 யைவரை(யெ); 13 செவ்வகைச்.

இவ்வகை யைவரையு மென்று மனுகாரே
செய்வகைச் சேவகர் சென்று.

(சிறுபஞ்ச. 40)

909. தறுக ணண்மைய தாமரை நிறத்தன தகைசால்
மறுவில் வான்குளம் புடையன மாளுவத் தகத்த
பறையி னுவ படுசினை நாவலின் கனிபோற்
குறைவில் கோலத்த குளிர்புனற் சிந்துவின் கரைய.

(சிந்தா. 2159)

910. பார சூரவம் பல்லவ மெனும்பதிப் பிறந்த
வீர வாற்றல விளைகடுந் தேறலி னிறத்த
பாரிற் றேர்செலிற் பழிபெரி துடைத்தென நாணிச்
சோரும் வார்புயல் துளங்குவின் புகுவன துரகம்.

( ,, 2160)

911. அலங்கு தண்மதி யைப்பசி யடையவப் பகலே
நிலங்கொண் டோங்குவ நிரம்பிய புட்சுழி யுடைய
உலம்பி முன்னிரு தாள்களு மமிழ்வன போல
விலங்கு பாய்வன விடுகணை விலங்குவ கலிமா.

( ,, 1770)

912. அரும்பனைத் தடக்கை யபரகாத் திரம்வா
லெயிறிவை யைந்தினுங் கொல்வ
கருங்கடற் சங்குங் கறந்தவான் பாலுங்
கனற்றிய காலுகி ருடைய
பெரும்புலி முழக்கின் மாறெதிர் முழங்கிப்
பெருவரை கீண்டிடுந் திறல
திருந்தியே ழுறப்புந் திண்ணிலந் தோய்வ
தீயுமிழ் தறுகணிற் சிறந்த.

( ,, 2154)

## அதி. 83. நட்பு

913. கோட்டுப்பூப் போல மலர்ந்துபிற் கூம்பாது
வேட்டதே வேட்டதாம் நட்பாட்சி—தோட்ட
கயப்பூப்போல் முன்மலர்ந்து பிற்கூம்பு வாரை
நயப்பாரு நட்பாரு மில்.

(நாலடி, 215)

914. நறுமலர்த் தண்கோதாய் நட்டார்க்கு நட்டார்
மறுமையுஞ் செய்வதொன் றுண்டோ—இறுமளவும்
இன்புறுவ தின்புற் றெழீஇ யவரொடு
துன்புறுவ துன்புறுக் கால்.

( ,, 209)

**909**. 4 நிறத்தின; 9 மாளவத். **910**. 8 விளைசெங்; 10 னிறந்த; 17 வாய்புயல்; 18 துளங்கவின்; 20 துரங்கம். **911**. 7 டோங்கின, டேகுவ; 9 புகர்ச்சுழி; 17 மாய்வன; 19 விலக்குவ. **912**. 3-6 மருப்புக்காத் திரம்வா லெயி றைந்தினுங்; 9 சங்கு; 21 திறத்த. **913**. 14 நட்டாரு. **914**. 11 றிரீஇ.

915. காதலார் சொல்லுங் கடுஞ்சொல் லுவந்துரைக்கும்
ஏதிலா ரின்சொல்லிற் றீதாமோ—போதெலாம்
மாதர்வண் டார்க்கு மலிகடற் றண்சேர்ப்ப
ஆவ தறிவார்ப் பெறின்.

(நாலடி, 73)

916. குற்றமு மேனைக் குணனு மொருவனை
நட்டபி னாடித் திரிவனேல்—நட்டான்
மறைகாவா விட்டவன் செல்வுழிச் செல்க
அறைகடல்சூழ் வையம் நக.

( ,, 230)

917. பெரியவர் கேண்மை பிறைபோல நாளும்
வரிசை வரிசையா நந்தும்—வரிசையால்
வானூர் மதியம்போல் வைகலுந் தேயுமே
தானே சிறியார் தொடர்பு.

( ,, 125)

918. தானட் டொழுகற்குத் தக்கா ரெனவேண்டா
யார்நட்ப தாயினும் நட்புக் கொளல்வேண்டும்
கானட்டு நாறுங் கதுப்பினாய் தீற்றாதோ
நாய்நட்டால் நல்ல முயல்.

(பழமொழி, 14)

919. தெற்றப் பரிந்தொருவர் தீர்ப்ப ரெனப்பட்டார்க்
குற்ற குறையை யுரைப்பதாந்—தெற்ற
அறையா ரணிவளையாய் தீர்த லுறுவார்
மறையார் மருத்துவர்க்கு நோய்.

( ,, 88)

920. நன்றே யொருவற் றுணைக்கோடல் பாப்பிடுக்கண்
ஞெண்டேயும் பார்ப்பான்கட் டீர்த்தலான்—விண்டோயுங்
குன்றக நன்னாட கூறுங்கா லில்லையே
ஒன்றுக் குதவாத வொன்று.

( ,, 111)

921. உற்றா லிறைவற் குடம்பு கொடுக்கிற்பான்
மற்றவற் கொன்னாரோ டொன்றுமோ—தெற்ற
முரண்கொண்டு மாறாய வுண்ணுமோ வுண்ணா
இரண்டே றொருதுறையி னீர்.

( ,, 239)

922. தன்னை மதித்துத் தமரென்று கொண்டக்கால்
என்ன படினு மவர்செய்வ செய்வதே
இன்னொலி வெற்ப விடரென்னை துன்னூசி
போம்வழிப் போகு மிழை.

( ,, 358)

---

**915.** 7 நீதாமே; 12 றண்சேரா. **916.** 7 திரிவெனேல். **917.** 6 வரிசையால்; 11-12 வைகலு நந்துமே. **918.** 2 டொழுகுதற்குத்; 4 னென வேண்டா; 9 கார்நட்டு; 12 தின்னானே. **919.** 1 தெற்றுப்; 2 பிறிந்தொருவர்; 9 அறைவா; 11 தீர்த்த. **920.** 7 டீர்க்கலான். **921.** 2 லொருவற்; 4 கெடுக்கிற்பான்; 7 டொன்றுமே. **922.** 6 படானு; 8 செய்வதென்.

923. கருவினுட் கொண்டு கலந்தாருந் தம்முள்
ஒருவழி நீடி யுறைதலோ துன்பம்
பொருகடற் றண்சேர்ப்ப பூந்தா மரைமேற்
றிருவொடு மின்னாது துச்சு.

(பழமொழி, 123)

924. பறைநன் றுபண்ணமையா யாழி னிறைநின்ற
பெண்ணன் று பீடிலா மாந்தரிற்—பண்ணழிந்
தார்தலி னன் று பசித்தல் பசைந்தாரிற்
றீர்தலிற் றீப்புகுத னன் று.

(நான்மணி. 13)

925. கெட்டே மிதுவெந் நிலையென் று சார்தற்கண்
நட்டவ ரல்லார் நனிமிகு பவர்சுற்றம்
பெட்டது சொல்லிப் பெரிதிகழ்ந் தாற்றவும்
எட்டவந் தோரிடத் தேகி நிற்பவே.

(வளையா.)

926. பலர்க்கு நிழலாகி யுலகமீக் கூறத்
தலைப்போ கன்மையிற் சிறுவழி மடங்கி
நிலைபெறு நடுக லாகியக் கண்ணும்
இடங்கொடுத் தளிப்ப மன்ற வுடம்பொ
டின்னுயிர் விழுங் கிழமைத்
தொன்னட் புடையோர் தம்முழைச் செலினே.

(புறம், 223)

## அதி. 84. நட்பாராய்தல்

927. யானை யனையவர் நண்பொரீஇ நாயனையார்
கேண்மை கெழீஇக் கொளல்வேண்டும்—யானை
அறிந்தறிந்தும் பாகனையே கொல்லும் எறிந்தவேல்
மெய்யதா வால்குழைக்கும் நாய்.

(நாலடி, 213)

928. பலநாளும் பக்கத்தா ராயினும் நெஞ்சிற்
சிலநாளு மொட்டாரோ டொட்டார்—பலநாளும்
நீத்தா ரெனக்கை விடலுண்டோ தந்நெஞ்சத்
தியாத்தாரோ டியாத்த தொடர்பு.

( „ 214)

929. கடையாயார் நட்புக் கமுகனைய ரேனை
இடையாயார் தெங்கி னனையர்—தலையாயார்
எண்ணரும் பெண்ணைபோன் றிட்டஞான் றிட்டதே
தொன்மை யுடையார் தொடர்பு.

( „ 216)

---

**923.** 1 கருவினுடல்; 6 - 7 நீடு முறைதலோ. **925.** 9 பெற்றது; 13 ஒட்டவர்; 15 தேசி, தேக. **926.** 3, 1 நிலைப்பெறு; 5, 2 வழங்கு, விரும்புங். **927.** 3 நட்பொரீஇ; 6 தழீஇக்; 13 மெய்யதாஅ. **928.** 2 பக்கத்த; 11 விடிலுண்டோ; 13-14 தியார்த்தாரோ டியார்த்தார்.

930. நாய்க்காற் சிறுவிரல்போல் நன்கணிய ராயினும்
ஈக்காற் றுணையு முதவாதார் நட்பென்னாம்
சேய்த்தானுஞ் சென்று கொளல்வேண்டுஞ் செய்வினைக்கு
வாய்க்கா லனையார் தொடர்பு.

(நாலடி, 218)

931. மரீஇப் பலரொடு பன்னாள் முயங்கிப்
பொரீஇப் பொருட்டக்கார்க் கோடலே வேண்டும்
பரீஇ யுயிர்செகுக்கும் பாம்பொடு மின்னா
மரீஇஇப் பின்னைப் பிரிவு.

( ,, 220)

932. கனைகடற் றண்சேர்ப்ப கற்றறிந்தார் கேண்மை
நுனியிற் கரும்புதின் றற்றே—நுனிநீக்கித்
தூரிற்றின் றன்ன தகைத்தரோ பண்பிலா
ஈரமி லாளர் தொடர்பு.

( ,, 138)

933. கருத்துணர்ந்து கற்றறிந்தார் கேண்மையெஞ் ஞான்றும்
குருத்திற் கரும்புதின் றற்றே—குருத்திற்
கெதிர்செலத் தின்ற தகைத்தரோ வென்று
மதுரமி லாளர் தொடர்பு.

( ,, 211)

934. மண்ணி யறிப மணிநலம் பண்ணமைத்
தேறிய பின்னறிப மாநல—மாசறச்
சுட்டறிப பொன்னி னலங்காண்பான் கெட்டறிப
கேளிரா லாய பயன்.

(நான்மணி. 3)

935. தாளாள னென்பான் கடம்பட்டா வாழ்பவன்
வேளாள னென்பான் விருந்திருக்க வுண்ணாதான்
கோளாள னென்பான் மறவாதா னிம்மூவர்
கேளாக வாழ்த லினிது.

(திரிகடு. 12)

## அதி. 85. நட்பிற் பிழைபொறுத்தல்

936. நண்பொன்றித் தம்மாலே நட்கப்பட் டார்களைக்
கண்கண்ட குற்ற முளவெனினுங் காய்ந்தீயார்
பண்கொண்ட தீஞ்சொற் பணைத்தோளா யாருளரோ
தங்கன்று சாக்கறப் பார்.

(பழமொழி, 16)

937. விலங்கேயுந் தம்மோ டுடனுறைதல் மேவுங்
கலந்தாரைக் கைவிடுத லொல்லா—இலங்கருவி
தாஅ யிழியு மலைநாட வின்னாதே
பேஎயொ டானும் பிரிவு. ( ,, 122)

---

**930.** 4 ராயிடினும்; 8 நண்பென்னும்; 12 செய்விளைக்கும். **931.** 1 சரீஇப்; 9 மரீஇ; 13 மரீஇய. **933.** இது சில பிரதிகளில் இல்லை; சில பிரதிகளில் 'மண்ணியறிப' (934) என்பதன் பின். **934.** 5-6 தேறி யறிபபின். **935.** 3 கடம்படான்; 13 நாள்பல. **936.** 2 (ற்)றம்மாலே; 8 காத்தீயார், காய்ந்திடார்; 12 (ய்) கள்ளரோ. **937.** 9-10 மீதா றிழியு; 13 பேரியொ.

938. கொழித்துக் கொளப்பட்ட நண்பி னவரைப்
பழித்துப் பலர்நடுவட் சொல்லாடா ரென்கொல்
விழித்தலரும் நெய்தற் றுறைவ வுரையார்
இழித்தக்க காணிற் கனா.

(பழமொழி, 182)

939. ஆண்டீண் டெனவொன்றோ வேண்டா வடைந்தாரை
மாண்டில ரென்று மறுப்பக் கிடந்ததோ
பூண்டாங் கிளமுலைப் பொற்றொடீஇ பூண்ட
பறையறையாப் போயினா ரில்.

( ,, 112)

940. தந்தீமை யில்லவர் நட்டவர் தீமையையும்
எந்தீமை யென்றே யுணர்பதாம்—அந்தண்
பொருதிரை வந்துலாம் பொங்குநீர்ச் சேர்ப்ப
ஒருவர் பொறையிருவர் நட்பு.

( ,, 247)

941. நல்லா ரெனத்தாம் நனிவிரும்பிக் கொண்டாரை
யல்லா ரெனினு மடக்கிக் கொளல் வேண்டும்
நெல்லிற் குமியுண்டு நீர்க்கு நுரையுண்டு
புல்லிதழ் பூவிற்கு முண்டு.

(நாலடி, 221)

942. இன்னா செயினும் விடுதற் கரியாரைத்
துன்னாத் துறத்தல் தகுவதோ—துன்னருஞ்சீர்
விண்குத்து நீள்வரை வெற்ப களைபவோ
கண்குத்திற் றென்றுதங் கை.

( ,, 226)

943. இன்னா செயினும் விடற்பால ரல்லாரைப்
பொன்னாகப் போற்றிக் கொளல்வேண்டும்—பொன்னொடு
நல்லிற் சிதைத்ததீ நாடொறு நாடித்தம்
இல்லத்த தாக்குத லான்.

( ,, 225)

944. தமரென்று தாங்கொள்ளப் பட்டவர் தம்மைத்
தமரன்மை தாமறிந்தா ராயி னவரைத்
தமரினும் நன்கு மதித்துத் தமரன்மை
தம்மு ளடக்கிக் கொளல்.

( ,, 229)

945. வேற்றுமை யின்றிக் கலந்திருவர் நட்டக்கால்
தேற்றா வொழுக்க மொருவன்க ணுண்டாயின்
ஆற்றுந் துணையும் பொறுக்க பொறானாயின்
தூற்றாதே தூர விடல்.

( ,, 75)

---

**938.** 6 பலர்நடுவுட்; 8 தென்கொல்; 12 வறையார். **939.** 5 மாண்டிலா; 9 பூண்டங்; 11 பொற்கொடீஇ; 13 பறையறையப், பறையறையார். **940.** 4 தீமையும், தீமையை; 7 யுணர்வதாம். **941.** 1 நல்ல; 2 ரெனத்தான்; 5 இல்லா; 9 நெல்லுக். **942.** 5 துன்னார்; 6-7 துறத்தற் குறுவதோ; 10 நீர வரை. **943.** 10 சிறைத்ததீ; 14 ராக்குத. **944.** 5 தமரின்மை; 10 நன்றா.

946. பெரியார் பெருநட்புக் கோடல்தாஞ் செய்த
அரிய பொறுப்பரென் றன்றே—அரியரோ
ஒல்லெ னருவி யுயர்வரை நன்னாட
நல்லசெய் வார்க்குத் தமர்.

(நாலடி, 77)

947. மலைப்பினும் வாரணந் தாங்குங் குழவி
அலைப்பினும் அன்னையென் றோடும்—சிலைப்பினும்
நட்டார் நடுங்கும் வினைசெய்யா ரொட்டார்
உடனுறையுங் காலமு மில்.

(நான்மணி, 23)

## அதி. 86. தீநட்பு

948. பெரியநட் டார்க்கும் பகைவர்க்குஞ் சென்று
திரிவின்றித் தீர்ந்தார்போற் சொல்லி யவருள்
ஒருவரோ டொன்றி யொருப்படா தாரே
இருதலைக் கொள்ளியென் பார்.

(பழமொழி, 10)

949. தமக்குற்ற தேயாகத் தம்மடைந்தார்க் குற்ற
எமக்குற்ற வென்றுணரா விட்டக்கா லென்னாம்
இமைத்தருவி பொன்வரன்று மீர்ங்குன்ற நாட
உமிக்குற்றுக் கைவருந்து மாறு.

( ,, 368)

950. திருந்தாய்நீ யார்வத்தைத் தீமை யுடையார்
வருந்தினா ரென்றே வயப்படுத்த லுண்டோ
அரிந்தரிகால் பெய்தமையக் கூட்டியக் கண்ணும்
பொருந்தாமண் ணாகா சுவர்.

( ,, 9)

951. பாப்புக் கொடியாற்குப் பால்மேனி யான்போலத்
தாக்கி யமருட் டலைப்பெய்யார்—போக்கி
வழியரா நட்டார்க்கு மாதவஞ்செய் வாரே
கழிவிழாத் தோளேற்று வார்.

( ,, 13)

952. தானகத்தா னட்டுத் தமரென் றொழுகியக்கால்
நாணகத்துத் தாமின்றி நன்கொழுகா ராபவேல்
மானமர்க் கண்ணி மறந்தும் பரியலராற்
கானகத் துக்க நிலா.

( ,, 210)

953. எய்ப்புழி வைப்பா மெனப்போற்றப் பட்டவர்
உற்றுழி யொன்றுக் குதவலராய்ப் பைந்தொடீஇ

---

**946.** 3 கோடல்தான்; 6 பொறுப்பவென்; 8 அரியாரோ; 11 யுயர்மலை; 14 வார்க்குக். **947.** 5 யுலப்பினும்; 7 றோதும்; 13 உடனுறங்குங். **948.** 6 தீர்ந்தார்போற்; 14 கொள்ளியொப், கொள்ளியேய்ப். **949.** 6 வென்றுணர; 13 உமிக்குற்றிக், உமிக்குத்திக். **950.** 1-2 திருந்தாத வார்வத்துத், திருந்தாதா ராயத்துத்; 3 தீர்மை; 6-7 ரென்று வயப்படுதே; 9 வரிந்தருகால், வருந்தரிகால்; 11 கட்டிய, கூடியக்; 13 பொருந்தறமண். **951.** 1 பார்ப்புக்; 9 வழியாய; 14 தேரேற்று. **952.** இது சில பிரதிகளில் இல்லை. 12 பிரியலாக். **953.** 8 பைந்தொடியே; 13 மச்செறி.

அச்சிடை யிட்டுத் திரியி னஃதால
மச்சேற்றி யேணி களைவு.

(பழமொழி, 291)

954. இடையீ டுடையா ரிவரவரோ டென்று
தலையாயா ராய்தந்துங் காணார்—கடையாயார்
முன்னின்று கூறுங் குறளை தெரிதலாற்
பின்னின்ற பேதையார் நட்பு.

( ,, 113)

955. பெருகு வதுபோலத் தோன்றிவைத் தீப்போல்
ஒருபொழுதுஞ் சொல்லாதே நந்து—மருகெலாஞ்
சந்தன நீள்சோலைச் சாரல் மலைநாட
பந்தமி லாளர் தொடர்பு.

(நாலடி, 234)

956. சான்றோ ரெனமதித்துச் சார்ந்தாய்மற் சார்ந்தாய்க்குச்
சான்றாண்மை சார்ந்தார்க ணில்லாயிற்—சார்ந்தோய்கேள்
சாந்தகத் துண்டென்று செப்புத் திறந்தொருவன்
பாம்பகத்துக் கண்ட துடைத்து.

( ,, 126)

957. பகல்போலும் நெஞ்சத்தார் பண்பின்மை யின்னா
நகையாய நண்பினார் நாரின்மை யின்னா
இகலி லெழுந்தவ ரோட்டின்னா வின்னா
நயமின் மனத்தவர் நட்பு.

(இன்னா. 8)

## அதி. 87. கூடாநட்பு

958. நலிந்தொருவர் நாளு மடுபாக்குப் புக்கால்
மெலிந்தவர் வீழாமை கண்டு—மலிந்தடைதல்
பூப்பிழைத்து வண்டு புடையாடுங் கண்ணினாய்
ஏப்பிழைத்துக் காக்கொள்ளு மாறு.

(பழமொழி, 354)

959. யாவ ரொருவ ரொருவர்தம் முள்ளத்தைத்
தேருந் துணைமை யுடையவர்—சாரற்
கனமணி நின்றிமைக்கு நாடகேள் மக்கள்
மனம்வேறு செய்கையும் வேறு.

(நாலடி, 127)

960. செறிப்பில் பழங்கூரை சேறணை யாக
இறைத்துநீ ரேற்றுங் கிடப்பர்—கறைக்குன்றம்
பொங்கருவி தாழும் புனல்வரை நன்னாட
தங்கரும முற்றுந் துணை.

( ,, 231)

---

**954.** 3ரிவரிவரோ; 4 டொன்றுங், டென்றுங்; 6ராய்ந்த தூஉங்; 11 குதலை. **955.** 1-4 பெருகுவது போற்றோன்றி வைத்தீயே போல; 3 தோன்றவைத்; 4 தீயேபோல்; 6 செல்லாதே; 10 நீர்ச்சோலைச். **956.** 6 சார்ந்தோர்க. **957.** 10-11 னெழுந்தவ ரோடின்னா; 13 நவமின். **958.** 1 நலிந்தொருவன்; 3 மடுப்பார்க்குப், மடுப்பாக்குப்; 11 புடைபாடுங்; 14 கைக்கொள்ளு. **959.** 1 யாஅ; 9 கணமணி. **960.** 1 செறுப்பில்; 14 முந்துங்.

961. உள்ளத்தால் நள்ளா துறுதித் தொழிலராய்க்
கள்ளத்தால் நட்டார் கழிகிழமை—தெள்ளிப்
புனற்செதும்பு நின்றலைக்கும் பூங்குன்ற நாட
மனத்துக்கண் மாசாய் விடும்.

(நாலடி, 128)

## அதி. 88. பேதைமை

962. ஆயிரவ ரானு மறிவிலார் தொக்கக்கால்
மாயிரு ஞாலத்து மாண்பொருவன் போல்கல்லார்
பாயிருள் நீக்கு மதியம்போற் பன்மீனுங்
காய்கலா வாகு நிலா.

(பழமொழி, 17)

963. பெரியார்க்குச் செய்யுஞ் சிறப்பினைப் பேணிச்
சிறியார்க்குச் செய்து விடுதல்—பொறிவண்டு
பூமே லிசைமுரலு மூர வதுவன்றே
நாய்மேற் றவிசிடு மாறு.

( ,, 75)

964. ஓர்த்த கருத்து முலகு முணராத
மூர்க்கர்க் குறுதி மொழியற்க—மூர்க்கன்றான்
கொண்டதே கொண்டு விடானுகு மாகாதே
உண்டது நீலம் பிறிது.

( ,, 168)

965. தெரியாதார் சொல்லுந் திறனின்மை தீதாப்
பரியார் பயனின்மை செய்து—பெரியார்சொற்
கொள்ளாது தாந்தம்மைக் காவா தவர்பிறரைக்
கள்ளராச் செய்குறு வார்.

( ,, 310)

966. தங்குற்றம் நீக்கல ராகிப் பிறர்குற்றம்
எங்கெங்கும் நீக்கற் கிடைபுகுதல்—எங்கும்
வியனுலகில் வெள்ளாடு தன்வளி தீரா
தயல்வளி தீர்த்து விடல்.

( ,, 124)

967. சொல்லெதிர்ந்து தம்மை வழிபட் டொழுகலராய்க்
கல்லெறிந்தாற் போலக் கலாந்தலைக் கொள்வாரை
இல்லிருந் தாற்ற முனிவித்தல் உள்ளிருந்
தச்சாணி தாங்கழிக்கு மாறு.

( ,, 276)

968. இல்வாழ்க்கை யானு மிலிங்கானு மேற்கொள்ளார்
நல்வாழ்க்கை போக நடுவுநின்—றெல்லாம்

---

**961.** இது 'பேதைமை'யில் முதற்செய்யுளாகவுள்ளது. 5 கள்ளத்தார். **962.** 12 பண்பீனுங். **963.** 10 விரைமுரலு; 14-15 றவிசிட்டவாறு. **964.** 4 முணராதார்; 13 உண்டதோர். **965.** 3-4 திறமின்மை மீதாய்ப்; 5 பெரியார்; 13 கள்ளாகச். **966.** 2 நீங்கல, நீக்கில; 6 நீங்கற்; 11 தின்றவழி; 14 தீர்ந்து. **967.** 3 வழிப்பட்; 4 டொழுகலாய்க், டொருகாலாய்க்; 10 தாற்றி; 13 தக்காணி; 14-15 தான்கழிந் தற்று.

ஒருதலையாச் சென்று துணியா தவரே
இருதலையுங் காக்கழிப் பார்.

(பழமொழி, 208)

969. கல்லார்க் கினனா யொழுகலுங் காழ்க்கொண்ட
இல்லாளைக் கோலாற் புடைத்தலும்—இல்லஞ்
சிறியாரைக் கொண்டு புகலுமிம் மூன்றும்
அறியாமை யான்வருங் கேடு.

(திரிகடு. 3)

970. நண்பிலார் மாட்டு நகைக்கிழமை செய்வானும்
பெண்பாலைக் காப்பிகழும் பேதையும்—பண்பின்
இழுக்காய சொல்லாடு வானுமிம் மூவர்
ஒழுக்கங் கடைப்பிடியா தார்.

( „ 94)

971. இருளாய்க் கழியு முலோபியும் யாதுந்
தெருளா துரைக்கும் வெகுளியும்—பொருளல்ல
காதற் படுக்கும் விழைவு மிவைமூன்றும்
பேதைமை வாழு முயிர்க்கு.

( „ 93)

972. கொலைநின்று தின்றுழல் வானும் பெரியவர்
புல்லுங்காற் றூன்புல்லும் பேதையும்—இல்லெனக்கொன்
றீயென் பவனை நகுவானு மிம்மூவர்
யாதுங் கடைப்பிடியா தார்.

( „ 74)

973. பழியஞ்சான் வாழும் பசுவும் பரிவினாற்
கொண்ட வருந்தவம் விட்டானுங் கொண்டிருந்
தில்லஞ்சி வாழு மெருது மிவர்மூவர்
நெல்லுண்ட நெஞ்சிற்கோர் நோய்.

( „ 79)

974. பெருமை யுடையா ரினத்தி னகறல்
உரிமையில் பெண்டிரைக் காமுற்று வாழ்தல்
விழுமிய வல்ல துணிதலிம் மூன்றும்
முழுமக்கள் காத லவை.

( „ 9)

975. பாலாற் கழீஇப் பலநா ளுணக்கினும்
வாலிதாம் பக்க மிருந்தைக் கிருந்தன்று
கோலாற் கடாஅய்க் குறினும் புகலொல்லா
நோலா வுடம்பிற் கறிவு.

(நாலடி, 258)

976. பெறுவதொன் றின்றியும் பெற்றானே போலக்
கறுவுகொண் டேலாதார் மாட்டுங்—கறுவினாற்
கோத்தின்னா கூறி யுரையாக்காற் பேதைக்கு
நாத்தின்னு நல்ல சுனைத்து.

( „ 335)

---

**969, 970.** இவை சிலபிரதிகளிற் காணப்பெறவில்லை. **971.** 7 வெகுள் வும். **972.** 2 நின்றுழல்; 7 பேதைமையும். **973.** 1-2 பழியஞ்சா னுய; 8-9 கொண்டிருந்தவில்லஞ்சி; 12 மிம்மூவர், மிவைமூவர். **974.** 5 உரிமையிற். **975.** 9 கோலாய்க்; 12 புகலொவ்வா; 14-15 வுடம்பி னறிவு. **976.** 3 பெற் றாரே; 6 டல்லாதார்; 14 நன்கு; 15 சுவைத்து.

977. நல்லவை நாடொறு மெய்தா ரறஞ்செய்யார்
இல்லாதார்க் கியாதொன்று மீகலார்—எல்லாம்
இனியார்தோள் சேரா ரிசைபட வாழார்
முனியார்கொல் தாம்வாழும் நாள்.

(நாலடி, 338)

978. பன்றிக்கூழ்ப் பத்தரிற் றேமா வடித்தற்றால்
நன்றறியா மாந்தர்க் கறத்தா றுரைக்குங்காற்
குன்றின்மேற் கொட்டுந் தறிபோற் றலைதகர்ந்து
சென்றிசையா வாகுஞ் செவிக்கு.

( ,, 257)

979. கொலைஞ ருலையேற்றித் தீமடுப்ப யாமை
நிலையறியா தந்நீர்ப் படிந்தாடி யற்றே
கொலைவல் பெருங்கூற்றம் கோட்பார்ப்ப வீண்டை
வலையகத்துச் செம்மாப்பார் மாண்பு.

( ,, 331)

980. தெண்ணீர் பரந்து திசைதொறும் போய்க்கெட்ட
எண்ணெய்கொண் டீட்டற் கிவறுத லென்னொக்கும்
பெண்மனம் பேதித் தொருப்படுப்பெ னென்னும்
எண்ணி லொருவ னியல்பெண்ணு மாறே.

(வளையா.)

981. நீண்முகை கையாற் கிழித்தது மொக்குறு
மாண்வினைப் பாவை மறைநின்று கேட்குறிற்
பேணலு மன்பும் பிறந்துழிப் பேதுசெய்
தாணைப்பெண் ணைய வணைக்குறு மாறே.

( ,, )

## அதி. 89. புல்லறிவாண்மை

982. மறுமையொன் றுண்டோ மனம்பட்ட தெல்லாம்
பெறுமாறு செய்ம்மினென் பாரே—நறுநெய்யுட்
கட்டி யடையைக் களைவித்துக் கண்செரீஇ
இட்டிகை தீற்று பவர்.

(பழமொழி, 158)

983. நீர்த்தன் றொருவர் நெறியன்றிக் கொண்டக்காற்
பேர்த்துத் தெருட்டல் பெரியார்க்கு மாகாதே
கூர்த்தநுண் கேள்வி யறிவுடையார்க் காயினும்
ஓர்த்த படுமே பறை.

( ,, 195)

984. கல்லாதுங் கேளாதுங் கற்றா ரவைநடுவட்
சொல்லாடு வாரையு மஞ்சற்பாற்—றெல்லருவி

---

**977.** 5 இல்லாருக்; 14 தாம்வீழு. **978.** 12 றலைசிதர்ந்து. **979.** 11 கோள்பார்ப்ப; 12 வீண்ட. **980.** 2 (ப்)பரந்த; 4 போய்க்கொட்ட; 6 டாடற்; 6-7 டிட்ட விவறுத; 15 னியல்பென்னு. **981.** 1 நீண்வினைக்; 4 மோக்குறும்; 8 கேட்டுறிற்; 11 பிறிந்துழிப்; 13-15 தாணைப் பெண்ணை யணைக்குறு. **982.** 1-2 மறுமையு முண்டோ; 10 யடையக்; 13 இட்டகை. **983.** 3 நெறியின் றிக்; 13 ஓர்க்கப்; 13-14 போர்க்கப் படுமோ; 15 மறை. **984.** 1 கல்லாது; 5-6 சொல்லா வொருவரையு; 8 றெல்லருவி.

பாயுமலை நாட பரிசழிந் தாரொடு
தேவரு மாற்ற லிலர்.

(பழமொழி, 350)

985. நல்லவை கண்டக்கால் நாச்சுருட்டி நன்றுணராப்
புல்லவையுட் டம்மைப் புகழ்ந்துரைத்தல்—புல்லார்
புடைத்தறுக ணஞ்சுவா னில்லுள்வில் லேற்றி
இடைக்கலத் தெய்து விடல்.

( ,, 249)

986. மானமும் நாணு மறியார் மதிமயங்கி
ஞான மறிவா ரிடைப்புக்குத் தாமிருந்து
ஞானம் வினாஅ யுரைக்கி னகையாகும்
யானைப்பற் காண்பான் புகல்.

( ,, 298)

987. நற்கறி வில்லாரை நாட்டவு மாகாதே
சொற்குறி கொண்டு துடிப்பண் ணுறுத்ததுபோல்
வெற்பறைமேற் றாழும் விலங்கருவி நன்னாட
கற்பறிவு போகா கடை.

( ,, 270)

988. சிறுகாலை யேதமக்குச் செல்வுழி வல்சி
இறுகிறுகத் தோட்கோப்புக் கொள்ளார்—இறுகிறுகிப்
பின்னறிவா மென்றுரைக்கும் பேதையார் கைகாட்டும்
பொன்னும் புளிவிளங்கா யாம்.

(நாலடி, 328)

989. தாமேயு மின்புறார் தக்கார்க்கு நன்றாற்றார்
ஏமஞ்சால் நன்னெறியுஞ் சேர்கலார்—தாமயங்கி
ஆக்கத்துட் டூங்கி யவத்தமே வாழ்நாளைப்
போக்குவார் புல்லறிவி னார்.

( ,, 327)

990. வெறுமை யிடத்தும் விழுப்பிணிப் போதும்
மறுமை மனத்தரே யாகி—மறுமையை
ஐந்தை யனைத்தானு மாற்றிய காலத்துச்
சிந்தியார் சிற்றறிவி னார்.

( ,, 329)

991. உளநாள் சிலவா லுயிர்க்கேம மின்றால்
பலர்மன்னுந் தூற்றும் பழியாற்—பலருள்ளுங்
கண்டாரோ டெல்லா நகாஅ தெவனொருவன்
தண்டித் தனிப்பகை கோள்.

( ,, 324)

992. இடம்பட மெய்ஞ்ஞானங் கற்பினு மென்றும்
அடங்காதா ரென்று மடங்கார்—தடங்கண்ணாய்

**985.** 4 நன்குணராப்; 9 படைத்தறுக; 13 இடைத்தகலத், இடைக் காலத். **986.** 6 மறியா; 8 தாமயங்கி; 12 னகையாகி. **987.** 1-2 நற்குறி யில்லாரை; 5 சொற்கொறி, சொற்குறிது; 13 கற்பறியும்; 14 மேகா. **989.** 4 நின்றாற்றார்; 5 ஏமஞ்சார், சேமஞ்சார். **990.** 9 யந்தை; 11 மாகிய. **991.** 1 உளதாஞ்; 4 மின்றாம். **992.** 2 நன்ஞானங்; 12 பெய்திடினும், பெய் யினும்.

உப்பொடு நெய்பால் தயிர்காயம் பெய்தடினும்
கைப்பறு பேய்ச்சுரையின் காய்.

(நாலடி, 116)

993. கற்றவுங் கண்ணகன்ற சாயலு மிற்பிறப்பும்
பக்கத்தார் பாராட்டப் பாடெய்துந் தாமுரைப்பின்
மைத்துனர் பல்கி மருந்திற் றணியாத
பித்தனென் றெள்ளப் படும்.

( ,, 340)

994. வெல்வது வேண்டி வெகுண்டுரைக்கும் நோன்பியும்
இல்லது காமுற் றிருப்பானுங்—கல்வி
செவிக்குற்றம் பார்த்திருப் பானுமிம் மூவர்
உமிக்குற்றுக் கைவருந்து வார்.

(திரிகடு. 28)

995. அரும்பொனன் னூர்கோட்டி யார்வுற்றக் கண்ணுங்
கரும்புதின் பார்முன்னர் நாய்போற்—கரும்புலவர்
கொண்டொழிப வொன்றோ துயில்மடிப வல்லாக்கால்
விண்டுரைப்பர் வேறு விருந்து.

(தகடூர்.)

996. அந்தக னந்தகற் காறு சொலலொக்கும்
முந்துசெய் குற்றங் கெடுப்பான் முழுவதும்
நன்கறி வில்லா னதுவறி யாதவற்
கின்புறு வீட்டி னெறிசொல்லு மாறே.

(வளையா.)

## அதி. 90. பகைத்திறந்தெரிதல்

997. எதிர்த்த பகையை யிளைதாய போழ்தே
கதித்துக் களைக முதிரா—தெதிர்த்து
நணிநிற்பச் செய்தவர் நண்பெலாந் தீர்க்கத்
தனிமரங் காடாவ தில்.

(பழமொழி, 390)

998. வன்பாட் டவர்பகை கொள்ளினு மேலாயார்
புன்பாட் டவர்பகை கோடல் பயமின்றே
கண்பாட்ட பூங்காவிக் கானலந் தண்சேர்ப்ப
வெண்பாட்டம் வெள்ளந் தரும்.

( ,, 71)

999. தழங்குகுரல் வானத்துத் தண்பெயல் பெற்றாற்
கிழங்குடைய வெல்லா முளைக்குமோ ராற்றான்
விழைந்தவரை வேறன்றிக் கொண்டொழுகல் வேண்டா
பழம்பகை நட்பாத லில். ( ,, 97)

---

**993.** 10 மல்கி; 14 றெண்ணப். **994.** 2 கொண்டு; 4 நோன்பிலியும்; 5 அல்லது; 10-11 பார்த்தே யிருப்பானிம்; 13 உமிக்குற்றிக். **995.** தகடூர் மாலை. 1-2 அரும்பென்னூர் முன்கோட்டி, அரும்பொன்னூர் முன்கோட்டி; 1-3 அரும்பன்னூர் முன்கொடிய ராயுற்றக்; 7 காய்போற்; 8 பெரும்புலவர்; 13 விண்டுரையா; 14 வேறோர். **996.** 1 அந்த; 3-4 காறுசொலல் யாதொக்கும்; 15 னெறிசெல்லு. **997.** 5 கதிர்த்துக்; 8 தெதிர்த்தால்; 10 செய்தலா, செய்பவர்; 14 காடாய; 14-15 காடாத வில். **999.** 3 தண்புயல்; 14-15 நட்பாவ தில்.

1000. அமர்நின்ற போழ்தின்க ணாற்றுவ ரேனும்
நிகரொன்றின் மேல்விடுத லேதம்—நிகரின்றி
வில்லொடுநே ரொத்த புருவத்தா யஃதன்றே
கல்லொடு கையெறியு மாறு.
(பழமொழி, 382)

1001. ஆற்றப் பெரியார் பகைவேண்டிக் கொள்ளற்க
போற்றாது கொண்டரக்கன் போருளகப் பட்டானல்
நோற்ற பெருமை யுடையாருங் கூற்றம்
புறங்கொம்மை கொட்டினா ரில்.
( ,, 126)

1002. முன்னலிந் தாற்ற முரண்கொண் டெழுந்தாரைப்
பின்னலிது மென்றுரைத்தல் பேதைமையே—பின்னின்று
காம்பன்ன தோளி கலங்கக் கடித்தோடும்
பாம்புபற் கொள்வாரோ வில்.
( ,, 148)

1003. பொருந்தா தவரைப் பொருதட்டக் கண்ணும்
இருந்தமையா ராகி யிறப்ப வெகுடல்
விரிந்தருவி வீழ்தரும் வெற்ப வதுவே
அரிந்தரிகால் நீர்ப்படுக்கு மாறு.
( ,, 281)

1004. உற்றதற் கெல்லா முரஞ்செய்ய வேண்டுமோ
கற்றறிந்தார் தம்மை வெகுளாமற் காப்பதே
நெற்செய்யப் புற்றேய்ந்தாற் போல நெடும்பகை
தற்செய்யத் தானே கெடும்.
( ,, 83)

1005. மிக்குடைய ராகி மிகமதிக்கப் பட்டாரை
ஒற்கப் படமுயற லென்ற விழுக்காகும்
நற்கெளி தாகி விடினும் நளிவரைமேற்
கற்கிள்ளிக் கையுய்ந்தா ரில்.
( ,, 36)

1006. இயற்பகை வெல்குறுவா னேமாப்ப முன்னே
அயற்பகை தூண்டி விடுத்தோர்—நயத்தாற்
கறுவழங்கிக் கைக்கெளிதாச் செய்க வதுவே
சிறுகுரங்கின் கையாற் றுழா.
( ,, 51)

1007. நிரம்பி நிரையத்தைக் கண்டந் நிரையம்
வரம்பில் பெரியானும் புக்கான்—இரங்கார்
கொடியார மார்ப குடிகெட வந்தால்
அடிகெடமன் றூடி விடல்.
( ,, 103)

---

**1000.** 11 புரூரத்தா. **1001.** 6-7 கொண்டான் பொருளகப்; 8 பட்டானு. **1002.** 7 பேதைமை; 8 மின்னின்று. **1003.** 3 பொருந்தட்டக்; 5-7 இருந்தலை யாரா விறப்ப; 13 அரிந்தரிக்கால். **1004.** 1 உற்றறி; 3 முரஞ்செயல். **1005.** 5 ஒக்கப்; 6 படமுடையற; 8 விழுக்காடு; 12 நனி வரைமேற். **1006.** 2 வெஃகுறுவா. **1007.** 3 கண்டிந்; 9 கடியார.

1008. எரியுந் தீத்திர ளெட்டுணை யாயினுங்
கரியச் சுட்டிடுங் காந்திக் கனனுமேல்
தெரியிற் றெல்பகை தான்சிறி தாயினும்
விரியப் பெற்றிடின் வென்றிடு கிற்குமே.

(சூளா. சீய. 71)

1009. முட்கொ ணச்சு மரமுளை யாகவே
உட்க நீக்கி னுகிரினும் நீக்கலாம்
வட்க நீண்டதற் பின்மழுத் தன்னினுங்
கட்கொ டாமன்ன யார்களை கிற்பவே.

( ,, 72)

## அதி. 91. உட்பகை

1010. தலைமை கருதுந் தகையாரை வேந்தன்
நிலைமையா னேர்செய் திருத்தல்—மலைமிசைக்
காம்பனுக்கு மென்றோளா யஃதாலவ் வோரறையுட்
பாம்போ டுடனுறையு மாறு.

(பழமொழி, 349)

1011. கண்ணின் மணியேபோற் காதலராய் நட்டாரும்
உண்ணுந் துணையு முளராப் பிறராவர்
எண்ணி யுயிர்கொள்வா னேன்று திரியினும்
உண்ணுந் துணைக்காக்குங் கூற்று.

( ,, 89)

1012. வெள்ளம் பகைவரினும் வேறிடத்தார் செய்வதென்
கள்ள முடைத்தாகிச் சார்ந்தார் கழிநட்புப்
புள்ளொலிப் பொய்கைப் புனலூர வஃதன்றோ
உள்ளில்லத் துண்ட தனிசு.

( ,, 98)

1013. இம்மைப் பழியு மறுமைக்குப் பாவமுந்
தம்மைப் பிரியார் தமர்போ லடைந்தாரிற்
செம்மைப் பகைகொண்டு சேராதார் தீயரோ
மைம்மைப்பின் நன்று குருடு.

( ,, 188)

1014. தொழுதகைதங் கையி னுள்ளுந் துறுமுடி யகத்துஞ் சோர
அழுதகண் ணீரி னுள்ளு மணிகலத் தகத்து மாய்ந்து
பழுதுகண் ணரிந்து கொல்லும் படையுட னடங்கும் பற்றா
தொழிகயார் கண்ணுந் தேற்றந் தெளிகுற்றார் விளிகுற் றாரே.

(சிந்தா. 1891)

1015. தோய்தகை மகளிர்த் தோயின் மெய்யணி நீக்கித் தூய்நீர்
ஆய்முது மகளிர் தம்மா லரிறபத் திமிரி யாட்டி

---

**1008.** 2-3 தீத்திற னெட்டுணை; 14 பெற்றுடன்; 15 வேறிடு. **1009.** 8 கொல்லலாம்; 10 நீண்டதன்; 12 தன்னினுங்; 14 டார்மன்ன. **1010.** 6 நேர்செய்; 11-12 யஃதாலல் லோரறையுட். **1011.** 3 காதலாய்; 4 நட்டா னும்; 5 உண்ணுந்; 7-8 (ம்)பிறராகி நிற்பரால். **1012.** 2 பலவரினும்; 3-5 வேறிடத்தாற் சென்றுருக் குள்ள; 8 கணட்புப்; 13-14 உள்ளில்தனு வுண்ட. **1013.** 6 பரியார், பிரியா; 13 மிமைப்பினின். **1014.** 10 மருங்கலத்; 13 பழுதுதண். **1015.** 3 தொய்யின்; 6 தூநீர்; 10 லரிப்பறத்; 15 யார்க்கு; 19 தாநல, தானல.

வேய்நிறத் தோளி னார்க்கு வெண்டுகில் மாலை சாந்தந்
தாய்நல கலங்கள் சேர்த்தித் தடமுலை தோய்க வென்றான்.
(சிந்தா. 1892)

1016. பகைவ ருள்ளமும் பாம்பின் படர்ச்சியும்
வகைசெய் மேகலை மங்கையர் நெஞ்சமும்
மிகைசெல் மேகத்து மின்னுஞ்செந் நில்லல
புகையும் வேலினீர் போற்றுபு சென்மினே.
( ,, 1816)

## அதி. 92. பெரியாரைப் பிழையாமை

1017. மன்னவ னாணைக்கீழ் மற்றையார் மீக்கூற்றம்
என்ன வகையாற் செயப்பெறுப—புன்னைப்
பரப்புநீர் தாஅம் படுகடற்றண் சேர்ப்ப
மரத்தின்கீ ழாகா மரம்.
(பழமொழி, 311)

1018. வெஞ்சின மன்னவன் வேண்டாத செய்யினும்
நெஞ்சத்துக் கொள்வ சிறிதுஞ் செயல்வேண்டா
என்செய் தகப்பட்டக் கண்ணு மெடுப்புவவோ
துஞ்சு புலியைத் துயில்.
( ,, 33)

1019. தாமேயுந் தம்மைப் புறந்தர வாற்றாதார்
வாமான்றேர் மன்னரைக் காய்வ தெவன்கொலோ
ஆமா வுகளு மணிவரை வெற்பகேள்
ஏமாரார் கோங்கேறி னார்.
( ,, 341)

1020. இடுகுடைத்தேர் மன்ன ரெமக்கமையு மென்று
கடிதவர் காதலிப்பத் தாங்காதல் கொண்டு
முடித லெனைத்து முணரா முயறல்
கடிய கனைந்து விடல்.
( ,, 309)

1021. உரைத்தவர் நாவோ பருந்தெறியா தென்று
சிலைத்தெழுந்து செம்மாப் பவரே—மலைத்தால்
இழைத்த திறவா தவரைக் கவற்றிப்
பலிப்புறத் துண்ப ருணா.
( ,, 176)

1022. எல்லாத் திறத்து மிறப்பப் பெரியாரைக்
கல்லாத் துணையார் கயப்பித்தல்—சொல்லின்
நிறைந்தார் வளையினு யஃதா லெருக்கு
மறைந்தியானை காய்த்தி விடல்.
( ,, 376)

**1016.** 9 மிமைசெல், மிகைசெய்; 11 மின்னனு; 11-12 மின்னுஞ் சென்னீணிலாப்; 15 போற்றுவ. **1017.** 10 தாவும், காஅம். **1018.** 3 வேண்டாது; 5 நெஞ்சகத்துக்; 12 மெழுப்புபவோ. **1019.** 8 தெவன் கொலாம்; 13 ஏமாறூர். **1020.** 4 மென்றுங்; 5 கடிதவர்க்; 7 தாங்கரை தல்; 10 லனைத்து; 11 முணரார்; 13 கடிப, கடிவ; 14 களைந்து. **1021.** 4 தொன்று; 11 திவரைக்; 13 புலிப்புறத். **1022.** 9 அறைந்தார்; 12 லெருக்க; 13 மிறைந்தியாலை; 14 காய்து.

1023. தீயன வல்ல செயினுந் திறல்வேந்தன்
காய்வன செய்தொழுகார் கற்றறிந்தார்—காயும்
புலிமுன்னர்ப் புல்வாய்க்குப் போக்கி லதுவே
வலிமுன்னர் வைப்பார மில்.

(பழமொழி, 234)

1024. முன்னு மொருகால் பிழைப்பான்று ராற்றவும்
பின்னும் பிழைப்பப் பொறுப்பவோ—இன்னிசை
யாழின்வண் டார்க்கும் புனலூர ஈனுமோ
வாழை யிருகாற் குலை.

( „ 221)

1025. மெய்ம்மையே நின்று மிகநோக்கப் பட்டவர்
கைம்மேலே நின்று கறுப்பன செய்தொழுகிப்
பொய்ம்மேலே கொள்ளி னிறைவற்கொன் றூர்குறைப்பர்
தம்மேலே வீழப் பனை.

( „ 201)

1026. உறாஅ வகையது செய்தாரை வேந்தன்
பொறாஅன் போலப் பொறுத்தாற்—பொறாஅமை
மேன்மேலுஞ் செய்து விடுத லதுவன்றே
கூன்மே லெழுந்த குரு.

( „ 305)

1027. நெறியா லுணராது நீர்மையு மின்றிச்
சிறியா ரெளியரா லென்று—பெரியாரைத்
தங்கணேர் வைத்துத் தகவல்ல கூறுதல்
திங்களை நாய்குரைத் தற்று.

( „ 149)

1028. சீர்த்தகு மன்னர் சிறந்தனைத்துங் கெட்டாலும்
நேர்த்துரைத் தெள்ளார் நிலைநோக்கிச்—சீர்த்த
கிளையின்றிப் போலுய்த் தனித்தாயக் கண்ணும்
இளைதென்று பாம்பிகழ்வா ரில்.

( „ 383)

1029. வென்றடு கிற்பாரை வேர்ப்பித் தவர்காய்வ
தொன்றேடு நின்ற சிறியார் பலசெய்தல்
குன்றேடு தேங்குலாம் வெற்ப வதுபெரிது
நன்றேடு வந்ததொன் றன்று.

( „ 65)

1030. பொறுப்பரென் றெண்ணிப் புரைதீர்ந்தார் மாட்டும்
வெறுப்பன செய்யாமை வேண்டும்—வெறுத்தபின்

---

**1023.** இது சில பிரதிகளில் இல்லை; ஆனல் இதற்குரிய எண்ணும் காணப்பெறவில்லை. 15 யில். **1024.** 1 முன்ன; 4 ஞற்றவும், ஞற்றவும்; 6 பிழைப்ப; 14 பலகாற். **1025.** 11 னிறையவர்கொன்; 11-12 னிறைவர்கொன் றூர்க்குரைப்பர்; 13 தம்மாலே. **1026.** 2 வகைசெய்து. **1027.** 6 ரெளியரா; 9 தங்கண்மேல். **1028.** 3 சிறந்தெனைத்துங்; 5 நேர்த்துறைத்; 6 தெள்ளா; 7 நிலநோக்கிச்; 10-11 போஒ யணித்தாயக். **1029.** 4 தவர்காப்ப. **1030.** 13 பேர்த்தலால்.

ஆர்க்கு மருவி யணிமலை நன்னுடை
பேர்த்தரல் யார்க்கு மரிது.

(நாலடி, 161)

1031. விரிநிற நாகம் விடருள தேனும்
உருமின் கடுஞ்சினம் சேணின்று முட்கும்
அருமை யுடைய வரண்சேர்ந்து முய்யார்
பெருமை யுடையார் செறின்.

( ,, 164)

1032. அவமதிப்பு மான்ற மதிப்பு மிரண்டு
மிகன்மக்க ளான்மதிக்கற் பால—நயமுணராக்
கையறியா மாக்க ளிழிப்பு மெடுத்தேத்தும்
வையார் வடித்தநூ லார்.

( ,, 163)

1033. எம்மை யறிந்திலி ரெம்போல்வா ரில்லென்று
தம்மைத்தாங் கொள்வது கோளன்று—தம்மை
அரியரா நோக்கி யறனறியுஞ் சான்றோர்
பெரியராக் கொள்வது கோள்.

( ,, 165)

1034. பொன்னே கொடுத்தும் புணர்தற் கரியாரைக்
கொன்னே தலைக்கூடப் பெற்றிருந்தும்—அன்னோ
பயமில் பொழுதாக் கழிப்பரே நல்ல
நயமி லறிவி னவர்.

( ,, 162)

1035. அருளு மேலர சாக்குமன் காயுமேல்
வெருளச் சுட்டிடும் வேந்தெனு மாதெய்வம்
அருளி மற்றவை வாழ்த்தினும் வையினும்
அருளி யாக்க லழித்தலங் காபவோ.

(சிந்தா. 247)

1036. தன்னை யாக்கிய தார்ப்பொலி வேந்தனைப்
பின்னை வெளவிற் பிறழ்ந்திடும் பூமகள்
அன்ன வன்வழிச் செல்லினிம் மண்மிசைப்
பின்னைத் தன்குலம் பேர்க்குந ரில்லையே.

( ,, 245)

1037. பிறையது வளரத் தானும் வளர்ந்துடன் பெருகிப் பின்னாட்
குறைபடு மதியந் தேயக் குறுமுயல் தேய்வ தேபோல்
இறைவனைத் தன்னை யாக்கி யவன்வழி யொழுகி னென்று
நிறைமதி யிருளைப் போழ நெடும்புகழ் விளக்கு மன்றே.

( ,, 254)

---

**1031.** 1 விரிநில. **1032.** 5 மிகைமக்க; 10 மக்க. **1033.** 9 அறியாரை. **1034.** 11 கழிப்பவே; 15 லனர். **1035.** 7 வேந்தனு; 9-10 அருளின் மற்றது; 9-12 இருளி மற்றவை வையினும் வாழ்த்தினும்; 12 வைகினும்; 16 காபவே, காப்பவோ. **1036.** 9 மன்ன; 10-11 வவ்வழிச் சேறலிம்; 11 செல்லினு. **1037.** 6 பின்னாக்; 17-18 யொழுக லென்று; 18 னின்று.

1038. யாவ ராயினும் நால்வரைப் பின்னிடின்
தேவ ரென்பது தேறுமிவ் வையகம்
காவல் மன்னவர் காய்வன சிந்தியார்
நாவி னும்முரை யார்நவை யஞ்சுவார்.

(சிந்தா. 249)

1039. தீண்டி னார்தமைத் தீச்சுடு மன்னர்தீ
ஈண்டு தங்கிளை யோடு மெரித்திடும்
வேண்டி னின்னமு தாநஞ்சு மாதலான்
மாண்ட தன்றுநின் வாய்மொழித் தெய்வமே.

( ,, 250)

## அதி. 93. பொதுமகளிர்*

1040. அங்கண் விசும்பி னமரர் தொழப்படுஞ்
செங்கண்மா லாயினு மாகமன்—றங்கைக்
கொடுப்பதொன் றில்லாரைக் கொய்தளி ரன்னார்
விடுப்பர்தங் கையாற் றொழுது.

(நாலடி, 373)

1041. உள்ள மொருவ னுழையதா வொண்ணுதலார்
கள்ளத்தாற் செய்யுங் கருத்தெல்லாம்—தெள்ளி
அறிந்த விடத்து மறியாராம் பாவஞ்
செறிந்த வுடம்பி னவர்.

( ,, 380)

1042. ஏமார்ந்த போழ்தி னினியார்போன் றின்னாராய்த்
தாமார்ந்த போழ்தே தகர்க்கோடா மானோக்கிற்
றந்நெறிப் பெண்டிர் தடமுலை சேராரே
செந்நெறிச் சேர்துமென் பார்.

( ,, 378)

1043. ஊறுசெய் நெஞ்சந்தம் முள்ளடக்கி யொண்ணுதலார்
தேற மொழிந்த மொழிகேட்டுத்—தேறி
எமரென்று கொள்வாருங் கொள்பவே யார்க்குந்
தமரல்லர் தம்முடம்பி னார்.

( ,, 379)

1044. யாறொடி யாழ்ஞெலி கோனில வார்கொடிப்
பாறொடு பத்தினி மாபோ லொழுகென்று
கூறினள் கூத்தி முதிர்ந்தாள் மகட்கிவை
வேறோ ரிடத்து வெளிப்பட நன்றாம்.

(வளையா.)

1045. ஆய்குரங் கஞ்சிறை வண்டினம் போல்கென்று
பாயிர மின்றிப் பயிற்றி மொழிந்தனள்
மேவரும் வான்பொருள் தந்துநின் தோணம்பி
யாவ ரடைந்தவர்க் கவையும் புரைப. ( ,, )

---

**1038.** 7 தேறினிவ். **1039.** 11 தஞ்சுடு. * வரைவின் மகளிர். **1040.** 7 மாகமற்; 13 விடுப்பதாங். **1041.** 3 னுழைதர. **1042.** 4 றின்னராய்த்; 7 தகாததோ; 8 மாநோக்கிற். **1043.** 3 முள்ளட (வொ); 9 யமரென்று; 13• தமரல்ல. **1044.** 7 யாம்போ, மார்போ; 8 லெழுமென்று; 9 கூறினன்; 10 கூத்தின்; 12 மகட்கவை; 15 வெளிப்படல்; 16 நன்றும். **1045.** 1 நாய்குரங்; 4 போல்கென்றும்; 6 மன்றிப்; 14-16 றொருவ ரடைந்தவ ரெல்லாம்.

1046. வாரி பெருகப் பெருகிய காதலை
வாரி சுருங்கச் சுருங்கி விடுதலின்
மாரி பெருகப் பெருகி யறவறும்
வார்புன லாற்றின் வகையும் புரைப.

(வளையா.)

1047. எங்ஙன மாகிய திப்பொரு ளப்பொருட்
கங்ஙன மாகிய வன்பின ராதலின்
எங்ஙனம் பட்டனன் பாண்மகன் பாண்மகற்
கங்ஙன மாகிய யாழும் புரைப.

( ,, )

1048. கரணம் பலசெய்து கையுற் றவர்கட்
கரண மெனுமில ராற்றிற் கலந்து
திரணி யுபாயத்திற் றிண்பொருள் கோடற்
கரணி ஞெலிகோ லமைவர வொப்ப.

( ,, )

1049. நாடொறு நாடொறு நந்திய காதலை
நாடொறு நாடொறு நைய வொழுகலின்
நாடொறு நாடொறு நந்தி யுயர்வெய்தி
நாடொறுந் தேயும் நகைமதி யொப்ப.

( ,, )

1050. வனப்பில ராயினும் வன்மையி லோரை
நினைத்தவர் மேவர நிற்பமைக் காவர்தாங்
கனைத்துடன் வண்டொடு தேனின மார்ப்பப்
புனத்திடைப் பூத்த பூங்கொடி யொப்ப.

( ,, )

1051. தங்கட் பிறந்த கழியன்பி னூர்களை
வன்கண்மை செய்து வலிய விடுதலின்
இன்பொரு ளேற்றி யெழுநின்ற வாணிகர்க்
கங்கட் பரப்பகத் தாழ்கல மொப்ப.

( ,, )

1052. ஒத்த பொருளா னுறுதிசெய் வார்களை
யெத்திறத் தானும் வழிபட் டொழுகலிற்
பைத்தர வல்குற்பொற் பாவையி னல்லவர்
பத்தினிப் பெண்டிர் படியும் புரைப.

( ,, )

1053. வீபொரு ளானை யகன்று பிறனுமோர்
மாபொரு ளான்பக்கம் மாண நயத்தலின்
மேய்புலம் புல்லற மற்றோர் புலம்புகு
மாவும் புரைப மலரன்ன கண்ணார்.

( ,, )

---

**1046**. 12 யறலறும். **1047**. 2-3 மாதிப் பொரு. **1048**. 3 கைகற்; 4 றவர்கண்ட; 6-8 மெனுமில்ல ராறறிறறகறது, மெனுமில ராற்றிறகாது; 10 யும் பாயத்திற். **1049**. 12 யுவாவெய்தி. **1050**. இது சில பிரதிகளில்இல்லை. 1 வனப்பின; 3 வண்மையி; 7-8 நிலைமைக் கவர்தங்; 8 காவாதா; 9 கனத்துடன்; 14 பூத்ததோர். **1051**. 7 வழிய; 9-10 பொங்கு பொருளேற்றி; 16 மெறிப்ப. **1052**. 10 வல்குற்; 11 பரவையி; 15 படிவம். **1053**. இதன்பின் 'நாயும் போல்வர்' (1057). 9 மேய்புறம்.

1054. நுண்பொரு ளானை நுகர்ந்திட்டு வான்பொருள்
நன்குடை யானை நயந்தனர் கோடலின்
வம்பிள மென்முலை வாணெடுங் கண்ணவர்
கொம்பிடை வாழுங் குரங்கும் புரைப.

(வளையா.)

1055. முருக்கலர் போற்சிவந் தொள்ளிய ரேனும்
பருக்கரடில்லவர் பக்க நினையார்
அருப்பிள மென்முலை யஞ்சொ லவர்தாம்
வரிச்சிறை வண்டின் வகையும் புரைப.

( ,, )

1056. மக்கட் பயந்து மனையற மாற்றுதல்
தக்க தறிந்தார் தலைமைக் குணமென்ப
பைத்தர வல்குற் படிற்றுரை யாரொடு
துய்த்துக் கழிப்பது தோற்றமொன் றின்றே.

( ,, )

1057. நாயும் போல்வர்பல் லெச்சிலு நச்சலால்
தீயும் போல்வர்செய்ந் நன்றி சிதைத்தலால்
நோயும் போல்வர் நுகர்தற் கருமையால்
வேயும் போல்வரிவ் வேனெடுங் கண்ணினர்.

(சாந்தி.)

1058. தோளு மென்முலை யும்மல்குற் பாரமும்
நாளு நாளு நவின்று பருகிய
கேள்வன் மார்க்கும் பகைஞர்க்கு மொத்தலால்
வாளும் போல்வரிவ் வாணெடுங் கண்ணினர்.

( ,, )

1059. அன்புநூ லாக வின்சொ லலர்தொடுத் தமைந்த காதல்
இன்பஞ்செய் காமச் சாந்திற் கைபுனைந் தேற்ற மாலை
நன்பகற் சூட்டி விள்ளா தொழுகினும் நங்கை மார்க்குப்
பின்செலும் பிறர்க ணுள்ளம் பிணையனார்க் கடிய தொன்றே.

(சிந்தா. 1596)

1060. ஆசை யல்குற் பெரியாரை யருளு மிடையுஞ் சிறியாரைக்
கூசு மொழியும் புருவமுங் குடில மாகி யிருப்பாரை
வாசக் குழலு மலர்க்கண்ணு மனமுங் கரிய மடவாரைப்
பூசல் பெருக்க வல்லாரைப் பொருந்தல் வாழி மடநெஞ்சே.

(நாரத.)

## அதி. 94. கள்ளுண்ணாமை

1061. மாணாப் பகைவரை மாறெறுக் கல்லாதார்
பேணா துரைக்கு முரைகேட் டுவந்ததுபோல்

---

**1054**. 1 நொய்ம்; 7 நயத்தனர், நயந்தன; 9 வம்பின; 12 கண்ணியர். **1055**. 5 பருக்காட்; 6 டிலவலர்; 7 மதக; 13 வகைச்சிறை. **1056**. 11 படித்துறை; 14 களிப்பது; 15 தோற்றமின். **1057**. 2-3 போல்வர் பலரெச்சில்; 6 போல்வர்நெய்; 10-12 போல்வர்கை நுண்பொருள் கொள்கலால்; 13 வீயும்; 14 போல்வரவ். **1058**. 2-3 மென்முலையு மலர்க்குழற்; 8 பரிகிலாக்; 14 போல்வரவ். **1059**. 11 தியற்றி; 20 பிறர்கா; 22 பிணையனார்; 23 குடைய. **1060**. சாந்திபுராணம். 9 புரூரமுமே. **1061**. 1 மாணப்; 6 குரைக்கு; 9 ஊணார்த்; 12 கண்ணினைக்.

ஊணர்ந் துதவுவதொன் றில்லெனினுங் கள்ளினைக்
காணக் களிக்குங் களி.

(பழமொழி, 256)

1062. கிளைஞர்க் குதவா தான் செல்வமும் பைங்கூழ்
விளைவின்கட் போற்றா னுழவும்—இளையனுய்க்
கள்ளுண்டு வாழ்வான் குடிமையு மிம்மூன்றும்
உள்ளபோன் றில்லாப் பொருள்.

(திரிகடு. 59)

1063. ஒளியு மொளிசான்ற செய்கையுஞ் சான்றோர்
தெளிவுடைய னென்றுரைக்குந் தேசுங்—களியென்னுங்
கட்டுரையாற் கோது படுமே லிவையெல்லாம்
விட்டொழியும் வேறாய் விரைந்து.

(அறநெறி. 145)

1064. உள்ளமொழி செய்கைகளி ஞென்றியுல கேத்துந்
தள்ளரிய தன்மைவழி நிற்றனுறு நல்லீர்
எள்ளுநர்கள் தன்மையிது நிற்கவிடர் செய்யுங்
கள்ளுமுணல் குற்றங் கடைப்பிடிமி னென்றான்.

(சிந்தா. ?)

1065. மாலைப் பந்து மாலையு மேந்தி மதுவார்பூஞ்
சோலை மஞ்ஞைச் சூழ்வளை யார்தோள் விளையாடி
ஞாலங் காக்கு மன்னவ ராவார் நறவுண்ணாச்
சீலங் காக்குஞ் சிற்றுப கார முடையாரே.

( ,, 2928)

1066. தன்னைத்தா னுணர்ந்தி ருந்த தகையது பிறவி யென்ப,
தென்னைத்தா மறையு மற்றைத் துறைகளு மிசைப்ப தெல்லா
முன்னைத்தான் றன்னை யோரான் முடையெழு மழுக்கின் மேலே
பின்னைத்தான் பெறுவ தம்மா நறவுண்டு திகைக்கும் பித்தே.

(இராமாவ. கிட்கிந்தைப். 92)

1067. செற்றதும் பகைஞர் நட்டார் செய்தபே ருதவி தானுங்
கற்றதுங் கண்கூ டாகக் கண்டதுங் கரையி னாலிற்
சொற்றதும் பாவம் வந்து தொடர்ந்ததும் படர்ந்த துன்ப
முற்றது முணரா ராயி னுறுதிவே றிதனி னுண்டோ.

( ,, 94)

1068. வஞ்சமுங் களவும் பொய்யு மயக்கமும் வரம்பில் கொட்புந்
தஞ்சமென் றாரை நீக்குந் தன்மையுங் களிப்புந் தாங்கும்
வஞ்சமும் நன்குந் தீங்குங் கள்ளினால் மயக்கல் போல
நஞ்சமுங் கொல்வ தல்லால் நரகினை நல்கா தன்றே.

( ,, 95)

## அதி. 95. சூது

1069. பாரதத் துள்ளும் பணையந்தந் தாயமா
ஈரைம் பதின்மரும் போரெதிர்ந் தைவரொ

---

**1062.** 1 கிளைகட்; 8 இளையாளுய்க். **1063.** 5 தெளிவுடையா; 6 ரென்றுரைக்குந், னின்றுரைக்குந்; 10. கோதப், கோதுப். **1064.** 3 ஞென்றுமுல; 4 கத்துந்; 6 தண்மைவிழி. **1065.** 7 மஞ்ஞை; 18-19 சிற்றுக ராய. **1066.** 16 முறையெழு; 19 பின்னைத்தாம்; 24 மாதோ, பித்தோ. **1067.** 8-9 கண்கொ ளாத. **1068.** 10 தண்மையுங்; 12 தாக்கும்; 13-14 வஞ்சமே நணுகுங்; 24 தன்றோ. **1069.** 4 தாரமா; 13 காதலொ.

டேதில ராகி யிடைவிண்டா ராதலாற்
காதலரோ டாடார் கவறு.

(பழமொழி, 52)

1070. நட்டா ரிடுக்கண் தனிகாண்டல் நற்கின்னா
ஒட்டார் பெருமிதங் காண்டல் பெரிதின்னா
கட்டிலா மூதூ ருறைவின்னா வாங்கின்னா
நட்ட கவற்றினாற் சூது.

(இன்னா. 26)

1071. புலமயக்கம் வேண்டிற் பொருட்பெண்டிர்த் தோயல்
கலமயக்கம் கள்ளுண்டு வாழ்தல்—சொலைமுனிந்து
பொய்மயக்கஞ் சூதின்கட் டங்குத லிம்மூன்றும்
நன்மையி லாளர் தொழில்.

(திரிகடு. 39)

1072. உருவழிக்கு முண்மை நலனழிக்கும் வண்மைத்
திருவழிக்கு மானஞ் சிதைக்கும்—ஒருவ
ரொருவரோ டன்பழிக்கு மொன்றலாச் சூது
பொருவரோ தக்கார் புரிந்து.

(பாரதம்.)

1073. முன்னர் விளையாடி முட்டுவார் முட்டினால்
தன்மை திரிந்து சலந்தோன்றும்—பின்னர்
மிகாதோ வெகுளி வெகுண்டாலச் சூது
தகாதோ தருவதோ தான்.

( ” )

1074. பிறன்மூரம் வேட்டல் பிழைப்பிலார்ச் சீறல்
அறன்கேட ஐயமே சூழ்தல்—மறந்தேயுந்
தீநிலத்தார் சொற்கேட்டல் தீச்சூ திவைகண்டாய்
மேனிலத்தார் கேட்டுக்கு வித்து.

( ” )

1075. ஓதலு மோதி யுணர்தலுஞ் சான்றோரால்
மேதை யெனப்படு மேன்மையுஞ்—சூது
பொருமென்னுஞ் சொல்லினாற் புல்லப் படுமேல்
இருளா மொருங்கே யிவை.

(அறநெறி. 148)

1076. சூதர் கழக மரவ மறுக்களம்
பேதைக ளல்லார் புகாஅர் புகுபவேல்
ஏதம் பலவுந் தரும்.

(ஆசார. 98)

1077. பொய்யொடு மிடைந்தபொரு ளாசையுரு ளாய
மைபடு வினைத்துகள் வழங்குநெறி மாயஞ்

---

**1070.** 3 தனிகாண்டல், தனிகண்டல்; 7 கண்டல்; 11 ருறையின்னா. **1071.** 4 தோய்தல்; 5 கலமயக்கம்; 8 தொலைமுனிந்து, கொலைமுனிந்து. **1072.** 2 முன்னை; 11 மொன்றலாற்; 14 தக்கோர். **1073.** 7 சலத்தொன்றும்; 8 பின்னை; 11 வேண்டாலச். **1074.** 6 ஐயமேய; 8 மறந்தோயுந். **1075.** 7 மேதையுஞ்; 12 படுமே. **1076.** 3-4 மரவமா றுக்களம்; 4 மருள்களம்; 8 புகுவவேல். **1077.** 3 ளானகையு; 6-7 வினைக்கண மயங்குநெறி; 8 யாயஞ்; 14 நுனித்தல்கவ.

செய்தபொருள் பெய்தகலஞ் செம்மைசுடு செந்தீக்
கைதவ நுனித்தகவ ருடலொழி கென்றான்.

(சிந்தா. 2873)

## அதி. 96. குடிப்பிறப்பு*

1078. சென்ற புகழ்செல்வ மீக்கூற்றஞ் செவ்வனே
நின்ற நெறிகல்வி வள்ளன்மை—ஒன்றும்
அளிவந்தார் பூங்கோதா யாறு மறையின்
வழிவந்தார் கண்ணே வனப்பு.

(ஏலாதி, 1)

1079. ஈட்டிய வொண்பொரு ளில்லெனினு மொப்புர
வாற்றுங் குடிப்பிறந்த சான்றவர்—ஆற்றவும்
போற்றப் படாதாகிப் புல்லின்றி மேயினும்
ஏற்றுக்கன் றேறாய் விடும்.

(பழமொழி, 217)

1080. ஒரு மொருவ ரொருவர்தம் முள்ளத்தைத்
தேருந் திறமரிதாற் றேமொழீ இ—ஆருங்
குலக்குல வண்ணத்த ராகுப வாங்கே
புலப்புல வண்ணத்த புள்.

( ,, 340)

1081. கழகத்தான் வந்த பொருள்கா முறுமை
பழகினும் பார்ப்பாரைத் தீப்போ லொழுகல்
உழவின்கட் காமுற்று வாழ்தலிம் மூன்றும்
அழகென்ப வேளாண் குடிக்கு.

(திரிகடு. 42)

1082. கயவரைக் கையிகந்து வாழ்தல் நயவரை
நள்ளிருளுங் கைவிடார் நட்டொழுகல் தெள்ளி
வடுவான வாராமற் காத்தலிம் மூன்றுங்
குடிமாசி லார்க்கே யுள.

( ,, 77)

1083. அலந்தார்க்கொன் றீந்த புகழுந் துளங்கினுந்
தங்குடிமை குன்றாத் தகைமையும் அன்போடி
நாணாளும் நட்டார்ப் பெருக்கமு மிம்மூன்றுங்
கேள்வியு ளெல்லாந் தலை.

( ,, 41)

1084. இருக்கை யெழலு மெதிர்செலவு மேனை
விடுப்ப வொழிதலோ டின்ன—குடிப்பிறந்தார்
குன்றா வொழுக்கமாக் கொண்டார் கயவரொ
டொன்றா வுணரற்பாற் றன்று.

(நாலடி, 143)

---

* குடிமை. **1078.** 4 சேவகம்; 6 நிறைகல்வி; 8 என்றும். **1079.** 4 மேற்புற; 5-6 வாற்று மனைப்பிறந்த; 10 படர்வாகிப். **1080.** 7 றேமொழி. **1081.** 10 காமுற; 11 வாழ்தலிவை. **1082.** 2 கையிகழ்ந்து; 8 எள்ளி. **1083.** 1 அலந்தாற்கொன்.

1085. நல்லவை செய்யி னியல்பாகுந் தீயவை
பல்லவர் தூற்றும் பழியாகும்—எல்லாம்
உணருங் குடிப்பிறப்பி னூதிய மென்னோ
புணரு மொருவற் கெனின்.

(நாலடி, 144)

1086. ஒருபுடை பாம்பு கொளினு மொருபுடை
அங்கண்மா ஞாலம் விளக்குறூஉந்—திங்கள்போற்
செல்லாமை செவ்வனேர் நிற்பினு மொப்புரவிற்
கொல்கார் குடிப்பிறந் தார்.

( ,, 148)

1087. இனநன்மை யின்சொலொன் றீதல்மற் றேனை
மனநன்மை யென்றிவை யெல்லாங்—கனமணி
முத்தோ டிமைக்கு முழங்குவரித் தண்சேர்ப்ப
இற்பிறந்தார் கண்ணே யுள.

( ,, 146)

1088. கடித்துக் கரும்பினைக் கண்டகர நூறி
இடித்துநீர் கொள்ளினு மின்சுவைத்தே யாகும்
வடுப்பட வைதிறந்தக் கண்ணுங் குடிப்பிறந்தார்
கூறார்தம் வாயிற் சிதைந்து.

( ,, 156)

1089. கல்லாமை யச்சங் கயவர் தொழிலச்சம்
சொல்லாமை யுள்ளுமோர் சோர்வச்சம்—எல்லாம்
இரப்பார்க்கொன் றீயாமை யச்ச மரத்தாரிம்
மாணுக் குடிப்பிறந் தார்.

( ,, 145)

## அதி. 97. மானம்

1090. இம்மையு நன்று வியனெறியுங் கைவிடா
தும்மையும் நல்ல பயத்தலால்—செம்மையின்
நானங் கமழுங் கதுப்பினுய் நன்றேகாண்
மான முடையார் மதிப்பு.

(நாலடி, 294)

1091. திருமதுகை யாகத் திறனில்லார் செய்யும்
பெருமிதங் கண்டக் கடைத்தும்—எரிமண்டிக்
கானந் தலைக்கொண்ட தீப்போற் கனலுமே
மான முடையார் மனம்.

( ,, 291)

1092. யாமாயி னெம்மில்லங் காட்டுதுந் தாமாயிற்
காணவே கற்பழியு மென்பார்போல்—நாணிப்
புறங்கடை வைத்தீவர் சோறு மதனுன்
மறந்தீக செல்வர் தொடர்பு. ( ,, 293)

**1085.** 5 பல்லவை. **1086.** 10 செவ்வனே; 12 மொப்புரவுக். **1087.** 2 யின்சொன்மற்; 11 முழங்கருவித். **1088.** 9 வடுப்பட்ட; 13 சொல்லார்தம். **1089.** 12 மரத்தாரீ. **1090.** 1-2 இம்மையுநன் றுய. **1091.** 7 கடைத்தே; 12 கனலுமோ. **1092.** 2 னம்மில்லங்; 4 தம்மாயிற்; 10 வைத்திவார்; 13 மறைந்தீக.

1093. நல்லர் பெரிதளியர் நல்கூர்ந்தா ரென்றெள்ளிச்
செல்வர் சிறுநோக்கு நோக்குங்காற்—கொல்லன்
உலையூதுந் தீயேபோ லுள்கனலுங் கொல்லோ
தலையாய சான்றோர் மனம்.

(நாலடி, 298)

1094. என்பா யுகினு மியல்பில்லார் பின்சென்று
தம்பா டுரைப்பரோ தம்முடையார்—தம்பா
டுரையாமை முன்னுணரு மொண்மை யுடையார்க்
குரையாரோ தாமுற்ற நோய்.

( ,, 292)

1095. இழித்தக்க செய்தொருவ னார வுணலிற்
பழித்தக்க செய்யான் பசித்தல் தவறோ
விழித்திமைக்கு மாத்திரை யன்றோ வொருவற்
கழித்துப் பிறக்கும் பிறப்பு.

( ,, 302)

1096. கடமா தொலைச்சிய கானுறை வேங்கை
இடம்வீழ்ந்த துண்ணா திறக்கும்—இடனுடை
வானகங் கையுறினும் வேண்டார் விழுமியோர்
மான மழுங்க வரின்.

( ,, 300)

1097. தம்மை யிகழ்வாரைத் தாமவரின் முன்னிகழ்க
என்னை யவரொடு பட்டது—புன்னை
விறற்பூங் கமழ்கானல் வீங்குநீர்ச் சேர்ப்ப
உறற்பால யார்க்கு முறும்.

( ,, 117)

1098. பறைபட வாழா வசுணமா வுள்ளங்
குறைபட வாழா ருரவோர்—நிறைவனத்து
நெற்பட்ட கண்ணே வெதிர்சாந் தனக்கொவ்வாச்
சொற்பட்டாற் சாவதாஞ் சால்பு.

(நான்மணி. 2)

1099. கண்டறியார் போல்வர் கெழீஇயின்மை செய்வாரைப்
பண்டறிவார் போலாது தாமு மவரேயாய்
விண்டொரீஇ மாற்றி விடுத லதுவன்றோ
விண்டற்கு விண்டல் மருந்து.

(பழமொழி, 251)

1100. நல்ல வெளிப்படுத்துத் தீய மறந்தொழிந்
தொல்லை யுயிர்க்கூற்றுக் கோலாகி—ஒல்லுமென
மாயம் பிறர்பொருட்கண் மாற்றிய மானத்தான்
ஆயி னொழித லறிவு. (சிறுபஞ்ச. 56)

---

**1093.** 1 நல்ல; 2 பெரிதெளியார்; 9 உலையூது. **1094.** 3 மியலலார்; 6 டுரைப்பரே; 9 டுரையாமன்; 13 குரையாரே; 14 தம்முற்ற. **1095.** 1 இளைத்தக்க; 12-13 வொருவ னழித்துப். **1096.** 1 கடாமா, கடிமா; 2 தொலைச்சிய; 8 இடனுடைய; 14 மழிய. **1097.** 2 யிகழ்ந்தவரைத். **1098.** 8 நிறையகத்து; 12 தமக்கொல்லாச்; 14 சாவது. **1099.** 1 கண்டறிவார்; 3 கழியிளமை, கழிகிழமை, கழிமடமை; 5 பண்டறியார்; 6 போலாவ: 14 விண்டான். **1100.** 2 வெளிப்படுத்துந்; 3-4 தீயவையெல் லாமறந்; 7 கோலாதி; 9 வாயம்; 11-12 மாற்றியாமா மானத்தான்.

## அதி. 98. பெருமை

1101. பரந்த திறலாரைப் பாசிமே லிட்டுக்
கரந்து மறைக்கலு மாமோ—நிரந்தெழுந்த
வேயிற் றிரண்டதோள் வேற்கண்ணாய் விண்ணியங்கு
ஞாயிற்றைக் கைம்மறைப்பா ரில்.

(பழமொழி, 34)

1102. பொற்பவும் பொல்லா தனவும் புணர்ந்திருந்தார்
சொற்பெய் துணர்த்துதல் வேண்டுமோ—விற்கீழ்
அரிதாய்ப் பரந்தகன்ற கண்ணா யறியும்
பெரிதாள் பவனே பெரிது.

( ,, 82)

1103. நாடறியப் பட்ட பெருஞ்செல்வர் நல்கூர்ந்து
வாடிய காலத்தும் வட்குபவோ—வாடி
வலித்துத் திரங்கிக் கிடந்தே விடினும்
புலித்தலை நாய்மோத்த லின்று.

( ,, 278)

1104. மாட மிடிந்தக்கால் மற்று மெடுப்பதோர்
கூடகா ரத்திற்குத் துப்பாகு மஃதேபோற்
பீடிலாக் கண்ணும் பெரியார் பெருந்தகையர்
ஈடில்ல தற்கில்லை பாடு.

( ,, 96)

1105. வாட்டிற லானை வளைத்தார்க ளஞ்ஞான்று
வீட்டிய சென்றார் விளங்கொளி—காட்டப்
பொருவறு தன்மைகண் டஃதொழிந்தா ரஃதால்
உருவு திருவூட்டு மாறு.

( ,, 106)

1106. நீருர்ந்து மொட்டா நிகரில் மணியேபோல்
வேறுகத் தோன்றும் விளக்க முடைத்தாகும்
தாறுப் படினுந் தலைமகன் றன்னொளி
நூறா யிரவர்க்கு நேர்.

( ,, 214)

1107. அமையப் பொருளில்லா ராற்றுதா ரென்ப
திமையத் தனையார்க ணில்லை—சிமைய
நகையே ரிலங்கருவி நல்வரை நாட
நகையேதா னாற்றி விடும்.

( ,, ?)

1108. விதிப்பட்ட நூலுணர்ந்து வேற்றுமை யில்லார்
கதிப்பவர் நூலினைக் கையிகந்தா ராகிப்
பதிப்பட வாழ்வார் பழியாய செய்தல்
மதிப்புறத்துப் பட்ட மறு.

( ,, 258)

---

**1101.** 8 நிரக்தெழுந்து. **1102.** 9 அரியாய்ப்; 10 பரிதகன்ற. **1103.** 9-10 வலித்திரங்கி மாழ்கிக்; 14 நாய்மோக்க, நாய்மெய்த்த. **1104.** 2 மடிந் தக்கால்; 6-7 ரத்திற்கு மாகு; 13 ஈடல்ல; 14 வர்க்கில்லை. **1105.** 3 வீளைந்தார்க; 4 ளந்நான்று; 7 விளக்கொளி; 8 காட்டிப். **1107.** 3-4 ராற் றுரா லென்ப. **1108.** 5 கதிப்பட்ட; 7 கையிகழ்ந்தா; 9 பதிப்பட்ட; 11 பதி யாய.

1109. நிரைதொடி தாங்கிய நீடோள்மாற் கேயும்
உரையொழியா வாகு முயர்ந்தோர்கட் குற்றம்
மரையாகன் றாட்டு மலைநாட மாயா
நரையான் புறத்திட்ட சூடு.

(பழமொழி, 48)

1110. தொல்லவையுட் டோன்றுங் குடிமையுந் தொக்கிருந்த
நல்லவையுள் மேம்பட்ட கல்வியும்—வெல்சமத்து
வேந்துவப்ப வட்டார்த்த வென்றியு மிம்மூன்றும்
தாந்தம்மைக் கூறாப் பொருள்.

(திரிகடு. 8)

1111. வருவாயுட் கால்வழங்கி வாழ்தல் செருவாய்ப்பச்
செய்தமை நாடாச் சிறப்புடைமை—எய்தப்
பலநாடி நல்லவை கற்றலிம் மூன்றும்
நலமாட்சி நல்லவர் கோள்.

( ,, 21)

1112. ஊனுண் டுழுவை நிறம்பெறாஉம் நீர்நிலத்துப்
புல்லினு ளின்புறாஉங் காலேசம்—நெல்லின்
அரிசியா னின்புறாஉங் கீழெல்லாந் தத்தம்
வரிசையா னின்புறாஉ மேல்.

(நான்மணி. 65)

1113. பகைவர் பணிவிடம் நோக்கித் தகவுடையர்
தாமேயும் நாணித் தலைச்செல்லார் காணாய்
இளம்பிறை யாயக்கால் திங்களைச் சாரா
தணங்கருந் துப்பி னரா.

(நாலடி, 241)

1114. கடையெல்லாங் காய்பசி யஞ்சுமற் றேனை
இடையெல்லா மின்னாத வஞ்சும்—புடைபரந்த
விற்புருவ வேனெடுங் கண்ணாய் தலையெல்லாஞ்
சொற்பழி யஞ்சி விடும்.

( ,, 297)

1115. கருங்கடற் பிறப்பி னல்லால் வலம்புரி காணுங் காலைப்
பெருங்குளத் தென்றுந் தோன்றா பிறைநுதற் பிணைய னீரே
அருங்கொடைத் தான மாய்ந்த வருந்தவந் தெரியின் மண்மேல்
மருங்குடை யவர்கட் கல்லால் மற்றையார்க் காவ துண்டோ.
(சிந்தா. 2924)

## அதி. 99. சான்றாண்மை

1116. உறையார் விசும்பி னுவவு மதிபோல்
நிறையா நிலவுத லன்றிக்—குறையாத

---

**1109**. 6 வாக்கு. **1110**. 9-10 வேந்துவப்பப் பட்டார்த்த. **1111**. 5 செய்தவை; 6 நாடச். **1112**. 3 நலம்பெறும்; 4 நீணிறப்; 6 னிற்பநிறங்; 7 காலேகம், காலிகள். **1113**. 1 பகைவாய்; 7 தலைச்சொல்லார்; 8 காணா; 12 சேரா. **1114**. 8 புடைசேர்ந்த, புடையுலாம். **1115**. 2 பரப்பி; 8 தொன்றுங்; 10-12 பிரிதுகற் றிணைய நீரே; 13-14 அருங்கொடை விசும்பி னுன; 16 வருந்தவர். **1116**. 3 னுலவு; 5 நிறையால்; 5-8 நிலவுத லின்றிக் குறையா தறைதரு; 7 வின்றிக்; 9 வங்கம்போல்; 14 வாய்மையர்.

வங்கம்போழ் முந்நீர் வளம்பெறினும் வேறுமோ
சங்கம்போல் வாய்மையார் சால்பு.

(வெண்பா. 185)

1117. அடர்ந்து வறியரா யாற்றாத போழ்தும்
இடங்கண் டறிவாமென் றெண்ணி யிராஅர்
மடங்கொண்ட சாயல் மயிலன்னாய் சான்றோர்
கடன்கொண்டுஞ் செய்வர் கடன்.

(பழமொழி, 216)

1118. பரியப் படுமவர் பண்பில ரேனுந்
திரியப் பெறுபவோ சான்றோர்—விரிதிரைப்
பாரெறியு முந்நீர்த் துறைவ கடனன்றோ
ஊரறிய நட்டார்க் குணா.

( ,, 101)

1119. பூந்தண் புனற்புகார்ப் பூமிகுறி காண்டற்கு
வேந்தன் வினையினான் மாந்தரைச்—சான்றவன்
கொண்டதனை நாணி மறைத்தலாற் றன்கண்ணிற்
கண்டதூஉ மெண்ணிச் சொலல்.

( ,, 153)

1120. செல்வழிக் கண்ணொருநாள் காணினுஞ் சான்றவர்
தொல்வழிக் கேண்மையிற் றோன்றப் புரிந்தியாப்பர்
நல்வரை நாட சிலநா ளடிப்படிற்
கல்வரையு முண்டாம் நெறி.

(நாலடி, 154)

1121. பிறர்மறை யின்கட் செவிடாய்த் திறனறிந்
தேதிலா ரிற்கட் குருடனாய்த் தீய
புறங்கூற்றின் மூங்கையாய் நிற்பானேல் யாதும்
அறங்கூற வேண்டா வவற்கு.

( ,, 158)

1122. பாவமு மேனைப் பழியும் படவருப
சாவினுஞ் சான்றவர் செய்கல்லார் சாதல்
ஒருநா ளொருபொழுதைத் துன்ப மதுபோல்
அருநவை யாற்றாத லின்று.

( ,, 295)

1123. ஒல்வ தறியும் விருந்தினனு மாருயிரைக்
கொல்வ திடைநீக்கி வாழ்வானும்—வல்லிதிற்
சீல மினிதுடைய வாசானு மிம்மூவர்
ஞால மெனப்படு வார்.

(திரிகடு. 26)

1124. இல்லார்க்கொன் றீயு முடைமையு மிவ்வுலகின்
நில்லாமை கண்ட நெறிப்பாடும்—எவ்வுயிர்க்கும்

---

**1117.** 1 அடர்ந்த; 2 பறியரா; 5 இடங்கொண்; 13 கடன்கொண்டு. **1118.** 2 படுபெவர்; 6 பொறுப்பவோ, பொறுப்பரே; 13 பாரறியு; 14 நாட்டார்க்கு; 14-15 நட்டார்க்கு நன்கு. **1119.** 4 கண்டார்க்கு; 8 சான்றவர். **1120.** 1 செல்வுழி; 7 றோன்றிப். **1121.** 1 பிறர்மனை; 9 புறங்கூறின்; 10-11 மூங்கையா கிற்பானேல். **1122.** 4 படவருவ; 5 சாயினுஞ்; 8 சாய்தல். **1124.** 13 நன்றறி.

துன்புறுவ செய்யாத தூய்மையு மிம்மூன்றும்
நன்றறிவு மாந்தர்க் குள.

(திரிகடு. 68)

1125. சான்றாருட் சான்றா ரெனப்படுத லெஞ்ஞான்றும்
தோய்ந்தாருட் டோய்ந்தா ரெனப்படுதல்—வாய்ந்தெழுந்த
கொள்ளாருட் கொள்ளாத கூறாமை யிம்மூன்றும்
நல்லாள் வழங்கு நெறி.

( ,, 82)

1126. பொன்னுந் துகிரு முத்து மன்னிய
மாமலை பயந்த காமரு மணியும்
இடைபடச் சேய வாயினுந் தொடைபுணர்ந்
தருவிலை நன்கல மமைக்குங் காலை
ஒருவழித் தோன்றியாங் கென்றுஞ் சான்றோர்
சான்றோர் பால ராப
சாலார் சாலார் பாலரா குபவே.

(புறம், 218)

1127. நாடா கொன்றோ காடா கொன்றோ
அவலா கொன்றோ மிசையா கொன்றோ
எவ்வழி நல்லவ ராடவர்
அவ்வழி நல்லை வாழியர் நிலனே.

( ,, 187)

## அதி. 100. பண்புடைமை

1128. பெரிய குடிப்பிறந் தாருந் தமக்குச்
சிறியா ரினமா வொழுகல்—வெறியிலை
வேலொடு நேரொக்குங் கண்ணா யஃதன்றோ
பூவொடு நாரியைக்கு மாறு.

(பழமொழி, 356)

1129. நல்கூர்ந் தவர்க்கு நனிபெரிய ராயினர்
செல்விருந் தாகிச் செலல்வேண்டா—ஒல்வ
திறந்தவர் செய்யும் வருத்தங் குருவி
குறங்கறுப்பச் சோருங் குடர்.

( ,, 100)

1130. சாக்காடு கேடு பகைதுன்ப மீனமே
நோக்காடு நாட்டறை போக்கின்ன—நாக்காட்டார்
நட்டோர்க் கியையிற் றமக்கியைந்த நூலுடம்
பட்டார்வாய்ப் பட்டது பண்பு.

(ஏலாதி, 79)

---

**1125.** 5-6 தோய்ந்தாரிற் றோய்ந்தா; 13 நல்லார். **1126.** 1,2 திருவு; 2,2 பயந்தீ; 3,2 செய்த; 3, 2-4 செய்வ ராயினுந் தொடைபுரைந்; 3,4 தொடைபுனைந்; 4,1 தொருவிலை; 5, 2—6, 3 தோன்றி யாஅங் கென்றுஞ் சான்றோர் சான்றோர் பாலர். **1127.** 3, 2 நல்ல; 4, 4 நலனே. **1128.** 11 கண்ணினு; 12 யதுவன்றோ. **1129.** 3-4 நனிபெரி தாயினர்; 6 தாக்கிச், 8-9 வெல்லாஞ் சிறந்தவர்; 14 (த்) தோன்றுங். **1130.** 4 மின்பமே; 6-7 நாட்டறைபோக் கின்னன; 9 நாட்டார்க்; 11 றமக்கடைந்த; 12 நூலிடம், கூறுடம்; 13 பாட்டார்வாய்ப்.

1131. புல்லா வெழுத்திற் பொருளில் வறுங்கோட்டி
கல்லா வொருவ னுரைப்பவுங் கண்ணோடி
நல்லார் வருந்தியுங் கேட்பவே மற்றவன்
பல்லாருள் நாணல் பரிந்து.

(நாலடி, 155)

1132. கல்லாது போகிய நாளும் பெரியவர்கட்
செல்லாது வைகிய வைகலும்—ஒல்வ
கொடாஅ தொழிந்த பகலு முரைப்பிற்
படாஅவாம் பண்புடையார் கண்.

( ,, 169)

1133. பன்னாளுஞ் சென்றக்காற் பண்பிலார் தம்முழை
என்னானும் வேண்டுப வென்றிகழ்வார்—என்னானும்
வேண்டினு நன்றுமற் றென்று விழுமியோர்
காண்டொறுஞ் செய்வர் சிறப்பு.

( ,, 159)

1134. நகைநனி தீது துனிநன்றி யார்க்கும்
பகைநனி தீது பணிந்தீயா ரோடும்
இவைமிகு பொருளென் றிறத்த லிலரே
வகைமிகு வானுல கெய்திவாழ் பவரே.

(வளையா.)

1135. உண்டா லம்மவிவ் வுலக மிந்திரர்
அமிழ்த மியைவ தாயினு மினிதெனத்
தமிய ருண்டலு மிலரே முனிவிலர்
துஞ்சலு மிலர்பிற ரஞ்சுவ தஞ்சிப்
புகழெனி னுயிருங் கொடுக்குவர் பழியெனின்
உலகுடன் பெறினுங் கொள்ளல ரயர்விலர்
அன்ன மாட்சி யனைய ராகித்
தமக்கென முயலா நோன்றாட்
பிறர்க்கென முயலுந ருண்மை யானே.

(புறம், 182)

## அதி. 101. நன்றியில் செல்வம்

1136. வழங்கலுந் துய்த்தலுந் தேற்றாதான் பெற்ற
முழங்கு முரசுடைச் செல்வம்—தழங்கருவி
வேய்முற்றி முத்துதிரும் வெற்ப வதுவன்றோ
நாய்பெற்ற தெங்கம் பழம்.

(பழமொழி, 151)

1137. முழவொலி முந்நீர் முழுவது மாண்டோர்
விழவூரிற் கூத்தேபோல் வீழ்ந்தவிதல் கண்டும்
இழவென் றொருபொருளு மீயாதான் செல்வம்
அழகொடு கண்ணி னிழவு.

( ,, 343)

---

**1131.** 6 னொருவ; 8 கண்ணோட; 11 கேட்பரே; 13 பல்லாரு. **1132.** 4 பரியவர்கட். **1133.** 5 எந்நாளும்; 7 வென்றிகழ்ப. **1134.** 3 நனிநன்று; 11 றிறத்தீ(வி); 12 லிலராம்; 15-16 கெய்திவாழ்பவே. **1135.** 1, 4 மிந்திரன்; 7, 4 ராக்கித்; 8, 2 முனமுயலா. **1136.** 12 வஃதன்றோ; 14 தெங்கின். **1137.** 7 வீந்தவிதல்; 9 இழிவென்; 15 னிழிவு.

1138. தொன்மையின் மாண்ட துணிவொன்று மில்லாதார்
நன்மையின் மாண்ட பொருள்பெறுதல்—இன்னொலிநீர்
கன்மே லிலங்கு மலைநாட மாக்காய்த்துத்
தன்மேற் குணில்கொள்ளு மாறு.

(பழமொழி, 129)

1139. அறியாமை யோடிளமை யாவதா மாங்கே
செறியப் பெறுவதாஞ் செல்வஞ்—சிறிய
பிறைபெற்ற வாணுதலாய் தானேயா டும்பேய்
பறைபெற்று லாடாதோ பாய்ந்து.

( ,, ? )

1140. விரும்பி யடைந்தார்க்குஞ் சுற்றத் தவர்க்கும்
வருந்தும் பசிகளையார் வம்பர்க் குதவல்
இரும்பணைவில் வென்ற புருவத்தா யாற்றக்
கரும்பனை யன்ன துடைத்து.

( ,, 286)

1141. அருகுள தாகிப் பலபழுத்தக் கண்ணும்
பொரிதாள் விளவினை வாவல் குறுகா
பெரிதணிய ராயினும் பீடிலார் செல்வங்
கருதுங் கடப்பாட்ட தன்று.

(நாலடி, 261)

1142. அள்ளிக்கொள் வன்ன குறுமுகிழ வாயினுங்
கள்ளிமேற் கைந்நீட்டார் சூடும்பூ வன்மையாற்
செல்வம் பெரிதுடைய ராயினுங் கீழ்களை
நள்ளா ரறிவுடை யார்.

( ,, 262)

1143. கொடுத்தலுந் துய்த்தலுந் தேற்று விடுக்குடை
யுள்ளத்தான் பெற்ற பெருஞ்செல்வ மில்லத்
துருவுடைக் கன்னியரைப் போலப் பருவத்தால்
ஏதிலன் துய்க்கப் படும்.

( ,, 274)

1144. மல்கு திரைய கடற்கோட் டிருப்பினும்
வல்லூற் றுவரிற் கிணற்றின்கீழ்ச் சென்றுண்பர்
செல்வம் பெரிதுடைய ராயினுஞ் சேட்சென்று
நல்குவார் கட்டே நசை.

( ,, 263)

1145. பொன்னிறச் செந்நெற் பொதியொடு பீள்வாட
மின்னொளிர் வானங் கடலுள்ளுங் கான்றுகுக்கும்
வெண்மை யுடையார் விழுச்செல்வ மெய்தியக்கால்
வண்மையு மன்ன தகைத்து.

( ,, 269)

---

**1138.** 3 துனிவொன்று; 12 மாக்காய்த்த. **1139.** 3 கூடுவதா; 6 படுவ தாஞ்; **1140.** 9 இரும்பன; 9-10 இரும்பனை வில்வேற்; 14-15 பன்னு ருடைத்து, யன்னு ருடைத்து. **1141.** 1 அருகல; 10 தாயினும். **1143.** இதுவும் அடுத்த செய்யுளும் தம்முள் மாறியுள்ளன. 3 தோற்று; 12 பருவத்தில்; 13 ஏதிலான். **1145.** 5 மின்னொளி; 8 கான்றுகும்.

1146. ஓதியு மோதா ருணர்வில்லா ரோதாதும்
ஓதி யனைய ருணர்வுடையார்—தூய்தாக
நல்கூர்ந்துஞ் செல்வ ரிரவாதார் செல்வரும்
நல்கூர்ந்தா ரீயா ரெனின்.

(நாலடி, 270)

1147. ஈட்டலுந் துன்பமற் றீட்டிய வொண்பொருளைக்
காத்தலு மாங்கே கடுந்துன்பங்—காத்த
குறைபடிற் றுன்பங் கெடிற்றுன்பந் துன்பக்
குறைபதி மற்றைப் பொருள்.

( ,, 280)

1148. தீயாலோ நீராலோ தேர்வேந்தர் தம்மாலோ
மாயாத தெவ்வர் வலியாலோ—யாதாலோ
இப்பொருள்போய் மாய்கின்ற தென்றுபொருள் வைத்தார்கள்
எப்பொழுதும் நீங்கா ரிடர்.

(பாரதம்)

## அதி. 102. நாணுடைமை

1149. தமரேயுந் தம்மைப் புகழ்ந்துரைக்கும் போழ்தின்
அமரா ததனை யகற்றலே வேண்டும்
அமையாரும் வெற்ப வணியாரே தம்மைத்
தமவேயுங் கொள்ளாக் கலம்.

(பழமொழி, 232)

1150. நச்சியார்க் கீயாமை நாணன்று நாணும்
அச்சத்தால் நாணுதல் நாணன்றாம்—எச்சத்தின்
மெல்லிய ராகித்தம் மேலாயார் செய்தது
சொல்லா திருப்பது நாண்.

(நாலடி, 299)

## அதி. 103. குடிமரபு *

1151. ஓதங் கரைதவழ்நீர் வேலி யுலகினுள்
வேதங் கரைகண்டான் வீற்றிருக்கும்—ஏதஞ்
சுடுசுடர் தானாகிச் சொல்லவே வீழ்ந்த
விடுசுடர் வேள்வி யகத்து.

(வெண்பா. 163)

1152. செயிர்க்க ணிகழாது செங்கோ லுயரி
மயிர்க்கண் முரச முழங்க—உயிர்க்கெல்லாம்
நாவ லகலிடத்து ஞாயி றனையனாய்க்
காவலன் சேறல் கடன்.

( ,, 171)

**1146.** 3 துணர்விலா; 12 செல்வரின். **1147.** 8 காத்தல்; 12 துன்புக்; 13 குறுபதி, குறைமதி; 14 மற்றப். **1148.** இது சில பிரதிகளில் இல்லை. 7 வகையாலோ. **1149.** 7 யகற்றவே; 11-15 வதுபணியா ரெறதமை யெயுங்கொளளக காலா; 13 தமரேயுங். **1150.** 7 நாணன்றால்; 8 அச்சத் தின்; 9-10 மெல்லியார்க் கீந்தது; 12 செய்ததும். * குடிசெயல்வகை. **1151.** 1 ஓதுங்; 10 தானோக்கிச். **1152.** 4 லுயரின்; 6 முரசு; 8 உயிர்த் தகலா; 11 ஞாயிற்.

1153. உழுது பயன்கொண் டொலிநிரை யோம்பிப்
பழுதிலாப் பண்டம் பகர்ந்து—முழுதுணர
ஓதி யழல்வழிபட் டோம்பாத ஈகையான்
ஆதி வணிகர்க் கரசு.

(வெண்பா. 164)

1154. காடுங் கடுந்திரை நீர்ச்சுழியுங் கண்ணஞ்சான்
சாடுங் கலனும் பலவியக்கி—நீடும்
பலிசையாற் பண்டம் பகர்வான் பரியான்
கலிகையால் நீக்கல் கடன்.

( ,, 344)

1155. மூவரு நெஞ்சமர முற்றி யவரவர்
ஏவ லெதிர்கொண்டு மீண்டுரையான்—ஏவல்
வழுவான் வழிநின்று வண்டார் வயலுள்
உழுவா னுலகுக் குயிர்.

( ,, 165)

1156. மண்பதம் நோக்கி மலிவயலும் புன்செய்யுங்
கண்பட வேர்பூட்டிக் காலத்தால்—எண்பதனுந்
தத்துநீ ரார்க்குங் கடல்வேலித் தாயர்போல்
வித்தித் தருவான் விளைவு.

( ,, 346)

1157. பொச்சாப்புக் கேடு பொருட்செருக்குத் தான்கேடு
முற்றாமை கேடு முரண்கேடு—தெற்றத்
தொழின்மகன் றன்னொடு மாறாயி னென்றும்
உழுமகற்குக் கேடென் றுரை.

(சிறுபஞ்ச. 49)

1158. நன்புலத்து வையடக்கி நாளுநா ளேர்போற்றிப்
புன்புலத்தைச் செய்தெருப் போற்றியபின்—இன்புலத்துப்
பண்கலப்பைப் பாற்படுத்து வானுழவ னென்பவே
நுண்கலப்பை நூலோது வார்.

( ,, 59)

1159. யானை நிரையுடைய தேரோ ரினுஞ்சிறந்தார்
ஏனை நிரையுடைய ஏர்வாழ்நர்—யானைப்
படையோர்க்கும் வென்றி பயக்கும் பகட்டே
ருடையோர்க் கரசரோ வொப்பு.

(பெரும்பொருள்.)

1160. நிலம்பொறை யாற்றா நிதிபல கொண்டுங்
குலம்பெறுதீங் கந்தணர் கொள்ளார்—நலங்கிளர்
தீவா யவிசொரியத் தீவிளங்கு மாறுபோல்
தாவா தொளிசிறந்த தாம்.

( ,, )

---

**1153.** 13-14 ஆகி யவணிற்; 14 வணிகற். **1154.** 12 பரிவான்; 13 கலி கையால். **1155.** 7 மீட்டுரையான்; 14 னுலகிற். **1156.** 4 பண்செய்யுங்; 8 எண்பதங். **1157.** 8 பெற்ற; 13 உழுமகட்குக், உழுமகட். **1158.** 3-4 நாணாளு மேர்போற்றிப்; 5-6 புன்புலத்துக் கைசெய்தெருப்; 7 போற்றியன் பின்; 8 இன்புலத்தைப்; 9 பண்கலத்தைப். **1159.** 1 சேனை; 3-4 தேரெனி னுஞ்சிறந்தார்; 7 ஏர்வாழ்வார்; 8 யானை; 9 படையோற்கு; 10 நன்றி; 13 ருடையோற். **1160.** 4 கொண்டு; 8 நலங்கிளரத்; 9-11 தீவாய் சொரியத் திரிவிளங்கு; 14 தொளிசிறந்தார்; 14-15 தொளிசிறப் பாம்.

1161. ஈட்டிய வெல்லா மிதன்பொருட் டென்பது
காட்டிய கைவண்மை காட்டினார்—வேட்டொறுங்
காமருதார்ச் சென்னி கடல்சூழ் புகார்வணிகர்
தாமரையுஞ் சங்கும்போற் றந்து.

(பெரும்பொருள்.)

## அதி. 104. நல்குரவு

1162. கொண்டொழுகு மூன்றற் குதவாப் பசித்தோற்றம்
பண்டொழுகி வந்த வளமைத்தங்—குண்டது
கும்பியெற் றிச்சென் றடுதலாற் றன்னுசை
அம்பாயுள் புக்கு விடும்.

(பழமொழி, 363)

1163. பேஎய்ப் பிறப்பிற் பெரும்பசியும் பாஅய்
விலங்கின் பிறப்பின் வெருஉம் புலந்தெரியா
மக்கட் பிறப்பி னிரப்பிடும்பை யிம்மூன்றுந்
துக்கப் பிறப்பாய் விடும்.

(திரிகடு. 60)

1164. கல்லோங் குயர்வரைமேற் காந்தள் மலராக்காற்
செல்லாவாஞ் செம்பொறி வண்டினங்—கொல்லைக்
கலாஅற் கிளிகடியுங் கானக நாட
இலாஅஅற் கில்லைத் தமர்.

(நாலடி, 283)

1165. பிறந்த குலமாயும் பேராண்மை மாயுஞ்
சிறந்ததங் கல்வியு மாயுங்—கறங்கருவி
கன்மேற் றவழுங் கணமலை நன்னாட
இன்மை தழுவப்பட் டார்க்கு.

( ,, 285)

1166. உள்கூர் பசியா லுழைநசைஇச் சென்றாருக்
குள்ளூ ரிருந்துமொன் றாற்றாதான்—உள்ளூர்
இருந்துயிர் கொன்னே கழியாது தான்போய்
விருந்தின னாதலே நன்று.

( ,, 286)

1167. ஆர்த்த பொறிய வணிகிளர் வண்டினம்
பூத்தொழி கொம்பின்மேற் செல்லாவாம்—நீத்தருவி
தாழா வுயர்சிறப்பிற் றண்குன்ற நன்னாட
வாழாதார்க் கில்லைத் தமர்.

( ,, 290)

---

**1161.** 2 தெல்லா; 5 நாட்டிய; 6 கைவன்மை. **1162.** 2 முற்றூர்க்; 7 வழுவன்மைக்; 9-10 கும்பியிற் றீச்சென், கும்பியீற் றிற்சென்; 9-11 கும்பி னிடையியற்றிச் சென்ற தெல்லாற்; 9...கும்பியிடையியற்றிச் செல்...;10-11 றீறச்சென் றாடுதலாற். **1163.** 7 வெருவும்; 8 குலந்தெரியா. **1164.** 4 மலர்ந் தக்காற்; 8 கொல்லையே; 9 கல்லாற்; 12 நாடகேள், நாடபொருள்; 13 இல் லாதார்க். **1165.** 10 கழூஉங், றழூஉங்; 11 கனமலை; 15 டாற்கு. **1166.** 3 லுழைநசைச், லுளைந்தசைஇச்; 4 சென்றூர்கட். **1167.** 2-3 பொறியி னணிகிளர்; 5 பூத்தொளிர்.

1168. காலாடு போழ்திற் கழிகிளைஞர் வானத்து
மேலாடு மீனிற் பலராவர்—ஏலா
இடரொருவ ருற்றக்கா லீர்ங்குன்ற நாட
தொடர்புடையோ மென்பார் சிலர்.

(நாலடி, 113)

1169. நல்லாவின் கன்றாயி னாகும் விலைபெறூஉம்
கல்லாரே யாயினுஞ் செல்வர்வாய்ச் சொற்செல்லும்
புல்லீரப் போழ்தி னுழவேபோல் மீதாடிச்
செல்லாவாம் நல்கூர்ந்தார் சொல்.

( ,, 115)

1170. பெண்டிர் மதியார் பெருங்கிளை தானது
கொண்ட விரகர் குறிப்பினி னஃகுப
வெண்டறை நின்று வெறுக்கை யிலராயின்
மண்டினர் போவர்தம் மக்களு மொட்டார்.

(வளையா.)

1171. சொல்லவை சொல்லார் சுருங்குபு சூழ்ந்துணர்
நல்லவை யாரும் நனிமதிப் பாரல்லர்
கல்வியுங் கைப்பொரு ளில்லார் பயிற்றிய
புல்லென்று போதலை மெய்யென்று கொண்ணீ.

( ,, )

1172. தொழுமக னாயினுந் துற்றுடை யானைப்
பழுமரஞ் சூழ்ந்த பறவையிற் சூழ்ப
விழுமிய ரேனும் வெறுக்கை யுலந்தாற்
பழுமரம் வீழ்ந்த பறவையிற் போப.

( ,, )

1173. பொருளில் குலனும் பொறைமையில் நோன்பும்
அருளி லறனு மமைச்சி லரசும்
இருளினு ளிட்ட விருண்மையி தென்றே
மருளில் புலவர் மனங்கொண் டுரைப்ப.

( ,, )

## அதி. 105. இரவு

1174. இல்லாமை கந்தா விரவு துணிந்தொருவர்
செல்லாரு மல்லர் சிறுநெறி—புல்லா
அகம்புகுமி னுண்ணுமி னென்பவர்மாட் டல்லால்
முகம்புகுத லாற்றுமோ மேல்.

(நாலடி, 303)

---

**1168**. 13 தொடர்புடைய; 14 மென்பர். **1169**. 4 விலைபெறும்; 12 மீதாடச். **1170**. 6 வீறாகா; 9 வெண்டுறை; 14 போல்வர்தம், போவரா; 16 மொட்டா. **1171**. 2 சொல்லா; 7-8 நனிமதிப்பா ரல்லாத; 11 ளில்ல ராய்ப்; 16 கொண்ணீர். **1172**. 1 தொழின்மக; 6 (ங்) கொண்ட; 12 யுலந் தார்; 16 போவ. **1173**. 3 பொறுமையில்; 6 லவனு; 8 லவாகும்; 11-12 விருண்மயி ரென்றே. **1174**. 9-10 அகம்புகுது முண்ணுமி; 13 முகம்புக.

1175. மறூஅ தவனும் பலரொன் றிரந்தாற்
பெறூஅ தவன் பேதுறுத லெண்ணிப்—பொறூஅன்
கரந்துள்ள தூஉ மறைக்கு மதனால்
இரந்தூட்கும் பன்மையோ தீது.

(பழமொழி, 240)

1176. மரம்போல் வலிய மனத்தினார் பின்சென்
றிரந்தார் பெறுவதொன் றில்லை—குரங்கூசல்
வள்ளியி னாடு மலைநாட வஃதன்றோ
பள்ளியு ளையம் புகல்.

( ,, 140)

1177. செருக்கினால் வாழுஞ் சிறியவரும் பைத்தகன்ற
அல்குல் விலைபகரு மாய்தொடியும் நல்லவர்க்கு
வைத்த வறப்புறங் கொண்டானு மிம்மூவர்
கைத்துண்ணார் கற்றறிந் தார்.

(திரிகடு. 25)

1178. விசையி னோடுவெண் டேர்செலக் கண்டுநீர்
நசையி னோடிய நவ்வி யிருங்குழாம்
இசையில் கீழ்மகன் கண்ணிரந் தெய்திய
வசையில் மேன்மகன் போல வருந்துமே.

(சூளா. சீய. 212)

1179. ஆடுநனி மறந்த கோடுய ரடுப்பின்
ஆம்பி பூப்பத் தேம்புபசி யுழவாப்
பாஅ லின்மையிற் றோலொடு திரங்கி
இல்லி தூர்ந்த பொல்லா வறுமுலை
சுவைத்தொ றழூஉந்தன் மகத்துமுக நோக்கி
நீரொடு நிறைந்த வீரிதழ் மழைக்கணென்
மனையோ ளெவ்வ நோக்கி நினைஇ
நிற்படர்ந் திசினே நற்போர்க் குமண
என்னிலை யறிந்தனை யாயி னிந்நிலைத்
தொடுத்துங் கொள்ளா தமையலெ னடுக்கிய
பண்ணமை நரம்பின் பச்சை நல்யாழ்
மண்ணார் முழவின் வயிரியர்
இன்மை தீர்க்குங் குடிப்பிறந் தோயே.

(புறம், 164)

1180. பயங்கெழு மாமழை பெய்யாது மாறிக்
கயங்களி முளியுங் கோடை யாயினும்

---

**1175.** 3 பிறர்சென்; 5-6 பெறூஅ தவன்பெறுத; 13 இரந்தாட்குப், இரந்தூட்டும், இரந்தூட்குப். **1176.** 2 வலியு; 3 மனத்தினாற்; 10 னோடு; 12 விஃதன்றோ; 13-14 பள்ளியுட் பாயம். **1177.** 8 பல்லவர்க்கு. **1178.** சிந்தாமணி. 8 யருங்குழாம்; 12 தேந்திய. **1179.** 2,2 பூத்துத்; 3, 1-2 பாலின்மையினாற் ; 6, 3 பூவிதழ்; 7,4 நினைக்கு; 9,4 னின்னிலை; 10, 1 தடுத்துக், கொடுத்துங்; 10, 3 தமையி; 12, 1 மண்ணா. **1180.** 2,2 முனி யுங்; 3,3 லகத்திடை; 4,1 கதிர்க்கோடு; 5, 1 நாகிளவண்டு; 8, 3 வவை யத்; 12, 1 பொறிபுண, பொறியுண.

புழற்கா லாம்ப லகலடை நீழற்
கதிர்க்கோட்டு நந்தின் சுரிமுக வேற்றை
நாகிள வளையொடு பகன்மணம் புகூஉம்
நீர்திகழ் கழனி நாடுகெழு பெருவிறல்
வான்றோய் நீள்குடை வயமான் சென்னி
சான்றோ ரிருந்த வவையகத் துற்றோன்
ஆசா கென்னும் பூசல் போல
வல்லே களைமதி யத்தை யுள்ளிய
விருந்துகண் டொளிக்குந் திருந்தா வாழ்க்கைப்
பொறிப்புண ருடம்பிற் றோன்றியென்
அறிவுகெட நின்ற நல்கூர் மையே.

(புறம், 266)

## அதி. 106. இரவச்சம்

1181. கரவாத திண்ணன்பிற் கண்ணன்னார் கண்ணும்
இரவாது வாழ்வதாம் வாழ்க்கை—இரவினை
உள்ளுங்கா லுள்ள முருகுமா லென்கொலோ
கொள்ளுங்காற் கொள்வார் குறிப்பு.

(நாலடி, 305)

1182. இன்னா வியைக வினிய வொழிகென்று
தன்னையே தானிரப்பத் தீர்வதற்—கென்னைகொல்
காதல் கவற்று மனத்தினாற் கண்பாழ்பட்
டேதி லவரை யிரவு.

( ,, 306)

1183. என்றும் புதியார் பிறப்பினு மிவ்வுலகத்
தென்று மவனே பிறக்கலான்—குன்றின்
பரப்பெலாம் பொன்னொழுகும் பாயருவி நாட
இரப்பாரை யெள்ளா மகன்.

( ,, 307)

1184. ஒருவ ரொருவரைச் சார்ந்தொழுக லாற்றி
வழிபடுதல் வல்லுத லல்லாற்—பரிசழிந்து
செய்யீரோ வென்னானு மென்னுஞ்சொற் கின்னாதே
பையத்தாஞ் செல்லு நெறி.

( ,, 309)

1185. திருத்தன்னை நீப்பினுந் தெய்வஞ் செறினும்
உருத்த மனத்தோ டுயர்வுள்ளி னல்லால்
அருத்தஞ் செறிக்கு மறிவிலார் பின்சென்
றெருத்திறைஞ்சி நில்லாதா மேல்.

( ,, 304)

1186. மல்லல்மா ஞாலத்து வாழ்ப வருளெல்லாஞ்
செல்வ ரெனினுங் கொடாஅ தவர் நல்கூர்ந்தார்

---

**1181.** 11 முருக்குமா; 14 கொள்வ. **1182.** 2 விசைக, விசைய; 14 லவனா. **1184.** 5 வடுப்படுதல்; 10 வென்னாது. **1185.** 7 டுயர்புள்ளி; 11 மறிவினார்; 14 நில்லாதார்.

நல்கூர்ந்தக் கண்ணும் பெருமுத் தரையரே
செல்வரைச் சென்றிரவா தார்.

(நாலடி, 296)

1187. மான வருங்கலம் நீக்கி யிரவென்னும்
ஈன விளிவினால் வாழ்வேன்மன்—ஈனத்தால்
ஊட்டியக் கண்ணு முறுதிசேர்ந் திவ்வுடம்பு
நீட்டித்து நிற்கு மெனின்.

( ,, 40)

1188. மறுமையு மிம்மையும் நோக்கி யொருவற்
குறுமா றியைவ கொடுத்தல்—வறுமையால்
ஈத லிசையா தெனினு மிரவாமை
ஈத லிரட்டி யுறும்.

( ,, 95)

1189. வற்றிமற் றுற்றப் பசிப்பினும் பண்பிலார்க்
கற்ற மறிய வுரையற்க—அற்றம்
மறைக்குந் துணையார்க் குரைப்பவே தம்மைத்
துறக்குந் துணிவிலா தார்.

( ,, 78)

## அதி. 107. கயமை

1190. நிரந்து வழிவந்த நீசரு ளெல்லாம்
பரந்தொருவர் நாடுங்காற் பண்புடையார் தோன்றார்
மரம்பயில் சோலை மலைநாட வென்றுங்
குரங்கினுள் நன்முகத்த வில்.

(பழமொழி, 58)

1191. பெருமலை நாட பிறரறிய லாகா
அருமறையை யான்றோரே காப்பர்—அருமறையை
நெஞ்சிற் சிறியார்க் குரைத்தல் பனையின்மேற்
பஞ்சிவைத் தெஃகிவிட் டற்று.

( ,, 91)

1192. அல்லவை செய்குப வல்லாப்பி னல்லாக்காற்
செய்வ தறிகில ராகிச் சிதைத்தெழுவர்
கல்லாக் கயவ ரியற்கை நரியிற்கு
நல்யாண்டுந் தீயாண்டு மில்.

( ,, 290)

1193. கருந்தொழில ராய கடையாயார் தம்மேற்
பெரும்பழி யேறுவ பேணார்—இரும்புன்னை
புன்புலால் தீர்க்குந் துறைவமற் றஞ்சாதே
தின்ப தழுவதன் கண்.

( ,, 262)

**1187.** 6 விழிவினால்; 7 வாழ்வெண்மின். **1188.** 6 விசைவ, றிசைவ. **1189.** 1 வற்றிமுற். **1190.** 2 வழிவந்து; 3 நீரரு; 5 பரந்தொருவன். **1191.** 5 அருமறை; 6 யான்றாரோ; 13 பஞ்சைவைத்; 14 தெஃகைவிட், தெஃகுவிட். **1192.** இது சில பிரதிகளில் இல்லை. 3 வல்லாயி; 3-4 வல்லன வல்லாக்காற்; 6-7 தறிகில்ல ராகைச்; 7 ராகச்; 8 சிதைந்தெழுவர்; 10-11 கயவர்தம் யாக்கை; 11 ரியாக்கை; 12 நரியற்கு. **1193.** 3 கடையாவார்; 7-8 பேணா திரும்புன்னை.

1194. உரிஞ்சி நடப்பாரை யுள்ளடி நோவ
நெருஞ்சியுஞ் செய்வதொன் றில்லை—செருந்தி
இருங்கழித் தாழு மெறிகடற்றண் சேர்ப்ப
பெரும்பழியும் பேணுதார்க் கில்.

(பழமொழி, 170)

1195. மிக்குப் பெருகி மிகுபுனல் சேர்ந்தாலும்
உப்பொழிதல் செல்லா வொலிகடல்போல்—மிக்க
இனநலம் நன்குடைய வாயினு மென்றும்
மனநல வாகாவாங் கீழ்.

( ,, 11)

1196. தேர்ந்துகண் ணோடாது தீவினையு மஞ்சலராய்ச்
சேர்ந்தாரை யெல்லாஞ் சிறிதுரைத்துத்—தீர்ந்த
விரகர்கட் கெல்லாம் வெறுப்பனவே செய்யும்
நரகர்கட் கில்லையோ நஞ்சு.

( ,, 27)

1197. யாந்தீய செய்தல் மலைமறைத்த லென்றெண்ணித்
தாந்தீயார் தந்தீமை தேற்றுரால்—ஆம்பல்
மணவில் கமழு மலிதிரைச் சேர்ப்ப
கணையினுங் கூரியவாங் கண்.

( ,, 174)

1198. பெருநடை தாம்பெறினும் பெற்றி பிழையா
தொருநடைய ராகுவர் சான்றோர்—பெருநடை
பெற்றக் கடைத்தும் பிறங்கருவி நன்னுட
வற்று மொருநடை கீழ்.

(நாலடி, 343)

1199. சக்கரச் செல்வம் பெறினும் விழுமியோர்
எக்காலுஞ் சொல்லார் மிகுதிச்சொல்—எக்காலும்
முந்திரிமேற் காணி மிகுவதேற் கீழ்தன்னை
இந்திரனு வெண்ணி விடும்.

( ,, 346)

1200. மைதீர் பசும்பொன்மேல் மாண்ட மணியழுத்திச்
செய்த தெனினுஞ் செருப்புத்தன் காற்கேயாம்
எய்திய செல்வத்த ராயினுங் கீழ்களைச்
செய்தொழிலாற் காணப் படும்.

( ,, 347)

1201. கடுக்கெனச் சொல்வற்றுங் கண்ணோட்ட மின்றும்
இடுக்கண் பிறர்மாட் டுவக்கும்—அடுத்தடுத்து
வேக முடைத்தாம் விறன்மலை நன்னுட
ஏகுமா மெள்ளுமாங் கீழ்.

( ,, 348)

---

**1194.** 11 மிருங்கடற்றண். **1195.** 6 இல்லா; 9 வினைநலம்; 11 ராயினு; 14 மாகாவாங். **1196.** 7 சிறிதுரைத்துந்; 14 கில்லையே. **1197.** 1 யாந்தீமை; 3 மலைமறைத்தா, மலைமறைத; 5 தாந்தீயோர்; 9 மணமில்; 11 மலிகடற்றண், மலிதிரைநீர்ச். **1198.** 4 விளையா. **1199.** 8 அக்காலே; 9 முந்திரைமேற், முந்தையிற், முந்தைமேற். **1200.** 6 வெனினுஞ். **1201.** 2 சொல்லவற்றுங்; 13 வெஃகுமா.

1202. கணமலை நன்னாட கண்ணின் றொருவன்
குணமேயுங் கூறற் கரிதாற்—குணனழுங்கக்
குற்ற முழைநின்று கூறுஞ் சிறியவர்கட்
கெற்றா னியன்றதுகொல் நா.

(நாலடி, 353)

1203. தளிர்மேலே நிற்பினுந் தட்டாமற் செல்லா
உளிநீரர் மாதோ கயவர்—அளிநீரார்க்
கென்னானுஞ் செய்யா ரெனைத்தானுஞ் செய்பவே
இன்னாங்கு செய்வார்ப் பெறின்.

( ,, 355)

1204. ஒருநன்றி செய்தவர்க் கொன்றி யெழுந்த
பிழைநூறுஞ் சான்றோர் பொறுப்பர் கயவர்க்
கெழுநூறு நன்றிசெய் தொன்றுதீ தாயின்
எழுநூறுந் தீதாய் விடும்.

( ,, 357)

1205. ஐங்குரவ ராணை மறுத்தலு மார்வுற்ற
எஞ்சாத நட்பினுட் பொய்வழக்கும்—நெஞ்சமர்ந்த
கற்புடை யாளைத் துறத்தலு மிம்மூன்றும்
நற்புடையி லாளர் தொழில்.

(திரிகடு. 97)

1206. நன்றிப் பயன்றூக்கா நாணிலியுஞ் சான்றோர்முன்
மன்றிற் கொடும்பா டுரைப்பானும்—நன்றின்றி
வைத்த வடைக்கலங் கொள்வானு மிம்மூவர்
எச்ச மிழந்துவாழ் வார்.

( ,, 62)

1207. மாசு படினு மணிதன்சீர் குன்றாதாம்
பூசிக் கொளினு மிரும்பின்கண் மாசொட்டும்
பாசத்து ளிட்டு விளக்கினுங் கீழ்தன்னை
மாசுடைமை காட்டி விடும்.

(நான்மணி. 99)

1208. பாம்புண்ட நீரெல்லாம் நஞ்சாம் பசுவுண்ட
தேம்படு தெண்ணீ ரமிழ்தமாம்—ஓம்பும்
ஒளியா முயர்ந்தார்கண் ஞான மதுவே
களியாங் கடையாயார் மாட்டு.

(அறநெறி. 52)

## அதி. 108. பல்பொருள்

1209. கண்ணிற் சிறந்த வுறுப்பில்லை கொண்டானிற்
றுன்னிய கேளிர் பிறரில்லை மக்களின்
ஒண்மைவாய் சான்ற பொருளில்லை யீன்றாளின்
என்ன கடவுளு மில். (நான்மணி. 56)

---

**1202**. 8 குணனழுங்கிக்; 14 னியன்றதோ. **1203**. 5 உளிநீரார்; 8 அளி நீராற்; 8-9 அளிநீரா ரென்னானுஞ்; 12 செய்பவை. **1204**. 2 செய்தவற்; 5 பிழைநூறு; 12 தாகில். **1205**. 3 மறுத்தாலு; 5 எஞ்சாமை; 14 லாகார்; 15 தொடர்பு. **1206**. 1 நன்றி, நன்றிற்; 5 மன்றக்; 11 கொண்டானு. **1207**. 4 குன்றாவாம்; 7 மிரும்பின்றன். **1208**. 6 தண்ணீ; 8-9 ஓம்பற் கொளியா. **1209**. 9 ஒண்மைய வாய்ச்; 9-10 ஒண்மைய வாய.

1210. நலனு மிளமையும் நல்குரவின் கீழ்ச்சாம்
குலனுங் குடிமையுங் கல்லாமைக் கீழ்ச்சாம்
வளமில் குளத்தின்கீழ் நெற்சாம் பரமல்லாப்
பண்டத்தின் கீழ்ச்சாம் பகடு.

(நான்மணி. 82)

1211. நல்லார்க்குந் தம்மூரென் றூரில்லை நன்னெறிச்
செல்வார்க்குந் தம்மூரென் றூரில்லை—கல்லாக்
கடைகட்குந் தம்மூரென் றூரில்லைத் தங்கைத்
துடையார்க்கு மெவ்வூரு மூர்.

( ,, 83)

1212. பெருக்குக நட்டாரை நன்றின்பா லுய்த்துத்
தருக்குக மாற்றாரைக் கால மறிந்தே
அருக்குக யார்மாட்டு முண்டி சுருக்குக
செல்லா விடத்துச் சினம்.

( ,, 88)

1213. எள்ளற்க வென்று மெளியரென் றென்பெறினும்
கொள்ளற்க கொள்ளார்கை மேலாக—வுள்சுடினுஞ்
சீறற்க சிற்றிற் பிறந்தாரைக் கூறற்க
கூறல்ல வற்றை விரைந்து.

( ,, 3)

1214. திருவொக்குந் தீதி லொழுக்கம் பெரிய
அறனொக்கு மாற்றி னொழுகல் பிறனைக்
கொலையொக்குங் கொண்டுகண் மாறல் புலையொக்கும்
போற்றாதார் முன்னர்ச் செலவு.

( ,, 8)

1215. இன்னாத வேண்டி னிரவெழுக விங்கிலத்து
மன்னுதல் வேண்டி னிசைநடுக—தன்னொடு
செல்வது வேண்டி னறஞ்செய்க வெல்வது
வேண்டின் வெகுளி விடல்.

( ,, 17)

1216. மனைக்குப்பாழ் வாணுத லின்மைதான் செல்லுந்
திசைக்குப்பாழ் நட்டோரை யின்மை யிருந்த
அவைக்குப்பாழ் மூத்தோரை யின்மை தனக்குப்பாழ்
கற்றறி வில்லா வுடம்பு.

( ,, 22)

1217. மனைக்கு விளக்க மடவாள் மடவாள்
தனக்குத் தகைசால் புதல்வர்—மனக்கினிய
காதற் புதல்வர்க்குக் கல்வியே கல்விக்கும்
ஓதிற் புகழ்சா லுணர்வு.

( ,, 103)

---

**1210.** 1 நலமு; 5 குலமுங்; 7 கொல்லாமைக். **1211.** 1 நல்லார்க்குத்; 8 யல்லாக். **1213.** 3 மிளையாரென்; 7 மேலவா. **1215.** 1 இன்னுமை; 3 னிரவொழுக; 8 தம்மொடு. **1217.** இது 'பொருளிலொருவற்' (1228) என்பதன்பின். 2 விளக்கு; 5-6 தனக்கு விளக்குப்; 10 புதல்வர்க்கும்; 13 ஓதிப்.

1218. அந்தணரி னல்ல பிறப்பில்லை யென்செயினுந்
தாயிற் சிறந்த தமரில்லை யாதும்
வளமையோ டொக்கும் வனப்பில்லை யெண்ணின்
இளமையோ டொப்பது மில்.

(நான்மணி. 34)

1219. கொடுப்பி னசனங் கொடுக்க விடுப்பின்
உயிரிடை யீட்டை விடுக்க வெடுப்பிற்
கிளையு ளழிந்தா ரெடுக்க கெடுப்பின்
வெகுளி கெடுத்து விடல்.

( ,, 81)

1220. கல்லா வொருவர்க்குத் தம்வாயிற் சொற்கூற்றம்
மெல்லிய வாழைக்குத் தானீன்ற காய்கூற்றம்
அல்லவை செய்வார்க் கறங்கூற்றங் கூற்றமே
இல்லிருந்து தீங்கொழுகு வாள்.

( ,, 84)

1221. இளமைப் பருவத்துக் கல்லாமை குற்றம்
வளமிலாப் போழ்தத்து வள்ளன்மை குற்றம்
கிளைஞரில் போழ்திற் சினங்குற்றம் குற்றந்
தமரல்லார் கையகத் தூண்.

( ,, 93)

1222. கரப்பவர் நீர்மைத்தாய் நன்பகலிற் றோன்றல்
இரப்பவர்கட் டேய்வேபோற் றோன்றல்—இரப்பவர்க்கொன்
றீவார் முகம்போ லொளிவிடுத லிம்மூன்றும்
ஓவாதே திங்கட் குள.

(திரிகடு. 102)

1223. ஈதற்குச் செய்க பொருளை யறநெறி
சேர்தற்குச் செய்க பெருநூலை—யாதும்
அருள்புரிந்து சொல்லுக சொல்லையிம் மூன்றும்
இருளுலகஞ் சேராத வாறு.

( ,, 90)

1224. செந்தீ முதல்வ ரறம்நினைந்து வாழ்தலும்
வெந்திறல் வேந்தன் முறைநெறியிற் சேர்தலும்
பெண்பால் கொழுநன் வழிச்செலவு மிம்மூன்றுந்
திங்கள்மும் மாரிக்கு வித்து.

( ,, 98)

1225. கொள்பொருள் வெஃகிக் குடியலைக்கும் வேந்தனும்
உள்பொருள் சொல்லாச் சலமொழி மாந்தரும்
இல்லிருந் தெல்லை கடப்பாளு மிம்மூவர்
வல்லே மழையருக்குங் கோள்.

( ,, 50)

---

**1218.** 14 டொப்பதுவு. **1219.** 2 னினிய; 6 யிட்டு; 8 எடுக்கிற்; 9-11 கிளையுளழிந் தாரை யெடுக்க, கிளையுட் கழிந்தா ரெடுக்க. **1220.** 2 ரொரு வற்குத்; 10 செய்தாற். **1221.** 3 கில்லாமை. **1222.** 3 நண்பகற்; 5 இரப்ப வர்கேட்; 15 குணம். **1224.** 6 வேந்தர்; 8 சேறலும். **1225.** 6 சொல்லச்; 6-8 வேத நெறியொழுகா வந்தணரும்; 13 வல்லை; 14 மழைவிலக்குங்.

1226. பிறர்தன்னைப் பேணுங்கால் நாணலும் பேணார்
திறன்வேறு கூறிற் பொறையும்—அறவினையைக்
காராண்மை யாக வொழுகலு மிம்மூன்றும்
ஊராண்மை யென்னுஞ் செருக்கு.

(திரிகடு. 6)

1227. கணக்காய ரில்லாத வூரும் பிணக்கறுக்கும்
மூத்தோரை யில்லா வவைக்களனும் பாத்துண்ணாத்
தன்மையி லாள ரயலிருப்பு மிம்மூன்றும்
நன்மை பயத்த லில.

( ,, 10)

1228. பொருளி லொருவற் கிளமையும் போற்றும்
அருளி லொருவற் கறனும்—தெருளான்
அறந்தாழு நெஞ்சினான் கல்வியு மூன்றும்
பரிந்தாலுஞ் செய்யாப் பயன்.

( ,, ?)

1229. பெரியார் பெருமை சிறுதகைமை யொன்றிற்
குரியா ருரிமை யடக்கம்—தெரியுங்காற்
செல்வ முடையாருஞ் செல்வரே தற்சேர்ந்தார்
அல்லல் களைப வெனின்.

(நாலடி, 170)

1230. தெளிவிலார் நட்பிற் பகைநன்று சாதல்
விளியா வருநோயி னன்றால்—அளிய
இகழ்தலிற் கோற லினிதேமற் றில்ல
புகழ்தலின் வைதலே நன்று.

( ,, 219)

1231. அற்றவர் வருத்தம் நீக்கி யாருயிர் கொண்டு நிற்குந்
துற்றவி ழீதல் செய்யிற் றுறக்கத்திற் கேணி யாகும்
உற்றுயி ரோம்பித் தீந்தே னூனொடு துறக்கு மாயின்
மற்றுரை யில்லை விண்ணு மண்ணுநும் மடிய வன்றே.

(சிந்தா. 2927)

## அதி. 109. நிரைகோடல்

1232. மண்டு மெரியுள் மரந்தடிந் திட்டற்றால்
கொண்ட கொடுஞ்சிலையன் கோறெரியக்—கண்டே
அடையார் முனையலற வையிலைவேற் காளை
விடையாயங் கொள்கென்றான் வேந்து.*

(வெண்பா. 1)

---

**1228.** 9 அறிந்தாளு, றிரிந்தாழு; 11 கல்வியிம்; 15 பலன். **1229.** 3 சிறுதகை; 4 யொன்றற்; 14 களைய. **1230.** 1 தெளிவிலர்; 12 றல்ல, றில்லை. **1231.** 4 லாருயிர்; 13 மற்றுயி; 17-18 துறப்ப ராயின், துறப்பீ ராயின்; 19-20 மற்றுயி ரில்லை; 24 தன்றே. **1232.** 2-4 மெரியவுணர் மாற்றந் தடிந் திட்டாற்; 6 கொடுஞ்சிலையின்; 14 கொள்கின்றான்.

* இதனோடு கனகசுந்தரம் பிள்ளையவர்கள் பிரதி, தஞ்சைப்பிரதி, தேசிகரவர்கள் பிரதி இம்மூன்றும் முடிகின்றன.

1233. சூழ்ந்த நிரைபெயரச் சுற்றித் தலைக்கொண்டார்
வீழ்ந்தனர் வீழ்ந்தார் விடக்குணியத்—தாழ்ந்த
குலவுக் கொடுஞ்சிலைக் கூற்றனையா ரெய்த
புலவுக் கணைவழியே புள்.

(வெண்பா. 10)

1234. புல்மேய்ந் தசைஇப் புணர்ந்துடன் செல்கென்னும்
வில்மே லசைஇயகை வெல்கழலான்—தன்மேற்
கடுவரை நீரிற் கடுத்துவரக் கண்டு
நெடுவரை நீழல் நிரை.

( ,, 11)

1235. அங்கட் கிணையன் றுடியன் விறலிபாண்
வெங்கட்கு வீசும் விலையாகும்—செங்கண்
செருச்சிலையா மன்னர் செருமுனையிற் சீறி
வரிச்சிலையாற் றந்த வளம்.

( ,, 16)

1236. வெவ்வாள் மறவர் மிலைச்சிய வெட்சியாற்
செவ்வானஞ் செல்வதுபோற் செல்கின்றார்—எவ்வாயும்
ஆர்க்குங் கழலொலி யாங்கட் படாலியரோ
போர்க்குந் துடியொடு புக்கு.

(பெரும்பொருள்.)

1237. வாள்வலம் பெற்ற வயவேந்த னேவலால்
தாள்வ லிளையவர் தாஞ்செல்லின்—நாளைக்
கனைகுரல் நல்லாவின் கன்றுள்ளப் பாலின்
நனைவது போலுமிவ் வூர்.

( ,, )

1238. வந்த நிரையி னிருப்பு மணியுடன்
எந்தலை நின்றலை யான்றருவன்—முந்துநீ
மற்றவை பெற்று வயவேந்தன் கோலோங்கக்
கொற்றவை கொற்றங் கொடு.

( ,, )

1239. திரைகவுள் வெள்வாய்த் திரிந்துவீழ் தாடி
நரைமுதியோ னேற்றுரைத்த நற்சொல்—நிரையன்றி
எல்லைநீர் வைய மிறையோர்க் களிக்குமால்
வல்லையே சென்மின் வழி.

( ,, )

1240. பிறர்புல மென்னார் தமர்புல மென்னார்
விறல்வெய்யோர் வீங்கிருட்கட் சென்றார்—நிறையுங்
கடாஅஞ் செருக்குங் கடுங்களி யானை
படாஅ முகம்படுத் தாங்கு.

( ,, )

---

'சூழ்ந்த' (1233), 'புல்மேய்ந்' (1234): இவ்விரண்டும் 'பிறர்புல' (1240) என்பதன்பின்; 'அங்கட்' (1235) என்பது 'சிறுபுன்' (1242) என்பதன்பின். **1234.** 9 கடுவர; 14 நீள. **1235.** 7 விலையாரும். **1236.** 6 சென்றது போற்; 10-12 கழலொலியங் கங்கட்பா டாலியரோ; 11 யங்கட். **1237.** 5 தாள்வி, தாள்வா; 9 கனைகுரவு. **1238.** இதன்பின் 'நாளும் புள்ளும்' (1241). 2-3 நிரையு ளிருப்பு; 5 என்றலை; 7 யான்றருவான். **1239.** 6 னென்றுரைத்த; 11 மிறையோற். **1240.** 5 விடல்வெய்யோர்.

1241. நாளும் புள்ளுங் கேளா வூக்கமொ
டெங்கோ னேயின னாதலின் யாமத்துச்
செங்கால் வெட்சியுந் தினையுந் தூஉய்
மறிக்குரற் குருதி மன்றுதுக ளவிப்ப
விரிச்சி யோர்த்தல் வேண்டா
எயிற்புறந் தருதும்யாம் பகைப்புல நிரையே.

(தகடூர்.)

1242. சிறுபுன் சில்லி நெடுவிளி யானா
மரம்பயில் கானத்துப் பாற்புறங் கண்ட
வடியா நெடுநெறிச் செல்லாப் புடையது
முல்லை வருந்திற் போகிப் புல்லருந்திக்
கான்யாற்றுத் தெண்ணீர் பருகிக் காமுறக்
கன்றுபா லருந்துபு சென்றன மாதோ
முன்ப லரும்பிய பானாறு செவ்வாய்ப்
புன்றலை மகாஅர் தந்தை
கன்றுசூழ் கடிமனைக் கவைஇய நிரையே.

(ஆசிரிய.)

## அதி. 110. நிரைமீட்சி

1243. அழுங்குநீர் வையகத் தாருயிரைக் கூற்றம்
விழுங்கியபின் வீடுகொண் டற்றால்—செழுங்குடிகள்
தாரார் கரந்தை தலைமலைந்து தாங்கோடல்
நேரார்கைக் கொண்ட நிரை.

(வெண்பா. 22)

1244. உரைப்பி னதுவியப்போ வொன்னார்கைக் கொண்ட
நிரைப்பி னெடுந்தகை சென்றான்—புரைப்பின்
றுளப்பட்ட வாறெல்லா மொள்வாள் கவரக்
களப்பட்டான் றோன்றான் கரந்து.

( ,, 27)

1245. அடியதி ரார்ப்பின ராபெயர்த்தற் கன்னாய்
கடிய மறவர் கதழ்ந்தார்—மடிநிரை
மீளாது மீளான் விறல்வெய்யோன் யாதாங்கொல்
வாளார் துடியார் வலம்.

(பெரும்பொருள்.)

1246. கங்கை கவர்ந்தாங்குக் கானப் பெருங்கவலை
எங்கு மறவ ரிரைத்தெழுந்தார்—நுங்கிளைகள்
மன்றுகாண் வேட்கை மடிசுரப்பத் தோன்றுவ
கன்றுகாண் மெய்குளிர்ப்பீர் கண்டு.

( ,, )

**1241**. 3, 1 செங்கோல்; 3, 4 தூவி; 4, 3 மன்றத்துக. **1242**. 1, 3 னெடுவெளி; 2, 2 தானத்துப்; 2, 4 கொண்ட; 3, 2 நெடுநாடு; 4, 2 வருந்திற்; 9, 1 குன்றுசூழ்; 9, 4 நரையே. **1243**. 11 தலைமலிந்து. **1244**. இது 'கடல் புக்கு' (1247) என்பதன்முன். 2 னிதுவியப்போ; 9-10 றுளப்பட்டனையெலா. **1245**. 4 (ல்)தன்னாற், கண்ணா; 7 (க்)கழைந்தார், கழரா. **1246**. இதன் பின் 'இருநில' (1251). 3 காணப்; 7 ரிரைந்தெழுந்தார், ரியைந்தெழுந்தார்; 11-12 மடிசுரப்ப வேதோன்றுங்; 14 மெய்குளிப்பீர்.

1247. கடல்புக்கு மண்ணெடுத்த காரேனக் கோட்டின்
மிடல்பெரி தெய்தின மாதோ—தொடலைக்
கரந்தை மறவர் கருதாதா ருள்ளத்
துரந்து நிரைமீட்ட தோள்.

(பெரும்பொருள்.)

1248. கல்கெழு சீறூர்க் கடைகாண் விருப்பினன்
மெல்ல நடவா விரையு நிரையென்னோ
தெள்ளறற் கான்யாற்றுத் தீநீர் பருகவும்
மள்ளர் நடவா வகை.

( ,, )

1249. காட்டகஞ் சென்றுயிர் போற்றான் கடுஞ்சுரையான்
மீட்ட மகனை வினவுறாள்—ஒட்டந்து
தன்னெதிர் தோன்றும் புனிற்றாத் தழீஇக்கலுழும்
என்னது பட்டாயோ வென்று.

( ,, )

1250. யாமே பகர்ந்திட வேண்டா வினநிரை
தாமே தமரை யறிந்தனகொல்—ஏமமுற்
றன்றீன்ற தம்மை யறிந்துகொள் கன்றேய்ப்பச்
சென்றீயு மாங்கவர்பாற் சேர்ந்து.

( ,, )

1251. இருநில மருங்கி னெப்பிறப் பாயினும்
மருவின் மாலையோ வினிதே யிரவின்
ஆகோள் மள்ளரு மளவாக் கானத்து
நாம்புறத் திறுத்தனெ மாகத் தாந்தங்
கன்றுகுரல் கேட்டன போல
நின்றுசெவி யேற்றன சென்றுபடு நிரையே.

(தகடூர்.)

## அதி. 111. பகைவயிற் சேறல்

1252. செங்கண் மழவிடையிற் கெண்டிச் சிலைமறவர்
வெங்கண் மகிழ்ந்து விழவயர—அங்குழைய
வஞ்சி வணங்கார் வணக்கிய வண்டார்ப்பக்
குஞ்சி மலைந்தானெங் கோ.

(வெண்பா. 36)

1253. முன்னர் முரசியம்ப மூரிக் கடற்றானைத்
துன்னருந் துப்பிற் றொழுதெழா—மன்னர்
உடைநா ளுலந்தனவா லோதநீர் வேலிக்
குடைநா ளிறைவன் கொள.

( ,, 38)

---

**1247.** 11-12 கருதா ருளராத்; 12 ருள்ளங். **1248.** 1 கல்லெழு. **1249.** 3 பெற்றான்; 7 வினவுறான்; 11 புனிற்றான்; 12 தழீஇக்க விழும்; 13-14 என்னதுய ருற்றாயோ. **1250.** 13 சென்றறியு. **1251.** 2,1-2 அருவிஷா மலையோ; 4,1-2 நாம்புற மிறுத்தன; 4, 3 மாகித்; 6, 2 யொற்றின. **1252.** 11 வணங்கிய. **1253.** 2 முரசிரங்க; 5 துன்னிருங்.

1254. அறிந்தவ ராய்ந்தநா ளாழித்தேர் மன்னர்
எறிந்திலங் கொள்வா ளியக்க—மறிந்திகலிப்
பின்பகலே யன்றியும் பேணா ரகநாட்டு
நன்பகலுங் கூகை நகும்.

(வெண்பா. 39)

1255. விண்ணசை இச் செல்கின்ற வேலிளைய ரார்ப்பெடுப்ப
மண்ணசை இச் செல்கின்றான் வாள்வேந்தன்—எண்ணம்
ஒருபாற் படர்தரக்கண் டொன்னார்தம் முள்ளம்
இருபாற் படுவ தெவன்.

(பெரும்பொருள்.)

1256. போர்ப்படை யார்ப்பப் பொடியா யெழுமரோ
பார்ப்புர வெண்ணான்கொல் பார்வேந்தன்—ஊர்ப்புறத்து
நில்லாத தானை நிலனெளிப்ப நீளிடைப்
புல்லார்மேற் செல்லும் பொழுது.

( ,, )

1257. வேத்தமர் செய்தற்கு மேற்செல்வான் மீண்டுவந்
தேத்தினர்க் கீத்துமென் றெண்ணுமோ—பாத்திப்
புடைக்கல மான்றே றுடனீத்தா னீத்த
படைக்கலத்திற் சாலப் பல.

(தகடூர்.)

1258. உண்டியின் முந்தா னுடனுண்டான் தண்டேறல்
மண்டி வழங்கி வழீஇயதற்கோ—கொண்டி
மறவர் மறலிக் குயிர்நேர்ந்தார் மன்னர்க்
குறவிலர் கண்ணோடா ரோர்ந்து.

( ,, )

1259. அணங்குடை நெடுங்கோட் டளையக முனைஇ
முணங்குநிமிர் வயமான் முழுவலி யொருத்தல்
ஊனசை யுள்ளந் துரப்ப விரைகுறித்துத்
தான்வேண்டு மருங்கின் வேட்டெழுந் தாங்கு
வடபுல மன்னர் வாட வடல்குறித்
தின்னா வெம்போ ரியறேர் வழுதி
இதுநீ கண்ணிய தாயி னிருநிலத்
தியார்கொ லளியர் தாமே யூர்தொறு
மீன்சுடு புகையின் புலவுநாறு நெடுங்கொடி
வயலுழை மருதின் வாங்குசினை வலக்கும்
பெருநல் யாணரி னொரீஇ யினியே
கலிகெழு கடவுள் கந்தங் கைவிடப்
பலிகண் மாறிய பாழ்படு பொதியில்
நரைமூ தாளர் நாயிடக் குழிந்த

---

**1254**. 4 மன்னன். **1255**. 10 படாதார்க்கண். **1256**. 5 பார்ப்புற; 6 மெண்ணான்கொல்; 9 நில்லானத். **1257**. 3 மேற்செல்லான்; 6 கீதுமென். **1258**. 2 மூத்தா; 7 வழியதற்கோ; 13 குறவில்லார். **1259**. 2, 1 முழங்கு நிமிர்; 4, 4 தாஅங்கு; 12, 2-3 கடவு ளந்தங்; 14, 3 நாயினிடக்; 14, 3-4 நாவிடை குறித்த; 15, 2 னில்லக.

வல்லி னல்லக நிறையப் பல்பொறிக்
கான வாரண மீனுங்
காடாகி விளியு நாடுடை யோரே.

(புறம், 52)

1260. இருங்கண் யானையொ டருங்கலந் தெறுத்துப்
பணிந்துகுறை மொழிவ தல்லது பகைவர்
வணங்கா ராதல் யாவதோ மற்றே
யுருமுடன் றுசிலைத்தலின் விசும்பதிர்ந் தாங்குக்
கண்ணதிர்பு முழங்குங் கடுங்குரல் முரசமொடு
கால்கிளர்ந் தன்ன வூர்திக் கான்முனை
எரிநிகழ்ந் தன்ன நிறையருஞ் சீற்றத்து
நளியிரும் பரப்பின் மாக்கடல் முன்னி
நீர்துனைந் தன்ன செலவின்
நிலந்திரைப் பன்ன தானையோய் நினக்கே.

(பதிற்று.)

## அதி. 112. எதிரூன்றல்

1261. அருவரை பாய்ந்திறுது மென்பார்பண் டின்றிப்
பெருவரைச் சீறூர் கருதிச்—செருவெய்யோன்
காஞ்சி மலையக் கடைக்கணித்து நிற்பதோ
தோஞ்செய் மறவர் தொழில்.

(வெண்பா. 61)

1262. ஐயங் களைந்திட் டடல்வெங்கூற் றுலிப்ப
வையிலை யெஃக மவைபலவு—மொய்யிடை
ஆட்கடி வெல்களிற் றண்ணல் கொடுத்தளித்தான்
வாட்குடி வன்க ணவர்க்கு.

( „ 64)

1263. உணங்கு புலவறு வொன்னார் குரம்பை
நுணங்கரில் வெம்முனை நோக்கி—அணங்கிய
குந்த மலியும் புரவியான் கூடாதார்
வந்தபின் செல்கென்றான் வாள்.

( „ 67)

1264. பருதிசெல் வானம் பரந்துருகி யன்ன
குருதியா றுவதுகொல் குன்றார்—கருதி
மறத்திறத்து மாறு மறவருங் கொண்டார்
புறத்திறுத்த வேந்திரியப் பூ.

( „ 70)

1265. ஒன்னு முனையோர்க் கொழிக வினித்துயில்
மன்னன் மறவர் மகிழ்தூங்கா—முன்னே
படலைக் குரம்பைப் பழங்கண் முதியாள்
விடலைக்கு வெங்கள் விடும். ( „ 81)

---

**1260.** 2, 1 பணிந்து; 3, 3 யாவதே; 3, 4 மற்றை; 6, 4 கான்முழை; 10, 3 தானைய. **1261.** 2 யாய்ந்தடுதே; 4 டன்றிப். **1262.** 6-7 யெஃகம் வகைபுலவு. **1263.** 5 நுணங்கிய, நுணங்கினும்; 6 வெம்முழை. **1264.** 11-12 மறவருங்கொண் டார்த்தார்; 13 புறத்திறத்து; 14 வேந்தீயப். **1265.** 1 ஒன்னார்; 1-2 ஒன்னார்முன் னையோர்க்; 5 மன்னர்.

1266. கடிகமழ் வேரிக் கடைதொறும் செல்லக்
கொடிமலி கொல்களி றேவித்—துடிமகிழ
ஆர்த்திட் டமரு ளடையாரை வெம்முனையிற்
பேர்த்திட்டான் பெய்கழலி னான்.

(வெண்பா. 85)

1267. கார்மழை முன்பிற் கைபரந் தெழுதரும்
வான்பறைக் குருகின் நெடுவரி பொற்பக்
கொல்களிறு மிடைந்த பஃறோற் றொழுதியொடு
நெடுந்தேர் நுடங்குகொடி யவிர்வரப் பொலிந்து
செலவுபெரி தினிதுநிற் காணு மோர்க்கே
இன்னா தம்ம தானே பன்மாண்
நாடுகெட வெருக்கி நன்கலந் தரூஉநின்
போரருங் கடுஞ்சின மெதிர்ந்து
மாறுகொள் வேந்தர் பாசறை யோர்க்கே.

(பதிற்று. 83)

## அதி. 113. பாசறை

1268. அவிழ்மலர்க் கோதையா ராட வொருபால்
இமிழ்முழவம் யாழோ டியம்பக்—கவிழ்மணிய
காய்கடா யானை யொருபாற் களித்ததிரும்
ஆய்கழலான் கட்டூ ரகத்து.

(வெண்பா. 53)

1269. கரும்பொடு காய்நெற் கனையெரி யூட்டிப்
பெரும்புனல் வாய்திறந்த பின்னுஞ்—சுரும்பின்
தொகைமலிந்த தண்குவளைத் தூமலர்த் தாரான்
பகைமெலியப் பாசறையு ளான்.

( ,, 56)

1270. மடங்கலிற் சீறி மலைத்தெழுந்தார் மண்மேல்
இடங்கெடச் சென்றிறுத்த பின்னும்—நுடங்கெரிபோல்
வெல்லப் பெருகும் படையார்க்கும் வேந்தர்மேற்
செல்லப் பெருகுஞ் சினம்.

( ,, 59)

1271. மூதில்வாய்த் தங்கிய முல்லைசால் கற்புடை
மாதர்பாற் பெற்ற வலியுளவோ—கூதிரின்
வெங்கண் விறல்வேந்தன் பாசறையுள் வேனிலான்
ஐங்கணை தோற்ற வழிவு.

(பெரும்பொருள்.)

---

**1266.** 2 வேலிக்; 9 ஆர்ந்திட்; 13 பேர்ந்திட்டான். **1267.** 2,3 நெடு வெறி; 2,4 போர்ப்பக்; 4,3 விரவப்; 8, 1 போரடுங்; 8, 3 மெதிர்ந்த. **1268.** 13 பாய்கழலான். **1269.** 3 கணையெரி; 6 வாய்திறந்து; 9 தொகைமலிரத். **1270.** 11 விடையார்க்கு; 12 வேந்தன்மேற். **1271.** 4 கற்புடைய; 7 வலி யுளவே, வலியளவோ; 10 விறல்வேந்தர்.

**1272.** மாற்றுப் புலந்தொறுந்தேர் மண்டி யமர்க்களங்கொள்
வேற்றுப் புலவேந்தர் வெல்வேந்தர்க்—கேற்ற
படையொலியிற் பாணொலி பல்கின்று லொன்னார்
உடையன தாம்பெற் றுவந்து.

(பெரும்பொருள்.)

**1273.** தழிச்சிய வாட்புண்ணோர் தம்மில்லந் தோறும்
பழிச்சியசீர்ப் பாசறை வேந்தன்—விழுச்சிறப்பிற்
சொல்லிய சொல்லே மருந்தாகத் தூர்ந்தன
புல்லணலார் வெய்துயிர்க்கும் புண்.

( ,, )

**1274.** குழிபல வாயினுஞ் சால்பா ஞதே
முழைபடு முதுமரம் போலெவ் வாயு
மடைநுழைந் தறுத்த விடனுடை விழுப்புண்
நெய்யிடை நிற்ற லானது பையென
மெழுகுசெய் பாவையிற் கிழிபல கொண்டு
முழுவதும் பொதியல் வேண்டும் பழிதீர்
கொடைக்கட ஞற்றிய வேந்தர்க்குப்
படைக்கட னாற்றிய புகழோன் புண்ணே.

(தகடூர்.)

**1275.** வந்தனென் பெரும கண்டனென் செலற்கே
களிறு கலிமாத் தேரொடு சுரந்து
நன்கல னீயும் நகைசா லிருக்கை
மாரி யென்னாய் பனியென மடியாய்
பகைவெம் மையி னசையா வூக்கலை
வேறுபுலத் திறுத்த விறல்வெந் தானையொடு
மாறா மைந்தர் மாறுநிலை தேய
மைந்துமலி யூக்கத்த கந்துகால் கீழ்ந்து
கடாஅ யானை முழங்கும்
இடாஅ வேணியின் பாசறை யானே.

(பதிற்று.)

## அதி. 114. பகைப்புலம் பழித்தல் *

**1276.** குரையழல் மண்டிய கோடியர் மாடஞ்
சுரையொடு பீரஞ் சுமந்த—நிரைதிண்டேர்ப்
பல்லிசை வென்றிப் படைக்கடலான் சென்றிறுப்ப
நல்லிசை கொண்டடையார் நாடு.

(வெண்பா. 60)

**1277.** தாழார மார்பினன் றாமரைக்கண் சேர்ந்தனவால்
பாழாய்ப் பரிய விளிவதுகொல்—யாழாய்ப்
புடைத்தே ணிமிர்கண்ணிப் பூங்கட் புதல்வர்
நடைத்தே ரொலிகறங்கு நாடு.

( ,, 43)

---

**1272.** 2 புலந்தொறும்போர்; 12 றொன்னார். **1273.** இது 'குழிபல' (1274) என்பதன் பின். **1274.** தகடூர்மாலை. 2, 3 போலவெவ்; 4, 2 குற்ற, சுற்ற; 6, 4 படைதீர். **1275.** 2, 1-2 களிறுகலி மானத்; 4, 3 படையென, பகையென; 5, 1-2 ஆய்பகை வெம்மையி; 8, 3 கந்துசால். * பகைப் புலமழித்தல். **1276.** 3 கோடியூர்; 12 சென்றிருப்ப. **1277.** 7 விழுவதுகொல்

1278. கரிபரந் தெங்குங் கடுமுள்ளி பம்பி
நரிபரந்து நாற்றிசையுங் கூடி—எரிபரந்த
பைங்கண்மால் யானைப் பகையடுதோட் கோதையைச்
செங்கண் சிவப்பித்தார் நாடு.

(முத்தொள்.)

1279. வேரறுகை பம்பிச் சுரைபடர்ந்து வேளைபூத்
தூரறிய லாகா கிடந்தனவே—போரின்
முகையவிழ்தார்க் கோதை முசிறியார் கோமான்
நகையிலைவேல் காய்த்தினார் நாடு.

( ,, )

1280. இரியல் மகளி ரிலைஞெமலு ளீன்ற
வரியிளஞ் செங்காற் குழவி—அரையிரவின்
ஊமன்பா ராட்ட வுறங்கிற்றே செம்பியன்றன்
நாமம்பா ராட்டாதார் நாடு.

( ,, )

1281. வாகை வனமாலை சூடி யரசுறையும்
ஓகை யுயர்மாடத் துள்ளிருந்து—கூகை
படுபேய்க்குப் பாட்டயரும் பண்பிற்றே தென்னன்
விடுமாற்றங் கொள்ளாதார் நாடு.

( ,, )

1282. பறைநிறை கொல்யானைப் பஞ்சவர்க்குப் பாங்காய்த்
திறைமுறையி னுய்யாதார் தேயம்—முறைமுறையின்
ஆன்போ யரிவையர்போ யாடவர்போ யாயின்றே
ஈன்பே யுறையு மிடம்.

( ,, )

1283. தேஎர்பரந்தபுல மேஎர்பரவா
களிறுடியபுலம் நாஞ்சிலாடா
மத்துரறியமனை யின்னியமிமிழா
ஆங்கப், பண்டுநற் கறியுநர் செழுவளம் நினைப்பின்
நோகோ யானே நோதக வருமே
பெயல்மழை புரவின் றாகி வெய்துற்று
வலனின் றம்ம காலையது பண்பெனக்
கண்பனி மலிர்நிறை தாங்கிக் கைபுடையூ
மெலிவுடை நெஞ்சினர் சிறுமை கூரப்
பீரிவர் வேலிப் பாழ்மனை நெருஞ்சிக்
காடுறு கடுநெறி யாக மன்னிய
முருகுடன்று கறுத்த கலியழி மூதூர்
உரும்பில் கூற்றத் தன்னநின்
திருந்துதொழில் வயவர் சீறிய நாடே.

(பதிற்று. 26)

---

**1279.** 5 தோரறிய. **1280.** 3 ரிலைநொமலு; 9 ஊமன்று. **1281.** 6 யுறைமாடத்; 15 வீடு. **1282.** 1 பறைநின்ற; 3 பஞ்சவற்குப்; 11-12 யாட வர் போயின்றே; 12 யாயீன்ற, யாயிற்றே. **1283.** 6, 4 வெய்துற்ற; 9, 1 நெலிவுடை; 10, 2 மேவி; 11, 3 யாகு.

1284. வல்லா ராயினும் வல்லுந ராயினும்
புகழ்த லுற்றோர்க்கு மாயோ னன்ன
உரைசால் சிறப்பிற் புகழ்சால் மாற
நின்னொன்று கூறுவ துடையே னென்னெனில்
நீயே, பிறர்நாடு கொள்ளுங் காலை யவர்நாட்
டிறங்குகதிர்க் கழனிநின் னிளையருங் கவர்க
நனந்தலைப் பேரூ ரெரியுண நைகுக
மின்னுநிமிர்ந் தன்னநின் னொளிறிலங்கு நெடுவேல்
ஒன்னார்ச் செகுப்பினுஞ் செகுக்க வென்ன தூஉங்
கடிமரந் தடித லோம்புநின்
நெடுநல் யானைக்குக் கந்தாற் றாவே.

(புறம், 57)

## அதி. 115. திறை

1285. பல்யானை மன்னர் படுதிறை தந்துய்மின்
மல்ல னெடுமதில் வாங்குவிற் பூட்டுமின்
வள்ளிதழ் வாடாத வானோரும் வானவன்
வில்லெழுதி வாழ்வர் விசும்பு.

(முத்தொள்.)

1286. நேமி நிமிர்தோள் நிலவுதார்த் தென்னவன்
காமர் நெடுங்குடைக் காவல னாணையால்
ஏம மணிப்பூ ணிமையார் திருந்தடி
பூமி மிதியாப் பொருள்.

( „ )

1287. நிறைமதிபோல் யானைமேல் நீலத்தார் மாறன்
குடைதோன்ற ஞாலத் தரசர்—திறைகொள்
இறையோ வெனவந் திடம்பெறுத லின்றி
முறையோ வெனநின்றார் மொய்த்து.

( „ )

1288. நின்றன்மின் மன்னீர் நெருநற் றிறைகொணர்ந்து
முன்றந்த மன்னர் முடிதாக்க—இன்றுந்
திருந்தடி புண்ணாகிச் செவ்வி யிலனே
பெருந்தண் மரந்தையார் கோ.

( „ )

1289. தாட்டாழ் தடக்கைத் தனிமதி வெண்குடையான்
வாட்டானை வெள்ளம் வரவஞ்சி—மீட்டான்
மலையா மறமன்னன் மால்வரையே போலுங்
கொலையானை பாய்மாக் கொடுத்து.

(வெண்பா. 52)

---

**1284.** 8, 1 மின்னுநிமர்ந்; 11, 3 கந்தொற். **1286.** 2 நிமர்தோள்; 9 நீவ. **1288.** 1 நின்றம்மின்; 8 இன்று; 13-14 பெருந்தரை மாந்தையார்; 14 ணுறந்தையார். **1289.** 10 மறமன்னர்; 11 மால்வரை.

1290. கூடி முரசியம்பக் கொய்யுளைமா முன்னுகளப்
பாடி பெயர்த்திட்டான் பல்வேலான்—கோடி
நிதியந் திறையளந்தார் நேராரு நின்கீழ்
முதியமென் றூறி முரண்.

(வெண்பா. 45)

1291. உழுதுநன் கடன்கழித் துண்டு வேந்தரை
வழிமொழிந் தின்னணம் வாழூ மாந்தர்போல்
எழுதிய திறையிறுத் திருந்து வாழ்வதேல்
அழகிது பெரிதுநம் மரச வாழ்க்கையே.

(சூளா. சீய. 112)

1292. நாளினுந் திறைநுமக் குவப்பத் தந்துநா
டாளுது மன்றெனி லழிது மேலெம
தோளினுந் தொடுகழல் வலியி னுமிவ்
வாளினும் பயனெனோ மரீஇய மாந்தர்காள்.

( ,, 113)

1293. நீர்மிகிற் சிறையு மில்லை தீமிகின்
மன்னுயிர் நிழற்று நிழலு மில்லை
வளிமிகின் வலியு மில்லை யொளிமிக்
கவற்றோ ரன்ன சினப்போர் வழுதி
தண்டமிழ் பொதுவெனப் பொறாஅன் போரெதிர்ந்து
கொண்டி வேண்டுவ னாயிற் கொள்கெனக்
கொடுத்த மன்னர் நடுக்கற் றனரே
அளியரோ வளியரவ னளியிழந் தோரே
நுண்பல் சிதலை யரிதுமுயன் றெடுத்த
செம்புற் றீயல் போல
ஒருபகல் வாழ்க்கைக் குலம்வரு வோரே.

(புறம், 51)

1294. போர்க்குரைஇப் புகன்றுகழித்தவாள்
உடன்றவர்காப்புடை மதிலழித்தலின்
ஊனுற மூழ்கி யுருவிழந் தனவே
வேலே, குறும்படைந்த வரண்கடந்தவர்
நறுங்கள்ளி னாடுநைத்தலிற்
சுரைதழீஇய விருங்காழொடு
மடைகலங்கி நிலைதிரிந்தனவே
களிறே, எழூஉத்தாங்கிய கதவமலைத்தவர்
குழூஉக்களிற்றுக் குறும்புடைத்தலிற்

---

**1290**. 2 முரசிரங்கக்; 9 நெதியர். **1291**. இதுவும் அடுத்ததும் ஒரு பிரதியில் இல்லை; இவை 'போர்க்குரைஇ' (1294) என்பதன்பின். 15 மரசு. **1292**. 2 - 3 திறையினு முவப்பத்; 7 லொழிது. **1293**. சங்கத்துப்பிரதிகளி லொன்று இச்செய்யுளின் 3-ம் அடியோடு நின்று விடுகிறது; ஆனால் இதன் கணுள்ள சிதைந்த இதழ்களின் கடைசிச்செய்யுள் 'வான்றுறக்கம்' (1349) என்பது. 9, 4 றேன்ற; 11, 3 கலம்வரு.

பருஉப்பிணிய தொடிகழிந்தனவே
மாவே, பரந்தொருங்கு மலைந்தமறவர்
பொலம்பைந்தார் கெடப்பரிதலிற்
களனுழந் தசைஇய மறுக்குளம் பினவே
அவன்றானும், நிலந்திரைக்குங் கடற்றானைப்
பொலந்தும்பைக் கழற்பாண்டிற்
கணைபொருத துளைத்தோலன்னே
ஆயிடை, உடன்றோ ருய்தல் யாவது தடந்தாட்
பிணிக்கதிர் நெல்லின் செம்மன் மூதூர்
நுமக்குரித் தாகல் வேண்டிற் சென்றவற்
கிறுத்தல் வேண்டுந் திறையே மறுப்பின்
ஒல்வா னல்லன் வெல்போ ரானெனச்
சொல்லவுந் தேறீ ராயின் மெல்லியற்
கழற்கனி வகுத்த துணைச்சில் லோதிக்
குறுந்தொடி மகளிர் தோள்விடல்
இறும்பூ தன்றஃ தறிந்தா டுமினே.

(புறம், 97)

## அதி. 116. மகள் மறுத்தல்

1295. அளியர் கழல்வேந்த ரம்மா வரிவை
எளியளென் றெள்ளி யுரைப்பிற்—குளியாவோ
பண்போற் கிளவியிப் பல்வளையாள் வாண்முகத்த
கண்போற் பகழி கடிது.

(வெண்பா. 84)

1296. ஒள்வாள் மறவ ருருத்தெழுந் தும்பர்நாட்
கள்வார் நறுங்கோதை காரணமாக்—கொள்வான்
மருங்கெண்ணி வந்தார் மழகளிற்றின் கோடிக்
கருங்கண்ணி வெண்கட்டிற் கால்.

( ,, 94)

1297. ஏர்பரந்தவயலி னீர்பரந்தசெறுவில்
நெல்மலிந்தமனையிற் பொன்மலிந்தமறுகிற்
படுவண் டார்க்குங் காவிற் பஃறுளி
நெடுவே லாதன் போந்தை யன்ன
பெருஞ்சீ ருருங்கொண் டியளே கருஞ்சினை
வேம்பு மாரும் போந்தையு மூன்று
மலைந்த சென்னியர் குனிந்த வில்லர்
கொற்ற வேந்தர் வரினுந் தற்றக
வணங்கார்க் கீகுவ னல்லன் வண்டோட்டுப்

---

**1294.** 1, 1-2 போஓர்க்குரைஇப் புகன்றுகழித்த; 2, 1-2 வாஅள், உடன்றவர்காப்புடை மதிலழித்தலின்; 3, 1 ஊனிற; 8, 3 கதவுமலைத்தவர்; 9, 1 குரூஉக்களிற்றுக்; 9, 2 குறும்படர்த்தலின்; 11, 2 பரந்தொங்குவ; 17, 3 ருய்தலை; 23, 1 கழற்கணி; 24, 3 தோள்விடில். **1295.** 1 அளிய; 10 கிளவியப். **1296.** 9-10 மருங்கெண் ணமரா.

பிணங்குகதிர்க் கழனி நாப்ப ணேமுற்
றுணங்குகல னாழியிற் றோன்றும்
ஓரெயில் மன்ன னொருமட மகளே.

(புறம், 338)

1298. வேந்துகுறை யுறவுங் கொடாஅ னேந்துகோட்
டம்பூந் தொடலை யணித்தழை யல்குற்
செம்பொறிச் சிலம்பி னிளையோள் தந்தை
எழுவிட் டமைந்த திண்ணிலைக் கதவி
னரைமண் ணிஞ்சி நாட்கொடி நுடங்கப்
புலிக்கணத் தன்ன கடுங்கட் சுற்றமொடு
மாற்ற மாறான் மறலிய சினத்தன்
பூக்கோ ளெனவேஎய்க் கயம்புக் கனனே
விளங்கிழைப் பொலிந்த வேளா மெல்லியற்
சுணங்கணி வனமுலை யவளொடு நாளை
மணம்புகு வைக லாகுக வொன்றோ
ஆரம ருழக்கிய மறங்கிளர் முன்பி
னேரிலை யெஃக மறுத்த வுடம்பொடு
வாரா வுலகம் புகுத லொன்றெனப்
படைதொட் டனனே குரிசி லாயிடைக்
களிறுபொரக் கலங்கிய தண்கயம் போலப்
பெருங்கவி னிழப்பது கொல்லோ
மென்புல வைப்பினித் தண்பணை யூரே.

( ,, 341)

1299. நுதிவேல் கொண்டு நுதல்வெயர் துடையாக்
கடிய கூறும் வேந்தே தந்தையும்
நெடிய வல்லது பணிந்துமொழி யலனே
ஈதிவர் படிவ மாயின் வையெயிற்
றரிமதர் மழைக்க ணம்மா வரிவை
மரம்படு சிறுதீப் போல
அணங்கா யினடான் பிறந்த வூர்க்கே.

( ,, 349)

## அதி. 117. வஞ்சினம்

1300. இன்று பகலோ னிறவாமுன் னேனோரை
வென்றுகளங் கொள்ளாது வேனுயர்ப்பின்—என்றும்
அரணழியப் பாயு மடையார்முன் னிற்பென்
முரணொழிய முன்முன் மொழிந்து.

(வெண்பா. 69)

---

**1297.** 3, 4 பஃஃளி; 4, 2 லாந்தன்; 7, 1 மலைத்த; 7, 3 அணித்த; 11, 1-2 றுணங்க ருழியிற், றுணங்காநாழியிற். **1298.** 2, 3 யணித்தலை; 3, 4 தாதை; 8, 2-3 ளேஎ யகம்புக்; 9, 1 வயங்கிழைப்; 14, 3 புக்கதி. **1299.** தகடேர்யாத்திரை. 4, 4 நகையெயிற். **1300.** 3-4 னிறவா முகனேனரை; 6 கொள்ளாத; 13 முரணொழியின், முரணழிய.

1301. செவ்விக் கடாக்களிற்றின் செம்மத் தகத்தெறிந்த
கௌவை நெடுவேல் கொணரேனேல்—எவ்வை
கடிபட்ட வில்லகத்துக் கைபார்த் திருப்பன்
விடிவளவிற் சென்று விரைந்து.

(தகடூர்.)

1302. இளையருட் பெரியவன் சொல்லு மெம்மிறைக்
குளைவன செய்தவ ருயிரை மற்றவர்
கிளையொடு கீண்டர சாண்டு மன்றெனின்
வளையொடு தலைமுடித் திருந்து வாழ்துமே.

(சூளா. அரசி. 131)

1303. தன்பால் மனையா ளயலான்றலைக் கண்டு பின்னும்
இன்பா லடிசிற் கிவர்கின்றகைப் பேடி போலாம்
நன்பாற் பசுவே துறந்தார்பெண்டிர் பாலர் பார்ப்பார்
என்பாரை யோம்பே னெனில்யானவ னாக வென்றான்.

(சிந்தா. 443)

1304. கலிமா னோயே கலிமா னோயே
நாகத் தன்ன நன்னெடுந் தடக்கைக்
காய்சின யானைக் கலிமா னோயே
வெள்ளத் தானைநும் வேந்தொப் பான்முன்
உள்ளழித்துப் புகேஎ னாயி னுள்ள
திரப்போ னின்மை கண்டும்
கரப்போன் சிறுமை யானுறு கவ்வே.

(தகடூர்.)

1305. நகுதக் கன்றே நாடுமீக் கூறுநர்
இளைய னிவனென வுளையக் கூறிப்
படுமணி யிரட்டும் பாவடிப் பணைத்தாள்
நெடுநல் யானையுந் தேரு மாவும்
படையமை மறவரு முடையம் யாமென்
றுறுதுப் பஞ்சா துடல்சினஞ் செருக்கிச்
சிறுசொற் சொல்லிய சினங்கெழு வேந்தரை
அருஞ்சமந் ததையத் தாக்கி முரசமொ
டொருங்ககப் படேஎ னாயிற் பொருந்திய
என்னிழல் வாழ்நர் சென்னிழற் காணாது
கொடியனெம் மிறையெனக் கண்ணீர் பரப்பிக்
குடிபழி தூற்றுங் கோலே னாகுக
ஓங்கிய சிறப்பி னுயர்ந்த கேள்வி
மாங்குடி மருதன் றலைவ னாக
உலகமொடு நிலைஇய பலர்புகழ் சிறப்பிற்
புலவர் பாடாது வரைகவென் னிலவரை
புரப்போர் புன்கண் கூர
இரப்போர்க் கீயா வின்மையா னுறவே. (புறம், 72)

---

**1301.** 2 கடைக்களிற்றின்; 4 தகத்தெறிந்து. **1302.** 10 கண்டர; 11 சாள்து; 12 மின்றெனின். **1305.** மதுரைச் சங்கத்துப் பிரதி யொன்று இதன் 8-வது அடியோடு முடிந்துவிடுகிறது. 4, 2 யானைத்; 15, 2 நிலைஇப்.

1306. மெல்ல வந்து நல்லடி பொருந்தி
ஈயென விரக்குவ ராயிற் சீருடை
முரசுகெழு தாயத் தரசோ தஞ்சம்
இன்னுயி ராயினுங் கொடுக்குவ னிந்நிலத்
தாற்ற லுடையோ ராற்றல் போற்றாதென்
னுள்ள மெள்ளிய மடவோன் றெள்ளிதிற்
றுஞ்சுபுலி யிடறிய சிதடன் போல
உய்ந்தனன் பெயர்தலோ வரிதே மைந்துடைக்
கழைதின் யானைக் காலகப் பட்ட
வன்றிணி நீண்முளை போலச் சென்றவண்
வருந்த வொற்றே னாயிற் பொருந்திய
தீதில் நெஞ்சத்துக் காதல் கொள்ளாப்
பல்லிருங் கூந்தல் மகளிர்
ஒல்லா முயக்கிடைக் குழைகவென் றாரே.

(புறம், 73)

## அதி. 118. படைச்செருக்கு

1307. உறுசுடர் வாளோ டொருகால் விலங்கிற்
சிறுசுடர்முற் பேரிருளாங் கண்டாய்—எறிசுடர்வேற்
றேங்குலாம் பூந்தெரியற் றேர்வேந்த நின்னோடு
பாங்கலா மன்னர் படை.

(வெண்பா. 134)

1308. துன்னருந் துப்பிற் றொடுகழலார் சூழ்ந்திருப்பத்
தன்னமரு மொள்வாளென் கைத்தந்தான்—மன்னற்கு
மண்ணகமோ வைகின்று மாலை நெடுங்குடைக்கீழ்
விண்ணகமும் வேண்டுங்கொல் வேந்து.

( ,, 65)

1309. இன்னா ரெனவேண்டா வென்னோ டெதிர்சீறி
முன்னர் வருக முரணகலும்—மன்னர்
பருந்தார் படையமருட் பல்லார் புகழ
விருந்தா யடைகுறுவார் விண்.

( ,, 47)

1310. கான்படு தீயிற் கலவார்தன் மேல்வரினுந்
தான்படை தீண்டாத் தறுகண்மை—வான்படர்தல்
கண்ணியபி னன்றிக் கறுத்தார் மறந்தொலைதல்
எண்ணியபி னோக்குமோ வெஃகு.

( ,, 55)

1311. நல்வா னவர்காண நம்மை யமரகத்து
வெல்வான் விரும்பிய வேல்வேந்தைக்—கொல்வான்
உனக்கே யுரிமை யுளதெனினு மிப்போ
ரெனக்கே தருவா னிறை.

(பாரதம்)

---

**1308.** 3 றொழுகழலார்; 5-6 தன்னரு ளொள்வாளென். **1309.** 8 முன்னர்.

1312. தாரேற்ற நீள்மார்பிற் றன்னிறைவ னேக்கியக்காற்
போரேற்று மென்பார் பொதுவாகல் வேண்டுமோ
யார்மேற்றுக் கொள்ளினுங் கோடுக காணுங்கா
லூர்மேற் றமணர்க்கு மோடு.

(பழமொழி, 231)

1313. வரைபுரை வேழத்தை வன்கையென் றஞ்சிப்
புரையுடை மன்னருள் புக்காங் கவையுள்
நிரையுரைத்துப் போகாதோ னாற்றத் துணிதல்
திரையவித் தாடார் கடல்.

( ,, 317)

1314. கூற்றுறழ் முன்பி னிறைதலை வைத்தபின்
ஆற்றி யவனை யடுத லடாக் காலை
ஏற்றுக் களத்தே விளிதல் விளியாக்கால்
மாற்ற மளவுங் கொடுப்பவோ சான்றோர்தந்
தோற்றமுந் தேசு மிழந்து.

(தகடூர்.)

1315. தற்கொள் பெருவிறல் வேந்துவப்பத் தானவற்
கொற்கத் துதவின ருகுமாற் பிற்[பிற்]
பலரேத்துஞ் செம்ம லுடைத்தாற் பலர்தொழ
வானுறை வாழ்க்கை யியையுமா லன்னதோர்
மேன்மை யிழப்பப் பழிவருப செய்பவோ
தாமேயும் போகு முயிர்க்கு.

( ,, )

1316. நகையுள்ளு நல்லவை யெய்தார் [பகை] நலிய
வேற்றுக் களத்தி லொருவர்த மாருகச்
சென்று லொருவர்மேற்
புண்ணும் படுக்கலான் றன்படான் போந்தாரக்
கண்ணும் படுங்கொல் கவன்று.

( ,, )

1317. வேற்றானை வெள்ள நெரிதர யாற்றுக்
கடும்புனற் கற்சிறை போல நடுங்காது
நிற்பவற் கல்லா லெளியவோ பொற்பார்
முறியிலைக் கண்ணி முழவுத்தோள் மன்னர்
அறியுந ரென்னுஞ் செருக்கு.

( ,, )

1318. பிறந்த பொழுதேயும் பெய்தண்டார் மன்னர்க்
குடம்பு கொடுத்தாரே மூத்தார்—உடம்பொடு
முற்றுழிக் கண்ணு மிளையவரே தங்கோமாற்
குற்றுழிக் காவா தவர்.

( ,, )

1319. பரவைவேற் றானைப் பகலஞ்சு வேனு
இரவே யெறியென்று யென்னை—விரைவிரைந்து
வேந்தனீ யாயினு யன்றிப் புகுவதோ
போந்தென்னைச் சொல்லிய நா.

( ,, )

---

**1316**. 8 மாறகச். **1317**. 3 செறிதர. **1318**. 6 கொடுத்தாகோ; 9 மூத்துழி; 15 ழிறிகவா. **1319**. 6 ரெறியென்று, றெறியென்று; 10 யாயிற்றே.

1320. வான்வணக்கி யன்ன வலிதரு நீள்தடக்கை
யானைக்கீ தென்கையி லெஃகமால்—தானும்
விலங்கா லொருகைத்தால் வெல்கைநன் றென்னும்
நலங்காணே ணுணுத் தரும்.

(தகடூர்.)

1321. காலாளாய்க் காலா ளெறியான் களிற்றெருத்தின்
மேலா ளெறியான் மிகநாணக்—காளை
கருத்தினதே யென்று களிறெறியா னம்ம
தருக்கினனே சான்றோர் மகன்.

( „ )

## அதி. 119. எயில் கோடல்

1322. உழிஞை முடிபுனைந் தொன்னுப்போர் மன்னர்
விழுமதில் வெல்களிறு பாயக்—கழிமகிழ்
வெய்தாரு மெய்தி யிசைநுவலுஞ் சீர்த்தியனே
கொய்தார மார்பினெங் கோ.

(வெண்பா. 95)

1323. கற்பொறியும் பாம்புங் கனலுங் கடிகுரங்கும்
விற்பொறியும் வேலும் விலங்கவும்—பொற்புடைய
பாணி நடைப்புரவிப் பல்களிற்றூர் சார்த்தினார்
ஏணி பலவு மெயில்.

( „ 112)

1324. கதிரோடை வெல்களிறு பாயக் கலங்கி
யுதிரா மதிலு முளகொல்—அதிருமால்
பூக்கள் மலிதார்ப் புகழ்வெய்யோன் கோயிலுள்
மாக்கண் முரச மழை.

( „ 98)

1325. பகலெறிப்ப தென்கொலோ பான்மதியென் றஞ்சி
இகலரணத் துள்ளவ ரெல்லாம்—அகலிய
விண்டஞ்ச மென்ன விரிந்த குடைநாட்கோள்
கண்டஞ்சிச் சும்பிளித்தார் கண்.

(பெரும்பொருள்.)

1326. தொழுது விழாக்குறைக்குத் தொல்கடவுட் பேணி
யழுது விழாக்கொள்வ ரன்றே—முழுதளிப்போன்
வாணாட்கோள் கேட்ட மடந்தையர் தம்மகிழ்நர்
நீணாட்கோ ளென்று நினைத்து.

( „ )

1327. இற்றைப் பகலு ளெயிலகம் புக்கன்றிப்
பொற்றேரான் போனகங் கைக்கொளான்—எற்றாங்கொல்
ஆறாத வெம்பசித் தீயா லுயிர்பருகி
மாறா மறலி வயிறு.

( „ )

---

**1322.** 2-3 முடிபுனைந்த தொன்னார்போர். **1323.** இதுவும் அடுத்ததும் 'தொழுதுவிழாக்' (1326) என்பதன் பின். 11-12 பல்களிற் றூர்வேந்தர்; 15 மியல். **1324.** 1 கதிருடைய. **1326.** 2 விழாக்குழைக்குந்; 10 காட்ட, கொட்ட.

1328. தாய்வாங்கு கின்ற மகனைத் தனக்கென்று
பேய்வாங்கி யன்னதோர் பெற்றித்தே—வாய்வாங்கு
வெல்படை வேந்தன் விரும்பாதா ரூர்முற்றிக்
கொல்படை வீட்டுங் குறிப்பு.

(பெரும்பொருள்.)

1329. வெஞ்சின வேந்த னெயில்கோள் விரும்பியக்கால்
அஞ்சி யொதுங்காதார் யாவரவர்—மஞ்சுசூழ்
வான்றோய் புரிசைப் பொறியு மடங்கினவால்
ஆன்றோ ரடக்கம்போ லாங்கு.

( ,, )

1330. பொருவரு மூதூரிற் போர்வேட் டொருவர்க்
கொருவ ருடன்றெழுந்தா ராகில்—இருவரும்
மண்ணொடு சார்த்தி மதில்சார்த் தியவேணி
விண்ணொடு சார்த்தி விடும்.

( ,, )

1331. செருவெங் கதிர்வேற் சினவெம்போர் மாறன்
உருமி னிடிமுரா சார்ப்ப—உருவுறழ்ந்
தாமா வுகளு மணிவரையி னப்புறம்போய்
வேமால் வயிறெரிய வேந்து.

(முத்தொள்.)

1332. மாமுது தாதை யேவலி னூர்துறந்து
கானுறை வாழ்க்கையிற் கலந்த விராமன்
மாஅ விரலை வேட்டம் போகித்
தலைமகட் பிரிந்த தனிமையன் றனாது
சுற்றமுஞ் சேணிடை யதுவே முற்றியது
நஞ்சுகறை படுத்த புன்மிடற் றிறைவ
னுலகுபொதி யுருவமொடு தொகைஇத் தலைநாள்
வெண்கோட்டுக் குன்ற மெடுத்த மீளி
வன்றோ ளாண்டகை யூரே யன்றே
சொன்முறை மறந்தனம் வாழி
வில்லு முண்டவற் கந்நா ளாங்கே
மாதர்க் கெண்டை வரிப்புறத் தோற்றமும்
நீலக் குவளை நிறனும் பாழ்பட
இலங்கை யகழி மூன்று மாக்கியர்
கருங்கா னெடுமழைக் கண்ணும் விளிம்பழிந்து
பெருநீ ருகுத்தன மாதோ வதுவக்
குரங்குதொழி லாண்ட விராமன்
அலங்குதட றொள்வா ள[க]ன்ற ஞான்றே.

(ஆசிரிய.)

1333. இருசுடர் வழங்காப் பெருமூ திலங்கை
நெடுந்தோ ளிராமன் கடந்த ஞான்றை
எண்கிடை மிடைந்த பைங்கட் சேனையிற்

---

**1330.** 6 ருடனெழுந்தா. **1331.** இது 'இற்றைப் பகலு' (1327) என்பதன் முன். **1332.** 6, 3-4 புன்மிடற்று விரண; 7, 3 கொதையித். 9, 4 யனனிற.

பச்சை போர்த்த பல்புறத் தண்ணடை
எச்சார் மருங்கினு மெயிற்புறத் திறுத்தலிற்
கடல்சூ ழரணம் போன்ற
உடல்சின வேந்தன் முற்றிய வூரே.

(ஆசிரிய.)

## அதி. 120. எயில்காத்தல்

1334. ஆடரவம் பூண்டா னழலுண்மார் சீறிய
கூடரணங் காப்போர் குழாம்புரையச்—சூடினார்
உச்சி மதிதவழு மோங்கு மதில்காப்பான்
நொச்சி நுதிவே லவர்.

(வெண்பா. 86)

1335. அகத்தன வார்கழல் நோன்றா ளரணின்
புறத்தன போரெழிற் றிண்டோள்—உறத்தழீஇத்
தோட்குரிமை பெற்ற துணைவளையார் பாராட்ட
வாட்குரிசில் வானுலகி னான்.

( ,, 92)

1336. குன்றுயர் திங்கள்போற் கொற்றக் குடையொன்று
நின்றுயர் வாயிற் புறநிவப்ப—ஒன்றார்
விளங்குருவப் பல்குடைகள் வெண்மீன்போற் றோன்றித்
துளங்கினவே தோற்றந் தொலைந்து.

( பெரும்பொருள்.)

1337. முற்றரண மென்னு முகிற்குருமுப் போற்றோன்றக்
கொற்றவன் கொற்றவாள் நாட்கொண்டான்—புற்றிழந்த
நாகக் குழாம்போ னடுங்கின வென்னாங்கொல்
வேகக் குழாக்களிற்று வேந்து.

( ,, )

1338. பொருசின மாறாப் புலிப்போத் துறையும்
அருவரை கண்டார்போ லஞ்சி—ஒருவருஞ்
செல்லா மதிலகத்து வீற்றிருந்தான் தேர்வேந்தன்
எல்லார்க்கு மெல்லாங் கொடுத்து.

( ,, )

1339. மழுவான் மிளைபோய் மதிலா னகழ்தூர்ந்
தெழுவாளோ னேற்றுண்ட தெல்லாம்—இழுமென
மட்டவிழ் கண்ணி மறவேந்தன் சீற்றத்தீ
விட்டெரிய விட்ட வகை.

( ,, )

1340. தாக்கற்குப் பேருந் தகர்போல் மதிலகத்
தூக்க முடையா ரொதுங்கியுங்—கார்க்கீண்
டிடிபுறப் பட்டாங் கெதிரேற்றார் மாற்றார்
அடிபுறத் தீடு மரிது.

( ” )

---

**1334.** 3-4 அழலுண்ண மாச்சிரியக். **1335.** 1 அறத்தன; 6 பேரெழிற். **1336--1340.** இவை அரசாங்கத் தொன்னூல் நிலயத்துக் கடிதப் பிரதியிலே தகரேர்யாத்திரைச் செய்யுட்களாகக் கொள்ளும்படி யுள்ளன. **1337.** 8 புற்றழிந்த. **1339.** 1 வழுவான்; 5-6 தெழுவாளொன் றற்றுண்ட. **1340.** 8 கார்த்தீண்.

1341. பல்சான் றீரே பல்சான் றீரே
வீழ்ந்த புரிசைச் சேர்ந்த ஞாயிற்
கணையிற் றார்ந்த கன்றுமேய் கிடங்கின்
மல்லன் மூதூர்ப் பல்சான் றீரே
பலநாள் வருந்தி யிளையரு முதியரும்
நன்னுதல் மகளிரு மின்னுங்கண் டுவப்ப
யா[ம]ங் கொள்பரு மொழிய மேனாட்
கொல்படை மொய்த்த குன்றுயர் விழுப்புண்
நெய்யிடைப் பஞ்சு சேர்த்திப் பையெனக்
கருங்குரல் நொச்சி மிலைந்த
திருந்துவேல் விடலை காப்பமைந் தனனே.

(தகடூர்.)

1342. இவனே, பொறிவரி யன்ன பொங்குளை வயமான்
மேலோன் யாரென வினவிற் றேலா
உரனுடை யுள்ளத் தொன்னா ருட்குஞ்
சுரையமை நெடுவேற் சுடர்ப்பூ ணோனே
அவனே யெம்மிறை யீதவன் மாவே
கறுவுகொள் நெஞ்சங் கதுவவந் தனனே
யாவருங், குறுக லோம்புமின் குறைநாண் மறவீர்
நெருந லெல்லி நரைவரு கடுந்திறற்
பருமத யானை பதைப்ப நூறி
யடுகளத் தொழிந்தோன் றம்பி தொடுகழல்
நொச்சித் தெரியல் நெடுந்தகை
அச்ச மறியா னாரணங் கினனே.

( ,, )

1343. மேலது வானத்து மூவா நகரும்
கீழது நாகர் நாடும் புடையன
திசைகாப் பாளர் தேயக் குறும்புங்
கொள்ளை சாற்றிக் கவர்ந்துமுன் றந்த
பல்வேறு விழுநெதி யெல்லா மவ்வழிக்
கண்ணுதல் வானவன் காதலி னிருந்த
குன்றேந்து தடக்கை யனைத்துந் தொழிலுறத்
தோலாத் துப்பிற் றுணிழல் வாழ்க்கை
வலம்படு மள்ளர்க்கு வீசி யிலங்கையில்
வாடா நொச்சி வகுத்தனன்
மாலை வெண்குடை யரக்கர் கோவே.

(ஆசிரிய.)

## அதி. 121. அமர்

1344. கார்கருதி நின்றதிருங் கௌவை விழுப்பணையான்
சோர்குருதி சூழா நிலனனைப்பப்—போர்கருதித்
துப்புடைத் தும்பை மிலைந்தான் துகளறுசீர்
வெப்புடைத் தானையெம் வேந்து. (வெண்பா. 127)

---

1342. 1, 2 கவரி. 1343. 9, 1 வளம்படு. 1344. 6 சூழார்.

1345. வாளை பிறழுங் கயங்கடுப்ப வந்தடையார்
ஆளமர் வென்றி யடுகளத்துத்—தோள்பெயராக்
காய்ந்தடு துப்பிற் கழல்மறவ ராடினார்
வேந்தொடு வெள்வாள் விதிர்த்து.

(வெண்பா. 147)

1346. கலிவர லூழியின் வாழ்க்கை கடிந்து
மலிபுகழ் வேண்டு மனத்தர்—ஒலிகடல்சூழ்
மண்ணகலம் வேண்டாது வான்வேண்டி யீண்டினார்
புண்ணியமாம் போர்க்களத்துப் போந்து.

(பாரதம்)

1347. இடியா னிடிமுகிலு மேறண்ணு மென்னும்
படியாற் பகடொன்று மீட்டு—வடிவேல்
எறிந்தார்த்தார் மன்ன ரிமையாத கண்கண்
டறிந்தார்த்தார் வானோரு மாங்கு.

(பெரும்பொருள்.)

1348. ஆளுங் குரிசி லுவகைக் களவென்னாங்
கேளின்றிக் கொன்றாரே கேளாகி—வாள்வீசி
ஆடினா ரார்த்தா ரடிதோய்ந்த மண்வாங்கிச்
சூடினார் வீழ்ந்தானைச் சூழ்ந்து.

( ,, )

1349. வான்றுறக்கம் வேட்டெழுந்தார் வாண்மறவ ரென்பதற்குச்
சான்றுரைப்ப போன்றன தங்குறை—மான்றேர்மேல்
வேந்து தலைபணிப்ப விட்ட வுயிர்விடாப்
பாய்ந்தன மேன்மேற் பல.

( ,, )

1350. முடிமன ரெழுதரு பருதி மொய்களி
றுடைதிரை மரக்கல மொளிறு வாட்படை
அடுதிற லெறிசுறா வாகக் காய்ந்தன
கடலிரண் டெழுந்ததோர் கால மொத்ததே.

(சிந்தா. 2223)

1351. நிணம்பிறங் ககலமுந் தோளும் நெற்றியும்
அணங்கருஞ் சரங்களி னழுத்தி யையென
மணங்கமழ் வருபுனல் மறலு மாந்தரிற்
பிணங்கமர் மலைந்தனர் பெற்றி யின்னதே.

( ,, 2225)

1352. கடலிரண் டுளவென வெண்ணி னக்கடல்
இடைநில முடையன வெண்ணு மொப்பில
அடலரும் படையவை யிரண்டு மவ்வழி
உடலரும் படையவை யிரண்டு மொக்குமே.

(சூளா. அரசி. 138)

---

**1345.** 11-12 கழன்மடவா ராட்டினார். **1346.** 9 மண்ணகடம். **1347.** 3 மெவ்வண்ணு; 11 ரிமையாதார்; 12 கண்கொண். **1348.** இதன் தனிச்சீர் 'வாழுங்' எனக் கொண்டு பின்னர் 'வான்றுறக்கம்' (1349) என்பதன்கணுள்ள 'தார்வாண்' என்றதுமுதற் சேர்த்தெழுதியிருக்கிறது. 5 கோளின்றிக்; 7 கோளாகி. **1349.** 4 ரென்பறைக்குச்; 9 வந்து; 12-13 வுயிர்விட்டபைந்துகள். **1350.** 14 டெதிர்ந்ததோர்; 16 மொத்தவே. **1351.** 5 அணங்குரு.

1353. தூவயிலின் வீசுமொரு வன்னது விலக்குங்
காவலொடு மீளுமொரு வன்னது கருத்தின்
ஆவதிது வன்றியய னின்றவர்கள் காணும்
பாவனைய ரல்லர்பல பாடியினி யென்னே.

(சூளா. அரசி. 161)

1354. குழாக்களிற் றரசர் குறித்தெழு கொலைக்களம்
விழாக்களம் போல மெய்ம்மலி யுவகை
ஆண்மை யுள்ளங் கேண்மையிற் றுரத்தலின்
அழுந்துபடப் புல்லி விழுந்துகளம் படுநரும்
நீர்ப்பெயற் பிறந்த மொக்குள் போலத்
தாக்கிய விசையிற் றிரிந்துநிலம் படுநரும்
தகருந் தகருந் தாக்கிய தாக்கின்
முகமுஞ் சிதர முட்டு வோரும்
முட்டியின் முறைமுறை குத்து வோருங்
கட்டிய கையொடு காறட் டுநருஞ்
சுட்டிய கையிற் றொட்டுநிற் போருஞ்
சுட்டிய பெயரை யிட்டிழைப் போருஞ்
சக்கரம் போலச் சங்குவிட் டெறிநருஞ்
சிலைப்புடை முரசிற் றலைப்புடைக் குநரும்
மல்லிற் பிடித்தும் வல்லிய னெற்றியும்
ஊக்கியு முரப்பியும் நோக்கியும் நுவன்றும்
போக்கியும் புழுங்கியும் நாக்கினிடை கவ்வியும்
எயிறுடன் றிருத்தியுங் கயிறுபல வீசியும்
இனைய செய்தியின் முனைமுயங் குநரும்
பிறப்பும் பெருமையுஞ் சிறப்புஞ் செய்கையும்
அரசறி பெயரு முரைசெய லாண்மையும்
உடையோ ராகிய படைகோண் மாக்கள்
சென்றுபுகு முலக மொன்றே யாகலின்
ஒன்றுபடு மனத்தொடு கொன்றுகொன் றுவப்பச்
செஞ்சோற்று விலையுந் தீர்ந்துதம் மனைவியர்
தம்பிணந் தழீஇ நொந்துகலுழ்ந் திரங்கவும்
புதுவது புனைந்த மகளிர்க்கு
வதுவை சூட்டிய வான்படர்ந் தனரே.

( ? )

1355. அரிநறுங் கள்ளி னுண்மகிழ் செருக்கி
நெருநு வெல்லைநம் பெருமகண் முன்ன[ர்]த்
திருமலி முற்றத் தோனே யின்றே
கச்சை நின்ற கதமெரி நோன்றாட்
புட்டி லார்க்கும் புனைதார் மாவொடு
செருக்கிச் செய்த சிறுகட் பெரும்புண்
முருக்கிதழ் மடந்தையர் முயங்கிய மார்பே

**1353.** 1 தாவயிலின். **1354.** 7, 3 தகத்; 7, 3-4 தாக்கத் தாக்கிய; 11, 1 கட்டிய; 25, 4 மனையர்; 28, 4 தனனே. **1355.** 1, 4 நெருக்கி; 3, 3 தோளே; 5, 3 புனைந்தார்; 6, 2 செய்து; 9, 1 நீர்மலிபு.

ஆர்கெழு சுறுமீ னடங்குங் கிடங்கு
நீர்மலி பழனத் [த]துவே யிவன்றலை
ஒளிறுவேல் விடலை யுவப்பக்
களிறுகெழு வேந்தன் பாசறை யதுவே. ( ? )

1356. ஆட்புலங் கொன்று வாட்[கு]ரல் போக்கி
எஃகம் வித்திய வைக லுழவன்
அழித்துப்படை பாய்தலி னணிவளை யிழந்து
மலைப்புற மலைந்த தோளிணை பலகையொடு
போர்க்களத் தொழிந்த புகழோ னீர்மை
கயமூசு கயலிற் றோன்றியவ
னிற[மூ]ழ்கி நின்ற வெஃகமிகப் பலவே. ( ? )

1357. உண்மையு முறுதியு முயக்கொளல் பொருளென
எண்ணிநீ மொழித லெவன்கொலோ விவன்கைப்
பண்ணமை கூர்ம்படை படவுயி ரிழந்தோர்
எண்ணிலர் நனிமிக் கனரே நமரே
இன்று, வேழ[க்]கோடு[மடு]த்துளங் கிழிப்பப்
பேழைப் பாம்பின் வரிக்குடர் துயல்வரத்
தம்மிறைக் கொத்த செம்மலொடு
செருநவி லாளன் சேர்ந்தன னிலனே. ( ? )

1358. மூதூர் வாயிற் பனிக்கய மண்ணி
மன்ற வேம்பி னொண்குழை மிலைந்து
தெண்கிணை முன்னர்க் களிற்றி னியலி
வெம்போர்ச் செழியனும் வந்தன னெதிர்ந்த
வம்ப மள்ளரோ பலரே
எஞ்சுவர் கொல்லோ பகறவச் சிறிதே.

(புறம், 79)

## அதி. 122. தானைமறம்

1359. கடுங்கண் மறவன் கனல்விழியாச் சீறி
நெடுங்கைப் பிணத்திடையே நின்றான்—நடுங்கமருள்
ஆள்வெள்ளம் போகவும் போகான்கை வேலூன்றி
வாள்வெள்ளந் தன்மேல் வர.

(வெண்பா. 139)

1360. மொய்யகத்து மன்னர் முரணினி யென்னுங்கொல்
கையகத்துக் கொண்டான் கழல்விடலை—வெய்ய
விடுசுடர் சிந்தி விரையகலம் போழ்ந்த
படுசுட ரெஃகம் பறித்து.

( ,, 142)

---

**1356**. 1, 2 கொண்டு; 1, 3 வாடரல்; 3, 2 யாய்தலி; 4, 3 தோழனைப்; 7, 1 னிறழிக; **1357**. 4, 1 எண்ணலர்; 4, 4 நமரென; 5, 1-5 இன்னும் வெழ கொடுத்துளங் கழியப்; 8, 1 நெருநவி. **1358**. 3, 4 னிகலி; 4, 2-3 செழிய னுவந்தன. **1359**. 3 கனல்விழியாற்; 11 போந்தான்கை. **1360**. 3 முரணனி.

1361. கான்படு தீயிற் கலவார்தன் மேல்வரினுந்
தான்படை தீண்டாத் தறுகண்ணன்—வான்படர்தல்
கண்ணியபி னன்றிக் கறுத்தார் மறந்தொலைதல்
எண்ணியபின் னோக்குமோ வெஃகு.

(வெண்பா. 55)

1362. வெய்யோ னெழாமுன்னம் வீங்கிராக் கையகலச்
செய்யோ னொளிவழங்குஞ் செம்மற்றே—கையகன்று
போர்தாங்கு மன்னன்முன் புக்குப் புகழ்வெய்யோன்
தார்தாங்கி நின்ற தகை.

(பெரும்பொருள்.)

1363. களம்புக லோம்புமின் றெவ்விர் போரெதிர்ந்
தெம்முளு முளனொரு பொருநன் வைகல்
எண்டேர் செய்யுந் தச்சன்
திங்கள் வலித்த காலன் னோனே.

(புறம், 87)

1364. நறுவிரை துறந்த நரைவெண் கூந்தல்
இரங்குகா ழன்ன திரங்குகண் வறுமுலைச்
செம்முது பெண்டின் காதலஞ் சிறாஅன்
மடப்பா லாய்மகள் வள்ளுகிர்த் தெறித்த
குடப்பாற் சில்லுறை போலப்
படைக்குநோ யெல்லாந் தானா யினனே.

( ,, 276)

1365. வருகதில் வல்லே வருகதில் வல்லென
வேந்துவிடு விழுத்தூ தாங்காங் கிசைப்ப
நூலரி மாலை சூடிக் காதலிற்
றமியன் வந்த மூதி லாளன்
அருஞ்சமந் தாங்கி முன்னின் றெறிந்த
ஒருகை யிரும்பிணத் தெயிறு மிறையாகத்
திரிந்த வாய்வா டிருந்தத்
தனக்கிரிந் தானைப் பெயர்புற நகுமே.

( ,, 284)

1366. கோட்டங் கண்ணியுங் கொடுந்திரை யாடையும்
வேட்டது சொல்லி வேந்தனைக் கொடுத்தலும்
ஒத்தன்று மாதோ விவற்கே தெற்றிய
திணிநிலை யலறக் கூழ்வை போழ்ந்துதன்
வடிமா ணெஃகங் கடிமுகத் தேந்தி
ஓம்புமி னோம்புமி னிவணென வோம்பாது
தொடர்கோள் யானையிற் குடர்கால் தட்பக்
கன்றமர் கறவை மான
முன்சமத் தொழிந்ததன் றோழற்கு வருமே.

( ,, 275)

---

**1361.** இது முன்னும் (1310) வந்துளது. 3 கலவார்தம். **1362.** இதன்பின் 'கார்த்தரும்' (1369). 15 கடை. **1364.** 6, 1-2 படைக்குநேரெவ்வீர். **1365.** 5, 1 வருஞ்சமம்.

1367. நிறப்புட் கொல்கா யானை மேலோன்
குறும்பர்க் கெறியு மேவற் றண்ணுமை
நாணுடை மாக்கட் கிரங்கு மாயின்
எம்மினும் பேரெழி லிழந்த வினையெனப்
பிறர்மனை புகுவள் கொல்லோ
அளியள் தானே பூவிலைப் பெண்டே.

(புறம், 293)

1368. இருபாற் சேனையும் நனிமருண்டு நோக்க
முடுகியற் பெருவிசை யுரவுக்கடுங் கொட்பின்
எண்டிசை மருங்கினு மெண்ணிறைந்து தோன்றினும்
ஒருதனி யனுமன் கையகன்று பரப்பிய
வன்மரந் துணிபட வேறுபல நோன்படை
வழங்கி யகம்பன்றோள் படையாக வோச்சி
ஆங்க, அனும னங்கையி னழுத்தலிற் றனது
வன்றலை யுடல்புக்குக் குளிப்ப முகங்கரிந்
துயிர்போகு செந்நெறி பெருமையிற்
பொருகளத்து நின்றன நெடுஞ்சேட் பொழுதே.

(ஆசிரிய.)

1369. கார்த்தரும் புல்லணற் கண்ணஞ்சாக் காளைதன்
தார்ப்பற்றி யேர்தருந் தோணோக்கித்—தார்ப்பின்னை
நாட்பினுள் யானைக் கணநோக்கி யானைப்பின்
தேர்க்குழாம் நோக்கித்தன் மாநோக்கிக்—கூர்த்த
கணைவரவு நோக்கித்தன் வேணோக்கிப் பின்னைக்
கிணைவனை நோக்கி நகும்.

(தகடூர்.)

1370. இகழ்த லோம்புமின் புகழ்சான் [ம]றவர்
கண்ணிமைப் பளவிற் கணைசெல் கடுவிசைப்
பண்ணமை புரவிப் பண்புபா ராட்டி
எல்லிடைப் படர்தந் தோனே கல்லென
வேந்தூர் யானைக் கல்ல
தேந்துவன் போலான்றன் னிலங்கிலை வேலே.

( „ )

1371. அதிரா தற்ற நோக்கு ஞாயினுட்
கதிர்விடு சுடரின் விளங்கும் வெள்வேல்
எதிரிய திருவி னிளையோ னின்றுந்தன்
குதிரை தோன்ற வந்துநின் றனனே
அவன்கை யொண்படை யிகழ்த லோம்புமின்
விழுச்சீர் விண்பொரு நெடுங்குடை வேந்தன்
கண்படை பெறூஅன் வைகின னிவன்கைத்
திண்கூ ரெஃகந் திறந்த
புண்கூர் யானை நவில்குரல் கேட்டே.

( „ )

---

**1368.** 2, 3 யரவுக்கடுங்; 9, 2 சென்னெறி. **1369.** 21 கிணையனை.
**1371.** 3 3 னினையோ.

1372. கட்டி யன்ன காரி மேலோன்
தொட்டது கழலே கையது வேலே
சுட்டி யதுவுங் களிறே யொட்டிய
தானை முழுதுடன் விடுத்துநம்
யானை காமினவன் பிறிதெறி யலனே.

(தகடூர்.)

1373. அஞ்சுதக் கனளே யஞ்சுதக் கனளே
யறுகா வலா பந்த ரென்ன
வறுந்தலை முதியாள் அஞ்சுதக் கனளே
வெஞ்சமத், தென்செய் கென்னும் வேந்தர்க்
கஞ்ச லென்பதோர் களிறீன் றனளே.

( ,, )

1374. வல்லோன் செய்த வகையமை வனப்பிற்
கொல்வினை முடியக் கருதிக் கூரிலை
வெல்வேல் கைவல னேந்திக் கொள்ளெனிற்
கொள்ளுங் காலு மாவேண் டானே
மேலோன், அறிவொடு புணர்ந்த நெறியிற் புரவிக
கழற்கா லிளையோ னழற்றிகழ் வெகுளி
இகழ்த லோம்புமின் புகழ்சால் மன்னிர்
தொல்லை ஞான்றைச் செருவினு ளிவன்கை
வேல்வாய் வீழ்ந்தோர் பெண்டிர் கைம்மையின்
அறுத்த கூந்தற் பிறக்கஞ் சகடம்
பொறுத்தல் செல்லா பலமுரிந் தனவே, அதனால்
வல்லோர் பூழை நின்மின் கல்லென
வெஞ்சமங் குரைப்பக் கூர்தலின்
அஞ்சுதக வுடைத்திவ் வாற்றலோ னிலையே.

( ,, )

1375. உண்டது, கள்ளு மன்று களிப்பட் டனனே
ஊர்ந்தது, புள்ளு மன்று பறந்தியங் கும்மே
மேலோர், தெய்வ மல்லன் மகனே நொய்தாங்குத்
தெரியல ரெடுத்த பாசிலைக் கண்ணி
வெருவத் தக்க வேலி னேன்வேல்
பைய நிமிர்ந்து பருந்தி னோடிக்
கழிந்தார்த் தன்றவ னெறிந்ததை கழுமுட்
டேந்துவரை யிவரும் புலிபோல்
வேந்தர்வந் தூரும் வெஞ்சினக் களிறே.

( ,, )

1376. நிலையமை நெடுந்திணை யேறி நல்லோரி
னிலைபொலி புதுப்பூண் கணவனை நேடிச்
சிந்தி யன்ன செருபடு வனப்பிற்
புள்ளிக் காரி மேலோன் தெள்ளிதின்

---

**1374.** 6, 3(ன்)முற்றிகழ்; 10, 3 பிறககஞ்; 13, 3 கூர்தலின். **1375.** 2, 1 முகந்தது. **1376.** 1, 1 நிலையாமை; 3,3 செடுபடு; 5,2 பிணிக்கு.

உள்ளினும் பனிக்கு மொருவே லோனே
குண்டுநீர்க் கிடங்கிற் கெண்டை பார்க்கும்
மணிநிறச் சிறுசிரல் போலநம்
அணிநல் யானைக் கூறளக் கும்மே.

(தகடூர்.)

1377. வருக வருக தாங்கன்மின் தாங்கன்மின்
உருவக் குதிரை யொருவே லோனே
இருகை மாக்களை யானஞ் சலனே
நாற்கை மாக்களிந் நாட்பகத் தில்லை
அவனும், தாரொடு துயல்வருந் தயங்குமணிக் கொடும்பூண்
மார்புடைக் கருந்தலை யெற்குறித் தனனே
யானும், கடிகம ழுவகைக் கைவல் காட்சியென்
றுடியவற் கவனரை யறுவை யீந்தனனே
அதனால், என்னெறிந்து பெயர்த லவற்குமாங் கரிதே
அவனெறிந்து பெயர்த லெமக்குமாங் கரிதே
அதனால், என்ன தாகினு மாக முன்னீர்
நீர்கொள் பெருங்குளந் தயங்க நாளை
நோய்பொதி நெஞ்சங் குளிர்ப்ப வவன்றாய்
மூழ்குவ ளொன்றோ வன்றே லென்யாய்
மூழ்குவ ளொன்றோ வன்[றிய]வன்
றாயும் யாயு முடன்மூழ் குபவே.

( ,, )

## அதி. 123. குதிரைமறம்

1378. தாங்கன்மின் தாங்கன்மின் தானை விறல்மறவிர்
ஓங்கல் மதிலு ளொருதனிமா—ஞாங்கர்
மயிரணியப் பொங்கி மழைபோன்று மாற்றார்
உயிருணிய வோடி வரும்.

(வெண்பா. 90)

1379. குந்தங் கொடுவிற் குருதிவேல் கூடாதார்
வந்த வகையறியா வாளமருள்—வெந்திறல்
ஆர்கழல் மன்ன னலங்குளைமா வெஞ்சிலை
வார்கணையின் முந்தி வரும்.

( ,, 133)

1380. நிரைகதிர்வேல் மாறனை நேர்நின்றார் யானைப்
புரைசை யறநிமிர்ந்து பொங்கா—அரசர்தம்
முன்முன்னா வீழ்ந்தார் முடிக ளுதைத்தமாப்
பொன்னுரைகற் போன்ற குளம்பு.

(முத்தொள்.)

1381. அடுதிறன் முன்பின னுற்ற முருக்கிப்
படுதலை பாறண்ண நூறி வடியிலைவேல்
வீசிப் பெயர்பவ னூர்ந்தமாத் தீதின்றி
நாண்மகிழ் தூங்குந் துடியன் துடிகொட்டும்
பாணியிற் கொட்டுங் குளம்பு.

(தகடூர்.)

---

**1377.** 8, 4 வீந்தனனே. **1381.** 1 அடுதிறன்முன்.

1382. கறங்கெனக் காலசக் கரங்கள் தாமென
மறங்கிளர் மன்னவர் மகுட நெற்றியும்
உறங்கலில் கடாக்களிற் றுச்சி மேலுமாய்த்
திறங்கிளர் புரவிகள் திரிதர் கின்றவே.

(சூளா. அரசி. 146)

1383. பருத்தி வேலிச் சீறூர் மன்னன்
உருத்தத ருண்ட வோய்நடைப் புரவி
கடல்மண்டு தோணியிற் படைமுகம் போழ
நெய்ம்மிதி யருந்திய கொய்சுவ லெருத்திற்
கோணடை மன்னர் தாருடைக் கலினமான்
அணங்குடை முருகன் கோட்டத்துக்
கலந்தொடா மகளிரி னிகந்துநின் றனவே.

(புறம், 299)

1384. நிலம்பிறக் கிடுவது போலக் குளம்புகுடையூஉ
உள்ள மொழிக்குங் கொட்பின் மாமேல்
எள்ளுநர்ச் செகுக்குங் காளை கூர்த்த
வெந்திற லெஃகம் நெஞ்சுவடு விளைப்ப
ஆட்டிக் காணிய வருமே நெருநை
உரைசால் சிறப்பின் வேந்தர்தா முன்னர்க்
கரைபொரு முந்நீர்த் திமிலிற் போழ்ந்தவர்
கயந்தலை மடப்பிடி புலம்ப
இலங்குமருப் பியானை யெறிந்த வெற்கே.

( ,, 303)

1385. கொடுங்குழை மகளிர் கோதை சூடி
நடுங்குமணி களையா நாளரி பருகி
வளிதொழி லொழிக்கும் வண்பரிப் புரவி
பண்ணற்கு விரைதி நீயே நெருநை
எம்முற் றப்பியோன் றம்பியொ டாங்கு
நாளைச் செய்குவ மமரெனக் கூறிப்
புன்மயி ருகுத்தலுஞ் செய்யான் வன்மான்
கடவு மென்ப பெரிதே யதுகேட்டு
வலம்படு முரசின் வெல்போர் வேந்தர்
இலங்கிரும் பாசறை நடுங்கின்
றிரண்டா காதவன் கூறிய தெனவே.

( ,, 304)

1386. உருவப் புள்ளியி னுட்குவரு கடுந்திறற்
குருகுபறந் தன்ன வெள்ளை மாயோன்
முருகுமா மாயனிவன் யாவன் கொல்லோ
வயவே றிருக்குங் கண்ணியுந் திருந்துந்
துணையோ தஞ்ச மில்லைக் கிணையெனக்
கண்ணார் நடுவட் டோன்றித்தன்
பண்ணியற் புரவி யாய்தல் தருமே.

( ? )

---

**1382.** 6 மன்னர்த. **1384.** 3, 2 செருக்குங்; 4, 3 நெஞ்சுவிடு; 5, 1 வாட்டிடக். **1385.** 2, 4 பகுதி.

## அதி. 124. யானைமறம்

1387. அடக்கருந் தானை யலங்குதார் மன்னர்
விடக்கு முயிரு முணீஇயக்—கடற்படையுட்
பேயு மெருவையுங் கூற்றுந்தன் பிற்படரக்
காயுங் கழலான் களிறு.

(வெண்பா. 132)

1388. வீறுசால் மன்னர் விரிதாம வெண்குடையைப்
பாற வெறிந்த பரிசயத்தால்—தேறுது
செங்கண்மாக் கோதை சினவெங் களியானை
திங்கள்மேல் நீட்டுந்தன் கை.

(முத்தொள்.)

1389. அயிற்கதவம் பாய்ந்துழக்கி யாற்றல்சால் மன்னர்
எயிற்கதவங் கோத்தெடுத்த கோட்டாற்—பனிக்கடலுட்
பாய்தோய்ந்த நாவாய்போற் றோன்றுமே யெங்கோமான்
காய்சினவேற் கிள்ளி களிறு.

( ,, )

1390. மருப்பூசி யாக மறங்கனல்வேல் மன்னர்
திருத்தகு மார்போலை யாகத்—திருத்தக்க
வையக மெல்லா மெமதென் றெழுதுமே
மொய்யிலைவேல் மாறன் களிறு.

( ,, )

1391. உருவத்தார்த் தென்னவ னோங்கெழில் வேழத்
திருகோடுஞ் செய்தொழில் தேரில்—ஒருகோடு
வேற்று ரகல முழுமே யொருகோடு
மாற்றார் மதிறிறக்கு மால்.

( ,, )

1392. கொடிமதில் பாய்ந்திற்ற கோடு மரசர்
முடியிடறித் தேய்ந்த நகமும்—பிடிமுன்பு
பொல்லாமை நாணிப் புறங்கடை நின்றதே
கல்லார்தோட் கிள்ளி களிறு.

( ,, )

1393. கச்சி யொருகால் மிதியா வொருகாலால்
தத்துநீர்த் தண்ணுஞ்சை தான்மிதியாப்—பிற்றையும்
ஈழ மொருகால் மிதியா வருமேநங்
கோழியர்கோக் கிள்ளி களிறு.

( ,, )

1394. பாற்றின மார்ப்பப் பருந்து வழிபடர
நாற்றிசையு மோடி நரிகதிப்ப—ஆற்ற
அலங்கலம் பேய்மகளி ராட வருமே
இலங்கிலைவேற் கிள்ளி களிறு.

( ,, )

---

**1391.** 7 வேற்றல்; 15 (ந்)தான். **1393.** 13 கோழியர் கோற். **1394.** 8 ஆற்றல்; 10 பொய்மகளி.

1395. தோற்ற மலைகட லோசை புயல்கடாங்
காற்றி னிமிர்ந்த செலவிற்றாய்க்—கூற்றுங்
குறியெதிர்ப்பை கொள்ளுந் தகைமைத்தே யெங்கோன்
எறிகதிர்வேல் மாறன் களிறு.

(முத்தொள்.)

1396. அடுமதில் பாய வழிந்தன கோட்டைப்
பிடிமுன் பழகழிதல் நாணி—முடியுடை
மன்னர் குடரால் மறைக்குமே செங்கனல்வேற்
றென்னவர் கோமான் களிறு.

( ,, )

1397. இ[ள]ங்களி [றொ]ன்ற மடப்பிடி சார
வி[ல]ங்கருவி நீராற் றெளி[த்தும்]—நலங்கிளர்வேற்
றுன்னரும்போர்க் கோதை தொடா [அன்] செருக்கின
மன்னர் மதிலாய வென்று.

( ,, )

1398. மம்மர் விசும்பின் மதியு மதிப்பகையுந்
தம்மிற் றடுமாற்றம் போன்றதே—வெம்முனையிற்
போர்யானை மன்னர் புறங்கணித்த வெண்குடையைக்
கார்யானை யன்றடர்த்த கை.

(பெரும்பொருள்.)

1399. வான்றோய் கழுகினமும் வள்ளுகிர்ப் பேய்க்கணமும்
ஊன்றோய் நரியு முடன்றொக்க—மூன்றுங்
கடமா நிலநனைக்குங் கார்யானைக் கிட்ட
படமாறு நீப்பதனைப் பார்த்து.

( ,, )

1400. மாயத்தாற் றாக்கு மலையு மலையும்போற்
காயத்தா றஞ்சாக் களிற்றொடும்போய்ச்—சாயுந்
தொலைவறியா வாடவருந் தோன்றினார் வான்மேல்
மலையுறையுந் தெய்வம்போல் வந்து.

( ,, )

1401. நெறியா நடைமா வொடுதேர் களெடுத்
தெறியா வகையா நுதலே றுசரம்
பறியா முறியா படையோர் படையுட்
செறியா மதயா னைதிரிந் தனவே.

(சூளா. அரசி. 107.)

1402. ஆர்ப்பெழு கடலினும் பெரிதவன் களிறே
கார்ப்பெய லுருமின் முழங்க லானாதே
யார்கொ லளியர் தாமே யாராற்
செறியத் தொடுத்த கண்ணி
கவிகை மள்ளன் கைப்பட் டோரே.

(புறம், 81)

---

**1396.** 3 வழிந்ததன். **1397.** 1 இருங்களி; 5 விருங்கருவி; 11-12 துடா செருக்கின. இறுதியடி 'மன்னர் புறங்கணித்த வெண் மதிலாய வென்று' எனக் காணப்படுகின்றது; 'புறங்கணித்த வெண்' என்பது அடுத்த செய்யுளில் 11,12 சீர்கள். **1399.** 14-15 (ந்) நீப்பதனைப் பத்து. **1401.** 1 தெறியா; 7 துகொலே.

## அதி. 125. மூதில் மறம்

1403. தருமமு மீதேயாந் தானமுமீ தேயாங்
கருமமுங் காணுங்கா லீதாஞ்—செருமுனையிற்
கோள்வாள் மறவ[ர்] தலைதுமிய வென்மகன்
வாள்வாய் முயங்கப் பெறின்.

(தகடூர்.)

1404. இன்ப முடம்புகொண் டெய்துவீர் காண்மினோ
அன்பி னுயிர்மறக்கு மாரணங்கு—தன்கணவன்
அல்லாமை யுட்கொள்ளு மச்சம் பயந்ததே
புல்லார்வேல் மெய்சிதைத்த புண்.

( ,, )

1405. எற்கண் டறிகோ வெற்கண் டறிகோ
என்மக னாத லெற்கண் டறிகோ
கண்ணே கணைமூழ் கினவே தலையே
வண்ண மாலை வாள்விடக் குறைந்தன
வாயே, பொருநுனைப் பகழி மூழ்கலிற் புலால்வழிந்
தாவ நாழிகை யம்புசெறித் தற்றே
நெஞ்சே வெஞ்சரங் கடந்தன குறங்கே
நிறங்கரந்து பல்சர நிறைத்தன வதனால்
அவிழ்பூ வம்பணைக் கிடந்த காளை
கவிழ்பூங் கழற்றிண் காய்போன் றனனே.

( ,, )

1406. வாதுவல் வயிறே வாதுவல் வயிறே
நோலா வதனகத் துன்னீன் றனனே
பொருந்தா மன்ன ரருஞ்சம முருக்கி
யக்களத் தொழிதல் செல்லாய் மிக்க
புகர்முகக் குஞ்சர மெறிந்த வெஃகம்
அதன்முகத் தொழிய நீபோந் தனையே
எம்மில் செய்யா வரும்பழி செய்த
கல்லாக் காளைநின் னீன்ற வயிறே.

( ,, )

1407. முலைத்தா யிரங்கப் புலைப்பறை முழங்கத்
தம்மிற் சாவார் தம்மில் லோரே
அன்ன ரல்லரென் சிறுவர் முன்னிய
வேந்துகளத் தவிய நூறி வேந்தரொடு
முளிபுற் கானத்து விளியி [னல்]லதை
யார்வலர் ஞ... மறித்
தீர்... வரி... வெவறியலரே.

( ? )

---

**1403, 1404, 1406, 1407, 1408, 1409**: இவை 'கெடுக சிந்தை' (1414) என்பதன் பின். **1404**. 2 முடம்புகொ; 11 மையம். **1405**. இது 'தோறு' (1412) என்பதன் பின். **5**, 2 பொருதுணைப். **1406**. 2, 2-3 வலத்தை நுன்னீன்; 4, 1 யிக்களத்; 6, 1 அதனகத்; 7, 1 எம்மிறை; 7, 3 (ப்) பெரும்பழி. 3-ம் அடியிற் 'சம' என்பதிலிருந்து 7-ம் அடியில் 'வரும்' என்பதுமுடிய வொருபிரதியிற் காணப்படவில்லை. **1407**. 2, 2 சார்வார்.

1408. குரங்குமேனித் திரங்குமுக்ச் செதுமுலை
நரைமூ தாட்டி வினவுதி யாயின்
நும்மகன் கொல்லோ வறியே னிம்மகன்
கொற்ற வெண்குடை மன்னர்க் குதவிச்
செஞ்சோற் றருங்கடன் வெஞ்சமத் தாற்றிக்
களிறுதலை யடுத்து மாகா னீட்டிப்
பிளிறுகுரல் முரச மெத்தணை யாகப்
பருந்தின் செங்கிழற் பந்த ராக
அழிபிணக் குன்றே வேலி யாகக்
கழுகுணக் கிடந்த காளை
நும்மகன் கொல்லோ யானறி யேனே.

( ? )

1409. வாழிய துடிய வாழிய துடிய
என்மகன், ஆர்த்தெறிந் தனனே வெறிந்தார்த் தனனே
ஆர்த்து மெறியா னெறிந்து மாரான்
கையது வேலே காலது கழலே
மெய்யது சினமே மேற்சென் றனனே
வேந்த ரெல்லாந் தன்னோக் கினரே
நோக்கி நோக்கா முறுவலன் றூக்கித்
தழீஇந்தா மென்னத் தண்ணுமை
கழித்தா னொள்வாள் வீழ்ந்தன களிறே.

( ? )

1410. ஈன்று புறந்தருத லென்றலைக் கடனே
சான்றோ னாக்குதல் தந்தைக்குக் கடனே
வேல்வடித்துக் கொடுத்தல் கொல்லற்குக் கடனே
தண்ணடை நல்கல் வேந்தற்குக் கடனே
ஒளிறுவாள் வெஞ்சம முருக்கிக்
களிறெறிந்து பெயர்தல் காளைக்குக் கடனே.

(புறம், 312)

1411. வெள்ளை வெள்யாட்டுச் செச்சை போலத்
தன்னோ ரன்ன விளைய ரிருப்பப்
பலர்மீது நீட்டிய மண்டையென் சிறுவனைக்
காலிழி கட்டிலிற் கிடத்தித்
தூவெள் ளறுவை போர்ப்பித் திலதே.

( ,, 286)

1412. தோறு தோறு வென்றி தோலொடு
துறுகல் மறையினு முய்குவை போலாய்
நெருந லெல்லைநீ யெறிந்தோன் றம்பி
அகற்பெய் குன்றியிற் சுழலுங் கண்ணன்
பேரூ ரட்ட கள்ளிற்
கோரிற் கோரிற் றேருமால் நின்னே.

( ,, 300)

---

**1408**. 3, 4 நம்மகன்; 7, 3 (ம்) வெத்தணை; 8, 2 சென்னிழற், செருநிழற்; 11, 2-4 கொல்லோர்யா னறியேனிம் மகனே. **1409**. 8, 2 மெண்ணத். **1411**. 5, 4 திலவே. **1412**. 6, 1 கோறரிற்.

1413. சிற்றில் நற்றாண் பற்றி நின்மகன்
யாண்டுள னோவென வினவுதி யென்மகன்
யாண்டுள னாவது மறியே னோரும்
புலிசேர்ந்து போகிய கல்லளை போல
ஈன்ற வயிறோ விதுவே
தோன்றுவன் மாதோ போர்க்களத் தானே.

(புறம், 86)

1414. கெடுக சிந்தை கடிதிவள் துணிவே
முதிரா மகளி ராகற்க யாமே
மேனா ளுற்ற செருவிற்கிவள் தன்னை
யானை யெறிந்து களத்தொழிந் தனனே
நெருந லுற்ற செருவிற்கிவள் கொழுநன்
பொருநரை விலங்கி யாண்டுப்பட் டனனே
இன்றும், செருப்பறை கேட்டு விருப்புற்று முயங்கி
வேல்கைக் கொடுத்து வெளிதுவிரித் துடீஇ
பாறுமயிர்க் குடுமி யெண்ணெய் நீவி
ஒருமக னல்ல தில்லோள்
செருமுகம் நோக்கிச் செல்கென விடுமே.

( ,, 279)

1415. மாவா ராதே மாவா ராதே
எல்லார் மாவும் வந்தன வெம்மிற்
புல்லுளைக் குடுமிப் புதல்வற் றந்த
செல்வ னூரு மாவா ராதே
இருபேர் யாற்ற வொருபெருங் கூடல்
விலங்கிடு பெருமரம் போல
உலைந்தன்று கொல்லவன் மலைந்த மாவே.

( ,, 273)

1416. வேம்புசினை யொடிப்பவுங் காஞ்சி படரவும்
நெய்யுடைக் கைய ரையவி புகைப்பவும்
எல்லா மனையுங் கல்லென் றவ்வே
வேந்துடன் றேவான் கொல்லென
நெடிதுவந் தன்று நெடுந்தகை தேரே.

( ,, 296)

1417. கடல்கிளர்ந் தன்ன கட்டூர் நாப்பண்
வேந்துவாய் மடித்து வேறலைப் பெயரித்
தோறுவைத் தெழுதரூஉத் துரந்தெறி ஞாட்பின்
வருபடை போழ்ந்து வாய்ப்படை விலங்கி
இடைப்படை யழுவத்துச் சிதைந்து வேறாகிய
சிறப்புடை யாளன் மாண்புகண் டருளி
வாடுமுலை யூறிச் சுரந்தன
ஓடாப் பூட்கை விடலை தாய்க்கே.

( ,, 295)

---

**1415**. 5, 2 யாற்றூர்; 7, 2 செல்வன். **1417**. 6, 3 மாண்டுகண்.

## அதி. 126. களம்

1418. கவளங்கொள் யானைதன் கைதுமியப் பட்டுப்
பவளஞ் சொரிதரு பைபோல்—திவளொளிய
ஒண்செங் குருதி யுமிழும் புனனாடன்
கொங்கரை யட்ட களத்து.

(களவழி, 14)

1419. உருவக் கடுந்தேர் முருக்கிமற் றத்தேர்ப்
பருதி சுமந்தெழுந்த யானை—இருவிசும்பிற்
செல்சுடர் சேர்ந்த மலைபோன்ற செங்கண்மால்
புல்லாரை யட்ட களத்து.

( ,, 4)

1420. கொல்யானை பாயக் குடைமுருக்கி யெவ்வாயும்
புக்கவா யெல்லாம் பிணம்பிறங்கத் தச்சன்
வினைபடு பள்ளியிற் றோன்றுமே செங்கட்
சினமால் பொருத களம்.

( ,, 15)

1421. திண்டோள் மறவ ரெறியத் திசைதோறும்
பைந்தலை பாறிப் புரள்பவை—நன்கெனைத்தும்
பெண்ணையந் தோட்டம் பெருவளி புக்கற்றே
கண்ணார் கமழ்தெரியற் காவிரி நீர்நாடன்
எண்ணாரை யட்ட களத்து.

( ,, 24)

1422. எவ்வாயு மோடி வயவர் துணித்திட்ட
கைவாயிற் கொண்டெழுந்த செஞ்செவிப் புன்சேவல்
ஐவாய் விடநாகங் கவ்வி விசும்பிவருஞ்
செவ்வா யுவணத்திற் றோன்றும் புனனாடன்
தெவ்வரை யட்ட களத்து.

( ,, 26)

1423. செவ்வரைச் சென்னி யரிமானோ டவ்வரை
ஒல்கி யுருமிற் குடைந்தன்றால்—மல்கிக்
கரைகொன் றிழிதருங் காவிரி நாடன்
உரைசா லுடம்பிடி மூழ்க வரசோ
டரசுவா வீழ்ந்த களத்து.

( ,, 35)

1424. ஓஓ உவமை யுறழ்வின்றி யொத்ததே
காவிரி நாடன் கழுமலங் கொண்டநாள்
மாவுதைப்ப மாற்றார் குடையெலாங் கீழ்மேலாய்
ஆவுதைக்கு மாம்பி நிகர்த்த புனனாடன்
மேவாரை யட்ட களத்து.

( ,, 36)

---

**1418.** 1-2 கவளங் கொளயானை; 3 கைதுணியப்; 6-11 சொரி கருப் பைபோன்று தவளவள வொண்சங் கினங்க ளுகளும்; 8 திகழொளிய. **1421.** 16 நன்னாடன்; 17 ஒன்னாரை. **1422.** 2 மோட்டி. **1423.** 7 குடைந் தன்ன. **1424.** 13-15 ஆவுதைத் தாரம்பி போன்ற.

1425. இருநிலஞ் சேர்ந்த குடைக்கீழ் வரிநுதல்
ஆடியல் யானைத் தடக்கை யொளிறுவாள்
ஓடா மறவர் துணிப்பத் துணிந்தவை
கோடுகொ ளொண்மதிய நக்குபாம் பொக்குமே
பாடா ரிடிமுரசிற் பாய்புன னீர்நாடன்
கூடாரை யட்ட களத்து.

(களவழி, 22)

1426. ஞாட்பினு ளெஞ்சிய ஞாலஞ்சேர் யானைக்கீழ்ப்
போர்ப்பி லிடிமுரசி னூடுபோ மொண்குருதி
கார்ப்பெயல் பெய்தபிற் செங்குளக் கோட்டுக்கீழ்
நீர்த்தூம்பு நீருமிழ்வ போன்ற புனனாடன்
ஆர்த்தம ரட்ட களத்து.

( ,, 2)

1427. படைப்பொலிதார் மன்னர் பருஉக்குடர் மாந்திக்
குடைப்புறத்துத் துஞ்சு மிகலன்—இடைப்பொலிந்த
திங்களிற் றோன்று முயல்போலுஞ் செம்பியன்
செங்கண் சிவந்த களத்து.

( ,, )

1428. கைபொருத வோசையாற் கண்ணுமிழ்ந்த செந்தீயான்
மெய்பொருது தோய்ந்தெழுந்த வெம்புகையான்—ஐயோ
வெதிர்வேங் கடுங்கானம் போன்றதே வெம்போர்
எதிர்வேந்தர் செய்த விடம்.

(பாரதம்)

1429. வென்று களங்கொண்ட வேந்தன்றேர் சென்றதற்பின்
கொன்ற பிணநிணக்கூழ் கொற்றவை—நின்றளிப்ப
உண்டாடு பேய்கண் டுவந்தனவே போர்ப்பரிசில்
கொண்டா டினகுரவைக் கூத்து.

(பெரும்பொருள்.)

1430. வெருவரு வெஞ்சமத்து வேலிலங்க வீழ்ந்தார்
புருவ முரிவுகண் டஞ்சி—நரிவெரீஇச்
சேய்த்தணித்தாய் நின்றழைக்குஞ் செம்மற்றே தென்னவன்
வாட்கணித்தாய் வீழ்ந்தார் களம்.

(முத்தொள்.)

1431. மரகதப்பூண் மன்னவர் தோள்வளை கீழா
வயிரக் கடகக்கை வாங்கித்—துயருழந்து
புண்ணுற் றழைக்குங் குறுநரித்தே பூழியனைக்
கண்ணுற்று வீழ்ந்தார் களம்.

( ,, )

1432. முடித்தலை வெள்ளோட்டு மூளைநெய் யாகத்
தடித்த குடர்திரியா மாட்டி—எடுத்தெடுத்துப்
பேஎய் விளக்கயரும் பெற்றித்தே செம்பியன்
சேஎய் பொருத களம்.

( ,, )

---

**1425.** 14 ளொண்மதியை; 15 நக்கும்பாம். **1426.** 10 பெய்தலிற்; 12 கோட்டக்கீழ். **1428.** 6 தேய்த்தெழுந்த. **1429.** 9 உண்டாடும். **1431.** 4 கீழற்ற; 7 வீக்கித்; 13-14 கண்ணுற்றூர் வீழ்ந்த. **1432.** 15 களத்து.

1433. ஏனைய பெண்டி ரெரிமூழ்கக் கண்டுதன்
தானையாற் கண்புதைத்தான் தார்வழுதி—யானையும்
புல்லார் பிடிபுலம்பத் தன்கண் புதைத்ததே
பல்யானை யட்ட களத்து.

(முத்தொள்.)

1434. பெருகிய குருதியுட் பிறக்குஞ் செந்தடி
யருகுடை யளற்றினு ளெழுந்திப் பாகமோர்
சொரிகதிர்க் கோடக முடிகள் தோன்றலாற்
பொருகளம் புற்றெடுக் கின்ற போன்றவே.

(சூளா. அரசி. 267)

## அதி. 127. இரங்கல்

1435. போர்க்குப் புணைமன் புரையோர்க்குத் தாணுமன்
ஊர்க்கு முலகிற்கு மோருயிர்மன்—யார்க்கு
மறந்திறந்த வாயி லடைத்ததே யண்ணல்
நிறந்திறந்த நீணிலைய வேல்.

(வெண்பா. 80)

1436. முன்புறந் தான்காணு மிவ்வுலக மிவ்வுலகிற்
றன்புறங் கண்டறிவார் தாமில்லை—அன்பின்
அழுதார்க ணீர்விடுத்த வாருடிக் கூகை
கழுதார்ந் திரவழங்குங் காடு.

( ,, 274)

1437. இரவலர் வம்மி னெனவிசைத்த லின்றிப்
புரவலன் மாய்ந்துழியும் பொங்கும்—உரையழுங்க
வேற்கண் ணியரழுத வெம்பூசல் கேட்டடங்கா
தோற்கண்ண போலுந் துடி.

(தகடூர்.)

1438. உலகு பொதியுருவந் தன்னுருவ மாகப்
பலர்பரவத் தக்க பறந்தலை நன்காடு
புலவுங்கொ லென்போல் புலவுக் களத்தோ
டிலைநெடுவே லோனை யிழந்து.

( ? )

1439. அரசு ரேறே யடலாழி
வலவா யார்க்குந் தோலாதாய்
புரிசை நகர்நூற் றிருபதுடைப்
பூமி முழுதுந் தாணுண்டோய்
உரைசெய் துலகம் பாராட்டு
மொளியா யோடை யானையாய்
வரைசெய் தனைய திரடோளாய்
மறைதல் பொருளோ வயவேந்தே.

(சூளா. அரசி. 343)

---

**1433.** 1 ஏனையார்; 11 தான்கண்; 13 பல்வாயா(ர). **1434.** இது 'வென்று களங்' (1429) என்பதன்பின். **1435.** 4 தானுவமன்; 14 நீளிலை. **1436, 1438:** இவை 'பல்சான்றீரே' (1452) என்பதன்பின். **1436.** 11 வாருேடிக். **1437.** 13-14 தோற்கண்போ லுக்தம். **1439, 1440:** இவை 'இரவலர் வம்மி' (1437) என்பதன்பின். **1439.** 7-9 புரிசையைத் தானூற் றிருபதுடை.

1440. மூரி முந்நீ ருலகங்கள்
முழுதுங் காவல் முனிந்தாயோ
ஆரு மில்லா வடியோங்கள்
வழிபா டாற்ற மாட்டாயோ
சீரின் மன்னும் வளநாடுந்
தெய்வப் படையுஞ் செல்வமுமிப்
பாரின் மன்னர் பிறர்கொள்ளப்
பணித்த தென்னே படைவேந்தே.

(சூளா. அரசி. 351)

1441. வெள்ளெருக்கஞ் சடைமுடியான் வெற்பெடுத்த திரடோளான்
மேலுங் கீழும்
எள்ளிருக்கு மிடமின்றி யுயிரிருக்கு மெனநாடி
யிழைத்த தாலே[ா]
கள்ளிருக்கு மலர்க்கூந்தற் சானகியை வன்சிறையில்
வைத்த காதல்
உள்ளிருக்கு மெனக்கருதி யுடல்பிளந்து தடவியதோ
வொருவன் வாளி.

(இராமாவ. இராவணன்வதை. 239)

1442. செற்றன் றாயினுஞ் செயிர்த்தன் றாயினும்
உற்றன் றாயினு முய்வின்று மாதோ
பாடுநர் போலக் கைதொழு தேத்தி
இரந்தன் றாகல் வேண்டும் பொலந்தார்
மண்டமர் கடந்த தானைத்
திண்டோள் வளவற் கொண்ட கூற்றே.

(புறம், 226)

1443. எறிபுனக் குறவன் குறைய லன்ன
கரிபுற விறகி னீம வொள்ளழற்
குறுகினுங் குறுகுக குறுகாது சென்று
விசும்புற நீளினும் நீள்க பசுங்கதிர்த்
திங்க ளன்ன வெண்குடை
ஞாயிற் றன்னோன் புகழ்மா யலவே.

( „ 231)

1444. பாடுநர்க் கீத்த பல்புக ழன்னே
ஆடுநர்க் கீத்த பேரன் பினனே
அறவோர் புகழ்ந்த வாய்கோ லன்னே
திறவோர் புகழ்ந்த திண்ணன் பினனே
மகளிர் சாயல் மைந்தர்க்கு மைந்து
துகளறு கேள்வி யுயர்ந்தோர் புக்கில்
அனைய னென்னா தத்தக் கோனை
நினையாக் கூற்ற மின்னுயி ருய்த்தன்று
பைதற் சுற்றங் கெழீஇ யதனை

---

**1440.** 10-11 அடிபா ராட்ட; 19 பாரு. **1441.** இது 'அளியதாமே' (1451) என்பதன் பின். **1442.** 4, 2 றாதல்; 5, 2 கடக்குந்; 5, 3 தானையத்; 6, 1 திண்டோ்; 6, 2 வலவற்.

வைகம் வம்மோ வாய்மொழிப் புலவீர்
நனந்தலை யுலக மரந்தை தூங்கக்
கேடி னல்லிசை யுயர்ந்தோர் சூடி
நடுக லாயினன் புரவல னெனவே.

(புறம், 221)

1445. நோகோ யானே தேய்கமா காலை
பிடியடி யன்ன சிறுவழி மெழுகித்
தன்னமர் காதலி புன்மேல் வைத்த
இன்சிறு பிண்டம் யாங்குண் டனன்கொல்
உலகுபுகத் திறந்த வாயிற்
பலரோ டுண்டல் மரீஇ யோனே.

( „ 234)

1446. தொடியுடைய தோண்மணந்தனன்
கடிகாவிற் பூச்சூடினன்
தண்கமழுஞ் சாந்துநீவினன்
செற்றோரை வழிதபுத்தனன்
நட்டோரை யுயர்வுகூறினன்
வலியரென வழிமொழியலன்
மெலியரென மீக்கூறலன்
பிறரைத்தா னிரப்பறியலன்
இரந்தோர்க்கு மறுப்பறியலன்
வேந்துடை யவையகத் தோங்குபுகழ் தோற்றினன்
வருபடை யெதிர்தாங்கினன்
பொருபடை புறங்கண்டனன்
கடும்பரிய மாக்கடவினன்
நெடுந்தெருவிற் றேர்வழங்கினன்
ஓங்கியற் களிறூர்ந்தனன்
தீஞ்சேற்ற [த]சும்புதொலைச்சினன்
பாணுவப்பப் பசிதீர்த்தனன்
மயக்குடைய மொழிவிடுத்தனன், ஆங்குச்
செய்ப வெல்லாஞ் செய்தன னாகலின்
இடுக வொன்றோ சுடுக வொன்றோ
படுவழிப் படுகவிப் புகழ்வெய்யோன் றலையே.

( „ 239)

1447. நனிபே தையே நயமில் கூற்றம்
விரகின் மையின் வித்தட் டுண்டனை
இன்னுங் காண்குவை நன்வா யாகுதல்
ஒளிறுவாள் மறவருங் களிறு மாவும்
குருதியங் குரூஉப்புனற் பொருதுகளத் தொழிய
நாளு மானுன் கடந்தட் டென்றுநின்
வாடுபசி யருத்திய வசைதீ ராற்றல்

**1446.** 4, 2 வழிசெகுத்தனன்; 5, 2 யுரவுகூறினன்; 15, 1 ஓங்கிய; 16, 1-2 தீஞ்சொற் றசும்புதொலைச்சினன்; 18, 1 மயக்குடை; 21, 1 படுவழிப். **1447.** 5, 3 பொருதகளத்; 6, 3 கடிந்தட்; 6, 4 டுண்டுநின்; 7, 1 வாயபசி; 9, 3-4 வண்டு மூசுதார்.

நின்னோ ரன்ன பொன்னியற் பெரும்பூண்
வளவ னென்னும் வண்டுமூசு கண்ணி
அனையோற் கொண்டனை யாயின்
இனியார் மற்றுநின் பசிதீர்ப் போரே.

(புறம், 227)

1448. ஐயோ வெனின்யான் புலியஞ் சுவலே
உய்த்தனென் கொளினே மார்பெடுக் கல்லேன்
என்போற் பெருவிதிர்ப் புறுக நின்னை
இன்னா துற்ற வறனில் கூரே
நிரைவளை முன்கை பற்றி
வரைநிழற் சேர்கம் நடத்திசிற் சிறிதே.

( ,, 255)

1449. இளையோர் சூடார் வளையோர் கொய்யார்
நல்யாழ் மருப்பின் மெல்ல வாங்கிப்
பாணன் கொள்ளான் பாடினி யணியாள்
ஆண்மை தோன்ற வாடவர்க் கடந்த
வல்வேற் சாத்தன் மாய்ந்த பின்றை
முல்லையும் பூத்தியோ வொல்லையூர் நாட்டே.

( ,, 242)

1450. பெருஞ்சோறு பயந்து பல்யாண்டு புரந்த
இருங்களி றிழந்த பைதற் பாகன்
அதுசேர்ந் தல்கிய வழுங்க லாலை
வெளில்பா ழாகக் கண்டு கலிழ்ந்தாங்குக்
கலங்கினெ னல்லனோ யானே பொலந்தார்த்
தேர்வண் கிள்ளி போகிய
பேரிசை மூதூர் மன்றங் கண்டே.

( ,, 220)

1451. அளிய தாமே சிறுவெள் ளாம்பல்
இளைய மாகத் தழையா யினவே, இனியே
பெருவளக் கொழுநன் மாய்ந்தெனப் பொழுதுமறுத்
தின்னா வைக லுண்ணும்
அல்லிப் படூஉம் புல்லா யினவே.

( ,, 248)

1452. பல்சான் றீரே பல்சான் றீரே
செல்கெனச் செல்லா தொழிகென விலக்கும்
பொல்லாச் சூழ்ச்சிப் பல்சான் றீரே
அணில்வரிக் கொடுங்காய் வாள்போழ்ந் தட்ட
காழ்போ கல்விளர் நறுநெய் தீண்டா
தடகிடை மிடைந்த கைபிழி பிண்டம்
வெள்ளெட் சாந்தொடு புளிப்பெய் தட்ட
வேளை வெந்தை வல்சி யாகப்
பரற்பெய் பள்ளிப் பாயின்று வதியும்

---

**1449.** 4, 2 கொன்ற, சென்ற; 4, 4 கணிந்த; 5, 1 பல்வேற்; 5, 3-4 மாய்ந்தபின். **1450.** 1, 2 பயந்த. **1452.** 2, 2 சொல்லா.

உயவற் பெண்டிரே மல்ல மாதோ
பெருங்காட்டுப் பண்ணிய கருங்கோட் டீமம்
நுமக்கரி தாகுக தில்ல வெமக்கெம்
பெருந்தோட் கணவன் மாய்ந்தென வரும்பற
வள்ளித ழவிழ்ந்த தாமரை
நள்ளிரும் பொய்கையும் தீயுமோ ரற்றே.

(புறம், 246)

1453. இழுமென முழங்கு முரசமொடு குழீஇய
ஒன்னார் மள்ளர்த் தந்த முன்னூர்ச்
சிறையில் விலங்கிச் செவ்வே லேந்தி
யாண்டுப்பட் டனனே நெடுந்தகை
ஈண்டுநின் றம்ம வணியில்பெரும் புகழே.

(தகடூர்.)

1454. நாய்ப்பிணை வொடுங்கிய கிழநரி யேற்றை
கிளைக்கு மிறும்பிற் றெறுவரக் கடிய
கூற்றுயிர் கொண்ட வுடம்புகரி பறந்தலைப்
ப[ா]ற்றிய சுடலைப் பல்குர றெழித்தே
பார்பெ[ா]ரு பனிக்கடல் போல
வார்தர வறியா வஞ்சுவரு காடே.

( ? )

## அதி. 128. வென்றி

1455. சூடினன் வாகைச் சுடர்த்தெரியல் சூடுதலும்
பாடினர் தொல்புகழ் பல்புலவர்—கூடார்
உடல்வே லழுவத் தொளிதிகழும் பைம்பூண்
அடல்வேந்த னட்டார்த் தரசு.

(வெண்பா. 155)

1456. கொடித்தலைத்தார்த் தென்னவன் தோற்றான்போல் நின்றான்
மடித்தவாய் சுட்டிய கையாற்—பிடித்தவேற்
கண்ணோரா வோச்சிக் களிறணையாக் கண்படுத்த
மண்ணோரா மன்னரைக் கண்டு.

(முத்தொள்.)

1457. தொழில்தேற்றாப் பாலகனை முன்னிறீஇப் பின்னின்
றழலிலைவேல் காய்த்தினார் பெண்டிர்—கழலடைந்து
மண்ணிரத்த லென்ப வயங்குதார் மாமாறன்
கண்ணிரத்தந் தீர்க்கு மருந்து.

( ,, )

1458. களிகட லிருங்குட்டத்து
வளிபுடைத்த கலம்போலக்
களிறுசென்று களனகற்றவுங்
களனகற்றிய வியலாங்கண்
ஒளிறிலைய வெஃகேந்தி

---

**1453.** இது 'பெருஞ்சோறு' (1450) என்பதன்பின். **1454.** 2, 1 யிளைக்கு; 2, 4 கடியக்; 4, 1-4 பெற்றிய சுடலைப பஃகுறெழிதகே; 5, 1 யார்பெரு. **1455.** 4 சூடுதலைப். **1456.** 1 கொடுத்தலத்தார்த்; 3 தேற்றான் போல்; 11 களிறனையாற்.

அரசுபட வமருழக்கி
உரைசெல முரைசுவெளவி
முடித்தலை யடுப்பாகப்
புனற்குருதி யுலைக்கொளீஇத்
தொடித்தோட் டுடுப்பிற் றுழந்த வல்சியின்
அடுகளம் வேட்ட வடுபோர்ச் செழிய
ஆன்ற கேள்வி யடங்கிய கொள்கை
நான்மறை முதல்வர் சுற்ற மாக
மன்னர் செய்தொழி லயர மன்னிய
வேள்வி முற்றிய வாய்வாள் வேந்தே
நோற்றோர் மன்றநின் பகைவர் நின்னொடு
மாற்றா ரென்னும் பெயர்பெற்
றாற்றா ராயினு மாண்டுவாழ் வோரே.

(புறம், 26)

1459. சிறப்புடை மரபிற் பொருளு மின்பமும்
அறத்து வழிப்படூஉந் தோற்றம் போல
இருகுடை பின்பட வோங்கி யொருகுடை
உருகெழு மதியி னிவந்துசேண் விளங்க
நல்லிசை வேட்டம் வேண்டி வெல்போர்ப்
பாசறை யல்லது நீயொல் லாயே
நுதிமுக மழுங்க மண்டி யொன்னார்
கடிமதில் பாயுநின் களிறடங் கலவே
போரெனிற் புகலும் புனைகழல் மறவர்
காடிடைக் கிடந்த நாடுநனி சேய
செல்வே மல்லே மென்னார் கல்லென்
விழவுடை யாங்கண் வேற்றுப்புலத் திறுத்துக்
குணகடல் பின்ன தாகக் குடகடல்
வெண்டலைப் புணரிநின் மான்குளம் பலைப்ப
வலமுறை வருதலு முண்டென வலம்வந்து
நெஞ்சுநடுங் கவலம் பாயத்
துஞ்சாக் கண்ண வடபுலத் தரசே.

( ,, 31)

1460. உழுதூர் காளை யூழ்கோ டன்ன
கவைமுட் கள்ளிப் பொரியரைப் பொருந்திப்
புதுவர கரிகாற் கருப்பை பார்க்கும்
புன்றலைச் சிறாஅர் வில்லெடுத் தார்ப்பிற்
பெருங்கட் குறுமுயல் கருங்கல னுடைய
மன்றிற் பாயும் வன்புலத் ததுவே
கரும்பி னெந்திரஞ் சிலைப்பி னயல
திருஞ்சுவல் வாளை பிறழு மாங்கட்
டண்பணை யாளும் வேந்தர்க்குக்
கண்படை யீயா வேலோ னூரே.

( ,, 322)

1459. 4, 1 வருகெழு. 1460. 1, 3 யூழ்கொண்.

1461. மீன்றிகழ் விசும்பிற் பாயிரு ளகல
ஈண்டுசெலன் மரபிற் றன்னியல் வழாஅ
துரவுச்சினந் திருகிய வுருகெழு ஞாயிறு
நிலவுத்திகழ் மதியமொடு நிலஞ்சேர்ந் தாஅங்
குடலருந் துப்பி னொன்றுமொழி வேந்தரை
அணங்கரும் பறந்தலை யுணங்கப் பண்ணிப்
பிணியுறு முரசங் கொண்ட காலை
நிலைதிரி பெறியத் திண்மடை கலங்கிச்
சிதைதலுய்ந் தன்றோ நின்வேல் செழிய
முலைபொலி யாக முருப்ப நூறி
மெய்ம்மறந்து பட்ட வரையாப் பூசல்
ஒண்ணுதல் மகளிர் கைம்மை கூர
அவிரறல் கடுக்கு மம்மென் சாயற்
குவையிருங் கூந்தல் கொய்தல் கண்டே.

(புறம், 25)

1462. ஒருவனை யொருவ னடுதலுந் தொலைதலும்
புதுவ தன்றிவ் வுலகத் தியற்கை
இன்றி னூங்கோ கேளலந் திரளரை
மன்ற வேம்பின் மாச்சினை யொண்டளிர்
நெடுங்கொடி யுழிஞைப் பவரொடு மிடைந்து
செறியத் தொடுத்த தேம்பாய் தெரியல்
கவின மாலையொடு பொலியச் சூடிப்
பாடின் றெண்கிணை கறங்கக் காண்டக
நாடுகெழு திருவிற் பசும்பூட் செழியன்
பீடுஞ் செம்மலு மறியார் கூடிப்
பொருது மென்று தன்றலை வந்த
புனைகழ லெழுவர் நல்வல மடங்க
ஒருதா னாகிப் பொருதுகளத் தடலே.

( ,, 76)

1463. கிண்கிணி களைந்தகா லொண்கழல் தொட்டுக்
குடுமி களைந்தநுதல் வேம்பி னொண்டளிர்
நெடுங்கொடி யுழிஞைப் பவரொடு மலைந்து
குறுந்தொடி கழித்தகைச் சாபம் பற்றி
நெடுந்தேர்க் கொடிஞ்சி பொலிய நின்றோன்
யார்கொல் வாழ்கவன் கண்ணி தார்பூண்டு
தாலி களைந்தன்று மிலனே பால்விட்
டயினியு மின்றயின் றனனே வயின்வயின்
உடன்றுமேல் வந்த வம்ப மள்ளரை
வியந்தன்று மிழித்தன்று மிலனே யவரை
அழுங்கப் பற்றி யகல்விசும் பார்ப்பெழக்
கவிழ்ந்து நிலஞ்சேர வட்டதை
மகிழ்ந்தன்று மிகழ்ந்தன்று மதனினு மிலனே.

( ,, 77)

---

• **1462.** 13, 1-3 ஒருவ னாகிப் பொருதகளத்.

## அதி. 129. புகழ்

1464. மடங்கா மயிலூர்தி மைந்தனை நாளுங்
கடம்பம்பூக் கொண்டேத்தி யற்றால்—தொடங்கமருள்
நின்றிலங்கு வென்றி நிரைகதிர்வேல் மாறனை
இன்றமிழால் யாம்பாடும் பாட்டு.

(முத்தொள்.)

1465. செங்க ணெடியான்மேற் றேர்விசைய னேற்றியபூப்
பைங்கண்வெள் ளேற்றான்பாற் கண்டற்றால்—எங்கு
முடிமன்னர் சூடியபூ மொய்ம்மலர்த்தார் மாறன்
அடிமிசையே காணப் படும்.

( ,, )

1466. கூந்தன்மா கொன்று குடமாடிக் கோவலனாய்ப்
பூந்தொடியைப் புல்கிய ஞான்றுண்டால்—யாங்கொளித்தாய்
தென்னவனே தேர்வேந்தே தேறுநீர்க் கூடலார்
மன்னவனே மார்பின் மறு.

( ,, )

1467. வானிற்கு வையகம் வென்றது வானத்து
மீனிற் கனையார் மறமன்னர்—வானத்து
மீன்சேர் மதியனையன் விண்ணுயர் கொல்லியார்
கோன்சேரன் கோதையென் பான்.

( ,, )

1468. மந்தரங் காம்பா மணிவிசும் போலையாத்
திங்க ளதற்கோர் திலதமா—எங்கணும்
முற்றுநீர் வைய முழுது நிழற்றுமே
கொற்றப்போர்க் கிள்ளி குடை.

( ,, )

1469. பார்படுப செம்பொன் பதிபடுப முத்தமிழ்நூ
னீர்படுப வெண்சங்கும் நித்திலமும்—சாரல்
மலைபடுப யானை வயமாறன் கூர்வேற்
றலைபடுப தார்வேந்தர் மார்பு.

( ,, )

1470. அருமணி யைந்தலை யாடரவம் வானத்
துருமேற்றை யஞ்சி யொளிக்கும்—செருமிகுதோட்
செங்கண்மா மாறன் சினவேல் கனவுமே
அங்கண்மா ஞாலத் தரசு.

( ,, )

1471. அரும்பவிழ்தார்க் கோதை யரசெறிந்த வெள்வேல்
பெரும்புலவுஞ் செஞ்சாந்தும் நாறிச்—சுரும்பொடு
வண்டாடும் பக்கமு முண்டு குறுநரி
கொண்டாடும் பக்கமு முண்டு. ( ,, )

---

**1466.** 5 பூந்தொடையைப். **1467.** 5-7 மீனிற்கு மின்னனைய ராகு மறமன்னர். **1468.** 13 கொற்றப்பேர்க். **1470.** 2 யந்தலை; 11-12 சினவே லகவுமேல்.

1472. கண்ணார் கதவந் திறமின் களிறொடுதேர்
பண்ணார் நடைப்புரவி பண்விடுமின்—நண்ணார்தந்
தேர்வேந்தன் றென்னன் திருவுத்தி ராடநாட்
போர்வேந்தன் பூச லிலன்.

(முத்தொள்.)

1473. அந்தண ராவொடு பொன்பெற்றார் நாவலர்
மந்தரம்போல் மாண்ட களிறார்ந்தார்—எந்தை
இலங்கிலைவேற் கிள்ளி யிரேவதிநா ளென்னோ
சிலம்பிதன் கூடிழந்த வாறு.

( „ )

1474. திறலொடு தீதுருநதிப பூழிய னல்லன்
மறலொடு மைந்து தருக்கிப்—பிறரொருவர்
தென்ன னிளங்கோத் திருமால் வழுதிமுன்
மன்னர்யார் மாறேற் பவர்.

( ? )

1475. கருங்கலி முந்நீரின் மூழ்காத முன்னம்
இருங்கடி மண்மகளை யேந்தினவே யாயிற்
பெரும்பெய ரேனத் தெயிறணைய வன்றே
சுரும்பறை தொண்டையான் தோள்.

(இரும்பல்.)

1476. எங்கோ னிருந்த கம்பலை மூதூர்
உடையோர் போல விடையின்று குறுகிச்
செம்மல் நாளவை யண்ணாந்து புகுதற்
கெம்மன வாழ்க்கை யிரவலர்க் கெளிதே
இரவலர்க் கெண்மை யல்லது புரவெதிர்ந்து
வானம் நாண வரையாது சென்றோர்க்
காணா தீயுங் கவிகை வண்மைக்
கடுமான் கோதை துப்பெதிர்ந் தெழுந்த
நெடுமொழி மன்னர் நினைக்குங் காலைப்
பாசிலைத் தொடுத்த வுவலைக் கண்ணி
மாசு ணுடுக்கை மடிவா யிடையன்
சிறுதலை யாயமொடு குறுகல் செல்லாப்
புலிதுஞ்சு வியன்புலத் தற்றே
வலிதுஞ்சு தடக்கை யவனுடை நாடே.

(புறம், 54)

1477. வையங் காவலர் வழிமொழிந் தொழுகப்
போகம் வேண்டிப் பொதுச்சொற் பொறாஅ
திடஞ்சிறி தென்னு மூக்கந் துரப்ப
ஒடுங்கா வுள்ளத் தோம்பா வீகைக்
கடுந்தடு தானைச் சேர லாதனை
யாங்கன மொத்தியோ வீங்குசெலல் மண்டிலம்
பொழுதென வரைதி புறக்கொடுத் திறத்தி

---

**1472.** 8 நண்ணாத. **1473.** 12 ளென்னை. **1474.** 3 பூழிய. **1476.** 5,*1-2 இரவலர் கேண்மை; 7, 4 வண்கைக்.

மாறி வரைதி மலைமறைந் தொளித்தி
அகலிரு விசும்பி னானும்
பகல்விளங் குதியாற் பல்கதிர் விரித்தே.

(புறம், 8)

1478. நாட னென்கோ வூர னென்கோ
பாடிமிழ் பனிக்கடற் சேர்ப்ப னென்கோ
யாங்கன மொழிகோ வோங்குவாட் கோதையைப்
புனவர் தட்டை புடைப்பி னயல
திறங்குகதி ரலமருங் கழனியும்
பிறங்குநீர்ச் சேர்ப்பினும் புள்ளொருங் கெழுமே.

( ,, 49)

1479. ஆரந் தாழ்ந்த வணிகிளர் மார்பிற்
ருடோய் தடக்கைத் தகைமாண் வழுதி
வல்லை மன்ற நீநயந் தளித்தல்
தேற்றாய் பெரும பொய்யே யென்றுங்
காய்சினந் தவிராது கடலூர் பெழுதரும்
ஞாயி றனையைநின் பகைவர்க்குத்
திங்க ளனையை யெம்ம னோர்க்கே.

( ,, 59)

1480. பாணர் தாமரை மலையவும் புலவர்
பூநுதல் யானையொடு புனைதேர் பண்ணவும்
அறனோ மற்றிது விறல்மாண் குடுமி
இன்னா வாகப் பிறர்மண்கொண்
டினிய செய்திநின் னார்வலர் முகத்தே.

( ,, 12)

1481. வழிபடு வோரை வல்லறி தீயே
பிறர்பழி கூறுவோர் மொழிதே றலையே
நீமெய் கண்ட தீமை காணின்
ஒப்ப நாடி யத்தக வொறுத்தி
வந்தடி பணிந்து முந்தை நிற்பின்
தண்டமுந் தணிதிநீ பண்டையிற் பெரிதே.

( ,, 10)

1482. களங்கனி யன்ன கருங்கோட்டுச் சீறியாழ்
பாடின் பனுவற் பாண ருய்த்தெனக்
களிறில வாகிய புல்லரை நெடுவெளிற்
கான மஞ்ஞை கணனொடு சேப்ப
ஈகை யரிய விழையணி மகளிரொடு
சாயின் றென்ப வாஅய் கோயில்
சுவைக்கினி தாகிய குய்யுடை யடிசில்
பிறர்க்கீ வின்றித் தம்வயி றருத்தி
உரைசா லோங்குபுக ழொரீஇய
முரசுகெழு செல்வர் நகர்போ லாதே.

( ,, 127)

---

**1478.** இதன்பின் 'பாரி பாரி' (புறம், 107), 'ஊர்க்குறு மாக்கள்' (புறம், 94), 'அறுகுளத் துகுத்து' (புறம், 142) என்பன புறத்திரட்டுச் சுருக்கம். **1482.** 9, 1-3 உரைசா லோங்கு புகழோ ராகிய,

1483. மழைக்கணஞ் சேக்கு மாமலைக் கிழவன்
வழைப்பூங் கண்ணியன் வாய்வா ளண்டிரன்
குன்றம் பாடின கொல்லோ
களிறுமிக வுடையவிக் கவின்பெறு காடே.

(புறம், 131)

1484. மெல்லியல் விறலி நல்லிசை செவியிற்
கேட்பி னல்லது காண்பறி யலையே
காண்டல் சால வேண்டினை யாயின்
மாண்ட கூந்தல் வரைவளி யுளரக்
கலவ மஞ்ஞையிற் காண்வர வியலி
மாரி யன்ன வண்கைத்
தேர்வே ளாயைக் காணிய சென்மே.

( „ 133)

1485. இம்மைச் செய்தது மறுமைக் காமெனும்
அறவிலை வணிக னாஅ யல்லன்
பிறருஞ், சான்றோர் சென்ற நெறியென
வாங்குப்பட் டன்றவன் கைவண் மையே.

( „ 134)

1486. தடவுநிலைப் பலவி னாஞ்சிற் பொருநன்
மடவன் மன்ற செந்நாப் புலவிர்
வளைக்கை விறலியர் படப்பைக் கொய்த
அடகின் கண்ணுறை யாக யாஞ்சில
அரிசி வேண்டினெ மாகத் தான்பிற
வரிசை யறிதலாற் றன்னுந் தூக்கி
இருங்கடறு வளைஇய குன்றத் தன்ன
பெருங்களிறு நல்கி யோனே யன்னதோர்
தேற்றா வீகையு முளதுகொல்
போற்றா ரம்ம பெரியோர்தங் கடனே.

( „ 140)

1487. நீயே, இகலவர்க் காணி-னமர்கடந் துதவியவர்
படைவிலக்கி யெதிர்நிற்றலின்
வாஅள் வாய்த்த வடுவாழ் யாக்கையொடு
கேள்விக் கினியை கட்கின் னாயே
அவரே, நிற்காணிற் புறங்கொடுத்தலின்
ஊறறி யாமெய் யாக்கை தன்னொடு
கண்ணுக் கினியர் செவிக்கின் னாரே
அதனால், நீயுமொன் றினியை யவருமொன் றினியர்
ஒவ்வா யாவுள மற்றே வெல்போர்க்
கழல்புனை திருந்தடிக் கடுமான் கிள்ளி
நின்னை வியக்குமிவ் வுலகமஃ
தென்னோ பெரும வுரைத்திசி னெமக்கே. ( „ 167)

---

**1483.** 2, 3-4 வாய வாமான்; 4, 4 நாடே. **1485.** 3, 3 சென்று; 4, 1 பாங்குப்பட். **1486.** 5, 4 தான் பிறர்; 6,2 யடுதலாற். **1487.** இதன்பின் ‘அளிதோ தானே பாரி’ (புறம், 109) என்பது புறத்திரட்டுச் சுருக்கம். 1, 2-5 அமர்காணினமர்கடந்தவர்; 6, 4 யதோடு; 9, 1 ஒவ்வா; 9, 4 செவ்வேற்,

1488. ஓரை யாயத் தொண்டொடி மகளிர்
கேழ லுழுத வருஞ்சே றிளைப்பின்
யாமை யீன்ற புலவுநாறு முட்டை
தேனா றாம்பற் கிழங்கொடு பெறூஉம்
இழுமென வொலிக்கும் புனலம் புதவிற்
பெருமா விலங்கைக் கிழவன் சீறியாழ்
இல்லோர் சொன்மலை நல்லியக் கோடனை
உடையை வாழியெற் புணர்ந்த பாலே
பாரி பறம்பிற் பனிச்சுனைத் தெண்ணீர்
ஒரூ ருண்மையி னிழந்தோர் போலக்
காணாது கழிந்த வைகல் காண
வழிநாட் கிரங்குமென் னெஞ்சமவன்
கழிமென் சாயல் காண்டொறு நினைந்தே.

(புறம், 176)

1489. நிரப்பாது கொடுக்குஞ் செல்வமு மிலனே
இல்லென மறுக்குஞ் சிறுமையு மிலனே
இறையுறு விழுமந் தாங்கி யமரகத்
திரும்புசுவைக் கொண்ட விழுப்புண்ணோய் தீர்ந்து
மருந்துகொள் மரத்தின் வாள்வடு மயங்கி
வடுவின்றி வடிந்த யாக்கையன் கொடையெதிர்ந்
தீந்தை யோனே பாண்பசிப் பகைஞன்
இன்மை தீர வேண்டி னெம்மொடு
நீயும் வம்மோ முதுவா யிரவல
யாந்தன் னிரக்குங் காலைத் தானெம்
உண்ணா மருங்குல் காட்டித் தன்னூர்க்
கருங்கைக் கொல்லனை யிரக்குந்
திருந்திலை நெடுவேல் வடித்திசி னெனவே.

( ,, 180)

1490. உடைய னாயி னுண்ணவும் வல்லன்
கடவர் மீது மிரப்போர்க் கீயும்
வடவர் மகிழ்துணை நெடுமா னஞ்சி
இல்லிறைச் செரீஇய ஞெலிகோல் போலத்
தோன்றா திருக்கவும் வல்லன் மற்றதன்
கான்றுபடு கனையெரி போலத்
தோன்றவும் வல்லன்றான் றோன்றுங் காலே.

( ,, 315)

1491. பெ[ா]ருபோர்க் கிரிவ தவனெதிர் [ே]வ[ா]ே[ன], அவனே
தமிழ்ச்சிறு கெண்டை யிமையத்து வைத்து
வடதிசை யாண்ட தென்னவன் கடிகொள
முனிந்த கூற்றத்துப் புருவம் போல
வாங்கிருங் கொழுங்கடை வளைந்த
வேம்பி னிலையவன் சூடும் பூவே.

( ? )

---

**1490.** 3, 1 மடவர்.

1492. சில்செவி யன்னே பெருங்கேள்வி யன்னே
குறுங்கண் ணினனே நெடுங்காட்சி யன்னே
இளைய னாயினு மறிவின்மூத் தனனே
மகளி ரூடினும் பொய்யறி யலனே
கீழோர் கீழ்மை செய்யினுந் தான்றன்
வாய்மை வழுக்க மறுத்த லஞ்சி
மேனெறி படரும் பேரா ளன்னே
ஈண்டுநலந் தருதல் வேண்டிப் பாண்டியர்
பாடுதமிழ் வளர்த்த கூடலின் வடாஅது
பல்குடி துவன்றிய கள்ளியம் பெரும்பதிச்
சால்புமேந் தோன்றிய தாழி காதலின்
மேவலன் பிறர்பிறர்க் கீந்து
தானு முண்ணும் விருந்துண்டு மிகினே.

(ஆசிரிய.)

## அதி. 130. பரிசில்

1493. வளிநடந் தன்ன விரைசெல லிவுளியொடு
கொடிநுடங்கு மிசைய தேரினி ரெனாஅக்
கடல்கண் டன்ன வொண்படைத் தானையொடு
மலைமாறு மலைக்குங் களிற்றினி ரெனாஅ
உருமுடன் றன்ன வுட்குவரு முரசமொடு
செருமேம் படூஉம் வென்றியி ரெனாஅ
மண்கெழு தானை யொண்பூண் வேந்தர்
வெண்குடைச் செல்வம் வியத்தலோ விலமே
எம்மால் வியக்கப் படூஉ மோரே
இடுமுட் படப்பை மறிமேய்ந் தொழிந்த
குறுநறு முஞ்ஞைக் கொழுங்குற் றடகு
புன்புல வரகின் சொன்றியொடு பெறாஉஞ்
சீறூர் மன்ன ராயினு மெம்வயிற்
பாடறிந் தொழுகும் பண்பி னோரே
மிகப்பே ரெவ்வ முறினு மெனைத்தும்
உணர்ச்சி யில்லோ ருடைமை யுள்ளே
நல்லறி வுடையோர் நல்குரவு
உள்ளுதும் பெருமயா முவந்துநனி பெரிதே.

(புறம், 197)

1494. ஒருநாட் செல்லலெ மிருநாட் செல்லலெம்
பன்னா ளடுத்துப் பலரொடு செலினுந்
தலைநா ளன்ன பேணலன் மாதோ
இழையணி யானை யியறே ரஞ்சி
[யதியமான் பரிசில் பெறாஉங் காலம்]
நீட்டினும் நீட்டா தாயினுங் களிறுதன்
கோட்டிடை வைத்த கவளம் போலக்

**1492**. 1, 1 சிறுசெவி; 11, 2-3 (ன்) மேற்றோன்றிய; 12, 2-3 பிறாறெ பிறர்க் கீழ்ந். **1493**. 1, 3 வாச்செ, விரைச்செ; 2, 1 கொடிநடுங்கு, கொடிநடு; 9, 1 எம்பால்; 12, 1 புன்புன. **1494**. 4, 3-4 யியறேர் வஞ்சி,

கையகத் ததுவே பொய்யா காதே
அருந்தே மாந்த நெஞ்சம்
வருந்தல் வேண்டா வாழ்கவன் றாளே.

(புறம், 101)

**1495.** கடவு ளாலத்துத் தடவுச்சினைப் பல்பழம்
நெருந லுண்டு மமையாது பின்னுஞ்
செலவா னாவே கலிகொள் புள்ளினம்
அனையர் வாழியோ விரவல ரவரைப்
புரவெதிர் கொள்ளும் பெருஞ்செய் யாடவர்
உடைமை யாகுமவ ருடைமை
இன்மை யாகு மவரின் மையே.

( ,, 199)

**1496.** ஈயென விரத்த லிழிந்தன் றதனெதிர்
ஈயே னென்ற லதனினு மிழிந்தன்று
கொள்ளெனக் கொடுத்த லுயர்ந்தன் றதனெதிர்
கொள்ளே னென்ற லதனினு முயர்ந்தன்று
தெண்ணீர்ப் பரப்பி னிமிழ்திரைப் பெருங்கடல்
உண்ணா ராகுவர் நீர்வேட் டோரே
ஆவு மாவுஞ் சென்றுணக் கலங்கிச்
சேற்றொடு பட்ட சிறுமைத் தாயினும்
உண்ணீர் மருங்கி னதர்பல வாகும்
புள்ளும் பொழுதும் பழிப்பி னல்லதை
உள்ளிச் சென்றோர்ப் பழியல ரதனாற்
புலவேன் வாழிய வோரி விசும்பிற்
கருவி வானம் போல
வரையாது சுரக்கும் வள்ளியோய் நின்னே.

( ,, 204)

**1497.** நல்லவுந் தீயவு மல்ல குவியிணர்ப்
புல்லிலை யெருக்க மாயினு முடையவை
கடவுள் பேணே மென்னா வாங்கு
மடவர் மெல்லியர் செலினுங்
கடவன் பாரி கைவண் மையே.

( ,, 106)

**1498.** நாளன்று போகிப் புள்ளிடை தட்பப்
பதனன்று புக்குத் திறனன்று மொழியினும்
வறிது பெயர்குவ ரல்லர் நெறிகொளப்
பாடான் றிரங்கு மருவிப்
பீடுகெழு மலையற் பாடி யோரே.

( ,, 124)

---

**1496.** 2, 2 மென்ற; 3, 1 கொள்கெனக்; 4, 2 மென்ற; 7, 4 கலக்இச்; 10, 3-4 பழித்த லல்லதை; 12, 3 வொரீஇ; 14, 2 காக்கும். **1498.** 3, 4 வெறிகொளப்.

## அதி. 131. வாழ்த்து

1499. கொடிவிடு முத்தலைவேற் கூற்றக் கணிச்சிக்
கடிவிடு கொன்றையோன் காக்க—நெடிதுலகிற்
பூமலி நாவற் பொழிலகத்துப் போய்நின்ற
மாமலைபோல் மன்னுக நீ.

(வெண்பா. 226)

1500. கண்ணுதலோன் காக்க கடிநேமி யோன்காக்க
எண்ணிருந்தோ ளேந்திழையாள் தான்காக்கப்—பண்ணியனூற்
சென்னியர்க் களிக்குஞ் செல்வனீ
மன்னுக நாளுமிம் மண்மிசை யானே.

(பெரும்பொருள்.)

1501. ஓங்குமலைப் பெருவிற் பாம்புஞாண் கொளீஇ
ஒருகணை கொண்டு மூவெயி லுடற்றிப்
பெருவிற லமரர்க்கு வென்றி தந்த
கறைமிடற் றண்ணல் காமர் சென்னிப்
பிறைநுதல் விளங்கு மொருகண் போல
வேந்துமேம் பட்ட பூந்தார் மாற
கடுஞ்சினத்த கொல்களிறுங் கதழ்பரிய பரிமாவும்
நெடுங்கொடிய நிமிர்தேரும் நெஞ்சுடைய புகல்மறவரு மெனு
நான்குடன் மாண்ட தாயினு மாண்ட
அறநெறி முதற்றே யரசின் கொற்றம்
அதனால், நமரெனக் கோல்கோடாது
பிறரெனக் குணங்கொல்லாது
ஞாயிற் றன்ன வெந்திற லாண்மையுந்
திங்க ளன்ன தண்பெருஞ் சாயலும்
வானத் தன்ன வண்மையு மூன்றும்
உடையை யாதலி னில்லோ ரறநீ
நீடுவா ழியவிவ ணெடுந்தகை தாழ்நீர்
வெண்டலைப் புணரி யலைக்குஞ் செந்தில்
நெடுவேள் நிலைஇய காமர் வியன்றுறைக்
கடுவளி தொகுப்ப வீண்டிய
வடுவா ழெக்கர் மணலினும் பலவே.

(புறம், 55)

1502. நாகத் தன்ன பாகார் மண்டிலந்
தமவே யாயினுந் தம்மொடு செல்லா
வேற்றா ராயினும் நோற்றோர்க் கொழியும்
ஏற்ற பார்ப்பார்க் கீர்ங்கை நிறையப்
பூவும் பொன்னும் புனல்படச் சொரிந்து
பாசிழை மகளிர் பொலங்கலத் தேந்திய
நாரி தேறல் தவாது நன்மகிழ்ந்
திரவலர்க் கருங்கல மருகாது வீசி
வாழ்தல் வேண்டுமிவண் வரைந்த வைகல்

---

**1500.** 8 பண்ணியநூற். **1502.** 1, 3 பாகா.

வாழச் செய்த நல்வினை யல்ல
தாழுங் காலத் துணைபிறி தில்லை
ஒன்றுபுரிந் தடங்கிய விருபிறப் பாளர்
முத்தீப் புரையக் காண்டக விருந்த
கொற்ற நீள்குடைக் கொடித்தேர் வேந்திர்
யானறி யளவையோ விவ்வே வானத்து
வயங்கித் தோன்று மீனினு மிம்மெனப்
பரந்தியங்கு மாமழை யுறையினும்
உயர்ந்துமேந் தோன்றிப் பொலிகநுந் நாளே.

(புறம், 367)

1503. வலம்படு வாய்வா ளேந்தி யொன்னார்
களம்படக் கடந்த கழறொடித் தடக்கை
ஆர்கலி நறவி னதியர் கோமான்
போரடு திருவிற் பொலந்தா ரஞ்சி
பால்புரை பிறைநுதற் பொலிந்த சென்னி
நீல மணிமிடற் றொருவன் போல
மன்னுக பெரும நீயே தொன்னிலைப்
பெருமலை விடரகத் தருமிசைக் கொண்ட
சிறியிலை நெல்லித் தீங்கனி குறியாது
காதல் நின்னகத் தடக்கிச்
சாதல் நீங்க வெனக்கீத் தோயே.

( ,, 91)

1504. ஆவு மானியற் பார்ப்பன மாக்களும்
பெண்டிரும் பிணியுடை யீரும் பேணித்
தென்புல வாழ்நர்க் கருங்கட னிறுக்கும்
பொன்போற் புதல்வர்ப் பெறாஅ தீரும்
எம்மம்பு கடிவிடுதும் நும்மரண் சேர்மினென
அறத்தாறு நுவலும் பூட்கை மறத்திற்
கொல்களிற்று மீமிசைக் கொடிவிசும்பு நிழற்றும்
எங்கோ வாழிய குடுமி தங்கோச்
செந்நீர்ப் பசும்பொன் வயிரியர்க் கீத்த
முந்நீர் விழவி னெடியோன்
நன்னீர்ப் பஃறுளி மணலினும் பலவே.

( ,, 9)

1505. பார்ப்பார்க் கல்லது பணிபறி யலையே
பணியா வுள்ளமொ டணிவரக் கெழீஇ
நட்டோர்க் கல்லது கண்ணஞ் சலையே
வணங்குசிலை பொருதநின் மணங்கம ழகலம்
மகளிர்க் கல்லது மலைப்பறி யலையே
நிலந்திறம் பெயருங் காலை யாயினும்
கிளந்த சொன்னீ பொய்ப்பறி யலையே

**1503.** 1, 1 வளம்படு; 11, 3 வெனக்கியாத். **1505.** 2, 3 டளிவரக்; 10, 1 குன்றினிலை; 15, 1-4 நுன்னுங் கொண்டினுங் கொண்டி நுவன்றோய்.

சிறியிலை யுழிஞைத் தெரியல் சூடிக்
கொண்டமை மிகைபடத் தண்டமிழ் செறித்துக்
குன்றுநிலை தளர்க்கு முருமிற் சீறி
ஒருமுற் றிருவ ரோட்டிய வொள்வாட்
செருமிகு தானை வெல்போ ரோயே
ஆடுபெற் றழிந்த மள்ளர் மாறி
நீகண் டனையே மென்றனர் நீயும்
நுந்நுகங் கொண்டினும் வென்றோ யதனாற்
செல்வக் கோவே சேரலர் மருக
கனந்தலை யெடுத்த முழங்குகடல் வேலி
நனந்தலை யுலகஞ் செய்தநன் றுண்டெனின்
அடையெடுப் பறியா வருவி யாம்பல்
ஆயிர வெள்ள வூழி
வாழி யாத வாழிய பலவே.

(பதிற்று. 63)

**பொருட்பால் முற்றும்.**

# காமத்துப் பால்*

## அதி. 132. கைக்கிளை

1506. செய்யா ரெனினுந் தமர்செய்வ ரென்னுஞ்சொல்
மெய்யாதல் கண்டேன் விளங்கிழாய்—கையார்
வரிவளை நின்றன வையையார் கோமான்
புரிவளை போந்தியம்பக் கேட்டு.

(முத்தொள்.)

1507. திறந்திடுமின் தீயவை பிற்காண்டு மாதர்
இறந்து படிற்பெரிதா மேதம்—உறந்தையர்கோன்
தண்ணார மார்பிற் றமிழ்நர் பெருமானைக்
கண்ணாரக் காணக் கதவு.

( ,, )

1508. தாய ரடைப்ப மகளிர் திறந்திடத்
தேயத் திரிந்த குடுமியவே—யாய்மலர்
வண்டுலாஅங் கண்ணி வயமான்றேர்க் கோதையைக்
கண்டுலாஅம் வீதிக் கதவு.

( ,, )

1509. காப்படங்கென் றன்னை கடிமனை யிற்செறித்
தியாப்படங்க வோடி யடைத்தபின்—மாக்கடுங்கோன்
நன்னலங் காணக் கதவந் துளைதொட்டார்க்
கென்னைகொல் கைம்மா றினி.

( ,, )

1510. துடியடித் தோற்செவித் தூங்குகைந் நால்வாய்ப்
பிடியேயா னின்னை யிரப்பல்—கடிகமழ்தார்ச்
சேலேக வண்ணனொடு சேரி புகுதலுமெஞ்
சாலேகஞ் சார நட.

( ,, )

1511. எலாஅ மடப்பிடியே யெங்கூடற் கோமான்
புலாஅ னெடுநல்வேல் மாறன்—உலாஅங்காற்
பைய நடக்கவுந் தேற்றாயா னின்பெண்மை
ஐயப் படுவ துடைத்து.

( ,, )

1512. நீணிலத் தார்வளவ னின்மேலா னுகவு
நாணின்மை யின்றி நடத்தியால்—நீணிலங்
கண்டன்ன கொண்டல் வருங்கா விரிநாட்டுப்
பெண்டன்மை யில்லை பிடி.

( ,, )

---

* இப்பகுதி புறத்திரட்டுச் சுருக்கப் பிரதிகளில் மட்டும் உள்ளது.

**1506.** 11 வையத்தார். **1508.** 9 வண்டுலோங்; 13 கண்டுலோம். **1509.** 2 றென்னை. **1510.** 7 யிரப்பன்; 12 புகுதலுமே. **1512.** 1 நீணிலத்; 5 நாணிமை; 9-12 கண்டன்மை கொண்டலருங் காவிரி நீர்நாட்டுப்.

1513. சுடரிலைவேற் சோழன்றன் பாடல மேறிப்
படர்தந்தான் பைந்தொடியார் காணத்—தொடர்புடைய
நீல வலையிற் கயல்போற் பிறழுமே
சாலேக வாயிறொறுங் கண்.

(முத்தோள்.)

1514. போரகத்துப் பாயுமா பாயா துபாயமா
ஊரகத்து மெல்ல நடவாயோ—கூர்வேல்
மதிவெங் களியானை மாறன்றன் மார்பங்
கதவங்கொண் டியாமுந் தொழ.

( ,, )

1515. ஆடுகோ சூடுகோ வைதாக் கலந்துகொண்
டேடுகோ டாக வெழுதுகோ—நீடு
புனவட்டப் பூந்தெரியற் பொற்றேர் வழுதி
கனவட்டங் கால்குடைந்த நீறு.

( ,, )

1516. குடத்து விளக்கேபோற் கொம்பன்னார் காமம்
புறப்படா பூந்தார் வழுதி—புறப்படின்
ஆபுகு மாலை யணிமலையிற் றீயேபோல்
நாடறி கௌவை தரும்.

( ,, )

1517. வரைபொரு நீண்மார்பின் வட்கார் வணக்கு
நிரைபொரு வேன்மாந்தைக் கோவே—நிரைவளையார்
தங்கோலம் வௌவுத லாமோ வவர்தாய்மார்
செங்கோல னல்ல னென.

( ,, )

1518. வாமான்றேர்க் கோதையை மான்றேர்மேற் கண்டவர்
மாமையே யன்றோ விழப்பது—மாமையிற்
பன்னூறு கோடி யுருதோவென் மேனியிற்
பொன்னூறி யன்ன பசப்பு.

( ,, )

1519. வழுவிலெம் வீதியுள் மாறன் வருங்கால்
தொழுதேனைத் தோணலமுங் கொண்டான்—இமிழ்திரைக்
கார்க்கடற் கொற்கையார் காவலனுந் தானேயால்
யார்க்கிடுகோ பூச லினி.

( ,, )

1520. கண்டன வுண்கண் கலந்தன நன்னெஞ்சந்
தண்டப் படுவ தடமென்றோள்—கண்டா
யுலாஅ மறுகி னுறையூர் வளவற்
கெலாஅ முறைகிடந்த வாறு.

( ,, )

1521. மன்னுயிர் காவல் தனதான வவ்வுயிருள்
என்னுயிரு மெண்ணப் படுமாயின்—என்னுயிர்க்கே

**1514.** 3-4 பாயாது பாயுமா. **1517.** 3 வாரார். **1518.** 11 பழுதோ வென். **1521.** 4 விவ்வுயிருள்.

சீரொழுகு செங்கோற் செழியற்கே தக்கதோ
நீரொழுகப் பாலொழுகா வாறு.

(முத்தொள்.)

1522. என்னெஞ்சு நாணு நலனு மிவையெல்லா
மன்னன் புனனுடன் வெள்ளினன்—என்னே
அரவக லல்குலா யாறிலொன் றன்றோ
புரவலர் கொள்ளும் பொருள்.

( ,, )

1523. தானேற் றணிக்குடைக் காவலனாற் காப்பதுவும்
வானேற்ற வையக மெல்லாமால்—யானோ
எளியேனோர் பெண்பாலே னீர்ந்தண்டார் மாறன்
அளியானே லன்றென்பா ரார்.

( ,, )

1524. கனவினுள் காண்கொடா கண்ணுங் கலந்த
நனவினுள் முன்விலக்கு நாணும்—இனவங்கம்
பொங்கோதம் போழும் புகாஅர்ப் பெருமானார்
செங்கோல் வடுப்படுப்பச் சென்று.

( ,, )

1525. தானைகொண் டோடுவ தாயிற்றன் செங்கோன்மை
சேனை யறியக் கிளவேனோ—யானை
பிடிவீசும் வண்டடக்கைப் பெய்தண்டார்க் கிள்ளி
நெடுவீதி நேர்பட்ட போது.

( ,, )

1526. தெண்ணீர் நறுமலர்த்தார்ச் சென்னி யிளவளவன்
மண்ணகங் காவலனே யென்பரால்—மண்ணகங்
காவலனே யானக்காற் காவானோ மாலைவாய்க்
கோவலர்வாய் வைத்த குழல்.

( ,, )

1527. அறைபறை யானை யலங்குதார்க் கிள்ளி
முறைசெயு மென்பராற் றோழி—இறையிறந்த
அங்கோ லணிவளையே சொல்லாதோ மற்றவன்
செங்கோன்மை செந்நின்ற வாறு.

( ,, )

1528. களியானைத் தென்னன் கனவின்வந் தென்னை
யளியா னளிப்பானே போன்றான்—தெளியாதே
செங்காந்தள் மெல்விரலாற் சேக்கை தடவந்தேன்
என்காண்பே னென்னலால் யான்.

( ,, )

1529. கார்நறு நீலங் கடிக்கயத்து வைகலும்
நீர்நிலை நின்ற தவங்கொலோ—கூர்நுனைவேல்
வண்டிருக்க நக்கதார் வாமான் வழுதியாற்
கொண்டிருக்கப் பெற்ற குணம்.

( ,, )

---

**1523.** 9 எளியதனோர்; 13 அளியனே. **1524.** 2 காண்டொறுங். **1525.** 2 டோடுமே. **1529.** 3 கடியகத்து; 10 நக்காதார்; 13 கொண்டிருக்கிற்.

1530. அறிவாரார் யாமொருநாள் பெண்டிரே மாகச்
செறிவார் தலைமேல் நடந்து—மறிதிரை
மாட முரிஞ்சு மதுரையார் கோமானைக்
கூட வொருநாள் பெற.

(முத்தொள்.)

1531. அன்னையுங் கோல்கொண் டலைக்கு மயலாரும்
என்னை யழியுஞ்சொற் சொல்லுவர்—துண்ணிலைய
தெங்குண்ட தேரை படுவழிப் பட்டேன்யான்
திண்டேர் வளவன் றிறத்து.

( ,, )

1532. நீரு நிழலும்போல் நீண்ட வருளுடைய
ஊரிரே யென்னை யுயக்கொண்மின்—போரிற்
புகலுங் களியானைப் பூழியர்கோக் கோதைக்
கழலுமென் னெஞ்சங் கிடந்து.

( ,, )

1533. புலவி புறக்கொடுப்பன் புல்லிடினு ணிற்பன்
கலவி களிமயங்கிக் காணேன்—நிலவியசீர்
மண்ணாளுஞ் செங்கோல் வளவனை யானிதன்றே
கண்ணாரக் கண்டறியா வாறு.

( ,, )

1534. கைய தவன்கடலுட் சங்கமாற் பூண்டதுவுஞ்
செய்யசங் கீன்ற செழுமுத்தால்—மெய்யதுவு
மன்பொரு வேன்மாறன் வார்பொதியிற் சந்தனமால்
என்பெறு வாடுமென் றோள்.

( ,, )

1535. நாணுக்காற் பெண்மை நலனழியு முன்னின்று
காணுக்காற் கைவளையுஞ் சோருமால்—காணேனுன்
வண்டெவ்வந் தீர்தார் வயமான் வழுதியைக்
கண்டெவ்வந் தீர்வதோ ராறு.

( ,, )

1536. வாரிய பெண்ணை வருகுரும்பை வாய்த்தனபோல்
ஏரிய வாயினு மென்செய்யும்—கூரிய
கோட்டானைத் தென்னன் குளிர்சாந் தணியகலங்
கோட்டுமண் கொள்ளா முலை.

( ,, )

1537. ஏற்பக் குடைந்தாடி லேசுவ ரல்லாக்கால்
மாற்றி யிருந்தா ளெனவுரைப்பர்—வேற்கண்ணாய்
கொல்யானை மாறன் குளிர்புனல் வையைநீ
ரெல்லா மெனக்கோ ரிடர்.

( ,, )

---

**1530**. 2 யாருமொருநாள். **1532**. 13 கனலுமென். **1534**. 9-10 மன்பொருவேன் மாறன்றன். **1536**. 1 வாருயர்; 3 வருகுருப்பை; 4 வாய்ந் தனபோல்.

1538. கூடற் பெருமானைக் கூடலார் கோமானைக்
கூடப் பெறுவேனேற் கூடென்று—கூட
லிழைப்பாள்போற் காட்டி யிழையா திருக்கும்
பிழைப்பிற் பிழைபாக் கறிந்து.

(முத்தொள்.)

1539. செங்கால் மடநாராய் தென்னுறந்தை சேறியேல்
நின்கால்மேல் வைப்பெனென் கையிரண்டும்—நன்பாற்
கரையுரிஞ்சி மீன்பிறழுங் காவிரிநீர் நாடற்
குரையாயோ யானுற்ற நோய்.

( ,, )

1540. என்னை யுரையலென் பேருரைய லூருரையல்
அன்னையு மின்ன ளெனவுரையல்—பின்னையுந்
தண்படா யானைத் தமிழ்நர் பெருமாற்கென்
கண்படா வாறே யுரை.

( ,, )

1541. கடற்குனைக் கோதையைக் காண்கொடாள் வீணில்
அடைத்தாள் தனிக்கதவ மன்னை—யடைக்குமேல்
ஆயிழையா யென்னை யவன்மே லெடுத்துரைப்பார்
வாயு மடைக்குமோ தான்.

( ,, )

1542. வளையவாய் நீண்டதோள் வாட்கணா யன்னை
இளையளாய் மூத்திலள் கொல்லோ—தளையவிழ்தார்
மண்கொண்ட தானை மறங்கனல்வேல் மாறனைக்
கண்கொண்டு நோக்கலென் பாள்.

( ,, )

1543. கொடிபாடித் தேர்பாடிக் கொய்தண்டார் மாறன்
முடிபாடி முத்தாரம் பாடித்—தொடியுலக்கை
கைம்மனையி லோச்சப் பெறுவெனோ யானுமோர்
அம்மனைக் காவ லுளேன்.

( ,, )

1544. குதலைப் பருவத்தே கோழிக்கோ மானை
வதுவை பெறுகென்று ளன்னை—அதுபோய்
விளைந்தவா வின்று வியன்கானல் வெண்டேர்த்
துளங்குநீர் மாமருட்டி யற்று.

( ,, )

1545. அலங்குதார்ச் செம்பிய னோடெழிற்றோ ணோக்கி
விலங்கியான் வேண்டா வெனினு—நலந்தொலைந்து
பீர்மேற் கொளலுற்ற பேதையர்க் கென்வாய்ச்சொல்
நீர்மே லெழுந்த நெருப்பு.

( ,, )

---

**1538.** 3 கூடலர்; 14 பிழைப்பாற். **1539.** 3 தென்னுறந்தைச். **1540.** 8 பின்னையந். **1541.** 3 காண்கொட்டாள். **1542.** 12 மாறனைத் தன். **1543.** 4 மார்பன். **1544.** 14 மான்மருட்டி. **1545.** 11 பேதை யார்க்.

1546. கோட்டெங்கு சூழ்கூடற் கோமானைக் கூடவென
வேட்டாங்குச் சென்றவென் னெஞ்சறியாள்—கூட்டே
குறும்பூழ் பறப்பித்த வேட்டுவன்போ லன்னை
வெறுங்கூடு காவல்கொண் டாள்.

(முத்தொள்.)

1547. புன்னாகச் சோலை புனற்றெங்கு சூழ்மாந்தை
நன்னாக நின்றலரு நன்னாடன்—என்னாகங்
கங்கு லொருநாட் கனவினுள் தைவந்தான்
என்கொ லிவரறிந்த வாறு.

( ,, )

1548. களியானைத் தென்ன னிளங்கோவென் றெள்ளிப்
பணியாரே தம்பா ரிழக்க—அணியாகங்
கைதொழு தேனு மிழக்கோ நறுமாவின்
கொய்தளி ரன்ன நிறம்.

( ,, )

1549. கனவை நனவென் றெதிர்விழிக்குங் காணு
நனவி லெதிர்விழிக்க நாணும்—புனையிழாய்
என்க ணிவையாறு லெவ்வாறே மாமாறன்
தன்க ணருள்பெறுமா தான்.

( ,, )

1550. தளையவிழும் பூங்கோதைத் தாயரே யாவி
களையினுமென் கைதிறந்து காட்டேன்—வளைகொடுபோம்
வன்கண்ணன் வாண்மாறன் மால்யானை தன்னுடன்வந்
தென்கண் புகுந்தா னிரா.

( ,, )

1551. ஓராற்று னென்க ணிமைபொருந்த வந்நிலையே
கூரார்வேன் மாறனென் கைப்பற்ற—வாரா
நனவென் றெழுந்திருந்தே னல்வினையொன் றில்லேன்
கனவு மிழந்திருந்த வாறு.

( ,, )

1552. ஊட லெனவொன்று தோன்றி யலருறாஉங்
கூட லிழந்தேன் கொடியன்னாய்—நீடெங்கின்
பாளையிற் றேன்றொடுக்கும் பாய்புன னீர்நாட்டுக்
காளையைக் கண்படையுட் பெற்று.

( ,, )

1553. ஆய்மணிப் பைம்பூ ணலங்குதார்க் கோதையைக்
காணிய சென்று கதவடைத்தே—நாணிப்
பெருஞ்செல்வ ரில்லத்து நல்கூர்ந்தார் போல
வருஞ்செல்லும் பேருமென் னெஞ்சு.

( ,, )

---

**1546.** 2 சூழ்மாந்தைக். **1551.** 10-11 றெழுந்தே னலவினையொன். **1552.** 12 னீர்நாட. **1553.** 7 கதவடைத்தேன்.

1554. நாணொருபால் வாங்க நலனொருபா லுண்ணெகிழ்ப்பக்
காமருதோட் கிள்ளிக்கென் கண்கவற்ற—யாமத்
திருதலைக் கொள்ளியி னுள்ளெறும்பு போலத்
திரிதரும் பேருமென் னெஞ்சு.

(முத்தொள்.)

1555. வரக்கண்டு நாணாதே வல்லையா னெஞ்சே
மரக்கண்ணோ மண்ணாள்வார் கண்ணென்—றிரக்கண்டாய்
வாளுழுவை வெல்கொடியான் வண்புனனீர் நாடற்கென்
தோளெழுவந் தோன்றத் தொழுது.

( ,, )

1556. உருவாய் நிலத்த துயர்மணன்மே லேறி
நருவாய்முத் தீன்றசைந்த சங்கம்—புருவான்
திரைவரவு பார்த்திருக்குந் தென்கொற்கைக் கோமான்
உரைவரவு பார்த்திருக்கு நெஞ்சு.

( ,, )

1557. கடும்பனித் திங்கட்டன் கைபோர்வை யாக
நெடுங்கடை நின்றதுகொல் தோழி—நெடுஞ்சினவேல்
ஆய்மணிப் பைம்பூ ணலங்குதார்க் கோதையைக்
காணிய சென்றவென் னெஞ்சு.

( ,, )

1558. மாறடுபோர் மன்னர் மதிக்குடையுஞ் செங்கோலுங்
கூறிடுவாய் நீயோ குளிர்வாடாய்—சோறடுவார்
ஆரத்தாற் றீமூட்டு மம்பொதியிற் கோமாற்கென்
வாரத்தாற் றோற்றேன் வளை.

( ,, )

1559. புகுவார்க் கிடங்கொடா போதுவார்க் கொல்கா
நகுவாரை நாணி மறையா—இருகரையின்
ஏமான் பிணைபோல நின்றதே கூடலார்
கோமான்பின் சென்றவென் னெஞ்சு.

( ,, )

1560. பிணிகிடந் தார்க்குப் பிறந்தநாட் போல
அணியிழை யஞ்ச வருமால்—மணியானை
மாறன் வழுதி மணவா மருண்மாலைச்
சீறியோர் வாடை சினந்து.

( ,, )

1561. பேயோ பெருந்தண் பனிவாடாய் பெண்பிறந்தா
ரேயோ வுனக்கிங் கிறைக்குடிகள்—நீயோ
களிபடுமால் யானைக் கடுமான்றேர்க் கிள்ளி
யளியிடை யற்றம்பார்ப் பாய்.

( ,, )

---

**1559.** 8 - 9 இருகரையி னேமாப்.

1562. நாம நெடுவேல் நலங்கிள்ளி சோணாட்டுத்
தாமரையு நீலமுந் தைவந்—தியாமத்து
வண்டொன்று வந்தது வாரல் பனிவாடாய்
பண்டன்று பட்டினங் காப்பு.

(முத்தொள்.)

1563. மாணார்க் கடந்த மறவெம்போர் மாறனைக்
காணக்கா லாயிரமுஞ் சொல்லுவேன் கண்டக்காற்
பூணாகந் தாவென்று புல்லப் பெறுவேனோ
நாணோ டுடன்பிறந்த நான்.

( ,, )

1564. வருக குடநாடன் வஞ்சிக்கோ மானென்
றருகல ரெல்லா மறிய—வொருகலாம்
உண்டா யிருக்கவவ் வொண்டொடியாள் மற்றவனைக்
கண்டா ளொழிந்தாள் கலாம்.

( ,, )

1565. புல்லாதார் வல்லே புலர்கென்பர் புல்லினார்
நில்லா யிரவே நெடிதென்பர்—நல்ல
விராமலர்த் தார்மாறன் வெண்சாந் தகலம்
இராவளிப் பட்ட திது.

( ,, )

1566. இப்பியீன் றிட்ட வெறிகதிர் நித்திலங்
கொற்கையே யல்ல படுவது—கொற்கைக்
குருதிவேல் மாறன் குளிர்சாந் தகலங்
கருதியார் கண்ணும் படும்.

( ,, )

1567. இவனென் னலங்கவர்ந்த கள்வ னிவனெனது
நெஞ்ச நிறையழித்த கள்வனென்—றஞ்சொலாய்
செல்லு நெறியெலாஞ் சேரலர்கோக் கோதைக்குச்
சொல்லும் பழியோ பெரிது.

( ,, )

1568. காராட் டுதிரந் தூஉ யன்னை களனிழைத்து
நீராட்டி நீங்கென்றால் நீங்குமோ—போராட்டு
வென்று களங்கொண்ட வெஞ்சினவேற் கோதைக்கென்
நெஞ்சங் களங்கொண்ட நோய்.

( ,, )

1569. யானூடத் தானுணர்த்த யானுணரா விட்டதற்பின்
தானூட யானுணர்த்தத் தானுணரான்—தேனூறு
கொய்தார் வழுதி குளிர்சாந் தணியகலம்
எய்தா திராக்கழிந்த வாறு.

( ,, )

**1562.** 12 பனிவாடை. **1565.** 9 விராஅமலர்த்; 13 இராவளியப். **1568.** 5 நீராடி.

1570. மல்லனீர் மாந்தையார் மாக்கடுங்கோக் காயினுஞ்
சொல்லவே வேண்டு நமகுறை—நல்ல
திலகங் கிடந்த திருநுதலா யஃதால்
உலகங் கிடந்த வியல்பு.*

(முத்தொள்.)

## முற்றிற்று.

---

**1570.** 7 நமது குறை. *இதன்பின் கீழ்வரும் திருக்குறளதிகாரங்களும் அடுத்துக் குறித்துள்ள எண்களுக்குரிய குறள்களும் காணப்படுகின்றன:

தகையணங்குறுத்தல், 10; குறிப்பறிதல், 9; புணர்ச்சிமகிழ்தல், 8; நலம்புனைந்துரைத்தல், 10; காதற் சிறப்புரைத்தல், 2; நாணுத்துறவுரைத்தல், 1; அலரறிவுறுத்தல், 4; பிரிவாற்றாமை, 4; படர்மெலிந்திரங்கல், 2; கண் விதுப்பழிதல், 6; பசப்புறு பருவரல், 3; தனிப்படர்மிகுதி, 6; நினைந்தவர் புலம்பல், 5; கனவுநிலை யுரைத்தல், 8; பொழுதுகண்டிரங்கல், 7; உறுப்பு நலனழிதல், 2; நெஞ்சொடு கிளத்தல், 7; நிறையழிதல், 8; அவர்வயின் விதும்பல், 1; குறிப்பறி வுறுத்தல், 4; புணர்ச்சி விதும்பல், 2; நெஞ்சொடு புலத்தல், 3; புலவி, 4; புலவிநுணுக்கம், 7; ஊடலுவகை, 7.

# அனுபந்தம்-I

## செய்யுள் முதற்குறிப் பகராதியும் மூலவிளக்கமும்

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| அஃகுநீ | 192 | ஏலாதி | 27 |
| அக்கேபோ | 262 | நாலடி | 123 |
| அகத்தன | 1335 | வெண்பா | 92 |
| அகந்தூய் | 633 | பழமொழி | 263 |
| அகப்படு | 471 | சிந்தா | 2315 |
| அகழ்கிடங் | 849 | ,, | 1444 |
| அகிலெழு | 869 | சூளா. நகர | 6 |
| அங்கட் | 1235 | வெண்பா | 16 |
| அங்கண்...னக | 451 | பழமொழி | 15 |
| அங்கண்...னமர | 1040 | நாலடி | 373 |
| அங்கொளி | 623 | சூளா. கலி | 205 |
| அங்கோலவிர் | 476 | பழமொழி | 248 |
| அச்சமலை | 545 | திரிகடு | 65 |
| அச்சமே | 206 | சிறுபஞ்ச | |
| அஞ்சனக் | 658 | சிந்தா | 1894 |
| அஞ்சுதக் | 1373 | தகடூர் | |
| அடக்கருந் | 1387 | வெண்பா | 132 |
| அடங்கி | 120 | பழமொழி | 99 |
| அடர்ந்து | 1117 | ,, | 216 |
| அடிகிழ | 488 | சூளா. நகர | 20 |
| அடிமிசை | 345 | ,, முத்தி | 22 |
| அடியதி | 1245 | பெரும்பொருள் | |
| அடுக்கல் | 653 | நாலடி | 203 |
| அடுத்தொன் | 219 | பழமொழி | 218 |
| அடுதிறன் | 1381 | தகடூர் | |
| அடுநை | 784 | புறம் | 36 |
| அடுமதில் | 1396 | முத்தொள் | |
| அடையஅடை | 674 | பழமொழி | 329 |
| அடையப் | 234 | ,, | 314 |
| அணங்குடை | 1259 | புறம் | 52 |
| அதளெறிந் | 427 | ,, | 193 |
| அதிரா | 1371 | தகடூர் | |
| அந்தக | 996 | வளையா | |
| அந்தணர் | 562 | வெண்பா | 221 |
| அந்தணரா | 1473 | முத்தொள் | |
| அந்தணரி | 1218 | நான்மணி | 34 |
| அந்தணரொ | 589 | சூளா. இரத | 119 |
| அந்தணாளர் | 17 | இரா. மந்தரை | 8 |
| அம்பலய | 151 | நாலடி | 87 |
| அம்புமழலு | 291 | ,, | 89 |
| அமர்கின்ற | 1000 | பழமொழி | 382 |
| அமர்விலங்கி | 906 | ,, | 116 |
| அமையப் | 1107 | ,, | ? |
| அமையா | 848 | ,, | 336 |
| அயலூரவன் | 86 | அறநெறி | 93 |
| அயிற்கதவம் | 1389 | முத்தொள் | |
| அரசரேறே | 1439 | சூளா. அரசி | 343 |
| அரசனுவாத்தி | 136 | ஆசார | 16 |
| அரசொடு | 297 | வளையா | |
| அரம்போற் | 56 | சிறுபஞ்ச | 61 |
| அரவின | 389 | குண்டல | |
| அரிநறுங் | 1355 | ? | |
| அரியவரை | 602 | யாப். உரை | 60 |
| அருகுள | 1141 | நாலடி | 261 |
| அருந்திய | 425 | நாரத | |
| அரும்பவிழ் | 1471 | முத்தொள் | |
| அரும்பனைத் | 912 | சிந்தா | 2154 |
| அரும்பெறல் | 33 | நாலடி | 34 |
| அரும்பொ | 995 | தகடூர் | |
| அருமணி | 1470 | முத்தொள் | |
| அருமறை | 692 | திரிகடு | 55 |
| அருமை | 891 | பழமொழி | 23 |
| அருவரை | 1261 | வெண்பா | 61 |
| அருவிலை | 698 | பழமொழி | 136 |
| அருளுடைமை | 146 | ,, | ? |
| அருளுடையாறு | 893 | ,, | 269 |
| அருளுமே | 1035 | சிந்தா | 247 |
| அரையது | 357 | ஆசிரிய | |
| அல்லதுசெய் | 171 | பழமொழி | 173 |
| அல்லலொரு | 645 | ,, | 53 |
| அல்லவைசெய் | 1192 | ,, | 290 |
| அல்லவையுட் | 822 | பழமொழி | 326 |
| அல்லித்தா | 468 | சிந்தா | 2876 |
| அலங்குதண் | 911 | ,, | 1770 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| அலங்குதார்ச் | 1545 | முத்தொள் | |
| அலந்தார்க் | 1083 | திரிகடு | 41 |
| அலைப்பான் | 331 | நான்மணி | 26 |
| அலைபுனலுள் | 655 | அறநெறி | 214 |
| அவமதிப்பு | 1032 | நாலடி | 163 |
| அவாவறுக்க | 445 | ஏலாதி | 11 |
| அவிழ்மலர்க் | 1268 | வெண்பா | 53 |
| அழப்போ | 275 | ஏலாதி | 37 |
| அழல்மண்டு | 651 | நாலடி | 202 |
| அழிதலின்றி | 379 | சிந்தா | 2756 |
| அழுங்கு | 1243 | வெண்பா | 22 |
| அள்ளற் | 829 | முத்தொள் | |
| அள்ளிக் | 1142 | நாலடி | 262 |
| அளியதாமே | 1451 | புறம் | 248 |
| அளியர் | 1295 | வெண்பா | 84 |
| அளையுறை | 808 | ஆசார | 84 |
| அற்புப்பெருந் | 547 | திரிகடு | 86 |
| அற்றங்கள் | 197 | பாரதம் | |
| அற்றமின் | 737 | சூளா. மந்திர | 8 |
| அற்றவர் | 1231 | சிந்தா | 2927 |
| அற்றவுறுப் | 169 | பாரதம் | |
| அற்றாக | 246 | பழமொழி | 141 |
| அறத்தொடு | 807 | ஆசார | 85 |
| அறம்புகழ் | 149 | நாலடி | 82 |
| அறம்புரிந் | 667 | தகடூர் | |
| அறம்பெரிய | 333 | சிந்தா | 2868 |
| அறவிய | 253 | ,, | 2877 |
| அறிந்தவ | 1254 | வெண்பா | 39 |
| அறிமினற | 561 | நாலடி | 172 |
| அறியாத | 143 | ஆசார | 100 |
| அறியாப் | 580 | நாலடி | 171 |
| அறியாமை | 1139 | பழமொழி | ? |
| அறிவதறிந் | 62 | நாலடி | 74 |
| அறிவன் | 818 | பழமொழி | 207 |
| அறிவாரா | 1530 | முத்தொள் | |
| அறிவினான் | 528 | பழமொழி | 271 |
| அறுவர்தந் | 511 | ஏலாதி | 75 |
| அறைபறை | 1527 | முத்தொள் | |
| அறையுமாடரங் | 14 | இராமா. பாயி | 10 |
| அன்பறிந்த | 586 | பழமொழி | 257 |
| அன்பினி | 719 | சிந்தா | 1392 |
| அன்பினெ | 604 | பழமொழி | 77 |
| அன்புடைமை | 775 | பாரதம் | |
| அன்புநூலாக | 1059 | சிந்தா | 1596 |
| அன்னையுங் | 1531 | முத்தொள் | |
| அனலென | 303 | குண்டல | |
| ஆஅமெனக் | 584 | பழமொழி | 7 |
| ஆக்கப்படுக்கு | 130 | வளையா | |
| ஆகாதெனினு | 177 | நாலடி | 337 |
| ஆகுஞ்சமயத் | 454 | பழமொழி | 127 |
| ஆசையல்குற் | 1060 | நாரத | |
| ஆட்புலங் | 1356 | ? | |
| ஆடகச் | 466 | சிந்தா | 510 |
| ஆடரவம் | 1334 | வெண்பா | 86 |
| ஆடுகோசூடு | 1515 | முத்தொள் | |
| ஆடுகோடாகி | 704 | நாலடி | 192 |
| ஆடுநனி | 1179 | புறம் | 164 |
| ஆண்டகை | 788 | பழமொழி | 178 |
| ஆண்டீண் | 939 | ,, | 112 |
| ஆணமுடைய | 761 | ,, | 223 |
| ஆணியாக் | 634 | ,, | 308 |
| ஆதிநா | 777 | சூளா. தூது | 136 |
| ஆம்பொருள் | 467 | சிந்தா | 848 |
| ஆமாலோ | 599 | பழமொழி | 233 |
| ஆமினி | 432 | வெண்பா | 187 |
| ஆய்குரங் | 1045 | வளையா | |
| ஆய்ந்த | 316 | பழமொழி | 268 |
| ஆய்மணிப் | 1553 | முத்தொள் | |
| ஆயாதறிவயர்ந் | 374 | வெண்பா | 270 |
| ஆயிரங் | 742 | சாந்தி | |
| ஆயிரவ | 962 | பழமொழி | 17 |
| ஆர்கலி | 601 | இரும்பல் | |
| ஆர்த்த | 1167 | நாலடி | 290 |
| ஆர்ப்பெழு | 1402 | புறம் | 81 |
| ஆர்வமே | 544 | ஏலாதி | 61 |
| ஆரந்தாழ்ந்த | 1479 | புறம் | 59 |
| ஆருயிர் | 255 | சூளா. துறவு | 170 |
| ஆலவாய்க் | 841 | இரா. நாட்டு | 9 |
| ஆவதற்கு | 18 | ,, மந்தரை | 10 |
| ஆவிற் | 185 | பழமொழி | 152 |
| ஆவுமானியற் | 1504 | புறம் | 9 |
| ஆவேறுரு | 435 | நாலடி | 118 |
| ஆளுங் | 1348 | பெரும்பொருள் | |
| ஆற்றப் | 1001 | பழமொழி | 126 |
| ஆற்றல் | 482 | சூளா. மந்திர | 12 |
| ஆற்றவினை | 796 | பழமொழி | 155 |
| ஆற்றவுங் | 500 | ,, | 55 |
| ஆற்றா | 324 | ,, | 252 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| ஆற்றூர் | 606 | நாலடி | 196 |
| ஆற்றுமிள | 502 | பழமொழி | 60 |
| ஆற்றுமின் | 256 | வளையா | |
| ஆறிலொன் | 669 | சூளா. நகர | 19 |
| ஆன்படு | 578 | நாலடி | 239 |
| ஆன்முலை | 115 | புறம் | 34 |
| ஆனையடியு | 330 | பாரதம் | |
| ஆனையூற்றின் | 292 | சாந்தி | |
| இகலின் | 598 | பழமொழி | 384 |
| இகழ்ச்சி | 660 | சூளா. சீய | 56 |
| இகழ்த | 1370 | தகடூர் | |
| இசைந்த | 577 | நாலடி | 187 |
| இசையாதெனி | 708 | ,, | 194 |
| இசையாவொரு | 240 | ,, | 111 |
| இசையுமெனி | 695 | ,, | 152 |
| இசைவ | 236 | பழமொழி | 24 |
| இஞ்சிமாக | 850 | சிந்தா | 143 |
| இடத்தொடு | 609 | ,, | 1927 |
| இடம்பட | 992 | நாலடி | 116 |
| இடியா | 1347 | பெரும்பொருள் | |
| இடுக்கண் | 713 | சிந்தா | 509 |
| இடுகுடைத் | 1020 | பழமொழி | 309 |
| இடையீடு | 954 | ,, | 113 |
| இணரோங்கி | 533 | ,, | 78 |
| இதுமன்னும் | 452 | ,, | 84 |
| இந்திரியக் | 129 | அறநெறி | 192 |
| இந்நோ | 329 | பாரதம் | |
| இப்பியீன் | 1566 | முத்தொள் | |
| இம்மியரிசித் | 210 | நாலடி | 94 |
| இம்மூவுலகி | 541 | வெண்பா | 167 |
| இம்மைச் | 1485 | புறம் | 134 |
| இம்மைத் | 284 | பழமொழி | 346 |
| இம்மைநல | 311 | சிறுபஞ்ச | ? |
| இம்மைப் | 1013 | பழமொழி | 188 |
| இம்மையு | 1090 | நாலடி | 294 |
| இயற்பகை | 1006 | பழமொழி | 51 |
| இரந்து | 181 | திரிகடு | 73 |
| இரப்பவர்க் | 217 | பழமொழி | 344 |
| இரவலர்தம் | 221 | ,, | 381 |
| இரவலர்வம்மி | 1437 | தகடூர் | |
| இரியல் | 1280 | முத்தொள் | |
| இருக்கை | 1084 | நாலடி | 143 |
| இருங்கண் | 1260 | பதிற்று | |
| இருசுடர் | 1333 | ஆசிரிய | |
| இருநிலஞ் | 1425 | களவழி | 22 |
| இருநிலமருங்கி | 1251 | தகடூர் | |
| இருபாற் | 1368 | ஆசிரிய | |
| இரும்பனை | 781 | புறம் | 45 |
| இரும்பிடித் | 783 | ,, | 44 |
| இரும்பினிரும் | 556 | நான்மணி | 34 |
| இருமுந்நீர்க் | 672 | புறம் | 20 |
| இருளாய்க் | 971 | திரிகடு | 93 |
| இருளே | 433 | அறநெறி | 146 |
| இல்லமிளமை | 418 | நாலடி | 53 |
| இல்லாமை | 1174 | ,, | 303 |
| இல்லார்க் | 1124 | திரிகடு | 68 |
| இல்லாவிடத்து | 224 | நாலடி | 91 |
| இல்லியலார் | 434 | சிறுபஞ்ச | 35 |
| இல்லெனின் | 355 | வளையா | |
| இல்வாழ்க்கை | 968 | பழமொழி | 208 |
| இவ்வே | 780 | புறம் | 95 |
| இவனென் | 1567 | முத்தொள் | |
| இவனே | 1342 | தகடூர் | |
| இழித்தக்க | 1095 | நாலடி | 302 |
| இழுக்க | 575 | திரிகடு | 14 |
| இழுமென | 1453 | தகடூர் | |
| இழைபொறை | 615 | சிந்தா | 1928 |
| இ[ள]ங்களி | 1397 | முத்தொள் | |
| இளமைகழியும் | 429 | ஏலாதி | |
| இளமைநிலை | 421 | வெண்பா | 273 |
| இளமைப் | 1221 | நான்மணி | 93 |
| இளமையுநிலை | 396 | வளையா | |
| இளமையுமெழி | 397 | மேருமந்தர | 109 |
| இளையர் | 542 | பெரும்பொருள் | |
| இளையருட் | 1302 | சூளா. அரசி | 131 |
| இளையா | 163 | நாலடி | 65 |
| இளையோர் | 1449 | புறம் | 242 |
| இற்றைப் | 1327 | பெரும்பொருள் | |
| இறந்தநற் | 494 | குண்டல | |
| இறந்தபிறப்பிற் | 460 | அறநெறி | 59 |
| இறப்பச் | 209 | நாலடி | 99 |
| இறப்பநினையுங் | 581 | ,, | 174 |
| இறப்பநமக் | 326 | பாரதம் | |
| இறப்பப் | 666 | தகடூர் | |
| இறப்பவெமக் | 612 | பழமொழி | 198 |
| இறைவர்முற் | 802 | ஆசார | 71 |
| இன்சொல் | 212 | அறநெறி | 112 |
| இன்சொலளா | 100 | ஏலாதி | 7 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| இன்சொலா | 106 | நான்மணி | 104 |
| இன்பமுடம்பு | 1404 | தகடூர் | |
| இன்புகை | 364 | சிந்தா | 1576 |
| இன்மை | 353 | வளையா | |
| இன்றாது | 178 | நாலடி | 359 |
| இன்றியமையா | 32 | பழமொழி | 303 |
| இன்றுபக | 1300 | வெண்பா | 69 |
| இன்றுளா | 395 | அறநெறி | 111 |
| இன்னதன்மை | 377 | சிந்தா | 2754 |
| இன்னரென | 1309 | வெண்பா | 47 |
| இன்னாசெ..விட | 943 | நாலடி | 225 |
| இன்னாசெ..விடு | 942 | ,, | 226 |
| இன்னாத | 1215 | நான்மணி | 17 |
| இன்னாவியைக | 1182 | நாலடி | 306 |
| இனநன்மை | 1087 | ,, | 146 |
| இனிநினைந் | 368 | புறம் | 243 |
| இனியாரு | 701 | பழமொழி | 161 |
| ஈட்டலுந் | 1147 | நாலடி | 280 |
| ஈட்டியவெல் | 1161 | பெரும்பொருள் | |
| ஈட்டியவொண் | 1079 | பழமொழி | 217 |
| ஈண்டலரிதா | 354 | வளையா | |
| ஈண்டுநீர் | 464 | நாலடி | 109 |
| ஈதற்குச் | 1223 | திரிகடு | 90 |
| ஈயென | 1496 | புறம் | 204 |
| ஈவாரி | 213 | அறநெறி | 221 |
| ஈவாரைக் | 878 | பரிபாடலுறுப்பு | |
| ஈன்றாள் | 142 | ஆசார | 65 |
| ஈன்றுபுறந் | 1410 | புறம் | 312 |
| ஈனுலகத் | 28 | பழமொழி | 6 |
| உகுவாய் | 1556 | முத்தொள் | |
| உச்சியம் | 138 | ஆசார | 43 |
| உடற்றும் | 386 | சிந்தா | 2620 |
| உடாஅது | 342 | நாலடி | 10 |
| உடைநடை | 139 | ஆசார | 49 |
| உடைப்பெருஞ் | 627 | பழமொழி | 200 |
| உடையதனைக் | 887 | ,, | 282 |
| உடையானுயி | 1490 | புறம் | 315 |
| உடையிட்டார் | 908 | சிறுபஞ்ச | 40 |
| உண்டது | 1375 | தகடூர் | |
| உண்டாலம்ம | 1135 | புறம் | 182 |
| உண்டியின் | 1258 | தகடூர் | |
| உண்டியுட் | 89 | வளையா | |
| உண்ணாளெளி | 341 | நாலடி | 9 |
| உண்மையு | 1357 | ? | |
| உணங்கு | 1263 | வெண்பா | 67 |
| உணரவுணரு | 582 | நாலடி | 247 |
| உணற்கினிய | 521 | பழமொழி | 61 |
| உபகாரஞ் | 167 | நாலடி | 69 |
| உமிவுமுயர்ந் | 801 | ஆசார | 70 |
| உய்த்தொன்றி | 473 | வளையா | |
| உயர்குடி | 26 | ,, | |
| உயிர்களோம்பு | 266 | ,, | |
| உயிர்நோய் | 270 | சிறுபஞ்ச | 31 |
| உரிஞ்சி | 1194 | பழமொழி | 170 |
| உரிதினிற் | 176 | ,, | 25 |
| உரிதினினொரு | 591 | சூளா. மந்திர | 36 |
| உருத்தகு | 904 | பழமொழி | 378 |
| உருவக் | 1419 | களவழி | 4 |
| உருவத் | 1391 | முத்தொள் | |
| உருவப் | 1386 | ? | |
| உருவமென் | 408 | சிந்தா | 1585 |
| உருவழிக்கு | 1072 | பாரதம் | |
| உரைசான்ற | 450 | பழமொழி | 125 |
| உரைத்தவர் | 1021 | ,, | 176 |
| உரைப்பி | 1244 | வெண்பா | 27 |
| உரைமுடிவு | 664 | பழமொழி | 21 |
| உலகமொரு | 866 | பரிபாடலுறுப்பு | |
| உலகுடன் | 337 | வளையா | |
| உலகுபொதி | 1438 | ? | |
| உலகெலாந் | 38 | பாரதம் | |
| உலப்பிலுலகத் | 730 | பழமொழி | 212 |
| உவப்ப | 587 | ,, | 327 |
| உழந்த | 636 | ,, | 211 |
| உழந்தாலும் | 387 | சிந்தா | 2621 |
| உழந்துழந் | 320 | அறநெறி | 102 |
| உழிஞை | 1322 | வெண்பா | 95 |
| உழுதுநன் | 1291 | சூளா. சீய | 112 |
| உழுதுபயன் | 1153 | வெண்பா | 164 |
| உழுதூர் | 1460 | புறம் | 322 |
| உழையிருந் | 631 | பழமொழி | 86 |
| உள்கூர் | 1166 | நாலடி | 286 |
| உள்ளத் | 961 | ,, | 128 |
| உள்ளது | 392 | ஆசிரிய | |
| உள்ளதொருவ | 170 | பழமொழி | 17 |
| உள்ளமுடை | 710 | சிந்தா | 496 |
| உள்ளமொரு | 1041 | நாலடி | 380 |
| உள்ளமொழி | 1064 | சிந்தா | ? |
| உள்ளுநின் | 595 | சூளா. மந்திர | 2 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| உள்ளூரவரா | 187 | பழமொழி | 108 |
| உளநாள் | 991 | நாலடி | 324 |
| உளையச் | 614 | பாரதம் | |
| உளையவுரை | 644 | பழமொழி | 299 |
| உற்றதற் | 1004 | ,, | 83 |
| உற்றது | 743 | இரா. மந்திர | 7 |
| உற்றநலத் | 84 | பாரதம் | |
| உற்றவுதிர | 423 | வளையா | |
| உற்றுலிறைவற் | 921 | பழமொழி | 239 |
| உற்றுனுறுஅ | 624 | ,, | 38 |
| உற்றுழி | 514 | புறம் | 183 |
| உறக்குந் | 211 | நாலடி | 38 |
| உறங்கு | 668 | சிந்தா | 248 |
| உறுஅவகை | 1026 | பழமொழி | 305 |
| உறுசுடர் | 1307 | வெண்பா | 134 |
| உறுப்புக்கள் | 412 | குண்டல | |
| உறுபடை | 603 | சிந்தா | 814 |
| உறுபுலி | 705 | நாலடி | 193 |
| உறுமக்க | 635 | பழமொழி | 172 |
| உறுவர்ப் | 566 | சிந்தா | 2816 |
| உறையார் | 1116 | வெண்பா | 185 |
| ஊக்கமுரண் | 699 | ,, | 100 |
| ஊக்கித்தாங் | 272 | நாலடி | 57 |
| ஊக்கியுழந் | 888 | பழமொழி | 315 |
| ஊடலென | 1552 | முத்தொள் | |
| ஊரங்கண | 557 | நாலடி | 175 |
| ஊழாயினுரைக் | 639 | பழமொழி | 371 |
| ஊறுசெய் | 1043 | நாலடி | 379 |
| ஊன்சுவைத் | 267 | சிந்தா | 1235 |
| ஊன்சே | 366 | ,, | 2797 |
| ஊனுண் | 1112 | நான்மணி | 65 |
| எங்கண் | 661 | பழமொழி | 322 |
| எங்கோ | 1476 | புறம் | 54 |
| எங்ஙன | 1047 | வளையா | |
| எச்சிலார் | 134 | ஆசார | 5 |
| எடுத்தத | 734 | சூளா. மந்திர | 15 |
| எண்ணக் | 446 | பழமொழி | 273 |
| எண்ணின்றி | 293 | வளையா | |
| எண்ணின | 483 | சூளா. நகர | 17 |
| எண்ணினிட | 828 | வெண்பா | 205 |
| எத்துணை | 90 | வளையா | |
| எதிர்த்த | 997 | பழமொழி | 390 |
| எந்நெறி | 94 | ,, | 8 |
| எப்பணி | 77 | பாரதம் | |
| எம்மை | 1033 | நாலடி | 165 |
| எமக்குத் | 696 | பழமொழி | 56 |
| எமரிது | 794 | ,, | 31 |
| எய்தவின்னல் | 725 | இராமாவ | ? |
| எய்ப்புழி | 953 | பழமொழி | 291 |
| எரிதலைக் | 301 | சிந்தா | 1536 |
| எரிபுரை | 400 | சூளா. துறவு | 7 |
| எரிபொன் | 381 | சிந்தா | 2758 |
| எரியுந்தீத் | 1008 | சூளா. சீய | 71 |
| எரியுமாணை | 490 | ,, | 22 |
| எருமை | 569 | புறம் | 5 |
| எல்லாத் | 1022 | பழமொழி | 376 |
| எல்லையென | 686 | ,, | 272 |
| எலாஅ | 1511 | முத்தொள் | |
| எவ்வந் | 457 | பழமொழி | 63 |
| எவ்வாயு | 1422 | களவழி | 26 |
| எள்ளப் | 691 | திரிகடு | 85 |
| எள்ளற்க | 1213 | நான்மணி | 3 |
| எள்ளிப் | 168 | அறநெறி | 101 |
| எளிதென | 49 | ஆசிரிய | |
| எற்கண் | 1405 | தகடூர் | |
| எறிசுற | 872 | சிந்தா | 1446 |
| எறிபுனக் | 1443 | புறம் | 231 |
| எறியென் | 82 | நாலடி | 363 |
| என்பாயுகினு | 1094 | ,, | 292 |
| என்பினை | 406 | சிந்தா | 1577 |
| என்றும் | 1183 | நாலடி | 307 |
| என்னெஞ்சு | 1522 | முத்தொள் | |
| என்னை | 1540 | ,, | |
| எனக்குத் | 191 | பழமொழி | 102 |
| எனதெனச் | 413 | குண்டல | |
| எனதெனதென் | 238 | நாலடி | 276 |
| எனைப்பலவே | 885 | பழமொழி | 68 |
| ஏமார்ந்த | 1042 | நாலடி | 378 |
| ஏர்பரந்த | 1297 | புறம் | 338 |
| ஏற்பக் | 1537 | முத்தொள் | |
| ஏற்றகை | 223 | நாலடி | 98 |
| ஏற்றூர்கட் | 242 | பழமொழி | 318 |
| ஏனைய | 1433 | முத்தொள் | |
| ஐங்குரவ | 1205 | திரிகடு | 97 |
| ஐயங்களைந் | 1262 | வெண்பா | 64 |
| ஐயறிவுந் | 726 | திரிகடு | 61 |
| ஐயோவெனின் | 1448 | புறம் | 255 |
| ஒக்கும் | 117 | பழமொழி | 260 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| ஒண்கதிர் | 558 | நாலடி | 176 |
| ஒத்தபொருளா | 1052 | வளையா | |
| ஒருதிசை | 571 | புறம் | 121 |
| ஒருநன்றி | 1204 | நாலடி | 357 |
| ஒருநாட் | 1494 | புறம் | 101 |
| ஒருபுடை | 1086 | நாலடி | 148 |
| ஒருமையாற் | 487 | சூளா. மந்திர | 29 |
| ஒருவரகத் | 770 | பாரதம் | 165 |
| ஒருவருரைப்ப | 749 | பழமொழி | 352 |
| ஒருவரொரு | 1184 | நாலடி | 309 |
| ஒருவனதி | 245 | சூளா. சீய | 204 |
| ஒருவனறி | 621 | நான்மணி | 102 |
| ஒருவனை | 1462 | புறம் | 76 |
| ஒல்லாதொன் | 881 | பழமொழி | 145 |
| ஒல்லெனீர் | 768 | வெண்பா | 172 |
| ஒல்வ | 1123 | திரிகடு | 26 |
| ஒழிந்த | 352 | வளையா | |
| ஒழுக்கமே | 204 | சிந்தா | 2822 |
| ஒள்வாள் | 1296 | வெண்பா | 94 |
| ஒள்வாளமரு | 480 | ,, | 195 |
| ஒளியு | 1063 | அறநெறி | 145 |
| ஒளிவிடு | 785 | தகடூர் | |
| ஒற்றர் | 694 | சிந்தா | 1921 |
| ஒற்றினா | 693 | இனிய | 35 |
| ஒன்றாய | 280 | சிந்தா | 962 |
| ஒன்றிலிரண் | 563 | வெண்பா | 225 |
| ஒன்றுநரம் | 688 | பாரதம் | |
| ஒன்றுநன் | 592 | சூளா. இரத | 118 |
| ஒன்னா | 1265 | வெண்பா | 81 |
| ஓஒவுவமை | 1424 | களவழி | 36 |
| ஒங்குமலை | 1501 | புறம் | 55 |
| ஒதங் | 1151 | வெண்பா | 163 |
| ஒதநீர் | 531 | பழமொழி | 393 |
| ஒதலு | 1075 | அறநெறி | 148 |
| ஒதியு | 1146 | நாலடி | 270 |
| ஒர்த்த | 964 | பழமொழி | 168 |
| ஒராற்றா | 1551 | முத்தொள் | |
| ஒரில் | 443 | புறம் | 194 |
| ஒருமொருவ | 1080 | பழமொழி | 340 |
| ஒரையாயத் | 1488 | புறம் | 176 |
| கங்கை | 1246 | பெரும்பொருள் | |
| கச்சியொரு | 1393 | முத்தொள் | |
| கட்கினியாள் | 69 | நாலடி | 384 |
| கட்டியன்ன | 1372 | தகடூர் | |
| கட்டுடைத் | 632 | பழமொழி | 118 |
| கடமாதொலைச் | 1096 | நாலடி | 300 |
| கடல்கிளர்ந் | 1417 | புறம் | 295 |
| கடல்சார்ந் | 539 | நாலடி | 245 |
| கடல்புக்கு | 1247 | பெரும்பொருள் | |
| கடலிரண் | 1352 | சூளா. அரசி | 138 |
| கடவுளாலத் | 1495 | புறம் | 199 |
| கடற்குட்டம் | 506 | நான்மணி | 16 |
| கடற்றானைக் | 1541 | முத்தொள் | |
| கடிகமழ் | 1266 | வெண்பா | 85 |
| கடித்துக் | 1088 | நாலடி | 156 |
| கடிப்பிடு | 244 | ,, | 100 |
| கடிமாலை | 361 | சிந்தா | 1574 |
| கடுக்கெனச் | 1201 | நாலடி | 348 |
| கடுங்கண் | 1359 | வெண்பா | 139 |
| கடும்பனித் | 1557 | முத்தொள் | |
| கடைநின்ற | 216 | சூளா. துறவு | 158 |
| கடையாயார் | 929 | நாலடி | 216 |
| கடையெல்லா | 1114 | ,, | 297 |
| கடைவிலக் | 799 | ஆசார | 66 |
| கண்டதே | 709 | நான்மணி | 39 |
| கண்டறியார் | 1099 | பழமொழி | 251 |
| கண்டன | 1520 | முத்தொள் | |
| கண்ணகன் | 3 | திரிகடு | காப்பு |
| கண்ணார் | 1472 | முத்தொள் | |
| கண்ணிகார் | 8 | புறம் | கடவுள் |
| கண்ணிற் | 1209 | நான்மணி | 56 |
| கண்ணின் | 1011 | பழமொழி | 89 |
| கண்ணாக் | 687 | திரிகடு | 52 |
| கண்ணாங் | 509 | சிறுபஞ்ச | 94 |
| கண்ணாத | 1500 | பெரும்பொருள் | |
| கண்ணெனப் | 481 | சூளா. மந்திர | 30 |
| கண்மூன்று | 4 | இனிய | கடவுள் |
| கண்வனப்பு | 478 | சிறுபஞ்ச | 8 |
| கணக்காய | 1227 | திரிகடு | 10 |
| கணமலை | 1202 | நாலடி | 353 |
| கதிரோடை | 1324 | வெண்பா | 98 |
| கயவரைக் | 1082 | திரிகடு | 77 |
| கரணம் | 1048 | வளையா | |
| கரப்பவர்க்கு | 260 | நான்மணி | 38 |
| கரப்பவர்நீர் | 1222 | திரிகடு | 102 |
| கரப்புடை | 218 | பழமொழி | 169 |
| கரவாத | 1181 | நாலடி | 305 |
| கரிபரந் | 1278 | முத்தொள் | |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| கரியமாலினுங் | 16 | இரா. மந்தரை | 7 |
| கருங்கடற் | 1115 | சிந்தா | 2924 |
| கருங்கலி | 1475 | இரும்பல் | |
| கருங்கழல் | 93 | வெண்பா | 211 |
| கருத்துணர் | 933 | நாலடி | 211 |
| கருத்துமாண் | 469 | சூளா. சீய | 95 |
| கருந்தொழில | 1193 | பழமொழி | 262 |
| கரும்பாட்டி | 34 | நாலடி | 35 |
| கரும்பிவை | 838 | ? | |
| கரும்பொடு | 1269 | வெண்பா | 56 |
| கரும்பொனியல் | 854 | சிந்தா | 104 |
| கருமமு | 63 | நாலடி | 250 |
| கருமவரிசை | 537 | ,, | 249 |
| கருவிமா | 24 | சிந்தா | 2752 |
| கருவினுட் | 923 | பழமொழி | 123 |
| கல்கெழு | 1248 | பெரும்பொருள் | |
| கல்லாதவ | 821 | பழமொழி | 64 |
| கல்லாதா...கற் | 516 | ,, | 2 |
| கல்லாதா...காட் | 517 | ,, | 367 |
| கல்லாதானூருங் | 518 | இன்னா | 29 |
| கல்லாதுங் | 984 | பழமொழி | 350 |
| கல்லாதுநீண்ட | 519 | நாலடி | 254 |
| கல்லாதுபோ | 1132 | ,, | 169 |
| கல்லாமை | 1089 | ,, | 145 |
| கல்லார்க் | 969 | திரிகடு | 3 |
| கல்லாரே | 523 | நாலடி | 139 |
| கல்லாவொரு | 1220 | நான்மணி | 84 |
| கல்விற் | 880 | ,, | 5 |
| கல்லெறிந் | 164 | நாலடி | 66 |
| கல்லெனீர் | 72 | வெண்பா | 279 |
| கல்லோங் | 1164 | நாலடி | 283 |
| கல்விகரை | 512 | ,, | 135 |
| கல்வியகல | 819 | பழமொழி | 264 |
| கல்வியின்மை | 313 | வளையா | |
| கல்வியினுய | 820 | பழமொழி | 3 |
| கலிமானோயே | 1304 | தகடூர் | |
| கலிவரனூழி | 1346 | பாரதம் | |
| கவளங் | 1418 | களவழி | 14 |
| கழகத்தான் | 1081 | திரிகடு | 42 |
| கழிந்தவை | 57 | சிறுபஞ்ச | 81 |
| கழுமலத் | 458 | பழமொழி | 62 |
| கள்வமென் | 179 | நான்மணி | 7 |
| கள்ளன்மின் | 199 | வளையா | |
| கள்ளியகிலுங் | 522 | பழமொழி | 87 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| கள்ளிவயிற்றி | 188 | நான்மணி | 4 |
| களங்கனி | 1482 | புறம் | 127 |
| களம்புக | 1363 | ,, | 87 |
| களமர் | 890 | பழமொழி | 177 |
| களவினுகிய | 308 | சூளா | ? |
| களிகள் | 862 | முத்தொள் | |
| களியா...கன | 1528 | ,, | |
| களியா...ளிளங் | 1548 | ,, | |
| கற்பக் | 505 | நான்மணி | 28 |
| கற்பாலுமிழ்ந்த | 12 | சிந்தா | 4 |
| கற்பொறி | 1323 | வெண்பா | 112 |
| கற்றதொன் | 534 | பழமொழி | 186 |
| கற்றவர்கடவுட் | 66 | சூளா. சீய | 202 |
| கற்றவர்கற்றன | 779 | ,, மந்திர | 189 |
| கற்றவும் | 993 | நாலடி | 340 |
| கற்றறிந்த | 125 | ,, | 256 |
| கற்றறிந்தார் | 121 | பழமொழி | 243 |
| கற்றார்பலரை | 553 | ,, | 228 |
| கற்றார்முன் | 322 | நான்மணி | 8 |
| கற்றானுங் | 515 | பழமொழி | 138 |
| கறங்கு | 282 | புறம் | 252 |
| கறங்கெனக் | 1382 | சூளா. அரசி | 146 |
| கறுத்தாற்றித் | 157 | பழமொழி | 19 |
| கனவினுள் | 1524 | முத்தொள் | |
| கனவை | 1549 | ,, | |
| கனிந்த | 448 | சாந்தி | |
| கனைகடற் | 932 | நாலடி | 138 |
| காட்சி | 39 | அறநெறி | 10 |
| காட்டகஞ் | 1249 | பெரும்பொருள் | |
| காட்டிக் | 628 | பழமொழி | 128 |
| காடுங் | 1154 | வெண்பா | 344 |
| காணிற் | 152 | நாலடி | 84 |
| காதல் | 550 | நள. கலிதொ | 39 |
| காதலார் | 915 | நாலடி | 73 |
| காதலாள் | 154 | சிந்தா | 2769 |
| காதன் | 300 | ,, | 1632 |
| காப்படங் | 1509 | முத்தொள் | |
| காப்பிறந் | 680 | பழமொழி | 320 |
| காமம் | 383 | சிந்தா | 2760 |
| காய்த | 116 | அறநெறி | 22 |
| காய்ந்தெறி | 597 | சிந்தா | 2910 |
| காய்நெல் | 684 | புறம் | 184 |
| கார்கருதி | 1344 | வெண்பா | 127 |
| கார்த்தரும் | 1369 | தகடூர் | |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| கார்த்திகைக் | 877 | பரிபாடலுறுப்பு | |
| கார்நறு | 1529 | முத்தொள் | |
| கார்மழை | 1267 | பதிற்று | 83 |
| காராட் | 1568 | முத்தொள் | |
| கால்பார் | 498 | புறம் | 185 |
| காலவெகுளிப் | 776 | தகடூர் | |
| காலாடு | 1168 | நாலடி | 113 |
| காலாளாய் | 1321 | தகடூர் | |
| காவலனை | 793 | பழமொழி | 20 |
| காவலுழவர் | 831 | முத்தொள் | |
| காவாதொரு | 165 | நாலடி | 63 |
| கான்படு | 1310 | வெண்பா | 55 |
| கான்படு | 1361 | ,, | ,, |
| கிண்கிணி | 1463 | புறம் | 77 |
| கிழிந்த | 19 | தகடூர் | |
| கிளருமெரி | 306 | சாந்தி | |
| கிளைஞர்க் | 1062 | திரிகடு | 59 |
| கூடத்து | 1516 | முத்தொள் | |
| குடரும் | 405 | நாலடி | 46 |
| குடிப்பிறப் | 827 | ஆசிரிய | |
| குடிமிசை | 671 | சூளா. மந்திர | 31 |
| குடியோம்பல் | 727 | ஏலாதி | 17 |
| குதலைப் | 1544 | முத்தொள் | |
| குந்தம் | 1379 | வெண்பா | 133 |
| குரங்கு | 1408 | ? | |
| குரையழல் | 1276 | வெண்பா | 60 |
| குலந்தரும் | 897 | வளையா | |
| குழற்சிகை | 200 | சிந்தா | 252 |
| குழாக்களிற் | 1354 | ? | |
| குழிபல | 1274 | தகடூர் | |
| குற்றமு | 916 | நாலடி | 230 |
| குன்றுயர் | 1336 | பெரும்பொருள் | |
| கூஉய்க்கொடுப் | 648 | பழமொழி | 162 |
| கூடற்பெரு | 1538 | முத்தொள் | |
| கூடிமுரசி | 1290 | வெண்பா | 45 |
| கூந்தன்மா | 1466 | முத்தொள் | |
| கூர்த்து | 318 | நாலடி | 70 |
| கூற்றமில்லை | 840 | இராமா. நாட் | 38 |
| கூற்றமுயிர் | 675 | பழமொழி | 110 |
| கூற்றுறழ் | 1314 | தகடூர் | |
| கேட்டே | 925 | வளையா | |
| கெடுகெசிந்தை | 1414 | புறம் | 279 |
| கெடுதலவ்வழி | 380 | சிந்தா | 2757 |
| கெடுவெலெனப் | 548 | பழமொழி | 394 |
| கேட்பாரை | 746 | பழமொழி | 4 |
| கேளாதே | 373 | நாலடி | 30 |
| கைப்பொருள் | 513 | சிந்தா | 1595 |
| கைபொருத | 1428 | பாரதம் | |
| கைம்மாறு | 207 | சிறுபஞ்ச | |
| கையதவன் | 1534 | முத்தொள் | |
| கையார | 161 | பழமொழி | 44 |
| கோடித்தலைத் | 1456 | முத்தொள் | |
| கொடிபாடித் | 1543 | ,, | |
| கொடிமதில் | 1392 | ,, | |
| கொடிவிடு | 1499 | வெண்பா | 226 |
| கொடுங்குழை | 1385 | புறம் | 304 |
| கொடுத்தலுங் | 1143 | நாலடி | 274 |
| கொடுப்பி | 1219 | நான்மணி | 81 |
| கொடையு | 905 | பழமொழி | 324 |
| கொண்டொழு | 1162 | ,, | 363 |
| கொய்தார | 73 | வெண்பா | 278 |
| கொல்யானை | 1420 | களவழி | 15 |
| கொல்லை | 560 | நாலடி | 178 |
| கொல்வதே | 202 | சிந்தா | 2776 |
| கொலைஞருலை | 979 | நாலடி | 331 |
| கொலைநின்று | 972 | திரிகடு | 74 |
| கொலையானை | 399 | சூளா. அரசி | 334 |
| கொலையி | 339 | ,, | ? |
| கொழித்துக் | 938 | பழமொழி | 182 |
| கொள்பொரு | 1225 | திரிகடு | 50 |
| கொன்றவன் | 332 | இராமாவ | ? |
| கொன்முன் | 327 | சிறுபஞ்ச | 69 |
| கொன்றுயிர் | 338 | சூளா | ? |
| கொன்றா | 258 | அறநெறி | 62 |
| கொன்னே | 419 | நாலடி | 55 |
| கோட்டங் | 1366 | புறம் | 275 |
| கோட்டுப்பூ | 913 | நாலடி | 215 |
| கோட்டெங்கு | 1546 | முத்தொள் | |
| கோணிலை | 677 | சிந்தா | 255 |
| கோதிலார் | 119 | சூளா. சீய | 25 |
| கோதைசித் | 493 | சிந்தா | 159 |
| கோதைமங் | 382 | ,, | 2759 |
| கோலஞ்சி | 475 | திரிகடு | 33 |
| கோலிடை | 858 | இராமா. நகர | 11 |
| கோள்வலைப் | 391 | குண்டல | |
| கோளாற்றக் | 707 | நாலடி | 191 |
| கோறலு | 195 | சிறுபஞ்ச | 12 |
| சக்கரச் | 1199 | நாலடி | 346 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| சங்கநித் | 836 | சூளா. நாட்டு | 26 |
| சங்கமேய் | 868 | ,, நகர | 2 |
| சத்தமே | 510 | சிறுபஞ்ச | 93 |
| சாக்காடு | 1130 | ஏலாதி | 79 |
| சாதலும் | 714 | சிந்தா | 269 |
| சாமெனிற் | 79 | ,, | 1598 |
| சாலமறைத் | 662 | பழமொழி | 93 |
| சாவதெளி | 753 | ஏலாதி | 39 |
| சாவாத | 393 | நான்மணி | 77 |
| சான்றாருட் | 1125 | திரிகடு | 82 |
| சான்றோருவர்ப் | 294 | வளையா | |
| சான்றோரென | 956 | நாலடி | 126 |
| சிதலைதினப் | 92 | ,, | 197 |
| சிதைவுரையான் | 107 | ஏலாதி | 34 |
| சில்செவி | 1492 | ஆசிரிய | |
| சில்சொற் | 654 | திரிகடு | 47 |
| சிலம்பிக்குத் | 190 | சிறுபஞ்ச | 10 |
| சிலையினான் | 336 | சிந்தா | 2770 |
| சிற்றில் | 1413 | புறம் | 86 |
| சிறந்ததஞ் | 417 | பழமொழி | 342 |
| சிறந்தநுகர்ந் | 247 | ,, | 215 |
| சிறப்புடைமர | 1459 | புறம் | 31 |
| சிறப்புடைமன் | 797 | பழமொழி | 295 |
| சிறிதாய | 795 | ,, | 235 |
| சிறியபொருள் | 882 | ,, | 302 |
| சிறுகாபெருகா | 463 | நாலடி | 110 |
| சிறுகாலையே | 988 | ,, | 328 |
| சிறுபுன்சில்லி | 1242 | ஆசிரிய | |
| சிறைக்கிடந்தார் | 59 | சிறுபஞ்ச | 70 |
| சிறையில் | 764 | இன்னா | 6 |
| சினத்தயில் | 860 | இரா. நகர | 12 |
| சீர்த்தகு | 1028 | பழமொழி | 383 |
| சீலமல்லன | 610 | இரா. மந்த | 19 |
| சீற்றஞ் | 495 | குண்டல | |
| சுட்டிச்சொலப் | 456 | பழமொழி | 203 |
| சுடப்பட்டுயி | 554 | ,, | 105 |
| சுடரிலை | 1513 | முத்தொள் | |
| சுந்தரச் | 739 | சூளா. மந்திர | 14 |
| சுற்றத்தார் | 616 | பழமொழி | 67 |
| சுற்றாகின் | 736 | சூளா. மந்திர | 6 |
| சூடினான் | 1455 | வெண்பா | 155 |
| சூதர்கழக | 1076 | ஆசார | 98 |
| சூதினாகத் | 765 | பாரதம் | |
| சூழ்ந்த | 1233 | வெண்பா | 10 |
| சூழிநீண் | 96 | சூளா. மந்திர | 177 |
| செங்கண் | 1252 | வெண்பா | 36 |
| செங்கணெடி | 1465 | முத்தொள் | |
| செங்கால் | 1539 | ,, | |
| செஞ்சுடர்க் | 856 | சூளா. நகர | 3 |
| செந்தீ | 1224 | திரிகடு | 98 |
| செந்நெலங் | 837 | வளையா | |
| செம்புருகு | 853 | சிந்தா | 103 |
| செம்மாந்து | 122 | பழமொழி | 131 |
| செம்மை | 148 | நாலடி | 85 |
| செய்கபொரு | 894 | சிந்தா | 497 |
| செய்குவங் | 48 | புறம் | 214 |
| செய்யாட் | 876 | பரிபாடலுறுப்பு | |
| செய்யாரெனி | 1506 | முத்தொள் | |
| செயல்வேண்டா | 552 | பழமொழி | 357 |
| செயிர்க்க | 1152 | வெண்பா | 171 |
| செயிறு | 665 | பழமொழி | 226 |
| செருக்கினால் | 1177 | திரிகடு | 25 |
| செருக்குடை | 769 | பழமொழி | 187 |
| செருக்கெழு | 792 | ,, | 76 |
| செருவெங் | 1331 | முத்தொள் | |
| செல்லற்க | 530 | பழமொழி | 392 |
| செல்லுங்காற் | 771 | பாரதம் | |
| செல்வத்துணை | 415 | பழமொழி | 274 |
| செல்வத்தைப் | 51 | அறநெறி | 67 |
| செல்வர் | 343 | நாலடி | 8 |
| செல்வழித் | 1120 | ,, | 154 |
| செவ்வரைச் | 1423 | களவழி | 35 |
| செவ்விக் | 1301 | தகடூர் | |
| செற்றதும் | 1067 | இரா. கிட்கிந் | 94 |
| செற்றன் | 1442 | புறம் | 226 |
| செறிந்தவர் | 738 | சூளா. மந்திர | 9 |
| செறிப்பில் | 960 | நாலடி | 231 |
| செறிவுடைத் | 729 | பழமொழி | 323 |
| சென்றநா | 375 | அறநெறி | 69 |
| சென்றபுகழ் | 1078 | ஏலாதி | 1 |
| சேர்ந்தா | 647 | பழமொழி | 213 |
| சேற்றுவளர் | 570 | புறம் | 27 |
| சொல்லருஞ் | 833 | சிந்தா | 53 |
| சொல்லவை | 1171 | வளையா | |
| சொல்லாமை | 68 | பழமொழி | 255 |
| சொல்லானறிப | 816 | நான்மணி | 78 |
| சொல்லுங்காற் | 756 | தகடூர் | |
| சொல்லெதிர்ந் | 967 | பழமொழி | 276 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| சொற்றாற்றுக் | 825 | நாலடி | 313 |
| சொற்றொறுஞ் | 501 | பழமொழி | 332 |
| ஞாட்பினு | 1426 | களவழி | 2 |
| நக்கதின்ன | 27 | இரா. வாலி | 112 |
| தக்கமில் | 31 | பழமொழி | 199 |
| தகாதுயிர் | 264 | வளையா | |
| தங்கட்பிறந் | 1051 | ,, | |
| தங்குற்றம் | 966 | பழமொழி | 124 |
| தடவுநிலைப் | 1486 | புறம் | 140 |
| தடமொற்ற | 772 | பாரதம் | |
| தண்சுடர்க் | 486 | சூளா. மந்திர | 32 |
| தண்ணிய | 735 | ,, இரதநூ | 116 |
| தண்ணுமை | 525 | அறநெறி | 195 |
| தத்தமக்குக் | 269 | பழமொழி | 95 |
| தந்தம்பொரு | 886 | ,, | 69 |
| தந்தீமை | 940 | ,, | 247 |
| தந்தொழி | 637 | ,, | 245 |
| தந்நடை | 565 | ,, | 288 |
| தம்மால் | 233 | ,, | 293 |
| தம்முயிர்க் | 745 | இரா. மந்திர | 9 |
| தம்மேனி | 804 | ஆசார | 77 |
| தம்மையிகழ்ந் | 249 | நாலடி | 58 |
| தம்மையிகழ்வா | 1097 | ,, | 117 |
| தமக்குற்ற | 949 | பழமொழி | 368 |
| தமரல்ல | 629 | ,, | 144 |
| தமராலுந் | 110 | ,, | 307 |
| தமருட் | 901 | வெண்பா | 41 |
| தமரென்று | 944 | நாலடி | 229 |
| தமரேயுந் | 1149 | பழமொழி | 232 |
| தமனென் | 113 | ,, | 35 |
| தருமமு | 1403 | தகடூர் | |
| தருமன் | 492 | சிந்தா | 160 |
| தலைமகனிற் | 85 | அறநெறி | 94 |
| தலைமை | 1010 | பழமொழி | 349 |
| தவத்தின் | 278 | வளையா | |
| தவலருந் | 826 | நாலடி | 137 |
| தழங்குகுரல் | 999 | பழமொழி | 97 |
| தழிச்சிய | 1273 | பெரும்பொருள் | |
| தளிப்பெயற் | 91 | வளையா | |
| தளிர்மேலே | 1203 | நாலடி | 355 |
| தளையவிழும் | 1550 | முத்தொள் | |
| தற்கொள் | 1315 | தகடூர் | |
| தற்பாடு | 679 | ஆசிரிய | |
| தற்றூக்கித் | 583 | பழமொழி | 321 |
| தறுகண்ணாண்மை | 909 | சிந்தா | 2159 |
| தன்பால் | 1303 | ,, | 443 |
| தன்றமிழ் | 875 | பரிபாடலுறுப்பு | |
| தன்னலிகிற் | 760 | பழமொழி | 156 |
| தன்னிலை | 728 | சிறுபஞ்ச | 57 |
| தன்னின் | 907 | பழமொழி | 330 |
| தன்னுடம்பு | 656 | ஆசார | 95 |
| தன்னுணர் | 732 | சூளா. இரத | 115 |
| தன்னுயிர் | 254 | சிந்தா | 3107 |
| தன்னைச்செறு | 196 | பாரதம் | |
| தன்னைத்தன் | 127 | அறநெறி | 207 |
| தன்னைத்தா | 1066 | இரா. கிஷ்கிந் | 92 |
| தன்னைமதித் | 922 | பழமொழி | 358 |
| தன்னையாக் | 1036 | சிந்தா | 245 |
| தன்னையொருவ | 321 | அறநெறி | 96 |
| தன்னைவியந்து | 546 | திரிகடு | 38 |
| தன்னைவென்ற | 491 | சூளா. சீய | 52 |
| தன்னொக்குந் | 251 | அறநெறி | 171 |
| தாக்கற்குப் | 1340 | பெரும்பொருள் | |
| தாக்குற்ற | 183 | பழமொழி | 250 |
| தாங்கன்மின் | 1378 | வெண்பா | 90 |
| தாஞ்செய் | 36 | நாலடி | 120 |
| தாட்டாழ் | 1289 | வெண்பா | 52 |
| தாமரை | 846 | ஆசிரிய | |
| தாமாற்ற | 111 | பழமொழி | 28 |
| தாமேயுந் | 1019 | ,, | 341 |
| தாமேயுமின் | 989 | நாலடி | 327 |
| தாய்வாங்கு | 1328 | பெரும்பொருள் | |
| தாயரடைப்ப | 1508 | முத்தொள் | |
| தாரம்நல்லிதஞ் | 155 | வளையா | |
| தாரேற்ற | 1312 | பழமொழி | 231 |
| தாழாத் | 360 | நாலடி | 14 |
| தாழார | 1277 | வெண்பா | 43 |
| தாளாள | 935 | திரிகடு | 12 |
| தான்கெடினுந் | 310 | நாலடி | 80 |
| தான்பிறந்த | 55 | சிறுபஞ்ச | 67 |
| தானகத்தா | 952 | பழமொழி | 210 |
| தானஞ்செய் | 424 | வளையா | |
| தானட்டொழுக | 918 | பழமொழி | 14 |
| தானத்துக் | 173 | சாந்தி | |
| தானறிந்து | 774 | பாரதம் | |
| தானேற் | 1523 | முத்தொள் | |
| தானைகொண் | 1525 | ,, | |
| திண்டோள் | 1421 | களவழி | 24 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| திரியழற் | 504 | நான்மணி | 64 |
| திரியுமிடிஞ்சி | 428 | பழமொழி | 219 |
| திருத்தன்னை | 1185 | நாலடி | 304 |
| திருந்தாய் | 950 | பழமொழி | 9 |
| திருந்திய | 45 | சிந்தா | 2935 |
| திருமதுகை | 1091 | நாலடி | 291 |
| திருவநீணகர் | 871 | சிந்தா | 126 |
| திருவுடை | 845 | பதிற்று | 28 |
| திருவொக்கும் | 1214 | நான்மணி | 8 |
| திரைகவுள் | 1239 | பெரும்பொருள் | |
| திறந்திமின் | 1507 | முத்தொள் | |
| திறலொடு | 1474 | ? | |
| தினையனைத்தே | 114 | நாலடி | 344 |
| தீண்டினர் | 1039 | சிந்தா | 250 |
| தீயனவல்ல | 1023 | பழமொழி | 234 |
| தீயாலே | 1148 | பாரதம் | |
| தீயினம் | 681 | சூளா. மந்திர | 27 |
| துக்கத்துட் | 261 | நாலடி | 121 |
| துடியடித் | 1510 | முத்தொள் | |
| துய்த்துக் | 237 | நாலடி | 273 |
| துயிலும் | 285 | பழமொழி | 353 |
| துற்றுளவாகத் | 215 | வளையா | |
| துறந்தார்...தார் | 60 | ஏலாதி | 35 |
| துறந்தார்..ரென் | 287 | அறநெறி | 25 |
| துன்னருந் | 1308 | வெண்பா | 65 |
| துன்னியிரு | 748 | பழமொழி | 347 |
| தூய்மைமனத் | 147 | ,, | 190 |
| தூய்மையுடை | 271 | திரிகடு | 78 |
| தூவயிலின் | 1353 | சூளா. அரசி | 161 |
| தெண்கடல் | 230 | புறம் | 189 |
| தெண்ணீர்நறு | 1526 | முத்தொள் | |
| தெண்ணீர்பரந் | 980 | வளையா | |
| தெரியாதவர் | 158 | பழமொழி | 135 |
| தெரியாதார் | 965 | ,, | 310 |
| தெருளா | 762 | ,, | 32 |
| தெள்ளியுணரு | 758 | ,, | 54 |
| தெளிவிலார் | 1230 | நாலடி | 219 |
| தெற்ற அறிவு | 640 | பழமொழி | 373 |
| தெற்றப்பகைவ | 685 | ,, | 313 |
| தெற்றப்பரிந் | 919 | ,, | 88 |
| தெற்றவொரு | 618 | ,, | 114 |
| தேளர்பாந்த | 1283 | பதிற்று | 26 |
| தேங்கொள் | 376 | சிந்தா | 2761 |
| தேர்ந்து | 1196 | பழமொழி | 27 |
| தேவர்வழிபாடு | 135 | ஆசார | 10 |
| தேவரனையர் | 524 | நான்மணி | 74 |
| தேன்சென்ற | 721 | சிந்தா | 1390 |
| தோக்கின | 95 | சூளா.மந்திர | 175 |
| தொடியுடைய | 1446 | புறம் | 239 |
| தொல்லவை | 1110 | திரிகடு | 8 |
| தொல்லைநம் | 718 | சிந்தா | 270 |
| தொழில்தேற்று | 1457 | முத்தொள் | |
| தொழீஇயட | 145 | சிறுபஞ்ச | 37 |
| தொழுதகம் | 1014 | சிந்தா | 1891 |
| தொழுது | 1326 | பெரும்பொருள் | |
| தொழுமக | 1172 | வளையா | |
| தொன்மை | 1138 | பழமொழி | 129 |
| தோய்தகை | 1015 | சிந்தா | 1892 |
| தோள்வழங்கி | 180 | திரிகடு | 81 |
| தோளுமென் | 1058 | சாந்தி | |
| தோற்றத்தாற் | 676 | பழமொழி | 166 |
| தோற்றமலை | 1395 | முத்தொள் | |
| தோறுதோறு | 1412 | புறம் | 300 |
| நக்கேவிலா | 296 | வளையா | |
| நகுதக்கனரே | 1305 | புறம் | 72 |
| நகைகணி | 1134 | வளையா | |
| நகையுள்ளு | 1316 | தகடூர் | |
| நகையொடு | 144 | சிறுபஞ்ச | 84 |
| நச்சியார்க் | 1150 | நாலடி | 299 |
| நசைகொல்லார் | 328 | சிறுபஞ்ச | 47 |
| நட்டாரிடுக் | 1070 | இன்னா | 26 |
| நட்பிடைக் | 201 | சிந்தா | 253 |
| நடப்பார்க் | 61 | ஏலாதி | 71 |
| நடலையில | 817 | பழமொழி | 72 |
| நடுக்குற்றுத் | 225 | நாலடி | 93 |
| நடுவூருள் | 226 | ,, | 96 |
| நண்பிலார் | 970 | திரிகடு | 94 |
| நண்பொன்றி | 936 | பழமொழி | 16 |
| நந்திவிளஞ் | 830 | முத்தொள் | |
| நயவர | 585 | பழமொழி | 229 |
| நரைவரு | 358 | நாலடி | 11 |
| நல்கூர்ந் | 1129 | பழமொழி | 100 |
| நல்லகுல | 706 | நாலடி | 195 |
| நல்லர்பெரி | 1093 | ,, | 298 |
| நல்லவும்...நாய | 744 | இரா. மந்திர | 10 |
| நல்லவும்...பிற | 747 | பழமொழி | 104 |
| நல்லவும்...மல் | 1497 | புறம் | 106 |
| நல்லவெளிப் | 1100 | சிறுபஞ்ச | 56 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| நல்லவைகண்ட | 985 | பழமொழி | 249 |
| நல்லவைசெய் | 1035 | நாலடி | 144 |
| நல்லவைநாடொ | 977 | ,, | 338 |
| நல்லார்க்கு | 1211 | நான்மணி | 83 |
| நல்லார்நயவ | 465 | நாலடி | 265 |
| நல்லாரெனத் | 941 | ,, | 221 |
| நல்லாவின் | 1169 | ,, | 115 |
| நல்வானவர் | 1311 | பாரதம் | |
| நல்விருந் | 74 | திரிகடு | 64 |
| நல்வினை | 350 | சிந்தா | 2728 |
| நலனுமிளமை | 1210 | நான்மணி | 82 |
| நலிந்தொருவர் | 958 | பழமொழி | 354 |
| நலிவில் | 766 | சிந்தா | 1919 |
| நளிகடலிருங் | 1458 | புறம் | 26 |
| நளிகடற் | 124 | நாலடி | 242 |
| நற்கறிவில்லா | 987 | பழமொழி | 270 |
| நற்பால | 160 | ,, | 94 |
| நற்றவஞ் | 832 | சிந்தா | 77 |
| நற்றுனஞ் | 40 | ,, | 1545 |
| நறுமலர்த் | 914 | நாலடி | 209 |
| நறுவிரை | 1364 | புறம் | 276 |
| நன்கன | 410 | குண்டல | |
| நன்கொன் | 109 | பழமொழி | 275 |
| நன்புலத்து | 1158 | சிறுபஞ்ச | 59 |
| நன்றிப்பயன் | 1206 | திரிகடு | 62 |
| நன்றியறிதல் | 131 | ஆசார | 1 |
| நன்றே | 920 | பழமொழி | 111 |
| நன்னிலைக்கண் | 536 | நாலடி | 248 |
| நனிபேதை | 1447 | புறம் | 227 |
| நனியஞ்சத் | 711 | பழமொழி | 265 |
| நாகத்தன்ன | 1502 | புறம் | 367 |
| நாட்டிக் | 630 | பழமொழி | 39 |
| நாடறியப் | 1103 | ,, | 278 |
| நாடனென் | 1478 | புறம் | 49 |
| நாடாகொன் | 1127 | ,, | 187 |
| நாடிநம | 112 | பழமொழி | 81 |
| நாடூரும் | 78 | வளையா | |
| நாடொறு | 1049 | ,, | |
| நாணுக்காற் | 1535 | முத்தொள் | |
| நாணொரு | 1554 | ,, | |
| நாமநெடுவேல் | 1562 | ,, | |
| நாமவேல் | 670 | சூளா. நகர | 18 |
| நாய்க்காற் | 930 | நாலடி | 218 |
| நாய்ப்பிணை | 1454 | ? | |
| நாயும்போல்வ | 1057 | சாந்தி | |
| நால்வகைச் | 857 | இராமா. நகர | 8 |
| நாலாறு | 70 | நாலடி | 383 |
| நாவினிரந்தா | 231 | பழமொழி | 238 |
| நாள்கூட்ட | 608 | சிறுபஞ்ச | 43 |
| நாளன்று | 1498 | புறம் | 124 |
| நாளினும் | 1292 | சூளா. சீய | 113 |
| நாளும்புள்ளும் | 1241 | தகடூர் | |
| நாற்றமுரைக்கு | 813 | நான்மணி | 46 |
| நிணம்பிறங் | 1351 | சிந்தா | 2225 |
| நிரந்து | 1190 | பழமொழி | 58 |
| நிரப்பாது | 1489 | புறம் | 180 |
| நிரம்பி | 1007 | பழமொழி | 103 |
| நிரைகதிர் | 1380 | முத்தொள் | |
| நிரைதொடி | 1109 | பழமொழி | 48 |
| நிரைபடச் | 806 | ஆசார | 83 |
| நிலம்பிறக் | 1384 | புறம் | 303 |
| நிலம்பொறை | 1160 | பெரும்பொருள் | |
| நிலையமை | 1376 | தகடூர் | |
| நிலையளவி | 193 | ஏலாதி | 29 |
| நிழலகந் | 867 | சூளா. நாட்டு | 4 |
| நிழனிமிர் | 299 | சிந்தா | 1555 |
| நிறந்தலை | 682 | சூளா. மந்திர | 25 |
| நிறப்புட் | 1367 | புறம் | 293 |
| நிறைமதி | 1287 | முத்தொள் | |
| நிறையான் | 80 | பழமொழி | 30 |
| நிறையி | 678 | இரா. கிளை | 100 |
| நின்றக்கால் | 803 | ஆசார | 74 |
| நின்றபுகழொடு | 102 | வெண்பா | 215 |
| நின்றன்மின் | 1288 | முத்தொள் | |
| நின்னையறப் | 128 | அறநெறி | 191 |
| நினைத்த | 812 | பழமொழி | 246 |
| நீண்டநீர் | 847 | சிறுபஞ்ச | 48 |
| நீண்முகை | 981 | வளையா | |
| நீணிலத்தார் | 1512 | முத்தொள் | |
| நீதியாலறத் | 741 | சிந்தா | 1920 |
| நீயே, இகலவ | 1487 | புறம் | 167 |
| நீயே, பிற | 572 | ,, | 40 |
| நீர்த்தன் | 983 | பழமொழி | 195 |
| நீர்பலகால் | 276 | வெண்பா | 168 |
| நீர்மிகிற் | 1293 | புறம் | 51 |
| நீரறம் | 37 | சிறுபஞ்ச | 62 |
| நீருநிழலும் | 1532 | முத்தொள் | |
| நீலநெடுங் | 5 | இரும்பல் | |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| நீரூர்ந்து | 1106 | பழமொழி | 214 |
| நீனிறங் | 365 | சிந்தா | 2940 |
| நுண்பொருளா | 1054 | வளையா | |
| நுண்மொழி | 754 | திரிகடு | 32 |
| நுதிவேல் | 1299 | புறம் | 349 |
| நூக்கியவர் | 600 | பழமொழி | 296 |
| நூற்றுவரிற் | 227 | தகடூர் | |
| நேடியது | 455 | பழமொழி | 130 |
| நெடுங்கால | 166 | நாலடி | 68 |
| நெருநலென்ப | 402 | ஆசிரிய | |
| நெருப்பழற் | 576 | நாலடி | 124 |
| நெல்லுமுயி | 497 | புறம் | 186 |
| நெறிகடந்து | 839 | இரா. நாட்டு | 39 |
| நெறியாநடை | 1401 | சூளா. அரசி | 107 |
| நெறியாலுண | 1027 | பழமொழி | 149 |
| நேமிதிமிர் | 1286 | முத்தொள் | |
| நேர்த்து | 319 | நாலடி | 64 |
| நோக்கியறி | 810 | பழமொழி | 301 |
| நோக்கியிருந் | 892 | ,, | 259 |
| நோகோ | 1445 | புறம் | 234 |
| நோய்க்குற்ற | 13 | குண்டல | |
| நோவஞ்சா | 65 | திரிகடு | 63 |
| நோவவுரைத் | 159 | பழமொழி | 45 |
| பகல்போலும் | 957 | இன்னா | 8 |
| பகலெறிப்ப | 1325 | பெரும்பொருள் | |
| பகையலாதவ | 594 | சூளா. சீய | 75 |
| பகைவர்பணி | 1113 | நாலடி | 241 |
| பகைவருள்ள | 1016 | சிந்தா | 1816 |
| பஞ்சினின் | 596 | சூளா. மந்திர | 37 |
| படைப்புப்பல | 99 | புறம் | 188 |
| படைப்பொலி | 1427 | களவழி | |
| படையளவு | 773 | பாரதம் | |
| பண்டாரம் | 641 | சிறுபஞ்ச | 39 |
| பண்டின்ன | 184 | பழமொழி | 133 |
| பண்டுருத்துச் | 449 | ,, | 191 |
| பண்ணார் | 398 | சிந்தா | 2793 |
| பத்திமை | 474 | திரிகடு | 100 |
| பந்தமிலாத | 588 | இன்னா | 2 |
| பயங்கெழு | 1180 | புறம் | 266 |
| பயனோக்கா | 208 | பழமொழி | 40 |
| பரந்த | 1101 | ,, | 34 |
| பரப்பு | 214 | அறநெறி | 220 |
| பரவா | 290 | நாலடி | 88 |
| பர்வைவெண் | 21 | சிந்தா | 2749 |
| பரவைவேற் | 1319 | தகடூர் | |
| பரியப்படு | 1118 | பழமொழி | 101 |
| பருத்தி | 1383 | புறம் | 299 |
| பருதிசூழ்ந்த | 281 | ,, | 358 |
| பருதிசெல் | 1264 | வெண்பா | 70 |
| பருவந்து | 438 | வளையா | |
| பல்கிளை | 649 | பழமொழி | 366 |
| பல்சான்றீ...கய | 568 | புறம் | 195 |
| பல்சான்றீ..செ | 1452 | ,, | 246 |
| பல்சான்றீ...வீ | 1341 | தகடூர் | |
| பல்யானை | 1285 | முத்தொள் | |
| பல்லாரவை | 186 | பழமொழி | 345 |
| பல்லாவு | 461 | நாலடி | 101 |
| பல்லான்ற | 520 | ,, | 106 |
| பலகற்றேம் | 189 | அறநெறி | 43 |
| பலதிரண்ட | 394 | பாரதம் | |
| பலநாளும் | 928 | நாலடி | 214 |
| பலநாளுமாற்று | 29 | பழமொழி | 134 |
| பலர்க்கு | 926 | புறம் | 223 |
| பவளவாய்ச் | 279 | சிந்தா | 379 |
| பழியஞ்சான் | 973 | திரிகடு | 79 |
| பள்ளமுதுநீர்ப் | 88 | வளையா | |
| பற்றென்னும் | 436 | திரிகடு | 22 |
| பறைநன்று | 924 | நான்மணி | 13 |
| பறைநிறை | 1282 | முத்தொள் | |
| பறைபட | 1098 | நான்மணி | 2 |
| பன்றிக்கூழ்ப் | 978 | நாலடி | 257 |
| பன்னாள் | 790 | பழமொழி | 365 |
| பன்னாளுஞ் | 1133 | நாலடி | 159 |
| பன்னாளு நின்ற | 453 | பழமொழி | 120 |
| பனிமதி | 298 | சிந்தா | 1554 |
| பாடமே | 823 | நாலடி | 316 |
| பாகொர்க் | 1444 | புறம் | 221 |
| பாணர் | 1480 | ,, | 12 |
| பாத்தரும் | 873 | சிந்தா | 87 |
| பாப்புக் | 951 | பழமொழி | 13 |
| பாம்புண்ட | 1208 | அறநெறி | 52 |
| பார்ப்பார்க் | 1505 | பதிற்று | 63 |
| பார்ப்பார்தவ | 141 | ஆசார | 64 |
| பார்படு | 1469 | முத்தொள் | |
| பாரசூரவம் | 910 | சிந்தா | 2160 |
| பாரதத் | 1069 | பழமொழி | 52 |
| பால்வளை | 567 | சிந்தா | 2906 |
| பாலாற் | 975 | நாலடி | 258 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| பாலோ | 559 | நாலடி | 177 |
| பாவமு | 1122 | ,, | 295 |
| பாழ்மனை | 140 | ஆசார | 57 |
| பாளையாந் | 390 | குண்டல | |
| பாற்பட்டு | 884 | பழமொழி | 333 |
| பாற்றின | 1394 | முத்தொள் | |
| பாற்றுளி | 43 | சிந்தா | 2934 |
| பிணிகிடந் | 1560 | முத்தொள் | |
| பிணிபிறப்பு | 430 | ஏலாதி | 24 |
| பிரிந்தவர்க் | 715 | சிந்தா | 1391 |
| பிளவுகெழு | 307 | சாந்தி | |
| பிறங்கின | 717 | சிந்தா | 1535 |
| பிறந்தகுல | 1165 | நாலடி | 285 |
| பிறந்தபொழு | 1318 | தகடூர் | |
| பிறந்தவர் | 46 | சிந்தா | 2622 |
| பிறந்து நாம் | 385 | ,, | 2616 |
| பிறப்பு | 132 | ஆசார | 2 |
| பிறர்தன்னை | 1226 | திரிகடு | 6 |
| பிறர்புல | 1240 | பெரும்பொருள் | |
| பிறர்மறை | 1121 | நாலடி | 158 |
| பிறரொடு | 805 | ஆசார | 78 |
| பிறவிக் | 265 | வளையா | |
| பிறன்றாரம் | 1074 | பாரதம் | |
| பிறையது | 1037 | சிந்தா | 254 |
| பீடில்செய்தி | 309 | வளையா | |
| புக்கவிடத் | 150 | நாலடி | 83 |
| புகுவார்க் | 1559 | முத்தொள் | |
| புகைவித்தாப் | 815 | நான்மணி | 31 |
| புண்ணாகப் | 526 | அறநெறி | 194 |
| புண்ணிய | 344 | சூளா. முத்தி | 15 |
| புண்பட்டார் | 58 | சிறுபஞ்ச | 77 |
| புரிமுத்த | 472 | சிந்தா | 2316 |
| புரையக் | 605 | பழமொழி | 227 |
| புல்மேய்ந் | 1234 | வெண்பா | 11 |
| புல்லாதார் | 1565 | முத்தொள் | |
| புல்லாவெழுத் | 1131 | நாலடி | 155 |
| புலமிக்கவரை | 529 | பழமொழி | 5 |
| புலவிபுறக் | 1533 | முத்தொள் | |
| புலைமயக்கம் | 1071 | திரிகடு | 39 |
| புழுமலக் | 414 | நாரத | |
| புள்ளிநீர் | 42 | சிந்தா | 2933 |
| புள்ளுவர் | 47 | ,, | 2931 |
| புன்சொல்லு | 105 | பழமொழி | 277 |
| புன்னாகச் | 1547 | முத்தொள் | |
| புன்னுனி | 372 | நாலடி | 29 |
| பூந்தண் | 1119 | பழமொழி | 153 |
| பூவுட்கும் | 325 | ,, | 335 |
| பெண்டிர் | 1170 | வளையா | |
| பெண்ணினாகிய | 156 | ,, | |
| பெண்ணணைப் | 87 | சிந்தா | 1597 |
| பெண்விழைந்து | 535 | திரிகடு | 29 |
| பெயற்பால் | 222 | நாலடி | 97 |
| பெரியகுடிப் | 1128 | பழமொழி | 356 |
| பெரியநட்டார் | 948 | ,, | 10 |
| பெரியவர் | 917 | நாலடி | 125 |
| பெரியவாட் | 153 | சிந்தா | 2821 |
| பெரியவின்பத் | 439 | ,, | 2815 |
| பெரியார்க்குச் | 963 | பழமொழி | 75 |
| பெரியார்...நட் | 946 | நாலடி | 77 |
| பெரியார்..மை | 1229 | ,, | 170 |
| பெரியாரைச் | 611 | பழமொழி | 139 |
| பெருக்குக | 1212 | நான்மணி | 88 |
| பெருகிய | 1434 | சூளா. அரசி | 267 |
| பெருகுவது | 955 | நாலடி | 234 |
| பெருஞ்சோறு | 1450 | புறம் | 220 |
| பெருநடை | 1198 | நாலடி | 343 |
| பெருநீரால் | 844 | தகடூர் | |
| பெரும்பூட் | 479 | வெண்பா | 178 |
| பெருமலை | 1191 | பழமொழி | 91 |
| பெருமுழங்கு | 470 | சிந்தா | 2556 |
| பெருமை | 974 | திரிகடு | 9 |
| பெற்றவை | 356 | நாரத | |
| பெற்றாலுஞ் | 235 | பழமொழி | 107 |
| பெறுவதொன் | 976 | நாலடி | 335 |
| பேஎய்ப் | 1163 | திரிகடு | 60 |
| பேணடக்கம் | 81 | சிறுபஞ்ச | 44 |
| பேதைமை | 384 | சிந்தா | 1389 |
| பேயோ | 1561 | முத்தொள் | |
| பேருலையுட் | 811 | பழமொழி | 348 |
| போச்சாப்புக் | 1157 | சிறுபஞ்ச | 49 |
| பொய்யகல | 899 | வெண்பா | 35 |
| பொய்யன்மின் | 198 | வளையா | |
| பொய்யில் | 431 | வெண்பா | 272 |
| பொய்யினீங்கு | 312 | வளையா | |
| பொய்யொடு | 1077 | சிந்தா | 2873 |
| பொருசின | 1338 | பெரும்பொருள் | |
| பொருத்த | 883 | பழமொழி | 242 |
| பொருந்தலாற் | 659 | சிந்தா | 1895 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| பொருந்தாத | 1003 | பழமொழி | 281 |
| பொருந்தாப் | 549 | ,, | 355 |
| பொருபோர்க் | 1491 | ? | |
| பொருவரு | 1330 | பெரும்பொருள் | |
| பொருள்போக | 620 | சிறுபஞ்ச | 58 |
| பொருளில் | 1173 | வளையா | |
| பொருளிலொ | 1228 | திரிகடு | ? |
| பொருளுடை | 248 | சிறுபஞ்ச | 2 |
| பொருளைப் | 257 | வளையா | |
| பொருளொடு | 277 | ,, | |
| பொல்லாத | 123 | பழமொழி | 184 |
| பொலந்தாரிரா | 555 | ,, | 92 |
| பொழிப்பகலம் | 755 | நாலடி | 319 |
| பொற்கலத்துப் | 652 | ,, | 206 |
| பொற்பவும் | 1102 | பழமொழி | 82 |
| பொறுப்பரெ | 1030 | நாலடி | 161 |
| பொறையிலா | 98 | வளையா | |
| பொன்பெறுங் | 508 | சிறுபஞ்ச | 55 |
| பொன்னிறச் | 1145 | நாலடி | 269 |
| பொன்னிகு | 895 | சிந்தா | 1923 |
| பொன்னும் | 1126 | புறம் | 218 |
| பொன்னே | 1034 | நாலடி | 162 |
| போகம் | 543 | ஏலாதி | 18 |
| போதர | 388 | குண்டல | |
| போர்க்குப் | 1435 | வெண்பா | 80 |
| போர்க்குரைஇ | 1294 | புறம் | 97 |
| போர்த்தலுடை | 288 | குண்டல | |
| போர்த்து | 286 | சிறுபஞ்ச | 66 |
| போர்ப்படை | 1256 | பெரும்பொருள் | |
| போரகத்துப் | 1514 | முத்தொள் | |
| போரறின் | 898 | நான்மணி | 42 |
| மக்கட்பயந்து | 1056 | வளையா | |
| மக்கட்பெறுதல் | 76 | சிறுபஞ்ச | 52 |
| மக்களாலாய | 35 | நாலடி | 37 |
| மக்களுடம்பு | 20 | அறநெறி | 212 |
| மக்களுமக்க | 622 | ,, | 211 |
| மகனுரைக்குங் | 814 | நான்மணி | 69 |
| மங்கை | 334 | சிந்தா | 2781 |
| மடங்கப் | 172 | பழமொழி | 372 |
| மடங்கலிற் | 1270 | வெண்பா | 59 |
| மடங்கா | 1464 | முத்தொள் | |
| மடியை | 626 | பழமொழி | 389 |
| மண்குளிர் | 683 | சூளா. மந்திர | 26 |
| மண்டுமெரி | 1232 | வெண்பா | 1 |
| மண்ணியல் | 593 | சூளா. மந்திர | 4 |
| மண்ணியறிப | 934 | நான்மணி | 3 |
| மண்ணின்மே | 243 | திரிகடு | 16 |
| மண்ணுளார் | 551 | குண்டல | |
| மண்பதம் | 1156 | வெண்பா | 346 |
| மதித்திறப் | 317 | நாலடி | 61 |
| மதிமன்னு | 2 | நான்மணி கடவுள் | |
| மதியினை | 722 | சூளா. சீய | 96 |
| மந்தரங் | 1468 | முத்தொள் | |
| மந்திரக் | 778 | சூளா. தூது | 135 |
| மந்திரமருந் | 407 | சிந்தா | 2936 |
| மம்மர்விசும் | 1398 | பெரும்பொருள் | |
| மயங்கிருங் | 401 | புறம் | 365 |
| மயற்கை | 716 | சிந்தா | 1393 |
| மயிர்வனப்புங் | 752 | சிறுபஞ்ச | 36 |
| மரகதப் | 1431 | முத்தொள் | |
| மரந்தலை | 489 | சூளா. மந்திர | 35 |
| மரம்போல் | 1176 | பழமொழி | 140 |
| மரீஇப்பல | 931 | நாலடி | 220 |
| மருப்பூசி | 1390 | முத்தொள் | |
| மருவிய | 52 | அறநெறி | 89 |
| மல்குதிரைய | 1144 | நாலடி | 263 |
| மல்லல்மலை | 203 | சிந்தா | 2789 |
| மல்லல்மா | 1186 | நாலடி | 296 |
| மல்லற்பெருஞ் | 54 | பழமொழி | 289 |
| மல்லனீர் | 1570 | முத்தொள் | |
| மலங்கி | 315 | சிந்தா | ? |
| மலர்ந்த | 108 | பாரதம் | |
| மலிதேரான் | 865 | யாப்பரு.உரை | 61 |
| மலைப்பினும் | 947 | நான்மணி | 23 |
| மலைமிசைத் | 370 | நாலடி | 21 |
| மழுவான் | 1339 | பெரும்பொருள் | |
| மழைக்கணஞ் | 1483 | புறம் | 131 |
| மழைதிளைக்கு | 71 | நாலடி | 361 |
| மழையின்றி | 50 | நான்மணி | 47 |
| மற்றுந்தொடர் | 422 | வளையா | |
| மறந்தானுங் | 617 | பழமொழி | 43 |
| மறவுரையுங் | 527 | அறநெறி | 1 |
| மறுஅதவனும் | 1175 | பழமொழி | 240 |
| மறிபமறியு | 723 | குண்டல | |
| மறுமனத்தா | 902 | பழமொழி | 165 |
| மறுமையு | 1188 | நாலடி | 95 |
| மறுமையொன் | 982 | பழமொழி | 158 |
| மறையா | 757 | ,, | 387 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| மன்றங் | 371 | நாலடி | 23 |
| மன்னர் | 798 | ,, | 167 |
| மன்னரானவ | 97 | இரா. மந்திர | 68 |
| மன்னவ | 1017 | பழமொழி | 311 |
| மன்னன்மேவு | 861 | நாரத | |
| மன்னிய | 1 | முத்தொள் | |
| மன்னுநீர் | 720 | சிந்தா | 1537 |
| மன்னுயிர் | 1521 | முத்தொள் | |
| மனங்கொண் | 532 | பழமொழி | 230 |
| மனத்தான் | 579 | நாலடி | 180 |
| மனத்தினும் | 15 | பழமொழி | 359 |
| மனைக்குப் | 1216 | நான்மணி | 22 |
| மனைக்குவிளை | 1217 | ,, | 103 |
| மாக்கேழ் | 403 | நாலடி | 41 |
| மாசித்திங்கள் | 241 | சிந்தா | 2929 |
| மாசுபடினு | 1207 | நான்மணி | 99 |
| மாடமிடிந்தக் | 1104 | பழமொழி | 96 |
| மாடவாய் | 870 | சூளா. நகர | 8 |
| மாண்டமைந்தா | 767 | ஏலாதி | 26 |
| மாணுப் | 1061 | பழமொழி | 256 |
| மாணார்க் | 1563 | முத்தொள் | |
| மாமுது | 1332 | ஆசிரிய | |
| மாய்தலும் | 44 | சிந்தா | 2932 |
| மாய்ந்தவர் | 229 | இரா. வேள் | 30 |
| மாய்வதன் | 232 | பழமொழி | 261 |
| மாயத்தாற் | 1400 | பெரும்பொருள் | |
| மாயோன் | 874 | பரிபாடலுறுப்பு | |
| மாலமர் | 740 | சூளா. இரத | 117 |
| மாலைப்பந்து | 1065 | சிந்தா | 2928 |
| மாலைவிலை | 863 | முத்தொள் | |
| மாவாராதே | 1415 | புறம் | 273 |
| மாவென் | 295 | வளையா | |
| மாற்றத்தை | 750 | பழமொழி | 369 |
| மாற்றவர் | 851 | சிந்தா | 101 |
| மாற்றாராய் | 162 | நாலடி | 67 |
| மாற்றுப் | 1272 | பெரும்பொருள் | |
| மாறடுபோர் | 1558 | முத்தொள் | |
| மாறுகொள் | 411 | குண்டல | |
| மானமு | 986 | பழமொழி | 298 |
| மானவருங் | 1187 | நாலடி | 40 |
| மிக்குடைய | 1005 | பழமொழி | 36 |
| மிக்குப் | 1195 | ,, | 11 |
| மின்னார் | 900 | வெண்பா | 131 |
| மின்னுங் | 228 | பெரும்பொருள் | |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| மீன்றிகழ் | 1461 | புறம் | 25 |
| முகம்புறத் | 174 | பழமொழி | 46 |
| முட்கொணச்சு | 1009 | சூளா. சீய | 72 |
| முடித்தலை | 1432 | முத்தொள் | |
| முடிமனை | 1350 | சிந்தா | 2223 |
| முந்நீர்த்திரை | 437 | திரிகடு | 35 |
| முந்நீர்ப்பிறந்த | 11 | சிந்தா | 5 |
| முயறலே | 574 | பழமொழி | 237 |
| முருக்கலர் | 1055 | வளையா | |
| முருந்தனைய | 362 | சிந்தா | 2619 |
| முல்லைக்...எல் | 564 | வெண்பா | 194 |
| முல்லைக்...தொ | 220 | பழமொழி | 361 |
| முல்லைமு..சொரி | 348 | சிந்தா | 2623 |
| முல்லைமு...முறு | 404 | நாலடி | 45 |
| முலைத்தாயிரங் | 1407 | ? | |
| முழவொலி | 1137 | பழமொழி | 343 |
| முளரிமுக | 305 | சிந்தா | 2870 |
| முற்பெரிய | 30 | பழமொழி | 312 |
| முற்றரண | 1337 | பெரும்பொருள் | |
| முறுவலினிது | 101 | ஆசார | 54 |
| முறைதெரிந்து | 663 | பழமொழி | 206 |
| முன்புறந் | 1436 | வெண்பா | 274 |
| முன்றான் | 7 | குண்டல | |
| முன்றுவ்வார் | 137 | ஆசார | 24 |
| முன்னார்முர | 1253 | வெண்பா | 38 |
| முன்னார்விளை | 1073 | பாரதம் | |
| முன்னலிந் | 1002 | பழமொழி | 148 |
| முன்னின்றொ | 182 | அறநெறி | 49 |
| முன்னின்னை | 646 | பழமொழி | 66 |
| முன்னுமொரு | 1024 | ,, | 221 |
| முன்னை | 889 | ,, | 325 |
| முனியார் | 800 | ஆசார | 69 |
| மூத்தோர் | 499 | புறம் | 75 |
| மூதில் | 1271 | பெரும்பொருள் | |
| மூதூர் | 1358 | புறம் | 79 |
| மூரிமுந்நீர் | 1440 | சூளா. அரசி | 351 |
| மூவரு | 1155 | வெண்பா | 165 |
| மூவாமுதலா | 6 | சிந்தா | கடவுள் |
| மூவிலை | 9 | ஆசிரிய | |
| மெய்ஞ்ஞான | 824 | நாலடி | 311 |
| மெய்தகளி | 252 | பாரதம் | |
| மெய்ந்நீர | 763 | பழமொழி | 395 |
| மெய்ப்படு | 409 | சிந்தா | 2938 |
| மெய்ம்மை | 1025 | பழமொழி | 201 |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| மெய்யா | 643 | பழமொழி | 109 |
| மெய்யுரை | 314 | சிந்தா | 2869 |
| மெய்வகை | 440 | ,, | 1436 |
| மெய்வாய் | 447 | நாலடி | 59 |
| மெல்லவந்து | 1306 | புறம் | 73 |
| மெல்லியல் | 1484 | ,, | 133 |
| மெல்லியனல் | 540 | நாலடி | 188 |
| மேலது | 1343 | ஆசிரிய | |
| மேவரு | 859 | இராமா. நகர | 9 |
| மைதிரண்ட | 363 | சிந்தா | 2626 |
| மைதீர் | 1200 | நாலடி | 347 |
| மைந்தரோ | 864 | முத்தொள் | |
| மையேர் | 194 | ஏலாதி | 28 |
| மோய்கொண் | 903 | பழமொழி | 241 |
| மொய்சிதை | 573 | நான்மணி | 21 |
| மொய்யகத் | 1360 | வெண்பா | 142 |
| மொய்வேற் | 786 | தகடூர் | |
| மோடுகொண் | 834 | சூளா. நாட்டு | 25 |
| யாண்டு | 67 | புறம் | 191 |
| யாணர் | 369 | ஆசிரிய | |
| யாதுமூரே | 444 | புறம் | 192 |
| யாந்தீய | 1197 | பழமொழி | 174 |
| யாமாயி | 1092 | நாலடி | 293 |
| யாமே | 1250 | பெரும்பொருள் | |
| யாவர் | 689 | பாரதம் | |
| யாவராயி | 1038 | சிந்தா | 249 |
| யாவரேயானு | 175 | பழமொழி | 179 |
| யாவரொருவ | 959 | நாலடி | 127 |
| யாருளடங் | 103 | நான்மணி | 52 |
| யாரொடி | 1044 | வளையா | |
| யானுமற் | 759 | பழமொழி | 73 |
| யானுடத் | 1569 | முத்தொள் | |
| யானைதுரப்ப | 346 | சூளா. துறவு | 149 |
| யானைநிரை | 1159 | பெரும்பொருள் | |
| யானையனை | 927 | நாலடி | 213 |
| யானையெரு | 340 | ,, | 3 |
| வகையெழிற் | 302 | குண்டல | |
| வஞ்சமுன் | 1068 | இராமாவ. கிட் | 95 |
| வடந்தவழ் | 731 | சூளா. மந்திர | 13 |
| வடிவிலா | 879 | நாலடி | 114 |
| வண்ணத் | 349 | சிந்தா | 2625 |
| வண்ணப்பூ | 657 | ,, | 1893 |
| வந்தநிரை | 1238 | பெரும்பொருள் | |
| வந்தனென் | 1275 | பதிற்று | |
| வயலைக் | 782 | புறம் | 305 |
| வயாவும் | 650 | நாலடி | 201 |
| வயிரமுள் | 335 | சிந்தா | 2766 |
| வயிரவரை | 855 | ,, | 105 |
| வரக்கண்டு | 1555 | முத்தொள் | |
| வரம்பெலா | 842 | இரா. நாட் | 2 |
| வரிக்கடை | 283 | ஆசிரிய | |
| வருககுட | 1564 | முத்தொள் | |
| வருகதில் | 1365 | புறம் | 284 |
| வருகவருக | 1377 | தகடூர் | |
| வருந்தி | 104 | பாரதம் | |
| வருவாயுட் | 1111 | திரிகடு | 21 |
| வரைபுரை | 1313 | பழமொழி | 317 |
| வரைபொரு | 1517 | முத்தொள் | |
| வல்லா | 1284 | புறம் | 57 |
| வல்லென்ற | 496 | நாரத | |
| வல்லோன் | 1374 | தகடூர் | |
| வலம்படு | 1503 | புறம் | 91 |
| வழங்கலுங் | 1136 | பழமொழி | 151 |
| வழங்காத | 239 | நாலடி | 277 |
| வழங்கார் | 459 | பழமொழி | 292 |
| வழிப்பட்ட | 638 | ,, | 364 |
| வழிபடு | 1481 | புறம் | 10 |
| வழிபாடு | 75 | அறநெறி | 92 |
| வழுக்கெனைத் | 83 | நாலடி | 362 |
| வழுவிலெம் | 1519 | முத்தொள் | |
| வளம்பட | 462 | நாலடி | 103 |
| வளிநடந் | 1493 | புறம் | 197 |
| வளையவாய் | 1542 | முத்தொள் | |
| வற்றிமற் | 1189 | நாலடி | 78 |
| வன்சார் | 697 | பழமொழி | 254 |
| வன்பாட்டவர் | 998 | ,, | 71 |
| வன்னெஞ்சி | 416 | ,, | 374 |
| வனப்பில | 1050 | வளையா | |
| வாகை | 1281 | முத்தொள் | |
| வாட்டிற | 1105 | பழமொழி | 106 |
| வாதுவல் | 1406 | தகடூர் | |
| வாமான் | 1518 | முத்தொள் | |
| வாயிற்சுவை | 263 | பாரதம் | |
| வாயினடங்கு | 126 | திரிகடு | 43 |
| வாயுவினை | 205 | குண்டல | |
| வார்சான்ற | 477 | சிறுபஞ்ச | 45 |
| வாரம்பட்டுழி | 118 | சிந்தா | 888 |
| வாரிபெருக | 1046 | வளையா | |

| செய்யுள் | எண் | மூலம் | எண் |
|---|---|---|---|
| வாரியபெண் | 1536 | முத்தொள் | |
| வாலிழை | 507 | நான்மணி | 97 |
| வாழ்கின்ற | 426 | நாரத | |
| வாழியதுடிய | 1409 | ? | |
| வாள்வலம் | 1237 | பெரும்பொருள் | |
| வாள்வலித் | 590 | சூளா. மந்திர | 10 |
| வாளஞ்சான் | 420 | ஏலாதி | 22 |
| வானைபிறழும் | 1345 | வெண்பா | 147 |
| வான்குரீஇக் | 642 | சிறுபஞ்ச | 26 |
| வான்சேரிற் | 613 | பாரதம் | |
| வான்வணக்கி | 1320 | தகடூர் | |
| வான்றறக்கம் | 1349 | பெரும்பொருள் | |
| வான்றோய் | 1399 | ,, | |
| வானிலங் | 835 | சூளா. நாட்டு | 6 |
| வானிற்கு | 1467 | முத்தொள் | |
| விசையினோடு | 1178 | சூளா. சீய | 212 |
| விட்டுக்கருமஞ் | 625 | பழமொழி | 279 |
| விடலரிய | 259 | ,, | 26 |
| விடலைமை | 787 | ,, | 225 |
| விண்டுவேய் | 22 | சிந்தா | 2750 |
| விண்ணசைஇ | 1255 | பெரும்பொருள் | |
| விண்ணிவின்ப | 442 | சாந்தி | |
| விதிப்பட்ட | 1108 | பழமொழி | 258 |
| வியத்தக்க | 10 | தகடூர் | |
| விரிநிற | 1031 | நாலடி | 164 |
| விருந்தின்றி | 64 | திரிகடு | 44 |
| விரும்பி | 1140 | பழமொழி | 286 |
| விரைந்துரை | 751 | ஆசார | 76 |
| வில்லின்மாக் | 23 | சிந்தா | 2751 |
| விலங்கி | 712 | ,, | 1167 |
| விலங்கேயுந் | 937 | பழமொழி | 122 |
| விழுமிழை | 289 | ,, | 12 |
| விளக்குப்புக | 273 | நாலடி | 51 |
| விளக்குவிலை | 503 | பழமொழி | 334 |
| விளிந்தாரே | 619 | ,, | 42 |
| விளைபதச் | 700 | புறம் | 190 |
| விளையாமை | 274 | ஏலாதி | 13 |
| விற்பொறிகள் | 852 | சிந்தா | 102 |
| வினைப்பய | 323 | பழமொழி | 266 |
| வினைபல | 25 | வளையா | |
| வீங்குதோட் | 703 | பழமொழி | 49 |
| வீங்குநீரு | 733 | சூளா. மந்திர | 7 |
| வீபொரு | 1053 | வளையா | |
| வீவில் | 485 | சூளா. சீய | 27 |
| வீறுசால் | 1388 | முத்தொள் | |
| வெஞ்சினமன் | 1018 | பழமொழி | 33 |
| வெஞ்சினவேந் | 1329 | பெரும்பொருள் | |
| வெண்குடை | 673 | பழமொழி | 391 |
| வெண்டளக் | 843 | இராமா. நாட். | 12 |
| வெண்ணெயா | 378 | சிந்தா | 2755 |
| வெண்மை | 690 | பாரதம் | |
| வெந்தடி | 268 | சிந்தா | 2765 |
| வெய்யோ | 1362 | பெரும்பொருள் | |
| வெருவரு | 1430 | முத்தொள் | |
| வெல்வது | 994 | திரிகடு | 28 |
| வெவ்வாள் | 1236 | பெரும்பொருள் | |
| வெவ்விட | 304 | நாரத | |
| வெள்ளம்பகை | 1012 | பழமொழி | 98 |
| வெள்ளம்போ | 607 | வெண்பா | 166 |
| வெள்ளம்வருங் | 809 | பழமொழி | 41 |
| வெள்ளமறவி | 351 | வளையா | |
| வெள்ளெருக் | 1441 | இரா. இராவ | 239 |
| வெள்ளைவெள் | 1411 | புறம் | 286 |
| வெற்றி...மணி | 347 | சூளா. முத்தி | 21 |
| வெற்றி...வேந் | 789 | பழமொழி | 181 |
| வெறியயர் | 359 | நாலடி | 16 |
| வெறுமை | 990 | ,, | 329 |
| வென்றடு | 1029 | பழமொழி | 65 |
| வென்றி | 896 | சிந்தா | 1922 |
| வென்று | 1429 | பெரும்பொருள் | |
| வேட்டன | 441 | சிந்தா | 2799 |
| வேத்தமர் | 1257 | தகடூர் | |
| வேந்தன் | 791 | பழமொழி | 397 |
| வேந்துகுறை | 1298 | புறம் | 341 |
| வேம்பினிலை | 538 | நாலடி | 244 |
| வேம்புசினை | 1416 | புறம் | 296 |
| வேரறுகை | 1279 | முத்தொள் | |
| வேரிக்கமழ் | 724 | குண்டல | |
| வேளாண்மை | 702 | பழமொழி | 175 |
| வேற்கண் | 367 | வளையா | |
| வேற்றுவினை | 1317 | தகடூர் | |
| வேற்றுமை | 945 | நாலடி | 75 |
| வேற்றுவரில் | 41 | சிந்தா | 1550 |
| வைகறை | 133 | ஆசார | 4 |
| வைத்ததனை | 53 | பழமொழி | 37 |
| வைததனு | 250 | நான்மணி | 101 |
| வையங் | 1477 | புறம் | 8 |
| வையமின்புறிற் | 484 | சூளா. சீய | 26 |

# அனுபந்தம்-II

## மூல நூல்களும் அவற்றினின்றுந் தொகுத்த புறத்திரட்டுச் செய்யுளின் எண்களும்

1. அறநெறிச்சாரம்

20, 39, 51, 52, 75, 85, 86, 116, 127, 128, 129, 168, 182, 189, 212, 213, 214, 251, 258, 287, 320, 321, 375, 395, 433, 460, 525, 526, 527, 622, 655, 1063, 1075, 1208 — **34**

2. ஆசாரக்கோவை

101, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 656, 751, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 1076 — **27**

3. ஆசிரியமாலை

9,49, 283, 357, 369, 392, 402, 679, 827, 846, 1242, 1332, 1333, 1343, 1368, 1492 — **16**

4. இராமாவதாரம்

14, 16, 17, 18, 27, 97, 229, 332, 610, 678, 725, 743, 744, 745, 839, 840, 841, 842, 843, 857, 858, 859, 860, 1066, 1067, 1068, 1441 — **27**

5. இரும்பல்காஞ்சி

5, 601, 1475 — **3**

6. இன்னாநாற்பது

518, 588, 764, 957, 1070 — **5**

7. இனியவைநாற்பது

4, 693 — **2**

8. ஏலாதி

60, 61, 100, 107, 192, 193, 194, 274, 275, 420, 429, 430, 445, 511, 543, 544, 727, 753, 767, 1078, 1130 — **21**

9. களவழிநாற்பது

1418, 1419, 1420, 1421, 1422, 1423, 1424, 1425, 1426, 1427 — **10**

10. குண்டலகேசி

7, 13, 205, 288, 302, 303, 388, 389, 390, 391, 410, 411, 412, 413, 494, 495, 551, 723, 724 — **19**

11. சாந்திபுராணம்

173, 292, 306, 307, 442, 448, 742, 1057, 1058 — **9**

12. சிந்தாமணி

6, 11, 12, 21, 22, 23, 24, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 79, 87, 118, 153, 154, 200, 201, 202, 203, 204, 241, 253, 254, 267, 268, 279, 280, 298, 299, 300, 301, 305, 314, 315, 333, 334, 335, 336, 348, 349, 350, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 398, 406, 407, 408, 409, 439, 440, 441, 466, 467, 468, 470, 471, 472, 492, 493, 513, 566, 567, 597, 603,

609, 615, 657, 658, 659, 668, 677, 694, 710, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 741, 766, 832, 833, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 871, 872, 873, 894, 895, 896, 909, 910, 911, 912, 1014, 1015, 1016, 1035, 1036, 1037, 1038, 1039, 1059, 1064, 1065, 1077, 1115, 1231, 1303, 1350, 1351 **142**

13. சிறுபஞ்சமூலம்

37, 55, 56, 57, 58, 59, 76, 81, 144, 145, 190, 195, 206, 207, 248, 270, 286, 311, 327, 328, 434, 477, 478, 508, 509, 510, 608, 620, 641, 642, 728, 752, 847, 908, 1100, 1157, 1158 **37**

14. சூளாமணி

66, 95, 96, 119, 216, 245, 255, 308, 338, 339, 344, 345, 346, 347, 399, 400, 469, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 623, 660, 669, 670, 671, 681, 682, 683, 722, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 777, 778, 779, 834, 835, 836, 856, 867, 868, 869, 870, 1008, 1009, 1178, 1291, 1292, 1302, 1352, 1353, 1382, 1401, 1434, 1439, 1440 **79**

15. தகடூர்யாத்திரை

10, 19, 227, 666, 667, 756, 776, 785, 786, 844, 995, 1241, 1251, 1257, 1258, 1274, 1301, 1304, 1314, 1315, 1316, 1317, 1318, 1319, 1320, 1321, 1341, 1342, 1369, 1370, 1371, 1372, 1373, 1374, 1375, 1376, 1377, 1381, 1403, 1404, 1405, 1406, 1437, 1453 **44**

16. திரிகடுகம்

3, 64, 65, 74, 126, 180, 181, 243, 271, 436, 437, 474, 475, 535, 545, 546, 547, 575, 654, 687, 691, 692, 726, 754, 935, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 994, 1062, 1071, 1081, 1082, 1083, 1110, 1111, 1123, 1124, 1125, 1163, 1177, 1205, 1206, 1222, 1223, 1224, 1225, 1226, 1227, 1228 **53**

17. நளன்கதை

550 **1**

18. நாரதசரிதை

304, 356, 414, 425, 426, 496, 861, 1060 **8**

19. நாலடியார்

33, 34, 35, 36, 62, 63, 69, 70, 71, 82, 83, 92, 114, 124, 125, 148, 149, 150, 151, 152, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 177, 178, 209, 210, 211, 222, 223, 224, 225, 226, 237, 238, 239, 240, 244, 249, 261, 262, 272, 273, 290, 291, 310, 317, 318, 319, 340, 341, 342, 343, 358, 359, 360, 370, 371, 372, 373, 403, 404, 405, 418, 419, 435, 447, 461, 462, 463,

464, 465, 512, 519, 520, 523, 536, 537, 538, 539, 540, 557, 558, 559, 560, 561, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 606, 650, 651, 652, 653, 695, 704, 705, 706, 707, 708, 755, 798, 823, 824, 825, 826, 879, 913, 914, 915, 916, 917, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 955, 956, 959, 960, 961, 975, 976, 977, 978, 979, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 1030, 1031, 1032, 1033, 1034, 1040, 1041, 1042, 1043, 1084, 1085, 1086, 1087, 1088, 1089, 1090, 1091, 1092, 1093, 1094, 1095, 1096, 1097, 1113, 1114, 1120, 1121, 1122, 1131, 1132, 1133, 1141, 1142, 1143, 1144, 1145, 1146, 1147, 1150, 1164, 1165, 1166, 1167, 1168, 1169, 1174, 1181, 1182, 1183, 1184, 1185, 1186, 1187, 1188, 1189, 1198, 1199, 1200, 1201, 1202, 1203, 1204, 1229, 1230 **212**

20. நான்மணிக்கடிகை

2, 50, 103, 106, 179, 188, 250, 260, 322, 331, 393, 504, 505, 506, 507, 524, 556, 573, 621, 709, 813, 814, 815, 816, 880, 898, 924, 934, 947, 1098, 1112, 1207, 1209, 1210, 1211, 1212, 1213, 1214, 1215, 1216, 1217, 1218, 1219, 1220, 1221 **45**

21. பதிற்றுப்பத்து

845, 1260, 1267, 1275, 1283, 1505 **6**

22. பரிபாடல்

866, 874, 875, 876, 877, 878 **6**

23. பழமொழி

15, 28, 29, 30, 31, 32, 53, 54, 68, 80, 94, 105, 109, 110, 111, 112, 113, 117, 120, 121, 122, 123, 146, 147, 157, 158, 159, 160, 161, 170, 171, 172, 174, 175, 176, 183, 184, 185, 186, 187, 191, 208, 217, 218, 219, 220, 221, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 242, 246, 247, 259, 269, 284, 285, 289, 316, 323, 324, 325, 415, 416, 417, 428, 446, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 476, 500, 501, 502, 503, 515, 516, 517, 521, 522, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 548, 549, 552, 553, 554, 555, 565, 574, 583, 584, 585, 586, 587, 598, 599, 600, 604, 605, 611, 612, 616, 617, 618, 619, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 661, 662, 663, 664, 665, 673, 674, 675, 676, 680, 685, 686, 696, 697, 698, 701, 702, 703, 711, 729, 730, 746, 747, 748, 749, 750, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 769, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 809, 810, 811, 812, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 848, 881, 882, 883, 884, 885, 886,

887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 936, 937, 938, 939, 940, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 958, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 997, 998, 999, 1000, 1001, 1002, 1003, 1004, 1005, 1006, 1007, 1010, 1011, 1012, 1013, 1017, 1018, 1019, 1020, 1021, 1022, 1023, 1024, 1025, 1026, 1027, 1028, 1029, 1061, 1069, 1079, 1080, 1099, 1101, 1102, 1103, 1104, 1105, 1106, 1107, 1108, 1109, 1117, 1118, 1119, 1128, 1129, 1136, 1137, 1138, 1139, 1140, 1149, 1162, 1175, 1176, 1190, 1191, 1192, 1193, 1194, 1195, 1196, 1197, 1312, 1313 **319**

24. பாரதம்

38, 77, 84, 104, 108, 169, 196, 197, 252, 263, 326, 329, 330, 394, 613, 614, 688, 689, 690, 765, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 1072, 1073, 1074, 1148, 1311, 1346, 1428 **33**

25. புறநானூறு

8, 48, 67, 99, 115, 230, 281, 282, 368, 401, 427, 443, 444, 497, 498, 499, 514, 568, 569, 570, 571, 572, 672, 684, 700, 780, 781, 782, 783, 784, 926, 1126, 1127, 1135, 1179, 1180, 1259, 1284, 1293, 1294, 1297, 1298, 1299, 1305, 1306, 1358, 1363, 1364, 1365, 1366, 1367, 1383, 1384, 1385, 1402, 1410, 1411, 1412, 1413, 1414, 1415, 1416, 1417, 1442, 1443, 1444, 1445, 1446, 1447, 1448, 1449, 1450, 1451, 1452, 1458, 1459, 1460, 1461, 1462, 1463, 1476, 1477, 1478, 1479, 1480, 1481, 1482, 1483, 1484, 1485, 1486, 1487, 1488, 1489, 1490, 1493, 1494, 1495, 1496, 1497, 1498, 1501, 1502, 1503, 1504 **105**

26. பெரும்பொருள்விளக்கம்

228, 542, 1159, 1160, 1161, 1236, 1237, 1238, 1239, 1240, 1245, 1246, 1247, 1248, 1249, 1250, 1255, 1256, 1271, 1272, 1273, 1325, 1326, 1327, 1328, 1329, 1330, 1336, 1337, 1338, 1339, 1340, 1347, 1348, 1349, 1362, 1398, 1399, 1400, 1429, 1500 **41**

27. முத்தொள்ளாயிரம்

1, 829, 830, 831, 862, 863, 864, 1278, 1279, 1280, 1281, 1282, 1285, 1286, 1287, 1288, 1331, 1380, 1388, 1389, 1390, 1391, 1392, 1393, 1394, 1395, 1396, 1397, 1430, 1431, 1432, 1433, 1456, 1457, 1464, 1465, 1466, 1467, 1468, 1469, 1470, 1471, 1472, 1473, 1506-1570 **109**

28. மேருமந்தரபுராணம்

397 **1**

29. யாப்பருங்கலம்
602, 865 **2**

30. வளையாபதி
25, 26, 78, 88, 89, 90, 91, 98, 130, 155, 156, 198, 199, 215, 256, 257, 264, 265, 266, 277, 278, 293, 294, 295, 296, 297, 309, 312, 313, 337, 351, 352, 353, 354, 355, 367, 396, 422, 423, 424, 438, 473, 837, 897, 925, 980, 981, 996, 1044, 1045, 1046, 1047, 1048, 1049, 1050, 1051, 1052, 1053, 1054, 1055, 1056, 1134, 1170, 1171, 1172, 1173 **66**

31. வெண்பாமாலை
72, 73, 93, 102, 276, 374, 421, 431, 432, 479, 480, 541, 562, 563, 564, 607, 699, 768, 828, 899, 900, 901, 1116, 1151, 1152, 1153, 1154, 1155, 1156, 1232, 1233, 1234, 1235, 1243, 1244, 1252, 1253, 1254, 1261, 1262, 1263, 1264, 1265, 1266, 1268, 1269, 1270, 1276, 1277, 1289, 1290, 1295, 1296, 1300, 1307, 1308, 1309, 1310, 1322, 1323, 1324, 1334, 1335, 1344, 1345, 1359, 1360, 1361, 1378, 1379, 1387, 1435, 1436, 1455, 1499 **75**

மூலம் விளங்காதன
838, 1354, 1355, 1356, 1357, 1386, 1407, 1408, 1409, 1438, 1454, 1474, 1491 **13**

# அனுபந்தம்-III

## இப்பதிப்பிற் குதவிய மூல நூல்களைப் பற்றிய குறிப்புக்கள்

1. **அறநெறிச்சாரம்** (அறநெறி) *திரிசிரபுரம் நாஷனல் ஹைஸ்கூல் தமிழ்ப் பண்டிதராயிருந்த தி. ச. ஆறுமுகநயினாரவர்கள் வெளியிட்ட தமிழ்ச் செல்வம்: நீதிநூற்றிரைகை இரண்டாவது பிரிவில் வந்த பதிப்பு* (1904)

2. **ஆசாரக்கோவை** (ஆசார) *சென்னை பச்சையப்பன் கலாசாலைத் தமிழாசிரியராயிருந்த திருமணம் செல்வக் கேசவராய முதலியாரவர்கள் பதிப்பு* (1923)

3. **இராமாவதாரம்** (இரா, இராமா, இராமாவ; இராவ=இராவணன் வதைப்படலம்) *சாத்தம்பாக்கம் கிருஷ்ணசாமி முதலியாரவர்கள் பதிப்பு* (1885-1887)

4. **இன்னாநாற்பது** (இன்னா) *தமிழ்ச்செல்வம்: நீதிநூற்றிரைகை முதற்பிரிவிலுள்ள பதிப்பு* (1901)

5. **இனியவைநாற்பது** (இனிய) *செந்தமிழ்ப் பிரசுரம்-5. ரா. இராகவையங்காரவர்கள் பதிப்பு* (1920)

6. **ஏலாதி** *தமிழ்ச் செல்வம்: நீதிநூற்றிரைகை இரண்டாவது பிரிவில் எண் 2-ல் வந்த பதிப்பு* (1901)

7. **களவழிநாற்பது** (களவழி) *சென்னை இராஜதானிக் கலாசாலைத் தமிழாசிரியராயிருந்த இ. வை. அனந்தராமையரவர்கள் பதிப்பு* (1931)

8. **சீவகசிந்தாமணி** (சிந்தா) *மஹாமஹோபாத்தியாய டாக்டர் உ. வே. சாமிநாதையரவர்கள் பதிப்பு* (1922)

9. **சிறுபஞ்சமூலம்** (சிறுபஞ்ச) *தமிழ்ச் செல்வம்: நீதிநூற்றிரைகை இரண்டாவது பிரிவு எண் 2-ல் வெளிவந்த பதிப்பு* (1901)

10. **சூளாமணி** (சூளா) *ராவ் பஹதூர் சி. வை. தாமோதரம் பிள்ளையவர்கள் பதிப்பு* (1889)

11. **திரிகடுகம்** (திரிகடு) *தமிழ்ச் செல்வம்: நீதிநூற்றிரைகை இரண்டாவது பிரிவு எண் 2-ல் வெளிவந்த பதிப்பு* (1901)

12. **நளன்கதை** (நளன், நள) *சென்னை கிறிஸ்தவ கலாசாலைத் தமிழாசிரியராயிருந்த வி. கோ. சூரிய நாராயண சாஸ்திரியவர்கள் பதிப்பு*(1911)

13. **நாலடியார்** (நாலடி) *சென்னை கம்பர் விலாசம் வே. இராஜகோபாலையங்காரவர்கள் பதிப்பு* (1924)

14. **நான்மணிக்கடிகை** (நான்மணி) *செந்தமிழ்ப் பிரசுரம்* (1920). *சென்னை ரிப்பன் அச்சியந்திரசாலைப் பதிப்பு* (1925)

15. **பதிற்றுப்பத்து** (பதிற்று) *மஹாமஹோபாத்தியாய டாக்டர் உ.வே. சாமிநாதையரவர்கள் பதிப்பு*(1920)

16. **பரிபாடல்** (பரிபாடலுறுப்பு) *மஹாமஹோபாத்தியாய டாக்டர் உ. வே. சாமிநாதையரவர்கள்பதிப்பு*(1918)

17. **பழமொழி** *தமிழ்ச் செல்வம்: நீதிநூற்றிரைகை இரண்டாம் பிரிவுஎண் 1-ல் வெளிவந்த பதிப்பு* (1904)

18. **பாரதவெண்பா** (பாரதம்) *பண்டித அ. கோபாலையரவர்கள் பதிப்பு* (1925)

19. **புறநானூறு** (புறம்) *மஹாமஹோபாத்தியாய டாக்டர் உ. வே. சாமிநாதையரவர்கள் பதிப்பு* (1923)

20. **மேருமந்தர புராணம்** (மேருமந்தர) *சென்னை இராஜதானிக் கலாசாலைத் தத்துவ சாஸ்திர போதகாசிரியர் அ. சக்கரவர்த்திநயினாரவர்கள் பதிப்பு* (1923)

21. **யாப்பருங்கலம்** (யாப், யாப்பருங்) *சென்னை திவான்பஹதூர் பவானந்தம் பிள்ளையவர்கள் பதிப்பு* (1917)

22. **வெண்பாமாலை** (வெண்பா) *மஹாமஹோபாத்தியாய டாக்டர் உ. வே. சாமிநாதையரவர்கள் பதிப்பு* (1924)

# அனுபந்தம் - IV

## புறத்திரட்டுச் சுருக்கத்திலுள்ள செய்யுட்கள்

[அதிகாரத்தின் கீழுள்ள எண்கள் புறத்திரட்டுச் செய்யுட்களின் எண்களாம்; அடிக்குறிப்பிலுள்ளன டாக்டர் சாமிநாதையரவர்கள் கடிதப் பிரதியில் மிகையாகக் கண்ட செய்யுட்கள்]

### I. அறத்துப்பால்

அதி. 1. கடவுள்வாழ்த்து

1, 2*, 5, 6, 7

*நீடாழி வட்ட நிலத்துக்கெல் லாமுதன்மை*
*வாடாத நீதிரும லைக்கொழுந்தே—பீடார்*
*அகர முதல வெழுத்தெல்லா மாதி*
*பகவன் முதற்றே யுலகு.* (திருமலைக்கொழுந்து வெண்பா.)

8, 9

*சிற்கு ணத்தின் றெரிவரு நன்னிலை*
*யெற்கு ணர்த்தரி தெண்ணிய மூன்றினுள்*
*முற்கு ணத்தவ ரேமுத லோரவர்*
*நற்கு ணக்கட லாடுதல் நன்றரோ.* (இராமகாதை, பாயி. 2)

அதி. 2. அவையடக்கம்

10

*வைய மென்னை யிகழவு மாசெனக்*
*கெய்த வும்மி தியம்புவ தியாதெனின்*
*பொய்யில் கேள்விப் புலமையி னோர்புகல்*
*தெய்வ மாக்கதை மாட்சி தெரிக்கவே.* (இராம. பாயி. 6)

13, 12

அதி. 3. வான்சிறப்பு

*தானந் தவமிரண்டுந் தங்கா வியனுலகம்*
*வானம் வழங்கா தெனின்.* (குறள், 19)

அதி. 4. நீத்தார்பெருமை

*குணமென்னுங் குன்றேறி நின்றார் வெகுளி*
*கணமேயுங் காத்த லரிது.* (குறள், 29)

15, 17

அதி. 5. பெறுதற்கருமை

20, 21

அதி. 6. அறன்வலியுறுத்தல்

*அன்றறிவா மென்னா தறஞ்செய்க மற்றது*
*பொன்றுங்காற் பொன்றாத் துணை.* (குறள், 36)

250, 248, 34, 38

---

* *முக்கட் பகவ னடிதொழா தார்க்கின்னா*
*பொற்பன வெள்ளியை யுள்ளா தொழுகின்னா*
*சக்கரத் தானை மறப்பின்னா தாங்கின்னா*
*சத்தியான் றடொழா தார்க்கு.* (இன்னா. கடவுள்வாழ்த்து)

அதி. 7. இல்வாழ்க்கை

*வையத்து வாழ்வாங்கு வாழ்பவன் வானுறையுந்*
*தெய்வத்துள் வைக்கப் படும்.* (குறள், 50)

52, 62, 50*

அதி. 8. கற்புடைமகளிர்

*பெண்ணிற் பெருந்தக்க யாவுள கற்பென்னுந்*
*திண்மையுண் டாகப் பெறின்.* (குறள், 54)

71, 74, 77

அதி. 9. கற்பில் மகளிர்

80, 82, 85, 86, 88

அதி. 10. புதல்வரைப்பெறுதல்

*முன்னவர்மே யச்சுடலை மூழ்கப் பகீரதியோர்*
*மன்னவனுய்த் தான்றிரும லைக்கொழுந்தே—அன்னதால்*
*தம்பொரு ளென்பதம் மக்க ளவர்பொருள்*
*தந்தம் வினையான் வரும்.* (திருமலை.)

95, 99

அதி. 11. அன்புடைமை

*என்புகொடுத் தானிருடி யீந்தா னுடலொருகோ*
*மன்புறவுக் கேதிரும லைக்கொழுந்தே—நன்புவியில்*
*அன்பிலா ரெல்லாந் தமக்குரிய ரன்புடையா*
*ரென்பு முரியர் பிறர்க்கு.* (திருமலை.)

*பேடையைப் பிடித்துத் தன்னைப் பிடிக்கவந் தடைந்த பேதை*
*வேடனுக் குதவிசெய்து விறகிடை வெந்தீ மூட்டிப்*
*பாடுறு பசியை நோக்கித் தன்னுடல் கொடுத்த பைம்புள்*
*வீடுபெற் றுயர்ந்த வார்த்தை வேதத்தின் விழுமி தன்றே.*
(இராம. வீட. 112)

அதி. 12. விருந்தோம்பல்

*தீய வறுத்த தினைத்தரும னுக்குவிளை*
*மாயமதென் னேதிரும லைக்கொழுந்தே—ஆயுங்கால்*
*வித்து மிடல்வேண்டுங் கொல்லோ விருந்தோம்பி*
*மிச்சில் மிசைவான் புலம்.* (திருமலை.)

104, 100

அதி. 13. இனியவை கூறல்

*நன்னலஞ்சொல் லாதழிந்தா னந்திசா பத்தரக்கன்*
*மன்னவரே றேதிரும லைக்கொழுந்தே—பன்னும்*
*இனிய வுளவாக வின்னாத கூறல்*
*கனியிருப்பக் காய்கவர்ந் தற்று.* (திருமலை.)

107, 108

---

* ஆவுக் காயினு மந்தணர்க் காயினும்
யாவர்க் கேனு மெளியவர்க் காயினும்
சாவப் பெற்றவ ரேதகை வானுறை
தேவர்க் குந்தொழுந் தேவர்க ளாகுவார்.
(இராம. ஆரணி. அகத்தியப், 21)

அதி. 14. செய்ந்நன்றியறிதல்

ஓராய் வயிற்றி லுதித்துமைவ ரோடு கன்னன்
வாரானன் றேதிரும லைக்கொழுந்தே—ஆராயின்
எந்நன்றி கொன்றார்க்கு முய்வுண்டா முய்வில்லை
செய்ந்நன்றி கொன்ற மகற்கு. (திருமலை.)

109, 112, 114

அதி. 15. நடுவுநிலைமை

தந்துணைவர் நீங்கமறு தாய்மகவைப் பாண்டவர்கோன்
வந்தெழுப்பி னான்றிரும லைக்கொழுந்தே—நந்தாது
கேடும் பெருக்கமு மில்லல்ல நெஞ்சத்துக்
கோடாமை சான்றோர்க் கணி. (திருமலை.)

118

அதி. 16. அடக்கமுடைமை

சொல்வசைபொ றாது துணிந்துவிது ரன்றனது
வல்விலொடித் தான்றிரும லைக்கொழுந்தே—தொல்லுலகில்
தீயினாற் சுட்டபுண் ணுள்ளாறு மாறாதே
நாவினாற் சுட்ட வடு. (திருமலை.)

121, 123, 125, 124, 128, 129, 130

அதி. 17. ஒழுக்கமுடைமை

பொன்னார் முடிபொறுத்தான் புரூரு வசுவிழந்தான்
மன்னா வளர்திரும லைக்கொழுந்தே—நன்னர்
ஒழுக்க முடைமை குடிமை யிழுக்கம்
இழிந்த பிறப்பாய் விடும். (திருமலை.)

131, 144

அதி. 18. பிறர்மனைநயவாமை

மெய்தான் முழுதும் விழியானான் போகியுற
வைதான் முனிதிரும லைக்கொழுந்தே—செய்தல்
எளிதென வில்லிறப்பா னெய்துமெஞ் ஞான்றும்
விளியாது நிற்கும் பழி. (திருமலை.)

149, 150, 152

அதி. 19. பொறையுடைமை

கோதை யருவிக் குளிர்மலை நன்னாட
பேதையொ டியாது முரையற்க—பேதை
உரைப்பிற் சிதைந்துரைக்கு மொல்லும் வகையால்
வழுக்கிக் கழிதலே நன்று. (நாலடி, 71)

158, 169

உண்ணாது நோற்பார் பெரியர் பிறர்சொல்லும்
இன்னாச்சொல் நோற்பாரிற் பின். (குறள், 160)

அதி. 20. அழுக்காறாமை

நல்வினையா லெங்கலமும் நண்ணினர்பா லவ்வியஞ்சேர்
வல்வினைநன் றேதிரும லைக்கொழுந்தே—ஒல்லை
அறனாக்கம் வேண்டாதா னென்பான் பிறனாக்கம்
பேணா தழுக்கறுப் பான். (திருமலை.)

அதி. 21. வெஃகாமை
172

*கூட்டநெடுந் தானை குறைத்தும்பசுக் காதிசேய்*
*மாட்டெய்து மோதிரும லைக்கொழுந்தே—ஈட்டப்*
*படுபயன் வெஃகிப் பழிபடுவ செய்யார்*
*நடுவன்மை நாடு பவர்.* (திருமலை.)

173

அதி. 22. அவா
174, 175, 177, 179, 180

அதி. 23. புறங்கூறாமை
182, 183, 184

*ஏதிலார் குற்றம்போற் றங்குற்றங் காண்கிற்பின்*
*தீதுண்டோ மன்னு முயிர்க்கு.* (குறள், 190)

அதி. 24. இகழாமை
185, 188, 189, 187

அதி. 25. பயனிலசொல்லாமை

*சொல்லுக சொல்லிற் பயனுடைய சொல்லற்க*
*சொல்லிற் பயனிலாச் சொல்.* (குறள், 200)

அதி. 26. தீவினையச்சம்

*கொல்லாது சேய்காப்பான் கொன்றைத்தா ரைக்கடவான்*
*மல்லார்வீ மன்றிரும லைக்கொழுந்தே—நல்லவாய்த்*
*தன்னைத்தான் காதலனாயி னெனைத்தொன்றுந்*
*துன்னற்க தீவினைப் பால்.* (திருமலை.)

191, 196, 205

அதி. 27. ஒப்புரவறிதல்

*தாளாற்றித் தந்த பொருளெல்லாந் தக்கார்க்கு*
*வேளாண்மை செய்தற் பொருட்டு.* (குறள், 212)

அதி. 28. ஈகை

*நல்லா றெனினுங் கொளறீது மேலுலகம்*
*இல்லெனினு மீதலே நன்று.* (குறள், 222)

217, 219, 224, 225, 226, 228

அதி. 29. தானம்
209, 212, 213, 214, 215

அதி. 30. அருளுடைமை
147

*அல்ல லருளாள்வார்க் கில்லை வளிவழங்கு*
*மல்லன்மா ஞாலங் கரி.* (குறள், 245)

அதி. 31. புலால்மறுத்தல்
258, 260, 261

*உண்புலால் நீக்க லுயர்கதிவேட் டுக்கோறல்*
*வண்பதநல் குந்திரும லைக்கொழுந்தே—பண்பாய்*

அவிசொரிந் தாயிரம் வேட்டலி னொன்றன்
உயிர்செகுத் துண்ணாமை நன்று. (திருமலை.)

264

அதி. 32. தவம்

கூற்றங் குதித்தலுங் கைகூடும் நோற்றலின்
ஆற்றல் தலைப்பட் டவர்க்கு. (குறள், 269)

273, 275, 279

அதி. 33. கூடாவொழுக்கம்

284, 287

தவமறைந் தல்லவை செய்தல் புதல்மறைந்து
வேட்டுவன் புட்சிமிழ்த் தற்று. (குறள், 274)

அதி. 34. புணர்ச்சிவிழையாமை

291, 301, 303, 304

அதி. 35. கள்ளாமை

கள்வார்க்குத் தள்ளு முயிர்நிலை கள்ளார்க்குத்
தள்ளாது புத்தே ளுலகு. (குறள், 290)

308

அதி. 36. பொய்யாமை

310, 311,

வாய்மை யெனப்படுவ தியாதெனின் யாதொன்றுந்
தீமை யிலாத சொலல். (குறள், 291)

அதி. 37. வெகுளாமை

316, 318, 320, 321, 322

தூசு துரோபதைபாற் சோர்புகண்டும் பாண்டவர்கோன்
மாசினம்விட் டான்றிரும லைக்கொழுந்தே—தேசுபெற
உள்ளிய வெல்லா முடனெய்து முள்ளத்தால்
உள்ளான் வெகுளி யெனின். (திருமலை.)

அதி. 38. இன்னாசெய்யாமை

324, 326

பிறர்க்கின்னா முற்பகற் செய்யிற் றமக்கின்னா
பிற்பகற் றாமே வரும். (குறள், 319)

அதி. 39. கொல்லாமை

தானழியக் கொன்றான் றனைக்கொல்லா மெய்ப்பொருளார்
வானவரா னார்திரும லைக்கொழுந்தே—ஞானஞ்சேர்
தன்னுயிர் நீப்பினுஞ் செய்யற்க தான்பிறி
தின்னுயிர் நீக்கும் வினை. (திருமலை.)

327, 330, 331

அதி. 40. செல்வநிலையாமை*

340, 341

---

*புறத்திரட்டுச் சுருக்கத்தின் ஏட்டுப்பிரதிகளில் இவ்வதிகாரத்திற்குப் பின்னர் சில வெள்ளேடுகள் உள்ளன. துறவு, மெய்யுணர்தல், அவாவறுத்தல், ஊழ் என்றவற்றிற்குரிய செய்யுட்கள் ஈண்டு இருத்தல் வேண்டும் போலும்.

## II. பொருட்பால்

அதி. 41. இறைமாட்சி

*அறனிழுக்கா தல்லவை நீக்கி மறனிழுக்கா*
*மான முடைய தரசு.* (குறள், 384)

474, 475, 484, 490, 496

அதி. 42. கல்வி

*ஒருமைக்கட் டான்கற்ற கல்வி யொருவற்*
*கெழுமையு மேமாப் புடைத்து.* (குறள், 398)

500, 505, 507, 512, 514

அதி. 43. கல்லாமை

*உளரென்னு மாத்திரைய ரல்லாற் பயவாக்*
*களரனையர் கல்லா தவர்.* (குறள், 406)

516, 518, 519

அதி. 44. கேள்வி

521, 526

*செவியுணவிற் கேள்வி யுடையா ரவியுணவி*
*னான்றாரோ டொப்பர் நிலத்து.* (குறள், 413)

அதி. 45. அறிவுடைமை

*அறிவுடையா ரெல்லா முடையா ரறிவிலார்*
*என்னுடைய ரேனு மிலர்.* (குறள், 430)

528, 529, 537, 538, 542

அதி. 46. குற்றங்கடிதல்

*தன்குற்ற நீக்கிப் பிறர்குற்றங் காண்கிற்பின்*
*என்குற்ற மாகு மிறைக்கு.* (குறள், 436)

546, 548, 550, 551

அதி. 47. பெரியாரைத் துணைக்கோடல்

*உற்றநோய் நீக்கி யுறாஅமை முற்காக்கும்*
*பெற்றியார்ப் பேணிக் கொளல்.* (குறள், 442)

552, 555, 556, 557, 558, 559, 560

அதி. 48. நன்கறிவுறுத்தல்

561, 568

அதி. 49. சிற்றினஞ் சேராமை

*நல்லினத்தி னூங்குந் துணையில்லைத் தீயினத்தின்*
*அல்லற் படுப்பதூஉ மில்.* (குறள், 460)

573, 578, 579

அதி. 50. தெரிந்து செயல்வகை

*நன்மைதவிர்ந் தான்சிவனை நாடாம லேதக்கன்*
*மன்மகஞ்செய் துந்திரும லைக்கொழுந்தே—அந்நிலையே*
*நன்றுற்ற வுள்ளுந் தவறுண் டவரவர்*
*பண்பறிந் தாற்றாக் கடை.* (திருமலை.)

583, 588

அதி. 51. வலியறிதல்

*பீலிபெய் சாகாடு மச்சிறு மப்பண்டஞ்*
*சால மிகுத்துப் பெயின்.* (குறள், 475)

601

அதி. 52. காலமறிதல்

604

*காலங் கருதி யிருப்பர் கலங்காது*
*ஞாலங் கருது பவர்.* (குறள், 485)

அதி. 53. இடனறிதல்

613, 614

*நீடறிவி னொருநெறி நில்லார்பாற் சேறினவர்*
*வாடுவர்கண் டாய்திரும லைக்கொழுந்தே—நாடுங்கால்*
*காலாழ் களரி னரியடுங் கண்ணஞ்சா*
*வேலாழ் முகத்த களிறு.* (திருமலை.)

அதி. 54. தெரிந்து தெளிதல்

*தேரான் றெளிவுந் தெளிந்தான்க ணையுறவுந்*
*தீரா விடும்பை தரும்.* (குறள், 510)

618, 623

அதி. 55. தெரிந்து வினையாடல்

*எனைவகையாற் றேறியக் கண்ணும் வினைவகையால்*
*வேறாகு மாந்தர் பலர்.* (குறள், 514)

624, 625, 627, 628, 629, 633, 636, 638, 639, 781

அதி. 56. சுற்றந்தழால்

643, 644, 646, 651, 652, 653

*கொடுத்தலு மின்சொல்லு மாற்றி னடுக்கிய*
*சுற்றத்தாற் சுற்றப் படும்.* (குறள், 525)

அதி. 57. பொச்சாவாமை

*உள்ளிய தெய்த லெளிதுமன் மற்றுந்தான்*
*உள்ளிய துள்ளப் பெறின்.* (குறள், 540)

654, 656

அதி. 58. செங்கோன்மை

*கொலையிற் கொடியாரை வேந்தொறுத்தல் பைங்கூழ்*
*களைகட் டதனொடு நேர்.* (குறள், 550)

663, 662

அதி. 59. கொடுங்கோன்மை

*வேலொடு நின்றா னிடுவென் றதுபோலுங்*
*கோலொடு நின்றா னிரவு.* (குறள், 552)

673, 677

அதி. 60. வெருவந்தசெய்யாமை

*வெருவந்த செய்தொழுகும் வெங்கோல னாகின்*
*ஒருவந்த மொல்லைக் கெடும்.* (குறள், 563)

684

அதி. 61. கண்ணோட்டம்
*பெயக்கண்டு நஞ்சுண் டமைவர் நயத்தக்க*
*நாகரிகம் வேண்டு பவர்.* (குறள், 580)
685, 688, 690

அதி. 62. ஒற்றாடல்
691

*ஆணைவேல் வேந்துக் ககத்தி னிரண்டுண்டு*
*வாணயன மேதிரும லைக்கொழுந்தே—காணுங்கால்*
*ஒற்று முரைசான்ற நூலு மிவையிரண்டுந்*
*தெற்றென்க மன்னவன் கண்.* (திருமலை.)

அதி. 63. ஊக்கமுடைமை
*பரியது கூர்ங்கோட்ட தாயினும் யானை*
*வெரூஉம் புலிதாக் குறின்.* (குறள், 599)
697, 700

அதி. 64. மடியின்மை
*இடிபுரிந் தெள்ளுஞ்சொற் கேட்பர் மடிபுரிந்து*
*மாண்ட வுஞற்றி லவர்.* (குறள் 607)
703, 707

அதி. 65. தாளாண்மை
*காட்டத்திற் கூலிகொண்டோர் காளை தமிழறிவாள்*
*வாட்டமொழிந் தான்றிரும லைக்கொழுந்தே—நாட்டும்*
*அருமை யுடைத்தென் றசாவாமை வேண்டும்*
*பெருமை முயற்சி தரும்.* (திருமலை.)

அதி. 66. இடுக்கணழியாமை
*வெள்ளத் தனைய விடும்பை யறிவுடையான்*
*உள்ளத்தி னுள்ளக் கெடும்.* (குறள், 622)
713*

அதி. 67. அமைச்சு
*பழுதெண்ணு மந்திரியிற் பக்கத்துட் டெவ்வர்*
*எழுபது கோடி தலை.* (குறள், 639)
736, 745

அதி. 68. சொல்வன்மை
*சொலல்வல்லன் சோர்விலா னஞ்சா னவனை*
*இகல்வெல்லல் யார்க்கு மரிது.* (குறள், 647)
746, 747, 748, 752

அதி. 69. வினைத்தூய்மை
*ஈன்றாள் பசிகாண்பா ளாயினுஞ் செய்யற்க*
*சான்றோர் பழிக்கும் வினை.* (குறள், 656)

---

* *மெய்த்தி ருப்பத மேவென்ற போதினும்*
*இத்தி ருத்துறந் தேகென்ற போதினும்*
*சித்தி ரத்தி னலர்ந்தசெந் தாமரை*
*யொத்தி ருக்கு முகத்தினை யுன்னுவாள்.* (இராம. சுந்தர. காட்சி, 20)

அதி. 70. வினைத்திட்பம்

என்று மரசுனக்கே யென்றான் கதிர்மகற்கே
வன்றகைரா மன்றிரும லைக்கொழுந்தே—வென்றியாய்ச்
சொல்லுதல் யார்க்கு மெளிய வரியவாஞ்
சொல்லிய வண்ணஞ் செயல். (திருமலை.)

அதி. 71. வினைசெயல்வகை

தூங்குக தூங்கிச் செயற்பால தூங்கற்க
தூங்காது செய்யும் வினை. (குறள், 672)

760, 764, 765

அதி. 72. தூது

இறுதி பயப்பினு மெஞ்சா திறைவற்
குறுதி பயப்பதாந் தூது. (குறள், 690)

775, 774, 783

அதி. 73. மன்னரைச் சேர்ந்தொழுகல்

வேகருக்கு மன்சிரிக்க வீடிறு னேமுசலி
வாகுவலி யாற்றிரு மலைக்கொழுந்தே—ஆகச்
செவிச்சொல்லுஞ் சேர்ந்த நகையு மவித்தொழுகல்
ஆன்ற பெரியோ ரகத்து. (திருமலை.)

795, 807, 806, 808

அதி. 74. குறிப்பறிதல்

ஐயப் படாஅ தகத்த துணர்வானைத்
தெய்வத்தோ டொப்பக் கொளல். (குறள், 702)

811, 812, 813, 814, 815

அதி. 75. அவையறிதல்

கற்றறிந்தார் கல்வி விளங்குங் கசடறச்
சொற்றெரிதல் வல்லா ரகத்து. (குறள், 717)

819, 820, 821

அதி. 76. அவையஞ்சாமை

ஆற்றி னளவறிந்து கற்க வவையஞ்சா
மாற்றங் கொடுத்தற் பொருட்டு. (குறள், 725)

அதி. 77. நாடு

பிணியின்மை செல்வம் விளைவின்ப மேமம்
அணியென்ப நாட்டிற்கிவ் வைந்து. (குறள், 738)

829, 830, 831, 837, 833

அதி. 78. அரண்

ஆற்று பவர்க்கு மரண்பொரு ளஞ்சித்தற்
போற்று பவர்க்கும் பொருள். (குறள், 741)

848, 859

அதி. 79. நகர்

862, 863, 864, 865, 866, 874

அதி. 80. பொருள் செயல்வகை
*வில்லிமத னைத்தனதன் வென்றானோர் மாதினால்*
*வல்லதுபொன் னேதிருமலைக்கொழுந்தே—செல்லப்*
*பொருளல்ல வற்றைப் பொருளாகச் செய்யும்*
*பொருளல்ல தில்லை பொருள்.* (திருமலை.)
879, 882, 883, 888, 890, 891, 892, 895

அதி. 81. படைமாட்சி
*நிலைமக்கள் சால வுடைத்தெனினுந் தானை*
*தலைமக்க ளில்வழி யில்.* (குறள், 770)
898, 902, 905, 906, 908

அதி. 82. நட்பு
*புணர்ச்சி பழகுதல் வேண்டா வுணர்ச்சிதான்*
*நட்பாங் கிழமை தரும்.* (குறள், 785)
913, 917, 918, 919, 921, 922

அதி. 83. நட்பாராய்தல்
*நாடாது நட்டலிற் கேடில்லை நட்டபின்*
*வீடில்லை நட்பாள் பவர்க்கு.* (குறள், 791)
927, 929, 930, 933, 934, 935

அதி. 84. நட்பிற் பிழைபொறுத்தல்
**வெம்பிவிரா டன்சூது விட்டெறிந்து மேதருமன்*
*வம்புசகித் தான்றிருமலைக்கொழுந்தே—நம்பிய*
*பேதைமை யொன்றோ பெருங்கிழமை யென்றுணர்க*
*நோதக்க நட்டார் செயின்.* (திருமலை.)
936, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947

அதி. 85. தீநட்பு
*ஒல்லுங் கரும முடற்று பவர்கேண்மை*
*சொல்லாடார் சோர விடல்.* (குறள், 818)
948, 950, 955, 956

அதி. 86. கூடாநட்பு
*நீரிலே கஞ்சநிலை நின்று மிலைமீது*
*வாரிதோ யாதிருமலைக்கொழுந்தே—தேரில்*
*இனம்போன் றினமல்லார் கேண்மை மகளிர்*
*மனம்போல வேறு படும்.* (திருமலை.)
961, 960

அதி. 87. பேதைமை
*ஓதி யுணர்ந்தும் பிறர்க்குரைத்துந் தானடங்காப்*
*பேதையிற் பேதையா ரில்.* (குறள், 834)
963, 967, 969, 976, 978, 975

அதி. 88. புல்லறிவாண்மை
*அறிவிலா னெஞ்சுவந் தீதல் பிறிதியாது*
*மில்லை பெறுவான் றவம்.* (குறள், 842)
985, 992, 993, 989, 994

---

* வெம்பு.

அதி. 89. இகல்

இகலெதிர் சாய்ந்தொழுக வல்லாரை யாரே
மிகலூக்குந் தன்மை யவர். (குறள், 855)

அதி. 90. பகைமாட்சி

வலியார்க்கு மாறேற்ற லோம்புக வோம்பா
மெலியார்மேல் மேக பகை. (குறள், 861)

அதி. 91. பகைத்திறந்தெரிதல்

தாகமதன் வேலைதள்ளுஞ் சம்பரனை வென்றேமுன்
வாகைபடைத் தான்றிரும லைக்கொழுந்தே—ஆக
இளைதாக முண்மரங் கொல்க களையுநர்
கைகொல்லுங் காழ்த்த விடத்து. (திருமலை.)

997, 1008

அதி. 92. உட்பகை

வாள்போற் பகைவரை யஞ்சற்க வஞ்சுக
கேள்போற் பகைவர் தொடர்பு. (குறள், 882)

1010

அதி. 93. பெரியாரைப் பிழையாமை

ஏந்திய கொள்கையார் சீறி னிடைமுறிந்து
வேந்தனும் வேந்து கெடும். (குறள், 899)

1018, 1026, 1031, 1038

அதி. 94. பெண்வழிச்சேறல்

மனையாளை யஞ்சு மறுமையி லாளன்
வினையாண்மை வீறெய்த லின்று. (குறள், 904)

அதி. 95. பொதுமகளிர்

பொருட்பெண்டிர் பொய்ம்மை முயக்க மிருட்டறையில்
ஏதில் பிணந்தழீஇ யற்று. (குறள், 913)

1040, 1057, 1059

அதி. 96. கள்ளுண்ணாமை

நாணென்னு நல்லாள் புறங்கொடுக்குங் கள்ளென்னும்
பேணாப் பெருங்குற்றத் தார்க்கு. (குறள், 924)

1062

அதி. 97. சூது

கவறுங் கழகமுங் கையுந் தருக்கி
யிவறியா ரில்லாகி யார். (குறள், 935)

1073, 1072

அதி. 98. மருந்து

மிகினுங் குறையினு நோய்செய்யு நூலோர்
வளிமுதலா வெண்ணிய மூன்று. (குறள், 941)

அதி. 99. குடிப்பிறப்பு

நிலத்திற் கிடந்தமை கால்காட்டுங் காட்டுங்
குலத்திற் பிறந்தார்வாய்ச் சொல். (குறள், 959)

1081, 1086, 1088

அதி. 100. மானம்
*மயிர்நீப்பின் வாழாக் கவரிமா வன்னார்*
*உயிர்நீப்பர் மானம் வரின்.* (குறள், 969)
1090, 1091, 1092, 1094, 1095, 1096, 1098

அதி. 101. பெருமை
*பிறப்பொக்கு மெல்லா வுயிர்க்குஞ் சிறப்பொவ்வா*
*செய்தொழில் வேற்றுமை யான்.* (குறள், 972)
1103, 1110, 1112, 1113

அதி. 102. சான்றாண்மை
*இன்னாசெய் தார்க்கு மினியவே செய்யாக்கால்*
*என்ன பயத்ததோ சால்பு.* (குறள், 987)
1117, 1121, 1122, 1127

அதி. 103. பண்புடைமை
*அரம்போலுங் கூர்மைய ரேனு மரம்போல்வர்*
*மக்கட்பண் பில்லா தவர்.* (குறள், 997)
1129, 1131, 1132, 1133

அதி. 104. நன்றியில்செல்வம்
*பொருளானா மெல்லாமென் றீயா திவறு*
*மருளானா மாணாப் பிறப்பு.* (குறள், 1002)
1136, 1138, 1139, 1141, 1142, 1144, 1143, 1145, 1146, 1147, 1148

அதி. 105. நாணுடைமை
*நாணா லுயிரைத் துறப்ப ருயிர்ப்பொருட்டால்*
*நாண்டுறவார் நாணாள் பவர்.* (குறள், 1017)
1150

அதி. 106. குடிமரபு
*குடிசெய்வ லென்னு மொருவற்குத் தெய்வம்*
*மடிதற்றுத் தான்முந் துறும்.* (குறள், 1023)
1159

அதி. 107. உழவு
*உழுவா ருலகத்தார்க் காணியஃ தாற்றா*
*தெழுவாரை யெல்லாம் பொறுத்து.* (குறள், 1032)

அதி. 108. நல்குரவு
*நெருப்பினுட் டுஞ்சலு மாகு நிரப்பினுள்*
*யாதொன்றுங் கண்பா டரிது.* (குறள், 1049)
1164, 1165, 1166, 1168, 1169

*அத்திட்ட கூறை யரைசுற்றி வாழினும்*
*பத்தெட் டுடைமை பலருள்ளும் பாடெய்தும்*
*ஒத்த குடிப்பிறந்தக் கண்ணுமொன் றில்லாதார்*
*செத்த பிணத்திற் கடை.* (நாலடி, 281)
1172

அதி. 109. இரவு

*கரப்பிடும்பை யில்லாரைக் காணி னிரப்பிடும்பை*
*யெல்லா மொருங்கு கெடும்.* (குறள், 1056)

1176, 1178

அதி. 110. இரவச்சம்

*ஆவிற்கு நீரென் றிரப்பினு நாவிற்*
*கிரவி னிளிவந்த தில்.* (குறள், 1066)

1181, 1182, 1184, 1185, 1186, 1187, 1188, 1189

அதி. 111. கயமை

*ஈர்ங்கை விதிரார் கயவர் கொடிறுடைக்குங்*
*கூன்கைய ரல்லா தவர்க்கு.* (குறள், 1077)

1190, 1191, 1198, 1199, 1204, 1207

அதி. 112. பல்பொருள்

1209, 1215, 1219, 1220, 1222, 1224, 1225, 1217, 1230

அதி. 113. நிரைகோடல்

1237, 1239

அதி. 114. நிரைமீட்சி

1246, 1247, 1249

அதி. 115. பகைவயிற்சேறல்

1254, 1256

அதி. 116. எதிரூன்றல்

1262, 1264

அதி. 117. பாசறை

1268, 1269, 1272

அதி. 118. பகைப்புலம்பழித்தல்

1276, 1278, 1280, 1281, 1282

அதி. 119. திறை

1285, 1286, 1288, 1289, 1290, 1291, 1292

அதி. 120. மகள்மறுத்தல்

1295, 1299

அதி. 121. வஞ்சினம்

1300, 1301, 1302

அதி. 122. படைச்செருக்கு

*துஞ்சினர்பொன் றுய்நாளைத் தோன்றாக்க வென்றுமால்*
*வஞ்சினஞ்சொன் னன்றிரும லைக்கொழுந்தே—அஞ்சாத*
*பேராண்மை யென்ப தறுகணொன் றுற்றக்கால்*
*ஊராண்மை மற்றத னெஃகு.* (திருமலை.)

1308, 1309, 1311, 1319, 1320

அதி. 123. எயில்கோடல்

1323, 1327, 1330

அதி. 124. எயில்காத்தல்
1336, 1338, 1340

அதி. 125. அமர்
1344, 1345, 1350, 1353

அதி. 126. தானைமறம்
1359, 1360, 1364

அதி. 127. குதிரைமறம்
1378, 1382

அதி. 128. யானைமறம்
1388, 1389, 1390, 1391, 1392, 1393, 1394, 1395, 1396

அதி. 129. மூதில்மறம்
1404, 1410, 1406, 1408

அதி. 130. களம்
1419, 1418, 1420, 1421, 1422, 1423, 1424, 1425, 1426
1427, 1430, 1433, 1431, 1432, 1428, 1429

அதி. 131. இரங்கல்
1435, 1442, 1446, 1447, 1449

அதி. 132. வென்றி
1457, 1455

அதி. 133. புகழ்
1465, 1466, 1468, 1470, 1471, 1472, 1473, 1475, 1478

பாரி பாரி யென்றுபல வேத்தி
யொருவற் புகழ்வர் செந்நாப் புலவர்
பாரி யொருவனு மல்லன்
மாரியு முண்டீண் டுலகுபுரப் பதுவே. (புறம், 107)

ஊர்க்குறு மாக்கள் வெண்கோடு கழாஅலின்
நீர்த்துறை படியும் பெருங்களிறு போல
இனியை பெரும வெமக்கே மற்றதன்
துன்னருங் கடாஅம் போல
இன்னாய் பெருமநின் னொன்னா தோர்க்கே. (புறம், 94)

அறுகுளத் துகுத்து மகல்வயற் பொழிந்தும்
உறுமிடத் துதவா துவர்நில மூட்டியும்
வரையா மரபின் மாரி போலக்
கடாஅ யானைக் கழற்காற் பேகன்
கொடைமடம் படுத லல்லது
படைமடம் படான்பிறர் படைமயக் குறினே. (புறம், 142)

1487

அளிதோ தானே பாரியது பறம்பே
நளிகொண் முரசின் மூவிரு முற்றினும்
உழவ ருழாதன நான்குபய னுடைத்தே
ஒன்றே, சிறியிலை வெதிரி னெல்விளை யும்மே

இரண்டே, தீஞ்சுளைப் பலவின் பழமூழ்க் கும்மே
மூன்றே, கொழுங்கொடி வள்ளிக் கிழங்கு வீழ்க்கும்மே
நான்கே, அணிநிற வோரி பாய்தலின் மீதழிந்து
திணிநெடுங் குன்றந் தேன்சொரி யும்மே
வான்க ணற்றவன் மலையே வானத்து
மீன்க ணற்றவன் சுனையே யாங்கு
மரந்தொறும் பிணித்த களிற்றினி ராயினும்
புலந்தொறும் பரப்பிய தேரினி ராயினும்
தாளிற் கொள்ளலிர் வாளிற் றாரலன்
யானறி குவனது கொள்ளு மாறே
சுகிர்புரி நரம்பிற் சீறியாழ் பண்ணி
விரையொலி கூந்தனும் விறலியர் பின்வர
ஆடினிர் பாடினிர் செலினே
நாடுங் குன்று மொருங்கீ யும்மே. (புறம், 109)

அதி. 134. பரிசில்
1493, 1496, 1498

அதி. 135. வாழ்த்து
1499

## III. காமத்துப்பால்

அதி. 136. கைக்கிளை
1506-1570

அதி. 137. தகையணங்குறுத்தல்
உண்டார்க ணல்ல தடுநறாக் காமம்போற்
கண்டார் மகிழ்செய்த லின்று. (குறள், 1090)

அதி. 138. குறிப்பறிதல்
ஏதிலார் போலப் பொதுநோக்கு நோக்குதல்
காதலார் கண்ணே யுள. (குறள், 1099)

அதி. 139. புணர்ச்சிமகிழ்தல்
வீழு மிருவர்க் கினிதே வளியிடைப்
போழப் படாஅ முயக்கு. (குறள், 1108)

அதி. 140. நலம்புனைந்துரைத்தல்
அனிச்சமு மன்னத்தின் றூவியு மாத
ரடிக்கு நெருஞ்சிப் பழம். (குறள், 1120)

அதி. 141. காதற்சிறப்புரைத்தல்
உடம்பொ டுயிரிடை யென்னமற் றன்ன
மடந்தையொ டெம்மிடை நட்பு. (குறள், 1122)

அதி. 142. நாணுத்துறவுரைத்தல்
காம முழந்து வருந்தினார்க் கேமம்
மடலல்ல தில்லை வலி. (குறள், 1131)

அதி. 143. அலரறிவுறுத்தல்
கவ்வையாற் கவ்விது காம மதுவின்றேல்
தவ்வென்னுந் தன்மை யிழந்து. (குறள், 1144)

அதி. 144. பிரிவாற்றாமை
அளித்தஞ்ச லென்றவர் நீப்பிற் றெளித்தசொற்
றேறியார்க் குண்டோ தவறு. (குறள், 1154)

அதி. 145. படர்மெலிந்திரங்கல்
கரத்தலு மாற்றேனிந் நோயைநோய் செய்தாற்
குரைத்தலு நாணுத் தரும். (குறள், 1162)

அதி. 146. கண்விதுப்பழிதல்
ஓஒ வினிதே யெமக்கிந்நோய் செய்தகண்
டாஅ மிடற்பட் டது. (குறள், 1176)

அதி. 147. பசப்புறு பருவரல்
சாயலு நாணு மவர்கொண்டார் கைம்மாறா
நோயும் பசலையுந் தந்து. (குறள், 1183)

அதி. 148. தனிப்படர்மிகுதி
ஒருதலையா னின்னாது காமங்காப் போல
இருதலை யானு மினிது. (குறள், 1196)

அதி. 149. நினைந்தவர்புலம்பல்
தந்நெஞ்சத் தெம்மைக் கடிகொண்டார் நாணார்கொல்
எந்நெஞ்சத் தோவா வரல். (குறள், 1205)

அதி. 150. கனவுநிலையுரைத்தல்
துஞ்சுங்காற் றோண்மேல ராகி விழிக்குங்கால்
நெஞ்சத்த ராவர் விரைந்து. (குறள், 1218)

அதி. 151. பொழுதுகண்டிரங்கல்
காலை யரும்பிப் பகலெல்லாம் போதாகி
மாலை மலருமிந் நோய். (குறள், 1227)

அதி. 152. உறுப்புநலனழிதல்
நயந்தவர் நல்காமை சொல்லுவ போலும்
பசந்து பனிவாருங் கண். (குறள், 1232)

அதி. 153. நெஞ்சொடுகிளத்தல்
காமம் விடுவொன்றோ நாண்விடு நன்னெஞ்சே
யானோ பொறேனிவ் விரண்டு. (குறள், 1247)

அதி. 154. நிறையழிதல்
பன்மாயக் கள்வன் பணிமொழி யன்றோநம்
பெண்மை யுடைக்கும் படை. (குறள், 1258)

அதி. 155. அவர்வயின்விதும்பல்
வாளற்றுப் புற்கென்ற கண்ணு மவர்சென்ற
நாளொற்றித் தேய்ந்த விரல். (குறள், 1261)

அதி. 156. குறிப்பறிவுறுத்தல்
முகைமொக்கு ளுள்ளது நாற்றம்போற் பேதை
நகைமொக்கு ளுள்ளதொன் றுண்டு. (குறள், 1274)

**அதி. 157.** புணர்ச்சிவிதும்பல்

*தினைத்துணையு மூடாமை வேண்டும் பனைத்துணையுங்*
*காம நிறைய வரின்.* (குறள், 1282)

**அதி. 158.** நெஞ்சோடுபுலத்தல்

*கெட்டார்க்கு நட்டாரி லென்பதோ நெஞ்சே நீ*
*பெட்டாங் கவர்பின் செலல்.* (குறள், 1293)

**அதி. 159.** புலவி

*ஊடி யவரை யுணராமை வாடிய*
*வள்ளி முதலரிந் தற்று.* (குறள், 1304)

**அதி. 160.** புலவிநுணுக்கம்

*வழுத்தினாள் தும்மினே னாக வழித்தழுதாள்*
*யாருள்ளித் தும்மினீ ரென்று.* (குறள், 1317)

**அதி. 161.** ஊடலுவகை

*ஊடலிற் றோற்றவர் வென்றா ரதுமன்னுங்*
*கூடலிற் காணப் படும்.* (குறள், 1327)

**புறத்திரட்டுச் சுருக்கம்**
**முற்றும்**

# அனுபந்தம் - V

## பாட பேதங்கள்

[இவை நூல் அச்சியற்றி முடிந்தபின் கிடைத்தன. 1316-ம் செய்யுள் முதல் 1397-ம் செய்யுள் முடியவுள்ள பார்டங்கள் ஊகித்தனவே].

| செய்யுள் | சீர் | பாடம். |
|---|---|---|
| 7 | 12 | முள்ளான் |
| 18 | 14 | ராற்பர |
| 19 | 6, 2 | (ங்)கோலெடுத்த |
| 26 | 2-3 | யதனிற் ருேன்ற |
| 30 | 7 | பெறலாமோ |
| 32 | 14 | வழிதடுப்ப |
| 38 | 7 | லுழந்து |
| 41 | 15 | தமியே |
| 51 | 13-14 | யானேமேலேற்ற |
| 55 | 9-10 | காவலென வாழான் |
| 68 | 12 | நாளுநங் |
| 79 | 10 | பொற்பொடு |
| 81 | 1 | பேணெடுக்கம் |
| ,, | 9 | பொன்வண்ணக் |
| 83 | 6-7 | தாம்பெறுவ ராயின் |
| 86 | 8 | புயலனைய |
| 90 | 15 | பொதியுறைப் |
| 97 | 9 | போல்பவ |
| 100 | 1-2 | இன்சொன்மட மாட்சி (யி) |
| ,, | 4 | இவ்வுலகில் |
| 106 | 9 | ளுய்விலா |
| ,, | 12 | ளுல்மனத்தான் |
| 111 | 1 | தாமாற்று |
| 113 | 1 | தரமென் |
| 115 | 6, 1 | செய்ந்நன்றி |
| 117 | 12 | தீயோர்க்கு |
| 121 | 7 | புகழ்ந்துரையா |
| 138 | 8 | டுவாத்திநாள் |
| 147 | 3 | தோழன் |
| 153 | 9 | கூர்புண் |
| 173 | 4-5 | தானறிந்தீயிற் |
| 180 | 7 | நயனமிலாச் |
| ,, | 11 | செய்வாரு |
| 186 | 7 | முள்ளுநரார் |
| 189 | 8 | (ந்)தாங்கும் |
| ,, | 11 | முளவே |
| 192 | 1 | அஃகநீ |
| 194 | 13-14 | மறலியினவாகு |
| 196 | 13-15 | தல்லலுழந்துமவர் |
| 197 | 5 | குற்றங்கள் |
| 200 | 12 | ளுரும் |
| 205 | 16 | மொன்ருல் |
| ,, | 7 | வாக்கையது |
| 206 | 3 | வன்மா |
| 208 | 14 | (க்)குற்றுண்ணு |
| 213 | 8 | மேவாமை |
| ,, | 14 | வகையா |
| 216 | 8 | கொடுப்போர் |
| 222 | 13 | என்ஞ |
| 227 | 9 | றுணற்ருற் |
| ,, | 11 | மகஞென்றுந் |
| ,, | 12 | தோற்றப் |
| 228 | 5-6 | பொன்னென்று பேர்படைத்தாற் |
| ,, | 11-12 | யொல்லுவதா மாங்கே |
| 229 | 13 | ஈந்தன |
| 230 | 4, 1 | கடிமாப் |
| 231 | 3 | குறையறித்து |
| 249 | 13 | பரிவதாஞ் |
| 258 | 2 | ணுகருங் |
| 274 | 1 | அழையாமை |
| 283 | 1, 4 | மேதகு |
| ,, | 4, 4 | தேமான் |
| ,, | 10, 2 | தோம்பியுஞ் |
| 285 | 3 | சுடர்ப்பூண்மேற் |
| 291 | 3 | மலர்கதிர் |
| 296 | 8, 9 | கனவுந் நன வாக(வே) |
| 298 | 2 | போழ்கதிர் |
| 302 | 14 | காமன் |

| செய்யுள் | சீர் | பாடம். |
| --- | --- | --- |
| 302 | 16 | துய்த்துயார் |
| 303 | 4 | யகன்றலைக் |
| 304 | 14 | யாதென |
| 307 | 9-10 | கிளையழிக வருமரிய |
| 310 | 1 | தாங்கெடினும் |
| 312 | 10 | வேந்தனை |
| 314 | 9-10 | மையில்வினை மாநகர |
| 315 | 4 | கூட |
| ,, | 7 | ராகிநனி |
| 320 | 8 | சுழன்று ழன்று |
| 322 | 3 | கழியிரக்கம் |
| 323 | 10 | விரைசுணங்கிற் |
| 325 | 14 | செயுநோன்மை |
| 330 | 8 | ஊ னுயிர்சாக் |
| 338 | 12 | செய்தார் |
| 343 | 10 | வாய்திறந்து |
| 344 | 9-10 | எண்ணிலாதிகழ்ந் திடும் |
| 346 | 5-6 | நானனிலைபற்றி |
| 349 | 23 | நினையும் |
| 351 | 4 | தாய்காதிற் |
| 352 | 2 | பிறவற்றி |
| ,, | 6-7 | பிறவாமலப்ப |
| 354 | 9-10 | மாண்டவியற்கை |
| ,, | 15 | விறலே |
| 357 | 5, 4 | பின்னிலை |
| ,, | 12, 4 | தாமே |
| 363 | 14 | மணிக்கண்டங் |
| 368 | 7, 1 | நீர்நனிப் |
| 369 | 4, 4 | யென்றிவன் |
| 376 | 10 | கடந்து |
| 378 | 2 | யாவது |
| 382 | 15 | பிணமாய் |
| 384 | 24 | மென்றுன் |
| 385 | 7 | மறந்துணும் |
| ,, | 21 | பேர்ப்பா |
| 391 | 3 | சாவான் |
| 392 | 2, 4 | வழங்கநல் |
| ,, | 3, 3 | கண்டிதின் |
| 394 | 1 | பலர்திரண்ட |
| 395 | 10-11 | வல்லாத காலன் கீழ் |
| 397 | 19 | குளவதன் |
| 400 | 3 | தாக |
| ,, | 13-16 | சருகிலை...சரிந்து மண் |
| 401 | 8, 3-4 | பலரறமீக் கூறவும் |
| ,, | 9, 2 | வாழியர் |
| ,, | 11, 2 | வுரைப்பரா(லு) |
| 402 | 7, 2 | நி [ே] காதம் |
| 409 | 16 | ரசும்புசே(ற) |
| ,, | 20 | னரைத்த |
| 411 | 7 | தேறியித் |
| 412 | 8 | விழவிற்குச் |
| ,, | 11 | தென்னிவ் |
| 415 | 12 | வாழாரே |
| 420 | 12-13 | டோதியமாலனு |
| 423 | 12 | மீட்டுமப் |
| 424 | 15 | மாற்றம்போ(ல) |
| 425 | 20 | றீதல் |
| 426 | 9 | ஆழ்கின்றுர் |
| 428 | 10 | வோட்டிற் |
| 430 | 12 | யின்று |
| 431 | 12 | துற்றற் |
| 432 | 5 | தாமிளி |
| 434 | 8 | நல்லியலாய்(தா) |
| 437 | 11 | மயலறுத்தா |
| ,, | 14-15 | மேனிற்பவர் |
| 439 | 10-11 | யுண்ணவெனவே |
| 442 | 8 | காண்குமால் |
| 444 | 7, 1 | வந்த, தானம் |
| ,, | 10, 3-4 | மென்பது திறவோர் |
| 445 | 14 | புழையிற் |
| 451 | 9 | அறற்பா |
| 453 | 10 | (த்)தலைப்பட் |
| 466 | 18 | நல்லோய் |
| 469 | 9 | லாமோ |
| 473 | 14 | தெய்தா |
| 477 | 5 | நீர்சென் |
| 486 | 1 | தண்கதிர்க் |
| 487 | 19-20 | பெருமையை யுடைய |
| 488 | 9 | வடிநிழல் |
| 494 | 6 | தன்மையெல் |
| 498 | 4, 2 | தோற்று |
| 499 | 7, 3-4 | ஞயிறுழ்நீர், ஞயினிழனீர் |
| 502 | 10 | (க்)கூலிகொண்டா |
| 505 | 10 | மாய |
| 511 | 14-15 | ரியன்றன்மையாம் |

| செய்யுள் | சீர் | பாடம். |
|---|---|---|
| 513 | 17-18 | துணையுமாக்கும் |
| 516 | 4 | காமுறச் |
| 520 | 10 | னென்னுமச் |
| 522 | 5-7 | எள்ளல் கயவர்வா |
| | | ய் நல்லுரையைத் |
| 523 | 7 | தலைப்படுப |
| ,, | 12 | பூத்தோடு |
| 524 | 12 | கற்றனையர் |
| 526 | 1 | புண்ணுகம் |
| 529 | 14 | பாம்பின்றன் |
| 538 | 5 | தீஞ்சுவையுள் |
| 548 | 8 | நெடுவளை |
| 550 | 8 | நீதி |
| ,, | 13 | நிலையாமை |
| 551 | 5 | யென்று |
| 552 | 2 | நல்வினை |
| 553 | 15 | தாற்று |
| 561 | 10 | வினைத்தீயார் |
| 563 | 13-14 | ஏழ்கடிந்திட் |
| | | டின்புற் |
| 566 | 23 | ராவ(தி) |
| 568 | 6, 3 | லாற்றில |
| 569 | 4, 1-2 | நீயோராகலி |
| 570 | 2, 3 | னிரைகண் |
| ,, | 16, 4 | னோக்கி |
| 572 | 2, 1 | ஓவாது |
| ,, | 4, 2 | கவிகைநிறைஇய |
| ,, | 11, 4 | வோனே |
| 574 | 5 | இயல்பிலவ |
| 575 | 9 | செறிவொடு |
| 576 | 14 | ராகுவார்ச் |
| 578 | 3-4 | கலத்துளது |
| | | வொழித்து |
| 584 | 2-3 | மெனக்கினி |
| | | தென்றுலக |
| ,, | 4 | மாண்டவன்றன் |
| ,, | 5 | வோஒந் |
| 586 | 9 | கொல்வினை |
| ,, | 10 | கொண்டபி |
| 588 | 10 | ரில்விருந் |
| 589 | 8 | மாண்பினன் |
| 590 | 3 | மன்னன் |
| 591 | 19 | எரிதவழ்ந் |
| 594 | 5 | நகையல் |
| 595 | 1 | உள்ளமின் |
| 596 | 13 | அஞ்சமின் |
| 598 | 14 | வளைவுந் |
| 599 | 11 | புனல்மயங்கி |
| ,, | 13 | சாயாக்கண் |
| 602 | 10 | வரை நிலையாற் |
| 606 | 2 | தனையு |
| 607 | 10-11 | லாறியபின் |
| | | னறிந்தங் |
| 613 | 6-7 | மானினங் |
| | | கண்ணஞ்சா |
| 614 | 7 | தாகா |
| 618 | 3 | தீதுகக் |
| 620 | 11 | கூர்வல்வேல் |
| 622 | 13 | துளக்கரு |
| 630 | 11 | யிறக்குமே |
| 632 | 7 | பறியாரை |
| 634 | 10 | செய்யார்யார் |
| 645 | 2 | லொருவற் |
| 666 | 7 | ருண்டோ |
| 667 | 11 | செய்யாதார் |
| 668 | 14 | வெளவி |
| 670 | 7 | கலந்த(த) |
| 674 | 6-7 | கோல்கோடி |
| | | யஞ்சிக் |
| 676 | 8 | ராடியக்கால் |
| 677 | 16 | கற்பறிந் |
| 678 | 1 | நிறையு(நீ) |
| ,, | 5 | பொறையு(நீ) |
| 679 | 4, 2 | லூன்றி |
| ,, | 7, 2 | கரைஇய |
| 680 | 14 | பரிசார |
| 682 | 8-10 | பெருநீர்வாழு |
| | | முயிர்க்கிட |
| 683 | 8-10 | கொள்ளூ |
| | | மேனுந்தான்மிக |
| 685 | 10 | படும்வையத் |
| 688 | 8 | நன்றுடையாழ் |
| ,, | 10 | (ஞ்)செஞ்சொற் |
| 689 | 10 | கரசலத்தாற் |
| 695 | 5 | விசைதீர |
| 697 | 1 | வண்சார் |
| ,, | 5-6 | தண்சார்பிலா |
| | | தானுந் |
| 700 | 3,4 | யுடையதம் |
| ,, | 4,1 | வளர்வலி |
| 703 | 11-13 | முயல்கநங்கூரம் |
| | | மடியிருப்பி |
| 711 | 13 | வாழும்பு |
| 722 | 8 | நுகர்து(மெ) |

| செய்யுள் | சீர் | பாடம். |
|---|---|---|
| 722 | 16 | பறித்தத்தா |
| ,, | 22 | மெலிபவால் |
| 727 | 13-14 | தேற்ருனென் றேற்று |
| 730 | 5 | குலைத்தடுக்கி |
| 731 | 11 | லரசர் |
| 734 | 13 | வடுத்தவர் |
| 738 | 17 | தெளிந்து |
| 739 | 2 | சுரும்பின் |
| 743 | 5-6 | ஞுணருங்கோளார் |
| 744 | 3 | நாட |
| 747 | 8 | கட்டுரைப்பின் |
| 753 | 11 | திரியாது |
| 755 | 10 | சேர்க்கு |
| 756 | 16-17 | பூக்குழாய் நல்லவய |
| 757 | 5 | இறையா |
| 758 | 6 | பகையைப் |
| 759 | 8 | கூடற் |
| 765 | 7 | தெய்வமேல் |
| 769 | 6 | குதவாது |
| 776 | 4 | உம்பியைச் |
| 777 | 8 | சொல்விற் |
| 785 | 4, 3 | வேனிறை |
| 786 | 3, 2 | யென்ற |
| 787 | 2 | செய்து |
| ,, | 9 | மடல்மலி |
| 788 | 14 | வெல்லாங் |
| 789 | 9 | எவ்வ |
| 791 | 7 | மதித்துணர்வார் |
| 793 | 3 | வழிப்பட்டான் |
| 800 | 7 | தாங்கருமஞ் |
| 804 | 3 | தலையுள்ளார் |
| 805 | 9 | தேரார்போல் |
| 806 | 6 | மாய்ந்துரையா |
| 809 | 3 | யீரம்பட்(ட) |
| ,, | 12-13 | முன்னம் படர்ந்ததே |
| 811 | 5-6 | யோர்மூழை யாலே |
| 812 | 4 | நோக்கி |
| 821 | 4 | மிக்கதோர் |
| 822 | 13 | மிளகுள |
| ,, | 15 | புலை |
| 823 | 4 | தோற்ருத |
| 823 | 12 | மற்றவனே, மற்றதனே |
| 824 | 3 | யுறழ்வலி |
| 826 | 1 | தவலறுந் |
| 827 | 12, 1-3 | நின்ருழிநின்ருழி ஞாங்கர் |
| 828 | 11 | வைகின்று |
| 829 | 8 | புள்ளுந்தங் |
| 832 | 13 | மற்றைநாடு |
| 844 | 1, 2 | மாரி |
| 846 | 5, 1-2 | வாளிற்றுமிகுத்த |
| 851 | 11 | துற்றபெரும் |
| 853 | 1 | செம்புருகி |
| 854 | 2 | பன்றிகரு |
| ,, | 10 | புற்கொடிகள் |
| ,, | 14 | தேவர்தலை |
| 856 | 7 | மஞ்சுரை |
| ,, | 8 | மதர்வை |
| 862 | 5 | செங்கட் |
| 866 | 6-7 | புலக்கோலாலூக்க |
| 868 | 3 | வேலி |
| ,, | 11 | யலரி(ஞு) |
| 871 | 6 | வெண்கொடி |
| 873 | 3 | மகுடத் |
| ,, | 15 | மிருத்தல் |
| 874 | 7, 1 | பூவினிற் |
| 875 | 9-10 | குன்றுதலுண் டாமோ |
| ,, | 13 | குன்றுமுண் |
| 876 | 4 | சீர்கோப்ப |
| 881 | 1-2 | ஒல்லாதவின்றி |
| 884 | 2-3 | வாழ்பவெனினுங் |
| ,, | 8 | வேண்டாவாங் |
| 885 | 7 | மணிக்கோட |
| ,, | 13 | பனைப்பசித் |
| 886 | 4 | வறுமையு |
| 887 | 9 | புகற்குப் |
| ,, | 13 | புகலும் |
| 888 | 10 | தாஉம் |
| ,, | 11 | பொருகழித்(த) |
| 890 | 3 | கள்ளப் |
| 893 | 11 | யதுவே(தி) |
| 895 | 3 | முதுபடை |
| 896 | 7 | யோடன(வா) |
| 900 | 3 | மீளாக் |
| 904 | 1 | உருத்தெழு |
| ,, | 7 | சேறுவரே |

| செய்யுள் | சீர் | பாடம். |
|---|---|---|
| 905 | 14 | படைத்தகைமை |
| 906 | 9 | தமர்மறையாற் |
| 907 | 4 | னல்லாதான் |
| „ | 15 | போல் |
| 917 | 7 | னந்தும் |
| 919 | 2 | பிரிந்தொருவ |
| 922 | 7 | மவர்செய்ப |
| 925 | 2 | மிதுவென்(னி) |
| 926 | 3, 1 | நிலைப்பெரு |
| 931 | 3 | முன்னுள் |
| 934 | 14 | லான |
| 937 | 8 | விலங்கருவி |
| 940 | 2 | யில்லாதார் |
| 943 | 5 | பொன்னனுய் |
| „ | 13 | இல்லகத் |
| 950 | 1-2 | திருந்தாதவராய்த் அத், திருந்தாய்நீ யார்தவத்தை |
| 952 | 8 | ராயினென் |
| „ | 9-10 | மான்மாணு கண்ணி |
| 953 | 12 | னதுவன்ரே |
| 957 | 10 | னெழுந்தவ, யெழுந்தவ |
| 962 | 1-2 | ஆயி ரவர்நா |
| 965 | 7 | செய்த |
| 966 | 5-6 | எங்கேனுந் தீர்த்தற் |
| 967 | 1 | சொல்லறிந்து |
| 968 | 3 | மிலாதானு |
| „ | 15 | (த்) தார் |
| 970 | 3 | நசைக்கிழமை |
| 972 | 2 | தின்ரெழுரு |
| 973 | 1 | பழியஞ்சா |
| „ | 4 | அழலினுற் |
| 980 | 2 | படர்ந்து |
| „ | 6 | (ள்) நட்டாற் |
| 981 | 13-14 | தாணையிற் பெண்ணை (ய) |
| 983 | 14 | திசைக்கும் |
| 984 | 9 | பாயும் வரை |
| 987 | 4 | மாட்டாதே |
| „ | 8 | ணுறுத்துவபோல் |
| „ | 13 | கற்றறிவும் |
| 988 | 5 | இறுகிறுகித் |
| 989 | 7 | செல்கலார் |
| 990 | 12 | காலத்துஞ் |

| செய்யுள் | சீர் | பாடம். |
|---|---|---|
| 991 | 13 | தண்டாத் |
| 993 | 8 | தானுரைப்பின் |
| 997 | 14-15 | காடாயவாறு |
| 998 | 1 | வண்பாட் |
| „ | 5 | புண்பாட் |
| „ | 10 | பூங்கழிக் |
| 999 | 10 | வேரகற்றக் |
| 1000 | 5 | நிகரின்றி |
| 1001 | 7 | போரிலகப் |
| 1003 | 9 | இரிந்தருவி |
| „ | 13 | பரிந்தரிகால் |
| 1004 | 8 | காப்பமையும் |
| 1005 | 6 | படமுயறு (மெ) |
| 1008 | 14 | பெற்றபின் |
| 1009 | 5 | உட்கி |
| 1010 | 3 | தலையாரை, தலையாவர் |
| „ | 11 | யஃதன்ரே |
| 1011 | 1 | கண்ணுண் |
| „ | 5-8 | எண்ணுந் துணையிற் பிற ராகி நிற்பரால் |
| „ | 11 | (ன்) வேண்டித் |
| „ | 13 | முன்னுந் |
| 1012 | 2 | பகையெனி[illegible] |
| 1013 | 11 | சேந்தாத[illegible] |
| 1014 | 14 | ணிரிந்து [illegible] |
| 1018 | 4 | வேசெயினும் |
| 1019 | 6 | மன்னவரைக் |
| 1021 | 11 | தவரே |
| „ | 12 | கனற்றிப் |
| 1022 | 14 | பாய்ச்சி |
| 1023 | 6 | சிந்தியார் |
| „ | 8 | பாயும் |
| „ | 13 | வளிமுன்னம் |
| „ | 14-15 | வைப்பாரடி |
| 1024 | 4 | ஞற்றவும் |
| 1025 | 8 | செய்தொழுகும் |
| „ | 10-11 | கொண்டவ் விறைவர்கொன் |
| 1028 | 9 | கிணையின்றிப் |
| 1029 | 6 | நின்று |
| „ | 10 | தேங்கலாம் |
| 1038 | 7 | தேருமிவ் |
| 1040 | 13 | விடுப்பர்தாங் |
| 1047 | 2 | மாவ |
| 1050 | 5 | நினைத்தவை |

| செய்யுள் | சீர் | பாடம். |
|---|---|---|
| ,, | 12 | மாரப் |
| 1053 | 15 | மலரவுண் |
| 1055 | 7 | பக்கல் |
| 1062 | 13 | உள்ளமொன் |
| 1067 | 17 | வந்து |
| ,, | 20 | முன்னு |
| 1068 | 12 | தற்கும் |
| ,, | 14 | நண்ணுங் |
| 1070 | 2-3 | ரிடுக்கண்கண |
| | | காண்டனற் |
| 1077 | 6-7 | நெறிக்கண |
| | | மயங்குநெறி |
| 1078 | 10 | பூங்கோதை |
| 1085 | 5 | யல்லவர் |
| 1098 | 15 | சார்பு |
| 1099 | 2 | போலார் |
| ,, | 3 | கழிநன்மை |
| ,, | 4 | செய்தாரைப் |
| ,, | 13 | விண்டவர்க்கு |
| 1100 | 4 | மறைந்தொழிங் |
| 1102 | 4 | புனைந்திருந்தார் |
| ,, | 13 | பெரிதாழ் |
| 1103 | 15 | வில் |
| 1104 | 4 | மிடப்பதோர் |
| | 5 | கூடமா |
| | 8 | முடைத்தாகின் |
| 1105 | 11 | பதியாய |
| 1112 | 7 | காலேயம் |
| 1115 | 17 | தெரியு |
| 1116 | 5 | நிறைய |
| ,, | 7 | லின்றிக் |
| 1119 | 3-4 | பூமி குறிகாண்டடல் |
| 1120 | 12 | ளடிபடிற் |
| 1124 | 6 | யுள்ளு |
| 1130 | 7 | போக்கியென |
| ,, | 9 | நட்டார்க் |
| 1134 | 11 | றிரத்த |
| 1137 | 3-4 | முழுவதுட |
| | | ஞண்டோர் |
| 1144 | 7 | கிணற்றின்கட் |
| 1148 | 12 | வைத்தார்கண் |
| 1150 | 4 | அச்சத்தன் |
| *1157 | 13 | உழுமகற், உழுமக் |
| | | கள் |
| 1161 | 10 | செந்நீர்க் |
| 1162 | 7-8 | வளனமைத் |
| | | துண்டது |

| செய்யுள் | சீர் | பாடம். |
|---|---|---|
| 1162 | 11 | றெறிதலாற் |
| 1171 | 2 | செல்லாச் |
| 1172 | 14 | வீந்த |
| 1175 | 9 | கரந்துள்ளுந் |
| 1176 | 5 | றிரந்தாற் |
| 1188 | 5-6 | குறுவதியையக் |
| 1194 | 5 | நெரிஞ்சியுஞ் |
| 1195 | 4 | பாய்ந்தாலும் |
| 1202 | 5 | குணனேயுங் |
| 1203 | 9 | கின்னுனுஞ் |
| 1208 | 5 | தீம்புனற் (றெ) |
| 1209 | 12 | யீன்றுளோ (டெ) |
| 1212 | 8 | மறிந்தாங் (க) |
| 1213 | 7 | மேற்பட |
| 1217 | 8 | தனக்கினிய |
| 1220 | 5 | மெல்லிலை |
| ,, | 13 | இல்லத்துத் |
| 1227 | 4 | பிணக்கருக்கும் |
| 1232 | 4 | திட்டற்றுக் |
| 1238 | 7 | யாந்தருது |
| *1316 | 4 | இகலிய |
| ,, | 7-8 | லொருவர் |
| | | தமராகச் |
| 1318 | 14 | (ச்) சாவா |
| 1332 | 6, 3-4 | புன்மிடற்று |
| | | வானவ |
| ,, | 7, 3 | கோதையைத் |
| ,, | 9, 4 | யன்றெனிற் |
| ,, | 18, 1-3 | அலங்குசுடரோள் |
| | | வாளழுன்ற |
| 1355 | 2, 3 | பெருமகன் |
| ,, | 8, 4 | கிடங்கின் |
| 1356 | 1, 3 | வாட்சால் |
| ,, | 3, 3-4 | னணிவனப்பிழந்து |
| ,, | 5, 4 | னீர்மேய் |
| 1373 | 2, 1-2 | பயறு காவலர் |
| ,, | 2, 4 | ரன்ன |
| ,, | 3, 1 | அலறுதலை |
| 1374 | 2, 2-3 | முடியாக்குருதிக் |
| 1375 | 3, 1 | மேலோன் |
| ,, | 5, 4 | ஞேனே, வேலே |
| ,, | 9, 1 | வேந்துவந் |
| 1376 | 3, 3 | சேடுபடு |
| 1397 | 7 | றெளிக்கும் |
| ,, | 14 | மதில்பாய |
| 1550 | 1 | தலையவிழ் |
| ,, | 12 | தன்னெடும்வந் |

# அனுபந்தம் - VI

## பெயரகராதி முதலியன


அகம்பன் 1368
அண்டிரன் 1483
அஞ்சி அதியமான் 1494
உதியர்கோமான் 1503
வடவர்மகிழ்துணே 1490
அரிச்சந்திரன் (உலகெலாங் காலா லுழன்று விலேயுண்டான்) 38
அனுமன் 1368
ஆதன் 1297
ஆய் கோயில் 1482
நல்லிசையுருவன் 1484
அறவிலேவணிகனல்லன் 1485
இராமன் விபீடணனே இலங்கைக் கிறையாக்கியது 555
குரங்கு தொழிலாண்டது 1332
இலங்கையை முற்றியது 1333
இராவணன் (அரக்கர் கோ) 1333, 1343
இரும்பிடர்த்தலேயார் 554
இரேவதி நாள் 1473
இலக்குமணன் (பன்ன சாலே கட்ட வல்ல கை) 725
இலங்கை 555, 1332, 1333, 1343
ஈந்தையோன் 1489
உத்திராடநாள் 1472
உதியர்கோமான் 1503
உறந்தை 863
உறந்தையர்கோன் 1507
உறையூர்வளவன் 1520
ஒல்லேயூர் 1449
ஓரி 1496
கடுங்கோ 1570
கடுங்கோன் 1509
கடுமான் கிள்ளி 1487
கச்சி 865
கரிகாலன் (சுடப்பட்டுயிருய்ந்த சோழன் மகன்) தன்மாமன் துணேயால் அரசெய்தியது 554
நரைமுடித்து முறைசெய்தது 664
களிறு தன் மிசை யெடுத்து வந்து அரசிற் குரிமை செய்தது 458
கழுமலம் 458
கருவூர் விழுமியோன் 458
கள்ளி 1492
கார்த்திகை 877
காவிரிநீர் நாடன் 1421, 1423, 1539
கிள்ளி 831, 1389, 1392, 1393, 1394, 1450, 1468, 1473, 1525, 1527, 1554, 1561
குடநாடன் 1564
குடுமி 1480, 1504
குண்டலகேசியின் கணவன் சரிதம் 724
குமணன் 1179
குன்றூர் 1264
கூடல் 864, 866, 878, 1466, 1492
கூடலார் கோமான் 1538, 1559
கூடற் கோமான் 1511, 1546
கூடற்பெருமான் 1538
கொங்கர் 1418
கொற்கை 1566
கோதை 829, 1278, 1279, 1388, 1397, 1471, 1476, 1478, 1508, 1518, 1541, 1557, 1568
கோவலன் 1466
கோழி 874
கோழிக்கோமான் 1544
சாத்தன் 1449
சீதை (சேணெறிக்கணேகிடவல்லபாதம்) 725
சுரமை 868
செந்தில் 1501
செம்பியன் 1280, 1427, 1432, 1545
செல்வக்கோ 1505
செவ்வேள் 878
செழியன் 1358, 1461, 1521
சென்னி 1180
சென்னி யிளவளவன் 1526
சேட்சென்னி நலங்கிள்ளி 570
சேரலர் கோக்கோதை 1567
சேரலர் மருகன் 1505

சேரலாதன் 1477
சேரன்கோதை 1467
சோணுடு 846
சோழன் பாடலம் 1513
தண்ணன் பொருனை 784
தமிழ்நர் பெருமான் 1507, 1540
தாழி (கள்ளிப்பதியின் தலைவன்) 1492
துரியோதனன் (பாப்புக்கொடியான்) 951
தூங்கெயிலெறிந்த தொடித்தோட் செம்பியன் 703
தென்கொற்கைக் கோமான் 1556
தென்னவர் கோமான் 1396
தென்னவன் 1286, 1391, 1466
தென்னவன் (கைகுறைத்தான்) 191
தென்னவன் (தமிழ்ச் சிறு கெண்டை யிமையத்துவைத்து வடதிசை யாண்டவன்) 1491
தென்னன் 830, 1281, 1472, 1528, 1536
தென்னனிளங்கோ 1548
தென்னுறந்தை 1539
தொண்டையான் 1475
தொழுனை 289
நல்லியக்கோடன் 1488
நலங்கிள்ளி 1562
நாஞ்சிற் பொருநன் 1486
நீர்நாடன் 1425, 1555
நீர்நாடு 1552
நீலத்தார்வளவன் 1512
பசும்பூட்செழியன் 1462
பரங்குன்று 878
பாண்டியர் 1492
பாப்புக்கொடியான் 951
பாரி 1488, 1497
பாரி முல்லைக்குத் தேர்கொடுத்தது 220, 564
பால் மேனியான் 951
பிடர்த்தலைப் பேரான் 554
புகார்ப்பெருமான் 1524
புனாடன் 1418, 1422, 1424, 1426, 1522
பூழியன் 1431, 1474
பூழியர் கோக்கோதை 1532
பெருமுத்தரையர் 1186
பேகன் (மயிலுக்குப் போர்வை கொடுத்தது) 220, 564
பொதியிற் கோமான் 1558
பொறையன் 776
போந்தை (ஆதனது நகர்) 1297
மதுகைடவர் (வாட்டிறலானை வளைத்தார்கள்) 1105
மதுரை 874, 875, 876, 877
மதுரையார் கோமான் 1530
மரந்தை 1288
மரிசி 779
மலையன் 1498
மனுநீதிகண்ட சோழன் (கறவைக் கன்றூர்ந்தானைத் தந்தையு மூர்ந்தான்) 662
மாங்குடி மருதன் 1305
மாந்தை 1517, 1547
மாந்தையார் மாக்கடுங்கோ 1570
மாவலி (உலகமாண்டவன் நீர்பெய்திழந்தான்) 584
மாவிலங்கைக் கிழவன் 1488
மாறன் 1284, 1287, 1331, 1380, 1390, 1395, 1457, 1464, 1465, 1469, 1470, 1501, 1511, 1514, 1519, 1523, 1534, 1537, 1542, 1543, 1549, 1550, 1551, 1560, 1563, 1565
மாறன் பொதியில் 1534
மாறன் வழுதி 1560
முசிறியார்கோமான் 1279
முருகன் (கோட்டம்) 1383
வஞ்சி 862, 874
வஞ்சிக்கோமான் 1564
வடபுலமன்னர் 1259
வடவர் மகிழ்துணை 1490
வராகமூர்த்தி (மண்மகளையேந்திய ஏனத்தெயிறு) 1247, 1475
வழுதி 1259, 1293, 1433, 1474, 1479, 1515, 1516, 1529, 1535, 1569
வளவன் 115, 1447, 1531, 1533
வானவன் 1285
விபீடணன் (இலங்கைக்கிழவற் கிளையான்) 555
வீடுமன் (தாதை காமம்நுகர்தற்குத் தான் காமம்நீத்தான்) 542
வேம்பு மாரும் போந்தையு மூன்று மலைந்த சென்னியர் 1297
வையை 876, 1537
வையையார் கோமான் 1506

PRINTED BY G. S. PRESS, MADRAS

l. 40 for (சிந்தா. ?) read (சூளா. சீய. 95)

f.n. ll. 2-4 read as :

*மழை* ; 16 *யாவே.* **468**. 1-2 *அல்லித்தண்டற்ற* ; 10 (*ச்*) *சூழ்வினை* ; 13-1
*புல்லித்தம் முயிரைச்* ; 17 *புக்கும்.* **469**. 10 *புரைமைமிக்.*